क्रांतिकारी कोश

इस श्रमसिद्ध व प्रज्ञापुष्ट ग्रंथ **क्रांतिकारी कोश** में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास को पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सामान्यतया भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन का काल १८५७ से १९४२ ई. तक माना जाता है; किंतु प्रस्तुत ग्रंथ में इसकी काल-सीमा १७५७ ई. (प्लासी युद्ध) से लेकर १९६१ ई. (गोवा मुक्ति) तक निर्धारित की गई है। लगभग दो सौ वर्ष की इस क्रांति-यात्रा में उद्भट प्रतिभा, अदम्य साहस और त्याग-तपस्या की हजारों प्रतिमाएँ साकार हुईं। इनके अलावा राष्ट्रभक्त कवि, लेखक, कलाकार, विद्वान् और साधक भी इसी के परिणाम-पुष्प हैं।

पाँच खंडों में विभक्त पंद्रह सौ से अधिक पृष्ठों का यह ग्रंथ क्रांतिकारियों का प्रामाणिक इतिवृत्त प्रस्तुत करता है। क्रांतिकारियों का परिचय अकारादि क्रम से रखा गया है। लेखक को जिन लगभग साढ़े चार सौ क्रांतिकारियों के फोटो मिल सके, उनके रेखाचित्र दिए गए हैं। किसी भी क्रांतिकारी का परिचय ढूँढ़ने की सुविधा हेतु पाँचवें खंड के अंत में विस्तृत एवं संयुक्त सूची (सभी खंडों की) भी दी गई है।

भविष्य में इस विषय पर कोई भी लेखन इस प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ की सहायता के बिना अधूरा ही रहेगा।

क्रांतिकारी कोश

पंचम खंड

क्रांतिकारी कोश

पंचम खंड

श्रीकृष्ण 'सरल'

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक

प्रकाशक • **प्रभात प्रकाशन**
४/१९ आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२

संस्करण • २०१०

मुद्रक • भानु प्रिंटर्स, दिल्ली

मूल्य • चार सौ रुपए (पंचम खंड)
दो हजार रुपए
(पाँच खंडों का सेट)

KRANTIKARI KOSH (Encyclopaedia of Indian Freedom Fighters)
by Shrikrishna 'Saral'

Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
Vol V Rs. 400.00 ISBN 81-7315-236-5
Set of five Vols. Rs. 2000.00 ISBN 81-7315-237-3
e-mail: prabhatbooks@gmail.com

अनुक्रम

(नेताजी सुभाषचंद्र बोस का आजाद हिंद आंदोलन, सन् १९४६ का नौसैनिक विद्रोह, हैदराबाद मुक्ति अभियान तथा गोवा मुक्ति अभियान के क्रांतिकारी)

अन्य क्रांतिकारी :

क्रांतिकारी कोश के पाँचों खंडों की संयुक्त सूची
(प्रत्येक क्रांतिकारी अकारादि क्रम से)
के लिए देखें—
'**क्रांतिकारी कोश : पंचम खंड**' के अंत में।

★ अकबर अली ★ अनिल रॉय ★ कुरियन ★ जगदीश ★ पथार ★ बेदी ★ मूसा ★ सलीम ★ हरजिंदर ★ हीरालाल

अनिल रॉय

कराची का नौसैनिक विद्रोह बंबई के नौसैनिक विद्रोह का ही एक अंग था; लेकिन वहाँ विद्रोह की घटनाओं की इतनी बहुलता है कि उनका सही विवरण तभी जाना जा सकता है, जब उसका वर्णन अलग से किया जाए। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर कराची के नौसैनिक विद्रोह का वर्णन यहाँ अलग से किया जा रहा है।

बंबई में नौसैनिक विद्रोह १८ फरवरी, १९४६ को प्रारंभ हो चुका था; लेकिन कराची के नौसैनिकों को उस विद्रोह का समाचार १९ फरवरी को मिला, जब प्रात:कालीन अखबार उनके हाथों में पहुँचा। बंबई के विद्रोह के समाचार पढ़कर वे लोग सन्न रह गए। उनके दैनिक जीवन की मस्ती व खुशियाँ तिरोहित हो गईं और तनाव, उत्तेजना एवं अनिश्चय के वातावरण ने कराची के सभी नौसैनिकों को घेर लिया।

उस समय कराची में शाही भारतीय नौसेना के पाँच जहाज थे। उनके नाम थे—

१. एच.एम.आई.एस. मौंज,
२. एच.एम.आई.एस. हिमालय,

३. एच.एम.आई.एस. बहादुर,

४. एच.एम.आई.एस. दिलावर,

५. एच.एम.आई.एस. चमक।

इनमें से 'मौंज' जहाज स्थानीय सुरक्षा के लिए था, 'हिमालय' नाम का जहाज तोप संचालक था, 'बहादुर' और 'दिलावर' नाम के जहाज किशोरावस्था के बालकों के प्रशिक्षण के लिए थे और 'चमक' नाम का जहाज राडार व्यवस्था के प्रशिक्षण के लिए था।

'बहादुर' नाम के जहाज पर जो प्रशिक्षणार्थी थे, उनमें से किसीकी भी उम्र पंद्रह वर्ष से अधिक नहीं थी और 'दिलावर' नाम के जहाज के प्रशिक्षणार्थी तो आठ-आठ दस-दस वर्ष के बच्चे थे, जिन्हें उनके माता-पिता ने इसलिए ठेल दिया था कि वे कमाकर उनके लिए कुछ भेज सकें या कम-से-कम उनके लिए बोझ न बनें। माता-पिता के लिए इस स्थिति का निर्माण इसलिए हो गया था कि द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् ब्रिटिश शासन ने अपनी खोखली आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कई प्रकार के 'कर' लगा दिए थे और महँगाई बहुत अधिक बढ़ गई थी। निर्धन और निम्न-मध्यवर्गीय लोगों के लिए जीना मुश्किल हो गया था और उन्हीं लोगों ने अपने बच्चों को जहाजी प्रशिक्षण के लिए भेज दिया था।

परिस्थितियों की चपेट के कारण ब्रिटिश हुकूमत के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपनी नौसैनिक शक्ति बढ़ाए और जहाजों की संख्या में काफी वृद्धि करे। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान जैसे छोटे देश ने अंग्रेजों के कई जहाजों को समुद्र में समाधि दे दी थी और उनकी शक्ति के खोखलेपन को उजागर कर दिया था। अपने इस अनुभव से सबक लेकर ब्रिटिश हुकूमत ने द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अपनी जलशक्ति की वृद्धि के लिए जहाजों की संख्या में काफी वृद्धि कर दी थी और इसी कारण काफी मात्रा में उन्हें नई भरती करनी पड़ी थी। गरीब और अभावग्रस्त वर्ग के लोगों ने अपने छोटे-छोटे बच्चों को बाल नौसेना में भरती करा दिया था।

कराची के जलक्षेत्र की भौगोलिक स्थिति भी जान लेना आवश्यक है।

कराची के जलशक्ति संस्थान एक छोटे से द्वीप पर स्थित थे, जिसे 'मनोरा' नाम से जाना जाता था। अरब सागर की एक जल पट्टी ने मनोरा द्वीप को कराची शहर से अलग कर दिया था। यह जल पट्टी लगभग दो किलोमीटर चौड़ी थी। कराची नगर के सुदूर दक्षिणी अंचल में कराची का बंदरगाह था, जिसे 'केमारी जेट्टी' के नाम से जाना जाता था।

जब बंबई में नौसैनिक विद्रोह भड़का तो बंबई के नौसेना अधिकारियों के

तो हाथ-पैर फूल गए; क्योंकि वहाँ सभी नौसेना केंद्र और सैनिक बैरकें पास-पास थीं और उनमें पारस्परिक संपर्क बहुत शीघ्र स्थापित हो गया। लेकिन कराची के नौसैनिक अधिकारियों में विद्रोह के समाचार सुनकर भी कोई घबराहट नहीं हुई, क्योंकि वे जानते थे कि भौगोलिक पृथक्ता के कारण नौसेना का संपर्क शहर के लोगों से नहीं हो पाएगा और अलग-थलग पड़ जाने के कारण वहाँ के नौसैनिक विद्रोह नहीं कर सकेंगे।

१९ फरवरी को रोजाना की भाँति कक्षाएँ लगीं। नौसैनिक और प्रशिक्षणार्थी बंबई विद्रोह के समाचार पढ़ चुके थे; लेकिन उन्होंने किसी अशांति और उत्तेजना का प्रदर्शन नहीं किया। यह इसलिए आवश्यक था, जिससे उनके अधिकारियों को उनके प्रति कोई संदेह उत्पन्न न हो। जब दोपहर के भोजन के लिए कक्षाएँ छूटीं तो लोग इधर-उधर बिखर गए। प्रशिक्षणार्थियों में जो नेता किस्म के लोग थे, वे प्रशिक्षणार्थियों से गपशप करते हुए विद्रोह के विषय में उनके विचार जानने लगे। उन लोगों का अपना एक संघ था, जिसका नाम 'सेलर्स एसोसिएशन' (नाविक संघ) था। वैसे इस संघ की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वहाँ कई तरह के क्लब भी थे; लेकिन यह संघ विशेष उद्देश्य से बनाया गया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से अंग्रेजों ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के अफसरों को गिरफ्तार कर लिया था और उन्हें भी भारत लाया गया था। दिल्ली के लाल किले में उनपर मुकदमा चलाया जा रहा था। जिन लोगों पर फौजी अदालत में मुकदमा चलाया जा रहा था, उनमें मेजर जनरल शहनवाज खाँ, कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन और कर्नल प्रेमकुमार सहगल प्रमुख थे। ब्रिटिश सरकार का पूरा प्रयत्न था कि उन लोगों को फाँसी पर लटकाकर अन्य लोगों के दिलों में दहशत उत्पन्न की जाए, जिससे वे कभी बगावत की बात न सोचें। भारत-भर में इस मुकदमे के कारण सनसनी फैल गई थी और लोग अपने राष्ट्रीय वीरों को बचाने के लिए कृतसंकल्प थे। एक बचाव समिति बनाई गई थी। देश के कोने-कोने से चंदा एकत्र होकर बचाव समिति के पास पहुँच रहा था। नागरिक लोग तो चंदा देने के लिए स्वतंत्र थे, लेकिन शासकीय कर्मचारी खुले रूप से चंदा नहीं दे सकते थे। ब्रिटिश सेनाएँ तो सम्राट् के प्रति वफादारी की प्रतिबद्धता के कारण आई.एन.ए. के लोगों को बचाने के लिए चंदा देने की बात सोच भी नहीं सकती थीं। इतना होने पर भी तीनों प्रकार की सेना के लोग आई.एन.ए. के वीरों को बचाने के लिए भरपूर चंदा दे रहे थे। कराची में जो सेलर्स एसोसिएशन बनाया गया था, वह इसी उद्देश्य से बनाया गया था। उन्होंने जाहिर कर रखा था कि सार्वजनिक उत्सवों और आवश्यकता की घड़ी

में साथियों की आर्थिक सहायता के लिए कोष स्थापित किया गया है। अपने उस कोष का उपयोग वे लोग आजाद हिंद फौज के अफसरों पर चल रहे मुकदमे में उनकी सहायता के लिए कर रहे थे।

जब हड़ताल की सनसनी फैली तो सभी लोगों से संपर्क साधने के बजाय इस नाविक संघ के प्रतिनिधियों से संपर्क साध लिया गया। प्रशिक्षणार्थियों के लिए जो भोजन का अवकाश मिला था, उसमें घूम-घूमकर यह निश्चय किया गया कि पूरी छुट्टी हो जाने के उपरांत घूमने-फिरने और मनोरंजन करने के बहाने सभी जहाजों के लोग सागर तट पर पहुँचें, जिससे हड़ताल करने के संबंध में कुछ निर्णय लिया जा सके।

संध्या होते ही सभी केंद्रों के लोग घूमने-फिरने के बहाने समुद्र तट पर पहुँच गए। वे लोग इधर-उधर समूह बनाकर बैठ गए और गपशप करने लगे। बंबई में नौसैनिक विद्रोह भड़क जाने के कारण इन लोगों पर तनाव था और कोई भी आपस में हँसी-मजाक नहीं कर रहा था; ठहाके नहीं उठ रहे थे। सभी समूह धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। इस अवसर का लाभ उठाकर संघ के प्रतिनिधि वहाँ से खिसककर, पहले निश्चित कर लिये गए एक स्थान पर बैठकर, मीटिंग करने लगे। प्रतिनिधियों की इस सभा ने निर्णय लिये—

१. २० फरवरी के पूरे दिन पारस्परिक विचार-विमर्श और व्यवस्थाएँ करके २१ फरवरी, १९४६ से कराची के नौसैनिक विद्रोह प्रारंभ कर दें।
२. सभी लोग २१ फरवरी को प्रातः दस बजे कराची की केमारी जेट्टी में एकत्र हों।
३. 'बहादुर' और 'चमक' जहाजों के प्रशिक्षणार्थी पृथक्-पृथक् न जाकर सम्मिलित रूप से केमारी जेट्टी पहुँचें, जिससे 'चमक' जहाज के किशोर प्रशिक्षणार्थियों को अपने वरिष्ठ साथियों का संरक्षण मिल सके।
४. बंबई के विद्रोही नौसैनिक साथियों की हड़ताल का समर्थन करने के लिए कराची के बाजारों में एक जुलूस निकाला जाए।
५. कराची के केमारी जेट्टी के गोदी मजदूरों को भी जुलूस में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया जाए।
६. जुलूस में साम्राज्य विरोधी और हिंदू-मुसलिम एकता के वे सभी नारे लगाए जाएँ, जो बंबई में लगाए गए हैं।
७. प्रशिक्षण के लिए लगनेवाली कक्षाओं और जहाजों के अन्य कार्यों का पूर्णरूप से बहिष्कार किया जाए।

अगला कदम उठाने की दिशा में निर्णय लेने के लिए विभिन्न केंद्रों की एक दस सदस्यीय समिति का निर्माण कर लिया गया। 'हिमालय' जहाज के साथियों को यह दायित्व दिया गया कि वे केमारी जेट्टी स्थित 'हिंदुस्तान' और 'ट्रावनकोर' जहाजों के साथियों को इन निर्णयों की सूचना दे दें। यह भी निर्णय लिया गया कि कोई ऐसा आचरण न किया जाए, जिससे अधिकारियों को कोई संदेह हो। २० फरवरी की शाम को उसी स्थल पर फिर मिलने का निश्चय किया गया। घूम-फिरकर सभी लोग अपने-अपने आवास गृहों की ओर लौट गए। एक केंद्र का नेता अनिल रॉय को बनाया गया था।

इतनी सावधानियाँ रखने पर भी अंग्रेज अधिकारियों को यह पता चल ही गया कि नौसैनिक और प्रशिक्षणार्थी विद्रोह करने की तैयारी कर रहे हैं। उन अधिकारियों ने भी अपने ढंग से ऐसी तैयारियाँ प्रारंभ कर दीं, जिससे विद्रोह न भड़क सके।

रात का समय था। विद्रोही नेता अनिल रॉय छात्रावास के अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसके पाँच साथी और उस कमरे में थे। वे थे—'ट्रावनकोर' जहाज के कुरियन एवं नैयर, 'पंजाब' जहाज के बेदी एवं जगदीश और 'महाराष्ट्र' जहाज का पवार। आधी रात बीत जाने पर भी मानसिक तनाव के कारण किसीको नींद नहीं आ रही थी। वे आपस में बातचीत कर रहे थे; क्योंकि नियमानुसार ग्यारह बजे रात के पश्चात् बत्ती बुझा देनी पड़ती थी और बातचीत करने की मनाही थी। अपने कमरे का दरवाजा खुला छोड़ना पड़ता था, जिससे छात्रावास अधीक्षक किसी भी समय कमरे में प्रवेश करके सोते हुए उन लोगों की गिनती कर सके।

जाड़े की रात थी। पास के समुद्र में जोर-शोर के साथ गर्जन-तर्जन नहीं हो रहा था। उसके स्थान पर लहरों के उठने-गिरने की मामूली सरसराहट सुनाई दे रही थी। कुरियन की आँखें दरवाजे की तरफ थीं। उसने देखा कि दरवाजे की तरफ से कोई आ रहा है। फुसफुसाहट के स्वर में उसने पास के साथी से कहा—

"रॉय! कोई आ रहा है।"

यह फुसफुसाहट समाप्त ही हुई थी कि एक मानवीय आकृति ने कमरे के अंदर प्रवेश किया। रॉय ने डरते हुए आवाज लगाई—

"कौन है?"

इस समय तक आनेवाले ने कमरे की लाइट जला दी थी। वह छात्रावास का अंग्रेज अधीक्षक लेफ्टिनेंट हीवार्ड था। क्षमा माँगने के स्वर में वह बोला—

"रॉय, मुझे खेद है कि मैं इस समय आया हूँ। मैं तुम लोगों की गिनती करने आया हूँ।"

अनिल रॉय ने शिकायत-भरे लहजे में कहा—

"क्या हम लोग चोर हैं, जो आधी रात के समय आप हमारी गिनती करने आए हैं?"

बेदी को यह सहन नहीं हुआ। उसने हीवार्ड को एक ऐसी हिंदुस्तानी गाली दे दी, जो वह समझ न सके। सभी साथी खिलखिलाकर हँस पड़े। ले. हीवार्ड गिनती करके वापस चला गया।

२० फरवरी, १९४६ की सुबह हो गई। उस दिन जो विचित्रता दिखाई दी, वह यह थी कि प्रशिक्षणार्थी को जगाने के लिए जो तुरही बजाई जाती थी, वह नहीं बजाई गई। किसी भी कार्य-दिवस पर पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। तुरही की आवाज केवल छुट्टी के दिन ही नदारद रहती थी। उस दिन तुरही के न बजने पर भी सभी लोग नित्य नियमानुसार उठे और प्रात:कालीन कार्यों से निबटकर नाश्ता करने जा पहुँचे। जलपान कक्ष में पृथक्-पृथक् मेजों के पास समूह बनाकर लोग बैठ गए। वातावरण इतना बोझिल और तनावपूर्ण था कि सभी लोग आपस में केवल दबी जबान से बातें कर रहे थे। कोई किसीसे हँसी-मजाक नहीं कर रहा था और पारस्परिक फिकरेबाजी तथा छेड़छाड़ भी नहीं हो रही थी।

जब सब लोग नाश्ता कर चुके तो सीटी बजने की तीखी आवाज उनके कानों में पड़ी। पहले ऐसा हुआ करता था कि सीटी बजते ही कुछ अफसर जलपान कक्ष में पहुँचकर 'हरी-अप' कहकर प्रशिक्षणार्थियों को खदेड़ने लगते थे, पर उस दिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। सभी लोग स्वयं ही परेड मैदान में पहुँच गए और परेड के लिए पंक्तिबद्ध खड़े हो गए। उन्हें यह भी मालूम नहीं हो सका कि सीटी किसने बजाई थी। वहाँ एक भी अफसर नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे उस दिन अघोषित अवकाश हो

थोड़ी देर पश्चात् पंक्तिबद्ध खड़े हुए लोगों के सामने ऑफीसर कमांडिंग ले. ए.के. चटर्जी पहुँचे और उन्होंने पहले तो शासकीय तौर पर बंबई के नौसैनिक विद्रोह की सबको सूचना दी और फिर धमकी-भरे स्वर में कहा—

"मैं समझता हूँ कि आप लोग बंबई के नौसैनिक विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करने की हिमाकत नहीं करेंगे और कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जिससे विद्रोह की बू आए। यदि आपने यह गलती की तो यह याद रखिए कि प्रशासन आपको कठोर-से-कठोर दंड देने में तनिक भी संकोच नहीं करेगा।"

यह चेतावनी देने के साथ-ही-साथ ले. ए.के. चटर्जी ने नैवल कोड का वह अंश भी पढ़कर सुना दिया, जो इसी प्रकार की चेतावनी से भरा हुआ था। इसके पश्चात् ले. चटर्जी ने सभी को अपने-अपने काम पर जाने का आदेश दिया।

अपना-अपना कार्य संपन्न करने के पश्चात् सब लोग अपने-अपने कमरों में चले गए।

संघ का एक नेता अनिल रॉय अपने कमरे में गुमसुम बैठा था। उसके अन्य साथी उस समय तक कमरे में नहीं पहुँचे थे। इसी बीच दबे पैरों 'हिमालय' जहाज का एक प्रतिनिधि उसके कमरे में पहुँचा। उसे लेकर अनिल एक कोने में जा पहुँचा और फुसफुसाकर पूछा—

''कहो, क्या बात है?''

आगंतुक अनिल रॉय के कान के पास अपना मुँह लगाकर फुसफुसाया—

''हिंदुस्तान जहाज के प्रशिक्षणार्थी अपनी हड़ताल २१ फरवरी के स्थान पर २० फरवरी से ही प्रारंभ करना चाहते हैं; क्योंकि २१ फरवरी को वह जहाज और कहीं ले जाया जा रहा है।''

अनिल के लिए यह खबर चिंताजनक थी। उसने सोचा कि यह ठीक नहीं रहेगा कि कुछ लोग २० फरवरी को हड़ताल प्रारंभ करें और कुछ २१ फरवरी को। उसने पूछा—

''यह कैसे मालूम हुआ है कि 'हिंदुस्तान' जहाज के साथियों को २१ फरवरी को कराची से हटाया जा रहा है?''

आगंतुक ने उत्तर दिया—

''उन लोगों का जहाज २१ फरवरी को सुबह कराची छोड़ देगा, इस प्रकार के उन्हें आदेश मिल चुके हैं। गंतव्य नहीं बताया गया है।''

मौन रहकर थोड़ी देर विचार करने के पश्चात् अनिल ने कहा—

''ऐसी स्थिति में तो यह ठीक है कि 'हिंदुस्तान' जहाज के साथी अपनी हड़ताल २० फरवरी से ही प्रारंभ कर दें। इससे कम-से-कम यह तो होगा कि हड़ताल करने के कारण जहाज का प्रस्थान स्थगित हो जाएगा और आगे के दिनों में वे हड़ताल में हमारे साथ रह सकेंगे। फिर भी मेरा परामर्श यही है कि अपनी स्थिति के सही निर्णायक वे स्वयं ही हैं। हाँ, इतना अवश्य कीजिए कि आज भोजन के समय आप स्वयं और 'हिमालय' के प्रतिनिधिगण यहाँ आ जाएँ, जिससे हम लोग कोई अंतिम निर्णय ले सकें।

जिन लोगों को बुलाया गया था, वे सब भोजन के समय वहाँ पहुँच गए। उन्होंने अनिल रॉय और अन्य साथियों को बताया कि 'हिंदुस्तान' जहाज के साथियों ने तो विद्रोह प्रारंभ भी कर दिया है और वह भी बड़े सख्त कदम के साथ। उन लोगों ने अपने जहाज के सभी हिंदुस्तानी और अंग्रेज अफसरों को जहाज से मार भगाया है और अब जहाज के स्वामी वे सब लोग स्वयं ही हैं।

यह समाचार सुनकर सभी के वक्ष फूल गए। अनिल रॉय ने कहा—

''तो 'हिंदुस्तान' के साथी सब लोगों से बाजी मार ले गए! यह भी अच्छा ही हुआ कि जहाज उन्होंने अपने कब्जे में ले लिया। बिना जहाज के विद्रोह कैसा!''

जैसाकि पूर्व में निश्चित किया गया था, २० फरवरी की शाम को सभी लोग घूमने-फिरने के बहाने सागर तट पर फिर मिले और अगले दिन अर्थात् २१ फरवरी को की जानेवाली हड़ताल के कार्यक्रम को अंतिम रूप प्रदान कर दिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि २१ फरवरी को बंबई में मारे गए नौसैनिक साथियों के शोक प्रदर्शन के लिए भूख हड़ताल भी रखी जाए। विसर्जित होने के पहले सभी लोग एक-दूसरे से गले लगकर मिले और 'जयहिंद' के अभिवादन के साथ बिदा हो गए।

रात को सब लोग अपने-अपने कमरों में पहुँच गए। धीरे-धीरे अंधकार की चादर ने उन सबको लपेट लिया। शीतकालीन सागर की लहरें, जो उनके लिए लोरियों का काम करके उन्हें गहरी नींद में सुला देती थीं, इस समय उनकी नींद में व्यवधान बन रही थीं। नींद उनसे कोसों दूर भाग गई थी और वे लोग चिंता एवं चिंतन में डूबे हुए थे; कोई किसीसे बोल नहीं रहा था। सभी सोचे जा रहे थे। वे सोच रहे थे, 'सुबह होते ही हमें विद्रोह का झंडा बुलंद करना है। हमारी व्यवस्थाओं और तैयारियों में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई है। यदि हमें जल पट्टी पार नहीं करने दी गई और केमारी जेट्टी नहीं पहुँचने दिया गया तो क्या होगा? यदि ब्रिटिश सेना ने हम लोगों को घेरकर गोलियाँ चला दीं तो क्या होगा?' वे सोच रहे थे, 'यदि हम लोग गोलियों के शिकार होकर मौत की गोद में सो गए तो हमारे माता-पिता पर क्या बीतेगी? क्या हम लोगों की ओर से उनके सुनहले सपनों पर कालिख नहीं पुत जाएगी? क्या उनके बुढ़ापे की लाठी नहीं टूट जाएगी?' वे सोच रहे थे, 'यह तो संसार है—यह नश्वर संसार है। यहाँ से कोई कभी और कोई कभी जाता ही है।' वे सोच रहे थे, 'इस समय तो देश और धरती के प्रति हमारा कर्तव्य है—इस समय तो उन साथियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करना हमारा प्रथम कर्तव्य है, जो विद्रोह करते हुए बंबई में गोलियों के शिकार हुए हैं और कुछ लोग भूख हड़ताल करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष कर रहे हैं।' वे लोग इन्हीं विचारों में डूबे हुए सुबह होने का इंतजार कर रहे थे।

२१ फरवरी की सुबह हो गई। रात-भर जागते रहने और चिंतन-सागर में डूबते-उतराते रहने पर भी वे सभी ठीक समय पर बड़े उत्साह के साथ अपने बिस्तरों से उछल-उछलकर उठे और प्रातःकालीन कार्यों से निवृत्त होकर उछलते-कूदते तथा नारे लगाते हुए परेड मैदान की ओर बढ़ चले। कुछ लोग आवास गृहों

का चक्कर इस उद्देश्य से लगाने लगे कि कहीं कोई अंदर तो नहीं रह गया है। वे लोग नारे लगा रहे थे—

"इनकलाब जिंदाबाद!"

"ब्रिटिश साम्राज्यवाद का नाश हो!"

"नाविक एकता जिंदाबाद!"

पूरा परेड मैदान विद्रोही नाविकों से भर गया। जो उन लोगों के नेता चुने गए थे, उन्होंने पूरे समूह को तीन पंक्तियों में खड़े होने का आदेश दे दिया। वे लोग पंक्तिबद्ध खड़े ही हुए थे कि उनका कमांडिंग ऑफीसर दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा और ऊँची आवाज में उसने उन्हें संबोधित किया—

"तुम लोग केमारी जेट्टी की तरफ जाने की मूर्खता मत करना। पूरी जेट्टी को ब्रिटिश सेना ने घेर लिया है। यदि तुम लोग वहाँ गए तो कुत्तों की मौत मारे जाओगे।"

विद्रोहियों ने यह धमकी सुनी और एक-दूसरे की तरफ देखा। बिना कुछ कहे हुए ही उन सभी के चेहरों पर भाव थे—

'कदम आगे बढ़ाकर अब हम लोग पीछे नहीं हट सकते। वे लोग भी तो हमारे भाई थे, जो बंबई में मारे गए हैं। हम लोग उनके पदचिह्नों पर चलेंगे। कोई भी भय हमें विचलित नहीं कर सकता।'

सभी पंक्तियाँ कदम-से-कदम मिलाकर मार्च करने तैयार खड़ी थीं। प्रतीक्षा इस बात की थी कि 'बहादुर' जहाज के उनके किशोर साथी वहाँ पहुँच जाएँ और वे सब केमारी जेट्टी की तरफ बढ़ चलें। नेता ने अपने कंठ की पूरी शक्ति के साथ नारा लगाया—

"इनकलाब!"

अन्य सभी कंठों ने पूरी शक्ति के साथ गर्जना की—

"जिंदाबाद!"

यह नारा पूरा ही हुआ था कि 'बहादुर' जहाज के किशोर साथी आते हुए दिखाई दिए। वे मार्च करते हुए नहीं, दौड़ते हुए चले आ रहे थे। अपनी बँधी हुई मुट्ठियों को हवा में तानते हुए वे लोग नारे लगाते हुए दौड़ते आ रहे थे। उनके नारे थे—

"इनकलाब जिंदाबाद!"

"साम्राज्यवाद का नाश हो!"

"जयहिंद!"

जो अफसर विद्रोहियों को समझाने आए थे, वे सब दुम दबाकर भाग

खड़े हुए।

विद्रोहियों का यह उफनता हुआ दल मनोरा द्वीप और कराची के बीच पड़नेवाली जल पट्टी को पार करने के लिए बढ़ चला। वे लोग वह खाड़ी पार न कर सकें, इसके लिए प्रशासन ने वहाँ से सभी सरकारी मोटर बोट हटा ली थीं। जब विद्रोहियों का दल वहाँ पहुँचा तो उनके सामने समस्या थी कि खाड़ी को कैसे पार करें! उन्हें कठिनाई में पड़ा हुआ देखकर स्थानीय मछुआरों ने उनकी सहायता की। अपनी नावों में लाद-लादकर वे उन सभी को कराची की भूमि पर छोड़ आए और उनसे उतराई के पैसे लेने से भी इनकार कर दिया। उनकी एक ही माँग थी—

''जालिमों को मार डालो!''

विद्रोहियों का यह दल जब कराची की भूमि पर पहुँचा तो उसने 'हिंदुस्तान' जहाज पर पहुँचने का इरादा किया। उन्होंने देखा कि 'हिंदुस्तान' जहाज को ब्रिटिश सैनिकों ने अपने घेरे में ले रखा था और वे किसीको भी उसपर जाने की अनुमति नहीं दे रहे थे।

अंग्रेजों ने कराची नगर की तरफ जानेवाले सभी रास्ते भी रोक रखे थे। वे नागरिकों को भी शहर की तरफ नहीं जाने दे रहे थे।

विद्रोही नौसैनिकों ने अब 'हिमालय' जहाज के उन साथियों की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया, जो भूमि पर बाहर खड़े थे। वे लोग उनके पास पहुँच गए और उनसे यह जानना चाहा कि वहाँ क्या-क्या घटनाएँ घटी हैं। 'हिमालय' के साथियों ने मनोरा द्वीप से आए हुए अपने साथियों को बताया—

''जब हम लोग मोटर बोट और देशी नावों से खाड़ी पार करने का प्रयत्न कर रहे थे तो अचानक ब्रिटिश सैनिकों से भरी हुई एक मोटर बोट वहाँ आ गई और हमें पीछे लौटने की चेतावनी दी। हमने उनकी चेतावनी की अनसुनी करके आगे बढ़ना जारी रखा तो ब्रिटिश सैनिकों ने हम लोगों पर गोलियाँ चला दीं। गोलियाँ चलने के कारण हम लोगों ने रक्षा के लिए 'हिंदुस्तान' जहाज पर जाने का प्रयत्न किया; लेकिन वहाँ जाते हुए भी उन लोगों ने हम पर गोलियाँ चलाना जारी रखा। उनके गोली-चालन से हमारे दो साथी मारे गए और कई घायल हुए। 'हिंदुस्तान' जहाज के हमारे विद्रोही वीर ब्रिटिशों द्वारा हम पर गोलियाँ चलाए जाना देख रहे थे, उन्हें यह बरदाश्त नहीं हुआ। वे लोग अपने हथियार लिये हुए निकल आए और हमें बचाने के लिए उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों पर गोलियाँ चलाना प्रारंभ कर दिया। उनकी गोलियों की मार से विचलित होकर ब्रिटिश सैनिकों को अपनी मोटर बोट लेकर भागना पड़ा। ब्रिटिश सैनिकों के भाग जाने पर हमारे कुछ साथी लाशों को लेकर 'हिंदुस्तान' जहाज पर पहुँच गए हैं।''

अपने 'हिंदुस्तान' और 'हिमालय' के साथियों के साथ घटित हुई इस घटना को सुनकर मनोरा द्वीप से पहुँचे हुए साथी शीघ्रता से इस बात पर विचार करने लगे कि अब अगला कदम क्या हो! किसीने सुझाव दिया—

"हम लोगों को ब्रिटिश सैनिकों का घेरा तोड़कर आगे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए।"

दूसरे साथी ने समझाते हुए कहा—

"हम लोग ब्रिटिश सैनिकों का घेरा तोड़ने में इसलिए सफल नहीं हो सकेंगे, क्योंकि वे लोग आधुनिकतम हथियारों से लैस हैं और हम लोग एकदम निहत्थे हैं। अपने साथियों की लाशों पर चलकर भी हम लोग उधर नहीं पहुँच सकेंगे।"

इस विचार से सभी लोग सहमत हुए और निर्णय लिया गया कि 'बहादुर' जहाज के बाल साथियों को 'हिमालय' जहाज पर भेज दिया जाए और हम लोग यहीं ठहरकर जितनी देर बन सके, प्रदर्शन करते रहें। यह योजना मान ली गई और मनोरा द्वीप के विद्रोही वहाँ खड़े रहकर प्रदर्शन करते रहे तथा नारे लगाते रहे। उन्हें ऐसा करते हुए देखकर ब्रिटिश सैनिक गोलियाँ चलाने की स्थिति में भूमि पर लेट गए और अपनी स्टेनगनों एवं स्वचालित राइफलों के घोड़ों पर अपनी उँगलियाँ जमा लीं तथा गोली चलाने के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। उनके कमांडर ने उन्हें गोली चलाने का आदेश नहीं दिया।

मनोरा द्वीप के विद्रोही संध्या के सात बजे तक वहाँ प्रदर्शन करते रहे। उसके पश्चात् वे अपने-अपने केंद्र पर लौट गए; क्योंकि वहाँ रात के आठ बजे उनकी मीटिंग निश्चित हो चुकी थी।

रात के आठ बजे 'चमक' जहाज के प्रांगण में सभी लोग मीटिंग के लिए एकत्र हुए और जल्दी-जल्दी कुछ निर्णय लिये गए। मीटिंग में अनिल रॉय, संलीम, जगदीश एवं बेदी ने अपने विचार प्रकट किए और उसके पश्चात् सब लोग अपने-अपने आवास गृहों में चले गए।

रात के लगभग दस बजे 'हिमालय' जहाज के कुछ साथी घबराए हुए अनिल रॉय के कमरे में पहुँचे और उन्होंने दो सनसनीपूर्ण समाचार दिए। वे समाचार थे—

१. ब्रिटिश फौज ने 'हिंदुस्तान' जहाज के विद्रोहियों को यह चेतावनी दी है कि वे आत्मसमर्पण कर दें, अन्यथा पूरे जहाज को गोले चलाकर नष्ट कर दिया जाएगा।
२. समुद्र का उतार प्रातः छह बजे प्रारंभ हो जाएगा और लहर के उतार के

कारण 'हिंदुस्तान' जहाज समुद्री सतह से काफी नीचे पहुँच जाएगा और इस प्रकार यह स्थिति उनके लिए खराब तथा ब्रिटिश फौज के लिए अच्छी हो जाएगी।

इस स्थिति की सूचना और कुछ निर्देश 'हिंदुस्तान' के साथियों को देने आवश्यक थे। संकेत देना तो कुरियन को आता था, पर संकेतकक्ष की चाबी अफसरों के पास थी। वे रात को अपने अफसरों के पास गए। अफसरों ने उन्हें संकेत देने की अनुमति तो दे दी, लेकिन अपनी चालाकी से उनके संकेतों में कुछ परिवर्तन कर दिए, जिनके कारण सही निर्देश 'हिंदुस्तान' जहाज पर नहीं पहुँच सके।

२२ फरवरी, १९४६ की मनहूस सुबह सामने थी। ब्रिटिश फौज ने 'हिंदुस्तान' जहाज के नौसैनिकों को जो चेतावनी दी थी, उसका समय समाप्त होने जा रहा था। मनोरा द्वीप के नौसैनिकों की अधीरता बढ़ रही थी। वे चाह रहे थे कि 'हिंदुस्तान' के साथियों की त्रासदी में सम्मिलित होने के लिए वे शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँच जाएँ। दौड़ते-दौड़ते सभी लोग हिमालय जेट्टी पर पहुँचे; लेकिन वहाँ सरकारी या निजी नावों में एक भी दिखाई नहीं दे रही थी। फौज के अफसरों ने सभी नावें हटवा दी थीं। वहाँ नावें न पाकर सभी लोग इस आशा के साथ मनोरा जेट्टी की तरफ भागे कि शायद वहाँ नावें मिल जाएँ। मनोरा जेट्टी पर भी एक भी नाव न थी। अरब सागर की लंबी भुजा बीच में व्यवधान बनकर अड़ी हुई थी। उस तरफ वे लोग थे, जो कुछ ही क्षणों में मौत के जबड़े में पहुँचने वाले थे और इस ओर वे लोग थे, जो अपने साथियों के पास पहुँचकर उनके कंधे-से-कंधा भिड़ाकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ युद्ध करना चाहते थे। मनोरा जेट्टी पर नावें न मिलने पर विद्रोहियों ने अपने कुछ साथियों को खोज के लिए दौड़ाया कि शायद कहीं छिपी हुई नावें मिल जाएँ। खोज के लिए जो लोग दौड़े, उन्हें कुछ नावें प्राप्त करने में सफलता मिल गई। मछुआरों ने अपनी नावें फौज के अफसरों की धमकी से छिपा दी थीं। विद्रोहियों के मनाने पर वे लोग उन्हें उस पार ले जाने के लिए तैयार हो गए और उन्होंने यहाँ तक कहा कि यदि पहली खेप में कोई रोक-टोक नहीं हुई तो हम लोग आप लोगों को ले जाने के लिए बाद में और खेपें भी कर लेंगे।

पहली खेपवाले लोग जब बीच खाड़ी में पहुँचे तो उन्हें तोपें चलने की आवाज सुनाई दी। तोपें 'हिंदुस्तान' जहाज की ओर से किनारे की तरफ चलाई जा रही थीं। सभी विद्रोही बहुत प्रसन्न हुए कि हमारे साथी जालिम अंग्रेजों को कब्र में धक्का दे रहे हैं। विद्रोहियों और नाविकों का उत्साह बढ़ गया। नारे लगाते हुए उन्होंने नावों की गति तेज कर दी। जब वे लोग किनारे पर लगे तो गोदी कर्मचारी मुँह लटकाए हुए उनके पास पहुँचे और बोले कि सर्वनाश हो चुका है। उनमें से

एक ने युद्ध का विवरण देते हुए कहा—

''ब्रिटिश फौज ने अपनी चेतावनी का समय समाप्त होने के पश्चात् 'हिंदुस्तान' जहाज को निशाना बनाकर तोपें दागना प्रारंभ कर दिया। 'हिंदुस्तान' जहाज के वीरों ने भी अपनी तोपों के मुँह खोल दिए। ब्रिटिश सेना को लाभ यह था कि वे 'हिंदुस्तान' को गोलों का सीधा निशाना बना रहे थे। वे स्वयं स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी की ओट लेकर गोले छोड़ रहे थे। इस प्रकार वे स्वयं बच जाते थे, जबकि 'हिंदुस्तान' के विद्रोही वीर उनके गोलों के शिकार हो रहे थे। बहुत अधिक संख्या में विद्रोही वीर मारे गए हैं; पर उन सभी की लाशें वे लोग मोटर बोटों में भर-भरकर दूर समुद्र में ले गए हैं। उन लोगों ने इनी-गिनी लाशें ही वहाँ छोड़ी हैं और वे उनका पहरा दे रहे हैं।''

मनोरा जेट्टी से पहुँचे हुए विद्रोहियों ने जब यह दुःखद समाचार सुना तो उन्होंने अपनी छातियाँ कूट लीं। कुछ लोग तो जोर-जोर से रो पड़े। जब वे अपने साथियों की लाशें देखने के लिए उनकी ओर बढ़े तो अंग्रेज पल्टन ने अपने संगीन खींचकर उनका रास्ता रोक दिया। सभी लोग वहीं खड़े रहकर ब्रिटिश विरोधी जितने भी नारे लगा सकते थे, लगाते रहे। वे लोग 'बरतानिया हुकूमत हाय-हाय!' कहकर और अपनी छातियाँ कूटकर सियापा भी करते रहे।

थोड़ी देर पश्चात् ट्रकों के भर्र-भर्र का स्वर सभी के कानों में पड़ा। ऐसा लग रहा था जैसे ट्रकों का बहुत बड़ा काफिला कहीं जा रहा हो। इसी समय किसीने 'परेड सैल्यूट' का स्वर बुलंद किया। विद्रोहियों ने समझ लिया कि हमें अपने साथियों की लाशों को सैल्यूट देना है। अदब के साथ सैल्यूट देकर उन्होंने अपने साथियों को अंतिम बिदाई दी और बुझे हुए दिल लेकर अपने-अपने केंद्रों पर पहुँच गए।

२३ फरवरी की सुबह ले. ब्राउन अनिल रॉय के कमरे पर पहुँचा और बोला—

''मुझे मनोरा द्वीप के नए कमांडर मेजर जनरल डाउंस ने आपके पास भेजा है। आपके दिवंगत साथियों का अंतिम संस्कार होना है। हिंदू साथियों के संस्कार के लिए क्या आप मेरे साथ चलना चाहेंगे? आपके मुसलमान और सिख साथियों का अंतिम संस्कार संपन्न कराने के लिए 'हिमालय' जहाज से कुछ लोगों को तय कर लिया गया है। आप अपने साथ एक क्रिश्चियन साथी को भी ले लें, जो क्रिश्चियन दिवंगतों का अंतिम संस्कार संपन्न करा सके।''

ले. ब्राउन का यह प्रस्ताव सुनकर अनिल रॉय ने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। ईसाई साथियों का संस्कार संपन्न कराने के लिए कुरियन ने अपनी

सहमति दे दी। 'हिमालय' जहाज से मूसा एवं हरजिंदर क्रमशः मुसलमान और सिख दिवंगतों का संस्कार संपन्न कराने पहुँचने वाले थे।

चलते-चलते ले. ब्राउन ने उन लोगों से कहा—

"आप लोग पाँच मिनट के अंदर तैयार होकर परेड मैदान पर पहुँच जाइए। वहाँ हम आप लोगों की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

अनिल रॉय और कुरियन दो-तीन मिनट में ही तैयार होकर परेड मैदान में पहुँच गए। परेड मैदान में उन्हें ले जाने के लिए दो जीपें तैयार थीं। एक जीप में उनके 'हिमालय' जहाज के साथी मूसा और हरजिंदर बैठे हुए थे। दूसरी जीप में पाँच ब्रिटिश सैनिक अपनी बंदूकें सँभाले हुए तैयार बैठे थे। अनिल रॉय और कुरियन को लेकर वे जीपें मनोरा जेट्टी पहुँचीं, जहाँ इन्हें नावों के द्वारा खाड़ी पार कराई गई। खाड़ी पार करके जब वे जीपें कराची की केमारी जेट्टी की भूमि पर पहुँचीं तो वे अपनी पूरी रफ्तार के साथ गंतव्य की ओर दौड़ने लगीं।

आधा घंटा तक दौड़ने के पश्चात् दोनों जीपें एक स्थान पर पहुँचकर रुकीं। वहाँ लाशें ढोनेवाली छह गाड़ियाँ खड़ी हुई थीं। उन्हीं गाड़ियों के पीछे कैदियों को ढोनेवाली एक गाड़ी खड़ी थी, जिसमें अनिल रॉय, कुरियन, मूसा और हरजिंदर को बिठा दिया गया। लाशें ढोनेवाली गाड़ियों के आगे दो मोटर साइकिल सवार तैयार थे, जिन्हें गाड़ियों के आगे-आगे चलना था।

भारत की आजादी के लिए लड़ मरनेवाले नौसैनिक विद्रोही वीरों का काफिला बढ़ चला। जब वह काफिला कराची की सड़कों पर पहुँचा तो वहाँ सभी ओर पहले से ही चहल-पहल और भीड़ थी। शवयात्रा का समाचार लोगों के पास पहले ही पहुँच चुका था। जिन-जिन सड़कों से वह काफिला गुजर रहा था, लोग गाड़ियों की छतों पर फूलों के हार और गजरे फेंक रहे थे। छतों, खिड़कियों और गवाक्षों में से महिलाएँ अपने वीर पुत्रों के शवों को ले जानेवाली गाड़ियों पर फूलों की वर्षा कर रही थीं। उनमें से कुछ सुबक-सुबककर रो रही थीं और कुछ तो जोर-जोर से धाड़ मार-मारकर रो रही थीं; जैसे उनके घर में ही किसीकी मृत्यु हुई हो।

सड़कों पर चलते हुए शवयानों का वह काफिला कहीं रुका नहीं। सड़कों पर लोगों की भीड़भाड़ के कारण वे मंद गति से जा रही थीं। इसी बीच कराची के लोगों को अपने राष्ट्रवीरों को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर मिल गया।

कराची नगर पार करके शवयानों का वह काफिला एक निर्जन स्थान पर पहुँचा, जहाँ शवों के अंतिम संस्कार का प्रबंध किया गया था। वहाँ पहुँचने पर शवों की तीन गाड़ियाँ रोक दी गईं और अनिल रॉय एवं हरजिंदर को वहाँ उतार दिया गया। शवों को ले जानेवाली तीन गाड़ियाँ और आगे ले जाई गईं तथा उनके

साथ मूसा एवं कुरियन को भेजा गया।

उन गाड़ियों में मुसलमान एवं ईसाई वीरों के शव थे और उनको दफनाने का प्रबंध किसी दूसरे स्थान पर किया गया था।

जिस स्थान पर हिंदू और सिख वीरों के शव उतारे गए थे, वहाँ चिताएँ पहले से तैयार करके रखी गई थीं। पाँच चिताएँ एक स्थान पर थीं तथा दो चिताएँ उनसे कुछ और दूरी पर। उन चिताओं के पास हिंदू पंडित और सिख ग्रंथी पहले से ही मौजूद थे। वहाँ बंदूकधारी अंग्रेज सैनिकों का भी पहरा था।

सैनिकों ने ही शवों को गाड़ियों से उतारकर चिताओं पर रख दिया और फिर पंडितों ने अनिल रॉय एवं हरजिंदर को जूते उतारकर तथा हाथ-पैर धोकर शवों के पास पहुँचने के लिए कहा। जब वे दोनों गाड़ी से उतरकर अपने साथियों के शवों के पास पहुँचे तो उन्हें देखकर वे फूट-फूटकर रोने लगे। पंडित लोगों ने उन्हें धैर्य बँधाया और कहा कि यहाँ इन लोगों के माता-पिता तथा परिवार के लोग तो हैं नहीं, यहाँ तो आप ही इनके परिवार के व्यक्ति हैं और वे सारे कार्य आप लोगों को ही संपन्न करने हैं, जो परिवार के लोग करते हैं; अत: आप लोग वैसा करते जाइए जैसा हम आपको बताएँ।

हिंदू पंडितों ने मंत्रोच्चार के साथ अनिल रॉय से और ग्रंथीजी ने हरजिंदर द्वारा अंतिम संस्कार संपन्न कराया। इन्हीं दोनों ने अश्रुपूरित श्रद्धांजलि के साथ अपने दिवंगत साथियों की चिताओं को अग्नि से प्रज्वलित कर दिया।

मुसलमान और ईसाई वीरों के शवों का अंतिम संस्कार अन्य स्थान पर मूसा और कुरियन द्वारा संपन्न किया गया।

अंतिम संस्कार के पश्चात् सभी को अपने-अपने केंद्रों पर भिजवा दिया गया। भारी मन लेकर वे सब अपने-अपने डेरों पर पहुँच गए। उन सबका एक ही चिंतन था—

'हिंदुस्तान की आजादी की अंतिम लड़ाई 'हिंदुस्तान' जहाज के वीरों ने लड़ी है।'

इसके पश्चात् क्रम प्रारंभ हो गया ब्रिटिश सरकार द्वारा सभी नगरों के नौसैनिक विद्रोहियों को गिरफ्तार करने, जेलों में भरने और नौकरियों से निकालने का। अपने दिए गए आश्वासनों के अनुसार, हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भी उन्हें बचाने की कोई पहल नहीं की। दुर्भाग्य यहाँ तक रहा कि भारत को आजादी मिल जाने के पश्चात् भी उन लोगों को सेवा में बहाल नहीं किया गया; जबकि पाकिस्तान में उन लोगों को फिर नौकरियाँ दे दी गईं।

□

★ अकबर अली ★ ग्रोमेज ★ एन.सी. सेठ
★ नुरुल इस्लाम ★ प्रवीर घोष ★ बी.सी. दत्त
★ सरदार बसंतसिंह ★ बेदी ★ एम.एस. खान
★ मदनसिंह ★ मोहम्मद अशरफ खान
★ मोहम्मद नवाज ★ युगलदास शर्मा
★ आर.के. सिंह ★ विश्वनाथ बोस
★ एस. सेनगुप्ता ★ हुसेन
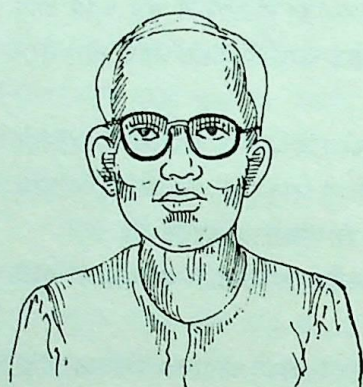
प्रवीर घोष   विश्वनाथ बोस

द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो चुका था। शाही भारतीय नौसेना के कई जंगी जहाज अंग्रेजों की ओर से युद्ध करने के लिए विदेशों में पहुँचे और उन्होंने भारतीयों की वीरता एवं युद्धकला की धाक सारे संसार में जमा दी। स्वयं अंग्रेजों ने यह स्वीकार किया कि भारतीय नौसेना का उनकी विजय में बहुत बड़ा हाथ था।

शाही भारतीय नौसेना का एक जहाज उन दिनों अराकान में था। जहाज के कर्मचारी और अधिकारी जब नगर भ्रमण के लिए निकले तो जहाज के टेलीग्राफिस्ट बी.सी. दत्त की भेंट कुछ प्रवासी भारतीयों से हो गई। एक ही देश के निवासी होने के कारण दोनों पक्षों को बहुत अच्छा लगा और एक होटल में बैठकर बातें होने लगीं। प्रवासी भारतीयों में एक सज्जन का नाम था जयनारायण। जयनारायण ने

श्री बी.सी. दत्त से एक सीधा सवाल पूछा और बातचीत का क्रम चल पड़ा। जयनारायण का प्रश्न था—

"क्या अंग्रेजों के प्रति आपकी वफादारी ने आपको देश के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख नहीं किया है?"

अपने ऊपर सीधा वार हुआ देखकर श्री बी.सी. दत्त का मन तिक्त हो गया; लेकिन स्वयं को संयत करते हुए उन्होंने उत्तर दिया—

"जब हमने शाही भारतीय नौसेना में प्रवेश किया था तो हमने ब्रिटिश सम्राट् के प्रति वफादारी की शपथ खाई थी, इसलिए हमने उस शपथ की आन रखना अपना कर्तव्य समझा। यदि हमने वफादारी की शपथ न ली होती तो हम देश के प्रति अपने कर्तव्य की बात सोचते।"

बात को बढ़ाने का बहुत अच्छा सूत्र हाथ लग गया जयनारायण के। उन्होंने इस सूत्र का भरपूर लाभ उठाते हुए कहा—

"वफादारी की शपथ तो भारतीय सेना के उन लोगों ने भी खाई थी, जो श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज में भरती होकर अपने देश की आजादी के लिए लड़े।"

"तो सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज ने कौन-सा बड़ा तीर मारा लिया! हमारा तो विश्वास है कि सही अर्थों में वह आजाद हिंद फौज न होकर जापानियों की कठपुतली फौज थी, जिसे वे जहाँ चाहते थे, वहाँ नचाते थे।"

"मैं समझता हूँ कि आजाद हिंद फौज के प्रति आपका यह विश्वास या धारणा अपने अंग्रेज स्वामियों के मिथ्या प्रचार के कारण ही बनी है। सच बात तो यह है कि आजाद हिंद फौज सच्चे अर्थों में भारत की मुक्तिवाहिनी थी, जो भारतीय लोगों से बनी थी। उसका प्रशिक्षण भी भारतीयों द्वारा हुआ था और वह केवल भारत की आजादी के लिए ही लड़ती थी। यद्यपि जापानी लोग उसका उपयोग अपने हित के लिए करना चाहते थे, लेकिन ऐसे अवसरों पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस अपने तेवर बदलकर खड़े हो जाते थे और जापानी जनरलों को उनके आगे झुकना पड़ता था।"

श्री जयनारायण की यह बात श्री बी.सी. दत्त एवं उनके साथियों को कुछ अटपटी लगी और उन्होंने खोद-खोदकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा आजाद हिंद फौज के विषय में बहुत-सी बातें पूछीं। श्री जयनारायण ने बहुत विस्तार के साथ आजाद हिंद फौज के गठन, उसकी कार्य-प्रणाली और उसकी उपलब्धियों के विषय में श्री बी.सी. दत्त एवं उनके साथियों को बताया। उन्होंने कई उदाहरण देकर यह भी बताया कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने जो भी कदम उठाया, वह भारत के

स्वाभिमान की रक्षा का ध्यान रखकर ही उठाया और उन्होंने स्वयं को भारत के एक सिपाही से अधिक कुछ नहीं समझा। श्री जयनारायण ने श्री दत्त एवं उनके साथियों को नेताजी सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के कुछ चित्र भी दिए। इस सबका परिणाम यह हुआ कि श्री बी.सी. दत्त तथा उनके साथियों के ऊपर मिथ्या प्रचार का जो परदा था, वह हट गया और उन्होंने स्वयं से प्रश्न किया—

'जो काम आजाद हिंद फौज ने किया, क्या वह काम हम लोग नहीं कर सकते?'

यह प्रश्न उनके मन में घुमड़ता रहा और जब अपने अंग्रेज स्वामियों को विजय दिलाकर वे भारत लौटे तो आजाद हिंद फौज एवं नेताजी सुभाषचंद्र बोस की कहानियाँ लोगों को सुनाते हुए वे गर्व का अनुभव करते थे। वे अपने निजी जीवन में 'जयहिंद' द्वारा एक-दूसरे का अभिवादन करने लगे और इस अवसर की तलाश में रहने लगे कि देश के हित में हमें भी आजाद हिंद फौज की तरह कुछ करके दिखाने का अवसर मिले। उन्हें अवसर की अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उन्हें यह ज्ञात हो गया कि दिल्ली के लाल किले में फौजी अदालत में आजाद हिंद फौज के तीन अफसर—मेजर जनरल शहनवाज खाँ, कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन और कर्नल प्रेमकुमार सहगल पर मुकदमा चलाकर उन्हें फाँसी के फंदों पर लटकाने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह समाचार सुनकर शाही भारतीय नौसेना में उत्तेजना फैल गई और उन्होंने आजाद हिंद फौज के वीरों को बचाने के लिए चंदे एकत्रित किए तथा केंद्रीय बचाव समिति के पास बड़ी रकम भेजी। श्री बी.सी. दत्त ने नौसेना की इमारतों पर जगह-जगह नेताजी सुभाषचंद्र बोस के चित्र बना दिए और 'जयहिंद' के नारे लिख दिए। गोपनीय रूप से उन लोगों ने यह भी तय कर लिया कि अंग्रेज सरकार से लड़ने का कोई-न-कोई बहाना खोज लिया जाए और किसी तात्कालिक कारण की ओट लेकर विद्रोह का विस्फोट कर दिया जाए।

बंबई के सागर तट पर नौसैनिकों के प्रशिक्षण स्थल 'तलवार' की दीवारों पर केंद्र के कमांडर कौल ने जब 'जयहिंद' एवं 'भारत छोड़ो' के नारे लिखे देखे तो वे नौसैनिकों में फैली व्यापक राष्ट्रीय चेतना तथा उनके असंतोष को समझ गए और इसीलिए उन्होंने यह भी छानबीन नहीं की कि वे नारे किसने लिखे हैं। उन्होंने उन नारों को मिटाने का भी कोई प्रयत्न नहीं किया। सच बात तो यह थी कि भारतीय अफसरों में भी देशभक्ति की भावना प्रबल हो उठी थी और नेताजी सुभाष ने जो कुछ कहा था, उसके प्रति वे गर्वित थे। परिणाम यह निकला कि सैन्य प्रशासन ने कमांडर कौल को स्थानांतरित कर दिया और एक जल्लाद किस्म के दूसरे अंग्रेज कमांडर किंग को 'तलवार' प्रशिक्षणालय में भेज दिया गया। उसने

आते ही नौसैनिकों को तंग करना प्रारंभ कर दिया।

अपनी चमचमाती हुई शानदार वरदी में कमांडर किंग जब 'तलवार' प्रशिक्षणालय का अधिभार ग्रहण करने पहुँचा तो उसने अंग्रेजी में लिखे हुए 'जयहिंद' और 'अंग्रेजो! भारत छोड़ो' के नारे पढ़े। ये नारे पढ़कर वह क्रोध से पागल हो गया। उसने दीवारों से वे नारे मिटवा दिए और कुछ जवानों को पकड़कर उनके विरुद्ध कार्यवाही करने लगा।

१७ फरवरी, १९४६ को जब 'तलवार' के नौसैनिकों को खराब भोजन परोसा गया तो वे एक-दूसरे की तरफ इस भाव से देखने लगे जैसे वे पूछना चाहते हों कि क्या इस भोजन को खाया जा सकता है। सभी के मन में एक जैसे ही भाव थे।

एक ने कहा—

''यारो! हम लोग जब समुद्र में डुबकी लगाते हैं तो एक-न-एक मछली पकड़ ही लेते हैं। इस दाल के कटोरे में डुबकी लगाने पर तो दाल का एक भी दाना हमारे हाथ नहीं लगेगा।''

दूसरे ने चुटकी लेते हुए कहा—

''हमारी बरतानिया सरकार हम सैनिकों की जवां-मर्दी की परीक्षा लेना चाहती है कि हम लोग लोहे के चने चबा सकते हैं या नहीं, इसीलिए तो उसने हमारे भात में कंकड़ मिला दिए हैं।''

तीसरे सैनिक ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—

''सरकार को यह भी भय है कि कहीं हम चिकने-चुपड़े न हो जाएँ, इसीलिए हमारी सब्जी तेल से न बघारी जाकर शायद पानी से बघारी गई है।''

इन फिकरों का परिणाम यह निकला कि सभी सैनिकों में रोष की लहर व्याप्त हो गई और खराब भोजन की शिकायत करने के लिए वे कमांडर किंग के पास जा पहुँचे। कमांडर किंग ने छूटते ही कह दिया—

''जो भोजन तुम्हें मिल रहा है, उसे गनीमत समझो; क्योंकि भिखमंगों को पसंदगी का हक नहीं होता।''

इस उत्तर को सुनकर ऐसा लगा जैसे हर सैनिक के गाल पर एक जोरदार तमाचा पड़ा हो। वे अपने एक गाल पर पड़े इस तमाचे को सहला भी नहीं पाए थे कि उनके दूसरे गाल पर कमांडर किंग ने यह कहकर तमाचा जड़ दिया—

''कुतिया के पिल्लो! तुम्हें यहाँ लड़ते रहने की जरूरत नहीं। यदि तुम यहाँ से नहीं गए तो मैं तुम्हें कूड़ेदानी में डलवा दूँगा!''

अपने दोनों गालों पर करारे तमाचे खाकर भारतीय नौसैनिक यह सोचने के लिए वहाँ से चल दिए कि अब हमको क्या करना है।

१८ फरवरी, १९४६

'तलवार' के नौसैनिकों को प्रात:कालीन परेड के लिए बुलाने के लिए जब बिगुल बजा तो एक भी सैनिक बाहर नहीं निकला। वे सभी लोग अपनी-अपनी बैरकों के अंदर ही रहे। अधिकारियों को यह देखकर आश्चर्य भी हुआ और क्रोध भी आया। सोचा गया कि शायद सैनिकों ने बिगुल की आवाज नहीं सुनी होगी। नियम के विरुद्ध दूसरी बार और अधिक जोर-शोर के साथ बिगुल बजाया गया; लेकिन फिर भी सैनिक लोग अपनी बैरकों से नहीं निकले। प्रशिक्षक लोग हतप्रभ थे कि इन नौसैनिकों को क्या हो गया है! वे स्वयं एकत्र होकर स्थिति पर विचार करने लगे। वे लोग विचार कर ही रहे थे कि नौसैनिक बैरकों से निकले और परेड स्थल पर न जाकर वे एक पृथक् कोने में समूह बनाकर एकत्र हो गए और नारे लगाने लगे—

"हम लोग परेड का बहिष्कार कर रहे हैं!"

"हम लोग हड़ताल पर हैं!"

"हम लोग भूख हड़ताल पर हैं!"

"हम लोगों को अच्छा खाना दो!"

"हम लोगों को अंग्रेज सैनिकों की भाँति सुविधाएँ दो!"

"आजाद हिंद फौज के वीरों को रिहा करो!"

ये नारे सुनकर अंग्रेज अधिकारियों के पैरों के नीचे से जमीन खिसकने लगी। 'आजाद हिंद फौज के वीरों को रिहा करो' का नारा सुनकर उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि अच्छे भोजन की माँग तो एक बहाना मात्र है, हड़ताल के पीछे राजनीतिक उद्‌देश्य हैं और यह हड़ताल सामान्य हड़ताल नहीं है। 'तलवार' के एक कोने से दूसरे कोने तक झनझनाहट फैल गई और हड़तालियों को डराने, धमकाने तथा मनाने के प्रयत्न होने लगे।

नौसेना के अंग्रेज अधिकारियों ने भारतीय विद्रोहियों को समझाने के लिए दो भारतीय अधिकारी—ले. कोहली और ले. नंदा को उनके बीच भेजा; लेकिन विद्रोहियों ने उनसे बात करने से भी इनकार कर दिया। वे जानते थे कि यदि हमने उनसे वार्त्ता प्रारंभ की तो कोई-न-कोई भावनात्मक कमजोरी हमें घेर लेगी और हमारा विद्रोह कमजोर पड़ जाएगा।

ले. कोहली और ले. नंदा की विफलता के पश्चात् बंबई नौसेना का सबसे बड़ा अफसर—फ्लैग ऑफीसर रियर एडमिरल रैटरे अपने एक साथी कैप्टेन इनगो जोंस को लेकर 'तलवार' जा पहुँचा। रैटरे ने सोचा कि विद्रोही लोग खराब भोजन और कमांडर किंग के दुर्व्यवहार के कारण ही क्रुद्ध हैं, अत: इन्हीं दो मुद्‌दों पर बातचीत करते हुए उसने कहा—

''आप लोगों को बहुत अच्छा भोजन मिलेगा और कमांडर किंग के स्थान पर मैं कैप्टेन इनगो जोंस को आपका कमांडर बनाकर भेज दूँगा। आप लोग अपनी हड़ताल समाप्त कर दीजिए।''

विद्रोही लोग जानते थे कि भोजन में सुधार की बात अस्थायी ही होगी और अफसर के परिवर्तन का अर्थ होगा, एक शैतान के स्थान पर दूसरे शैतान का आ जाना। कैप्टेन इनगो जोंस भी बिगड़ैल एवं झगड़ालू किस्म का अफसर था और उसके विरुद्ध भी सन् १९४४ में एक बार आंदोलन हो चुका था। उसके नाम का प्रस्ताव सुनकर विद्रोही लोग चिल्लाए—

''हम लोग इनगो जोंस को नहीं चाहते।''

''हमें कोहली, शॉ या कोई दूसरा भारतीय अफसर दिया जाए।''

अपनी इन माँगों के अतिरिक्त विद्रोहियों ने ये नारे बुलंद किए—

''इनकलाब जिंदाबाद!''

''आजाद हिंद फौज के वीरों को रिहा करो!''

''अंग्रेजो! भारत छोड़ो।''

रैटरे की समझ में आ गया कि विद्रोहियों की हड़ताल के पीछे राजनीतिक उद्देश्य हैं। आखिरी पासा फेंकते हुए उसने कहा—

''बातचीत करने के लिए तुम लोगों के कुछ चुने हुए प्रतिनिधि मेरे पास आ जाएँ, मैं उन्हें संतुष्ट करने का प्रयत्न करूँगा।''

विद्रोही लोग रैटरे की इस चाल को समझ गए। वे चिल्लाए—

''गिरफ्तार होने के लिए हम अपने प्रतिनिधि नहीं भेजेंगे। मध्यस्थता के लिए हमें कोई भारतीय नेता चाहिए—चाहे वह कांग्रेस का हो, मुसलिम लीग का हो या कम्युनिस्ट पार्टी का हो।''

रैटरे को विद्रोहियों की यह माँग असंभव लगी। उसके प्रयत्न विफल हो चुके थे। उसकी योजना धराशायी हो चुकी थी। वह अपना मुँह बिचकाकर झटके के साथ वहाँ से चल दिया।

इनगो जोंस भी उसी प्रकार उसके पीछे चला गया।

शाम होते-होते 'तलवार' के विद्रोह की खबर जंगल की आग की तरह सभी जहाजों, बैरकों और बंदरगाहों में फैल गई। बंबई से प्रकाशित होनेवाले कुछ समाचार-पत्रों के सायंकालीन संस्करणों में भी नौसैनिकों के विद्रोह की बात छप गई और जनता में भी उत्तेजना तथा सनसनी फैल गई। आकाशवाणी से प्रसारित होनेवाले सायंकालीन समाचारों ने नौसैनिकों के विद्रोह की खबर देश के कोने-कोने में फैला दी। लंदन से बी.बी.सी. ने भी शाही भारतीय नौसेना के विद्रोह का

समाचार प्रसारित किया और भारतीय नौसेना के विद्रोह की बात सारी दुनिया में फैल गई।

बंबई में जितने भी छोटे-बड़े जहाज थे, उन सभी में विद्रोह की लपटें फैलने में देर नहीं लगी। बड़े जहाजों में कुछ के नाम थे—'हिंदुस्तान', 'कावेरी', 'सतलज', 'नर्मदा' और 'यमुना'। छोटे जहाजों के नाम थे—'असम', 'बंगाल', 'पंजाब', 'ट्रावनकोर', 'काठियावाड़', 'बलूचिस्तान' और 'राजपूत' इत्यादि। कुछ प्रशिक्षण देनेवाले जहाज भी थे। उनके नाम थे—'डलहौजी', 'कलावती', 'दीपावली', 'नीलम' और 'हीरा'। इन जहाजों के अतिरिक्त सागर तट पर कई प्रशिक्षण केंद्र और सैनिक आवास थे। सभी जहाजों, बंदरगाहों, प्रशिक्षण केंद्रों और सैनिक आवास गृहों में विद्रोह की अग्नि फैल गई। जहाजों पर से ब्रिटेन का झंडा यूनियन जैक उतार दिया गया और उसके स्थान पर कांग्रेस का तिरंगा झंडा, मुसलिम लीग का हरा झंडा और कम्युनिस्ट पार्टी का लाल झंडा—सभी साथ-साथ फहराए गए; हिंदू-मुसलिम एकता के नारे लगाए गए।

बंबई के अतिरिक्त भारत के अन्य बंदरगाहों—जैसे कराची, विशाखापट्टनम्, मद्रास, कोचीन, कलकत्ता और अन्य बंदरगाहों में स्थित जहाजों पर भी तीव्रता के साथ विद्रोह फैल गया। उस समय भारत का एक जहाज 'बड़ौदा' कोलंबो गया हुआ था। 'बड़ौदा' जहाज पर भी बेतार संदेश भेज दिया गया और उस जहाज के नौसैनिक भी विद्रोह में सम्मिलित हो गए।

जिसने जहाँ भी विद्रोह का समाचार सुना, वह पूरे मन और पूरी शक्ति के साथ उसमें सम्मिलित होने के लिए अधीर हो गया। वह उसमें सम्मिलित हो भी गया।

शाही भारतीय नौसेना के जहाज 'गोंडवाना' में भी विद्रोह की खलबली मच गई। एक सैनिक ने दूसरे से पूछा—

"क्या 'तलवार' पर हड़ताल है ?"

दूसरे सैनिक ने उत्तर दिया—

"हाँ 'तलवार' के सभी साथी हड़ताल पर हैं। हमको भी हड़ताल प्रारंभ कर देनी चाहिए।"

एक वरिष्ठ सैनिक ने टोकते हुए कहा—

"बिना यह जाने कि हमारे साथियों ने ऐसा कदम क्यों उठाया, हम हड़ताल पर जाने का निश्चय कैसे कर लें ?"

इस प्रश्न ने सभी के विवेक पर थोड़ी देर के लिए ताला लगा दिया; लेकिन शीघ्र ही वह ताला टूटकर नीचे आ गिरा। एक उत्साही सैनिक ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा—

''हमारा निश्चय यह है कि हम हड़ताल करेंगे। हमारे साथ जिस तरह का सुलूक किया जाता है, उसका बदला लेने का यही तरीका है।''

वरिष्ठ सैनिक ने फिर कहा—

''क्या तुम सोचते हो कि बिना कुछ भी तैयारी किए हड़ताल पर जाना आसान है ? यदि हम 'तलवार' के समर्थन में हड़ताल करते हैं तो हमें अपने जहाज के प्रत्येक सदस्य से बात करनी होगी और इसके लिए तैयार करना होगा।''

एक युवा नौसैनिक यह अड़ंगेबाजी देखकर उबल पड़ा। वह बोला—

''क्या तुम समझते हो कि हम लोग हड़ताल करने के लिए तैयार नहीं हैं ? क्या अब भी तुम्हारा यह खयाल है कि हड़ताल करने और लड़ने के लिए लोगों को समझाना पड़ेगा ? अगर तुम ऐसा सोचते हो तो तुम्हारा खयाल गलत है। आज तक सफेद चमड़ीवालों ने हम पर जुल्म किए हैं। अब हम उन्हें दिखा देंगे कि हर हिंदुस्तानी अपने बच्चों का बदला लेना जानता है।''

इस प्रकार के विचारों से उत्तेजना का वातावरण निर्मित हो गया और सैनिक लौंग विद्रोह करने के लिए उतावले हो गए।

शाही भारतीय नौसेना के जहाज 'पंजाब' ने विद्रोह की चिनगारी शीघ्र पकड़ ली। पंद्रह सदस्यों की समिति ने शीघ्र ही स्थिति का जायजा लिया और उन्होंने जहाज के सभी साथियों को सूचित कर दिया कि हड़ताल पर जाना है। उन्होंने हड़ताल के सभी कदम निश्चित कर डाले।

१९ फरवरी, १९४६

१९ फरवरी के प्रात:काल तक सभी जहाजों, प्रशिक्षण केंद्रों और आवास बैरकों में हड़ताल फैल चुकी थी। उस दिन हड़तालियों की संख्या बीस हजार से ऊपर रही होगी। सभी जहाजों के हड़ताली यह जानने के लिए व्यग्र थे कि 'तलवार' के साथियों का क्या हुआ। वे प्रात:कालीन समाचार-पत्र के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही अखबार 'कैसल बैरक' में पहुँचा, झुंड-के-झुंड सैनिक उस साथी के इर्द-गिर्द खड़े हो गए, जिसके हाथों में अखबार था। खुले हुए अखबार के पृष्ठों पर मोटे-मोटे शीर्षकों को किसीने पढ़ना प्रारंभ कर दिया। शीर्षक थे—

'भारतीय नौसैनिक हड़ताल पर।'

'कमांडिंग ऑफीसर के अपमानजनक व्यवहार से नौसैमिकों में तीव्र रोष।'

'नौसेना अधिकारियों में घबराहट।'

'भारतीय यूनिटों की अन्य देशों से संचार व्यवस्था भंग।

अखबार द्वारा हड़ताल की ताजा स्थिति जानकर कैसल बैरक आवास गृह के सभी नौसैनिक इस बात पर विचार करने लगे कि अब हमारा अगला कदम क्या होना चाहिए। किसीने कहा—

''हमें भूख हड़ताल प्रारंभ कर देनी चाहिए।''

दूसरे का सुझाव था—

''पहले हममें से कुछ साथियों को 'तलवार' पर जाकर स्थिति का सही आकलन करना चाहिए और वहाँ के साथियों के निर्देश के अनुसार हमें अपना अगला कदम उठाना चाहिए। यह बहुत अधिक संभव है कि 'तलवार' पर अन्य जहाजों तथा बैरकों के साथी पहुँचेंगे और अगले कदम के विषय में कोई-न-कोई निर्णय वहाँ लिया ही जाएगा।''

यह विचार सभी को पसंद आया। कुछ सैनिक 'तलवार' पर जाने के लिए अपने नाम प्रस्तुत करने लगे। किसीने मजाक करते हुए कह दिया—

''मियाँ, 'तलवार' पर जाने के लिए खुशी-खुशी तैयार तो हो रहे हो, लेकिन वहाँ गोलियों की वर्षा हुई तो कौन-सा छाता लगाओगे!''

तड़ाक से एक साथी ने उत्तर दिया—

''विद्रोही लोग गोलियों की वर्षा छातों पर नहीं, छाती पर झेलते हैं। हम लोग जब ओखली में सिर देने चले हैं तो मूसलों के प्रहारों की हमें क्यों चिंता हो!''

'तलवार' पर जाने की तैयारी होने लगी। कुछ लोग पूरे कैसल बैरक का चक्कर लगाकर सभी साथियों को निर्णय की सूचना दे आए। एक विचित्र प्रकार का जोश और उन्माद उन दीवानों में था। उन्हें आज कुछ कर गुजरने की चिंता थी, कल की नहीं। कल उनकी नौकरी बचेगी या नहीं, या कल तक उनके प्राण बचेंगे या नहीं, यह बात वे सोच भी नहीं रहे थे। वे तो यह सोच रहे थे कि क्रांति के पथ पर कदम रखने में हम लोग पिछड़ न जाएँ। वे तो यह सोच रहे थे कि 'तलवार' के साथियों का मनोबल बढ़ाने के लिए हमें शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँच जाना चाहिए।

विद्रोही दीवानों की एक टोली 'तलवार' पर जाने के लिए बढ़ चली। उसी समय कैसल बैरक का कमांडिंग ऑफीसर जेम्स वहाँ पहुँच गया। उसने बाहर जानेवाले सैनिकों को वापस लौटने के लिए ललकारा; लेकिन वे लोग तो वापस लौटने के लिए नहीं निकले थे। वे वापस नहीं लौटे और चलते ही गए। जेम्स बड़बड़ाया और उसने बुरे परिणामों की धमकी दी। टोली में से किसीने चिल्लाकर उससे कहा—

''बुरे परिणामों में तुम्हारे पास मौत से अधिक भयानक कोई चीज हो तो बताओ! मौत को तो हम लोग अपनी हथेलियों पर रखे हुए जा रहे हैं।''

जेम्स खिसियाकर रह गया। उसे देखकर वहाँ उपस्थित अन्य सैनिक हँस

पड़े। अपने पैरों को पटकता हुआ जेम्स वहाँ से चला गया।

तलवार पर पहुँचने के लिए कैसल बैरक की टोली बंबई की सड़कों पर जा रही थी। उनमें से कुछ साथी भारत की आजादी के लिए लड़नेवाले राजनीतिक दलों के झंडे ले आए थे। किसीके हाथ में कांग्रेस का तिरंगा झंडा था तो किसीके हाथ में मुसलिम लीग का हरा झंडा। कोई-कोई कम्युनिस्ट पार्टी के लाल झंडे अपने हाथों में थामे हुए थे। नारे लगाए जा रहे थे—

"हिंदू-मुसलिम एक हों!"

"कांग्रेस-लीग एक हो!"

नौसैनिक विद्रोहियों का यह जुलूस देखकर सड़क पर चलनेवाले लोग भी उनके साथ हो लिये। जुलूस का आकार बढ़ता गया। झंडों की संख्या बढ़ती गई। नारों की बुलंदी बढ़ती गई। मकानों की खिड़कियाँ खुल गईं। माताएँ एवं बहनें उन विद्रोही वीरों पर फूल और आशीर्वाद बरसाने लगीं। विद्रोहियों के कदम बढ़ते जा रहे थे। उनका उन्माद बढ़ता जा रहा था। उनपर बरसते हुए फूल उनकी इच्छाशक्ति और उनके संकल्पों को बल प्रदान कर रहे थे। वे एक-दूसरे से कह रहे थे, "ये तो फूल हैं, यदि इसी प्रकार हमारे सिरों पर गोलियाँ बरसें तो हम उनका भी स्वागत करेंगे।"

चलते-चलते वह जुलूस 'फोर्ट बैरक' पहुँच गया। विद्रोही नौसैनिकों ने नारा बुलंद किया—

"चलो, तलवार पर!"

"तलवार पर चलो!"

फोर्ट बैरक के अंदर से आवाज आई—

"हम आ रहे हैं।"

"हम आ रहे हैं।"

देखते-ही-देखते फोर्ट बैरक के विद्रोही सैनिक भी जुलूस में आ मिले। जुलूस का आकार तथा जोश और बढ़ गया। नारे गूँजने लगे—

"हमारी मंजिल आजादी है।"

"अंग्रेजो! भारत छोड़ो!"

"इनकलाब जिंदाबाद!"

"जयहिंद!"

"हिंदू-मुसलिम एक हों!"

इनकलाबियों का वह जुलूस जिधर भी गया, लोग अपनी-अपनी दुकानें बंद करके उनके साथ हो लिये। कुछ लोग झंडे लेकर ट्रकों पर चल रहे थे और कुछ नीचे। बोरीबंदर के पास एक गोरे सारजेंट ने अपनी पिस्तौल दिखाकर जुलूस

को रोकने का प्रयत्न किया। उसकी पिस्तौल छीन ली गई और उसकी पिटाई करके उसे छोड़ दिया गया। विदेशी दुकानें लूट ली गईं और विदेशी झंडे उतारकर उनके स्थान पर भारतीय झंडे लगा दिए गए।

चलते-चलते लोगों की भीड़ 'तलवार' तक पहुँच गई। दूसरी बैरकों और बंदरगाहों से भी काफी संख्या में लोग 'तलवार' पर पहुँच रहे थे। दोपहर के समय परेड मैदान पर आमसभा हुई। 'तलवार' के एक विद्रोही नेता ने कहा—

''जब हमने आंदोलन प्रारंभ किया था तो हमने कभी नहीं सोचा था कि हमें अपने भाइयों से इतना बड़ा सहयोग मिल सकेगा। हमें समाचार मिला है कि शाही नौसेना के सभी नौसैनिक बाकायदा संघर्ष में सम्मिलित हो गए हैं। बंबई के ग्यारह तटवर्ती अड्डों और बंदरगाहों में खड़े जहाजों के बीस हजार नौसैनिकों ने बरतानिया झंडा उतारकर फेंक दिया है। अंग्रेज सरकार अपनी सेना के समूचे विभाग पर से नियंत्रण खो चुकी है। हड़ताल चौहत्तर जहाजों, चार बेड़ों और बीस तटवर्ती अड्डों तक फैल चुकी है। हड़ताल मुकम्मिल है और अपनी इस एकता पर हमें अत्यधिक गर्व का अनुभव हो रहा है।''

उद्बोधन करनेवाले विद्रोही नेता ने सभी लोगों को बताया कि हमने बरतानिया हुकूमत के पास अपना माँग पत्र भेज दिया है। वे माँगें हैं—

१. आजाद हिंद फौज के राजबंदियों पर चलाए जा रहे मुकदमे वापस ले लो और उन्हें जेलों से रिहा करो।
२. नौसैनिकों को अपमानित करनेवाले अफसरों को दंड दो।
३. हमें शाही नौसैनिकों की भाँति वेतन और भत्ते दो।
४. हमें अच्छा भोजन दो।
५. इंडोनेशिया से भारतीय सैन्य दल को शीघ्र वापस बुलाओ।

विद्रोही सैनिक अपनी आमसभा को इस आशय से चलाए जा रहे थे कि उनके बीच श्रीमती अरुणा आसफ अली उपस्थित होकर उनका मार्गदर्शन करें। उन्होंने दोपहर तक वहाँ उपस्थित होने का वादा भी किया था; पर वे वहाँ नहीं पहुँचीं। उनकी काफी प्रतीक्षा करके सभा विसर्जित कर दी गई। लोग इधर-उधर बिखर गए। कुछ ट्रकों में बैठकर शहर में विद्रोही हवा फैलाने के लिए चल दिए, कुछ इधर-उधर ट्रॉलियों में बैठकर विगत घटनाओं की समीक्षा करने लगे और कुछ आगामी संघर्ष की रूपरेखा तैयार करने लगे।

इसी समय पत्रकारों का एक दल 'तलवार' का जायजा लेने के लिए प्रमुख फाटक पर पहुँचा। फाटक के सशस्त्र पहरेदारों ने उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। एक विद्रोही सैनिक पत्रकारों को दूसरी तरफ ले गया, जहाँ दीवारों पर कुछ विद्रोही बैठे

हुए थे। विद्रोही सैनिकों ने पत्रकारों के हाथ खींचकर उन्हें ऊपर ले लिया। पत्रकारों ने प्रांगण के अंदर पहुँचकर आँखोंदेखे हाल के रूप में अपने समाचार-पत्रों के लिए मसाला बटोर लिया।

शाम होते-होते आंदोलन के समन्वय और संचालन के लिए 'नौसेना केंद्रीय हड़ताल समिति' का गठन कर लिया गया। इस समिति के पदाधिकारी थे—

अध्यक्ष : श्री एम.एस. खान
उपाध्यक्ष : श्री मदनसिंह
सदस्य : श्री बी.सी. दत्त
'' मोहम्मद अशरफ खान
'' मोहम्मद नवाज
'' नूरुल इस्लाम
'' बेदी
'' सरदार बसंतसिंह
'' ग्रोमेज
'' हुसेन
'' एस. सेनगुप्ता।

इस समिति ने निर्णय लिये कि वे—

१. सेना के अधिकारियों से अब संधिवार्त्ता नहीं करेंगे और राष्ट्रीय नेताओं के निर्देशन के अनुसार संघर्ष का संचालन करेंगे।
२. कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जो आपसी एकता को भंग करे।
३. केवल आत्मरक्षा के लिए ही हथियारों का उपयोग करेंगे।

हड़ताली सैनिकों ने वायरलैस व्यवस्था में सुधार करके एक नया सांकेतिक कोड तैयार कर लिया, जिसके द्वारा वे दूसरे जहाजों पर संदेश भेज सकें और उनके संदेश पकड़े न जा सकें। समिति ने 'रॉयल इंडियन नेवी' नाम बदलकर उसका नाम 'इंडियन नेवी' कर दिया। 'तलवार' को विद्रोहियों का मुख्यालय घोषित किया गया।

नौसैनिक क्रांति के समाचार लंदन पहुँच चुके थे। वहाँ भी खलबली मच गई। उस खलबली को शांत करने के लिए ब्रिटेन के प्रधानमंत्री मि. एटली ने 'हाउस ऑफ कॉमंस' में एक वक्तव्य देते हुए बताया कि भारत को स्वतंत्रता देने संबंधी मुद्दे का अध्ययन करने के लिए शीघ्र ही मंत्रिमंडलीय स्तर का एक आयोग भारत भेजा जाएगा। मि. एटली ने यह घोषणा इस उद्देश्य से की थी कि ब्रिटेन में बढ़ते हुए तनाव को कम किया जा सके और भारत के राजनेताओं को हड़तालियों को सहयोग देने से रोका जा सके। उनकी यह चाल काम कर गई और भारत के

राजनेता विद्रोहियों को सहयोग देने या उनके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करने के स्थान पर उन्हें बिना शर्त हड़ताल समाप्त करने के परामर्श देने लगे।

भारत के नौसैनिक विद्रोही तो अपने उत्साह के चरम बिंदु पर थे।

२० फरवरी, १९४६

नौसैनिकों की हड़ताल का तीसरा दिन था। उन्होंने अपनी हड़ताल के पहले ही दिन अर्थात् १८ फरवरी से भूख हड़ताल प्रारंभ कर दी थी। हड़तालियों को यह देखकर निराशा हो रही थी कि राष्ट्रीय स्तर का कोई भी नेता न तो उनके बीच पहुँच रहा था और न उनके इस कदम को अच्छा कह रहा था। श्रीमती अरुणा आसफ़ अली हड़तालियों के बीच में पहुँचने का वादा करके भी नहीं पहुँचीं। इसके विपरीत उन्होंने कहा—

''नौसैनिकों की माँगों में कुछ कमजोरियाँ हैं। उन्हें अपनी नौकरी संबंधी माँगों के साथ राजनीतिक माँगें नहीं जोड़नी चाहिए।''

विद्रोही और लौहपुरुष समझे जानेवाले राष्ट्रीय स्तर के नेता सरदार वल्लभभाई पटेल से भी नौसैनिक विद्रोहियों को बहुत आशाएँ थीं; पर उन्होंने भी विद्रोहियों की भर्त्सना यह कहकर कर दी—

''बेमतलब की बात में टाँग अड़ानेवाले चंद उतावले लोग।''

महात्मा गांधी ने भी नौसेना विद्रोह को जो फतवा दिया, वह था—

''कुछ गुंडों का उत्पात।''

जिन राष्ट्रीय नेताओं के बल पर विद्रोही नौसैनिकों ने अपने अधिकारियों से संधिवार्त्ता करने से इनकार कर दिया था, उन्हींकी ओर से उन्हें घोर निराशा मिली। वे बार-बार एक ही बात कह रहे थे—

''इस समय हमारे बीच सुभाषचंद्र बोस जैसा मर्द नेता होना चाहिए था।''

अपने नेताओं की ओर से निराश होने पर भी विद्रोही नौसैनिक अपनी बगावत का झंडा बुलंद किए हुए थे। उस दिन अर्थात् २० फरवरी को भी 'तलवार' क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र बना हुआ था। सभी बैरकों के लोग बिगुल आह्वान की अनसुनी करके 'तलवार' की ओर जा रहे थे।

क्रांतिकारियों के लिए उस दिन का शुभ संदेश था कि पुलिस और वायुसेना ने उनके समर्थन में हड़ताल कर दी। कहीं कोई काम नहीं हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ति के दिन आ पहुँचे हैं।

'तलवार' पर जब क्रांतिकारियों की मीटिंग प्रारंभ हुई तो कई मुद्दे उछाले गए। हड़ताल समिति के अध्यक्ष श्री एम.एस. खान ने कहा—

''हमारा संघर्ष उस समय तक जारी रहेगा, जब तक हमारी माँगें पूरी नहीं हो जातीं। हमें अपने बल पर लड़ना है और एकता बनाए रखनी है।''

एक अन्य विद्रोही ने अपना असंतोष व्यक्त करते हुए कहा—

''पिछले वर्षों से अधिकारी लोग हमारे साथ ऐसा बरताव कर रहे हैं जैसे हम आदमी नहीं, कुत्ते हों। यद्यपि हमारी माँगें अपनी नौकरी के संबंध में हैं, लेकिन हमारा असली मुद्दा देश की आजादी है। हमें आई.एन.ए. के बंदियों की रिहाई के लिए विशेष जोर लगाना है।''

एक अन्य क्रांतिकारी ने मुद्दा उठाते हुए कहा—

''हम संघर्ष के मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं और हमें लड़ते हुए अपनी मंजिल की तरफ पहुँचना है। हमें किसी भी स्थिति में ब्रिटिश अधिकारियों के सामने समर्पण नहीं करना है; चाहे हमें अपने जीवन की आहुतियाँ ही क्यों न देना पड़ें!''

किसी अन्य ने अपने विचार इस प्रकार रखे—

''जब हम अपने गोरे साहबों से अपनी स्वतंत्रता के लिए युद्ध कर रहे हैं तो हमारे ही भाइयों को इंडोनेशिया के विरुद्ध इस्तेमाल किया जा रहा है। इसलिए बहुत आवश्यक है कि इंडोनेशिया से भारतीय सैन्य दल की वापसी शीघ्र हो।''

जिस समय 'तलवार' के सभाभवन में क्रांतिकारियों की यह मीटिंग चल रही थी, उसी समय नौसेना का एक अधिकारी बेहिचक वहाँ पहुँच गया। यह स्वाभाविक ही था कि क्रांतिकारियों का ध्यान उस अधिकारी की ओर जाता। वे सभी प्रश्नवाचक दृष्टि से उस अफसर की तरफ देखने लगे। सभी को कौतूहल और जिज्ञासा के साथ अपनी ओर देखते हुए उस अफसर ने कहा—

''मुझपर संदेह न कीजिए, मैं आप ही में से एक हूँ। मैंने सोचा कि मुझे आपके बीच होना चाहिए, इसलिए मैं आपके बीच आ गया हूँ। मेरे साथी अफसरों ने मुझे यहाँ आने से रोका भी था; पर मैंने उनकी बात न मानकर अपने विवेक की बात मानी और मैं यहाँ चला आया। मैं आप लोगों का साथ देने आया हूँ।''

अभी तक वह आगंतुक अफ़सर ही बोले जा रहा था। उसकी बातों पर किसीको विश्वास नहीं हो रहा था और सभी लोग संदेह की दृष्टि से उसे देखे जा रहे थे। उनके संदेह को दूर करने के लिए उसने फिर कहना प्रारंभ किया—

''मैं देख रहा हूँ कि आप लोगों को मुझपर विश्वास नहीं हो रहा है और आप सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ जासूसी करने आया हूँ; लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं ऐसे किसी मलिन उद्देश्य से नहीं आया हूँ, क्योंकि मैंने महसूस किया है कि आप लोगों का यह संघर्ष स्वतंत्रता के लिए किया जानेवाला संघर्ष है। लीजिए,

आप लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है तो मैं अपने पद के बिल्ले उतारे देता हूँ।''

यह कहते हुए उस अधिकारी ने अपनी वरदी पर लगे हुए अपने पद के बिल्ले उतारकर अपनी जेब में रख लिये और फिर बोला—

''अब मैं आप लोगों में से ही एक हूँ। हमारी लड़ाई अंग्रेजों के विरुद्ध है और हमें अनुशासनबद्ध रहकर उनसे यह लड़ाई लड़नी है। यदि उनसे लड़ाई लड़ने के लिए आप लोगों को एक नेता की आवश्यकता हो तो मैं आपको अपनी सेवाएँ देने के लिए तैयार हूँ।''

एक विद्रोही सैनिक ने उसकी बात सुनकर कहा—

''आपके यहाँ आगमन के लिए हम आपका स्वागत करते हैं; लेकिन हम आपको अपना नेता नहीं चुन सकते, क्योंकि हम लोग अपना नेता पहले ही चुन चुके हैं और हम अपने उसी नेता के निर्देशन में काम करेंगे।''

यह सुनते ही उस अफसर की आशाओं पर पानी फिर गया और उसका उफान ठंडा हो गया—''अच्छा, तो मैं चलता हूँ,'' कहकर वह उसी प्रकार वापस चला गया, जिस प्रकार आया था। क्रांतिकारियों ने समझ लिया कि वह नेता बनकर उन्हें गुमराह करने आया था।

जिस समय 'तलवार' के सभाकक्ष में क्रांतिकारियों की यह मीटिंग चल रही थी, उन्हें सड़कों पर होनेवाली नारेबाजी सुनाई दे रही थी। जो सैनिक टुकड़ियाँ तलवार की तरफ पहुँच रही थीं, वे विद्रोही नारे लगाती हुई और आजाद हिंद फौज का प्रयाण गीत गाते हुए बढ़ रही थीं। उनका तमाशा देखने के लिए लोग मकानों की छतों पर पहुँच गए थे और कुछ खिड़कियों एवं गवाक्षों में जमे हुए थे। उनके कानों में प्रयाण गीत के बोल गूँज रहे थे—

'कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा,
यह जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।'

इन सैनिक टुकड़ियों ने 'तलवार' पर पहुँचकर अपने विद्रोही साथियों को बताया कि हुकूमत ने हम लोगों पर फायरिंग करने के लिए फौज को बुला लिया है और किसी समय भी हम पर गोलियाँ चल सकती हैं। यह समाचार पाकर सभी लोग इन विचारों में डूब गए कि हम पर फायरिंग होने की दशा में हम लोगों को क्या करना है। एक विद्रोही जोर से चिल्लाया—

''हमें कुत्ते-बिल्लियों की तरह नहीं मरना है। हम मरेंगे, लेकिन मारकर मरेंगे। जब अंग्रेजों के लिए हम विदेशों में लड़े तो आज हम अपने देश के लिए लड़ेंगे।''

एक अन्य विद्रोही ने कड़ककर कहा—''भूखे पेट रहकर हड़ताल तो हो

सकती है, लेकिन भूखे पेट रहकर लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। यदि हमें लड़ाई लड़नी है, तो हमें भूख हड़ताल समाप्त करनी होगी।''

क्रांतिकारियों के सामने कठिनाई यह थी कि उनके पास पर्याप्त मात्रा में हथियार नहीं थे। हथियारों की कमी को पूरा करने के लिए कुछ लोगों ने फोर्ट बैरक के शस्त्रागार पर आक्रमण कर दिया और काफी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र लूट लिये। वे लोग बाकायदा युद्ध करके दो-दो हाथ दिखाने के लिए तैयार हो गए।

ब्रिटिश हुकूमत ने सचमुच ही फौज बुला ली थी और जहाँ-जहाँ विद्रोहियों का जमाव था, उन्हें घेर लिया गया था।

२१ फरवरी, १९४६

२१ फरवरी, १९४६ का दिन भयंकर युद्ध का दिन सिद्ध हुआ। युद्ध का प्रारंभ कैसल बैरक के विद्रोहियों पर मराठा गार्ड की गोलियों की बौछार से हुआ। अंग्रेजों ने कैसल बैरक का सर्वनाश करने के लिए मराठा गार्ड को वहाँ नियुक्त कर रखा था। उनके जासूसों ने उनको खबर दे दी थी कि कैसल बैरक के विद्रोहियों के पास गोला-बारूद का बहुत ब़ड़ा भंडार है और यदि उनको काबू में कर लिया गया तो विद्रोहियों की कमर टूट सकती है। अंग्रेज पायलटों द्वारा संचालित हवाई जहाज भी कैसल बैरक के ऊपर उड़ान भरने लगे। इस प्रकार के एक बमवर्षक वायुयान पर एक विद्रोही कर्मचारी विश्वनाथ बोस ने एंटी एयर क्राफ्टगन से निशाना भी साधा; लेकिन वे वायुयान उसकी मार के ऊपर उड़ रहे थे। राडार ऑपरेटर युगलदास शर्मा ने बमवर्षकों की गतिविधियों को नियंत्रित कर दिया।

जब मराठा गार्ड ने कैसल बैरक के विद्रोहियों पर फायरिंग प्रारंभ कर दी तो विद्रोहियों ने भी मोरचे सँभाल लिये और अपनी राइफलों से जवाबी फायरिंग प्रारंभ कर दी। यह युद्ध हिंदुस्तानी-हिंदुस्तानियों के बीच हो रहा था। दोनों ही पक्ष इस प्रकार गोलियाँ चला रहे थे कि कोई हताहत न हो। एक विद्रोही सैनिक ने युक्ति से काम लिया। वह छिपता हुआ ऐसे स्थल तक जा पहुँचा, जहाँ से ऊँची आवाज द्वारा वह मराठा गार्ड तक अपनी बात पहुँचा सकता था। उसने जोर से चिल्लाकर मराठा गार्ड के सैनिकों से कहा—

''भाइयो! हम अच्छे भोजन अथवा अपनी सुख-सुविधाओं के लिए नहीं लड़ रहे हैं। हमारा संघर्ष देश की स्वतंत्रता के लिए है। हम ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विनाश चाहते हैं। आप लोग भी हमारी तरह देश की संतान हैं। हम पर गोली चलाने के लिए आगे आनेवाली पीढ़ियाँ आपको माफ नहीं करेंगी।''

विद्रोहियों के इस उद्बोधन का असर हुआ और उनपर होनेवाली गोलियों

की बौछार थम गई। विद्रोहियों में हर्ष की हिलोर दौड़ गई। उन्होंने मराठा गार्ड के सैनिकों को गोलियाँ बंद करने के लिए धन्यवाद भी दिया। दोनों पक्ष बंदूकें ताने हुए थे; लेकिन गोलियाँ नहीं चल रही थीं। एक अंग्रेज अफसर ने मराठा गार्ड को तरेरते हुए गोलियाँ चलाने का हुक्म दिया। मराठा गार्ड के हवलदार ने उत्तर दिया—

''वे दिन गए, जब आप लोग हिंदुस्तानी-हिंदुस्तानी को लड़वाया करते थे। अब हम अपने ही भाइयों के खून से अपने हाथ नहीं रँगेंगे।''

अंग्रेज अफसर दाँत पीसकर रह गया। उसने मराठा गार्ड को वहाँ से हटने का आदेश दे दिया और उसके स्थान पर गोरे लोगों की एक पल्टन वहाँ नियुक्त कर दी।

कैसल बैरक के विद्रोही वीर प्रात:काल से ही युद्ध में संलग्न हो गए थे। वे भूखे पेट लड़ रहे थे; क्योंकि पिछले तीन दिन से वे भूख हड़ताल पर थे। उन्होंने रसोइयों में भोजन तैयार करने का आदेश दे दिया। भूखे पेट लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती थी। उन्होंने अपनी भूख हड़ताल तोड़ दी और जल्दी-जल्दी से खाना खाकर गोरी पल्टन के विरुद्ध मोरचा सँभाल लिया।

दोपहर ग्यारह बजे अंग्रेज सैनिकों ने कैसल बैरक के विद्रोही सैनिकों पर फायरिंग प्रारंभ कर दी। विद्रोही वीरों की बंदूकों से भी गोलियों की बौछारें छूटने लगीं।

कैसल बैरक के सिगनलरों ने अपने ऊपर हमले की सूचना अन्य केंद्रों को दे दी। उनकी मदद के लिए कुमुक भेजी जाने लगी। अब लड़ाई सड़कों पर भी प्रारंभ हो गई। कुछ टुकड़ियाँ कैसल बैरक के साथियों की मदद के लिए झपट रही थीं। उनपर गोरी पल्टनों ने फायरिंग प्रारंभ कर दिया। सड़कों पर भी दोनों पक्षों में युद्ध होने लगा। निहत्थे नागरिक लोग भी इस युद्ध में कूद पड़े। उनके पास हथियार नहीं थे। वे ईंट और पत्थर लेकर मकानों की छतों पर से अंग्रेज सैनिकों को निशाना बनाने लगे। उनपर भी गोलियाँ चलाई गईं।

सड़कों और छतों पर जमकर युद्ध हो रहा था। दोनों पक्ष के लोग हताहत हो रहे थे। यह पहला अवसर था, जब विदेशियों से मुकाबला करते हुए भारत की रक्षापंक्ति और नागरिकों का खून मिलकर बह रहा था।

अंग्रेज पल्टन इस दोहरी मार से विचलित होने लगी। उसने अब मिथ्या प्रचार के हथियार उठा लिये। अंग्रेज अफसरों ने विद्रोही सैनिकों और जनता के बीच फर्क पैदा करने के लिए यह अफवाह फैला दी कि विद्रोहियों ने नागरिक ठिकानों को नष्ट करने के लिए अपनी तोपों के मुँह उधर कर दिए हैं। विवश होकर विद्रोहियों को भी प्रचार की लड़ाई लड़नी पड़ी।

बंबई की जनता को यह खबर मिली कि विद्रोही नौसैनिकों को भूखों मारने

के लिए अंग्रेजों ने उनकी रसद के रास्ते रोक दिए हैं और उनके पास पीने का पानी भी नहीं पहुँचने दिया जा रहा है। अपने वीरों की सुरक्षा के लिए यह मोरचा भी जनता ने सँभाल लिया। विद्यार्थियों और मजदूरों ने इस मोरचे पर बहुत अच्छा काम किया। वे लोग भोजन और सूखे फलों के पैकेट लेकर समुद्र तट की ओर दौड़ने लगे। कुछ लोग पीने के पानी की बालटियाँ भर-भरकर समुद्र तट पर पहुँच रहे थे। उस दिन समुद्र तट के निकटवर्ती क्षेत्र में जितने भी होटल और फलों की दुकानें थीं, उन्होंने ग्राहकों को सामान बेचना बंद कर दिया और खुला ऐलान कर दिया कि हमारे यहाँ से खाने का सामान लेकर युद्धरत सैनिकों के पास पहुँचाओ। बंबई के भिखारी भी उत्साह में किसीसे पीछे नहीं रहे। वे अपनी संचित जमा-पूँजी निकालकर और भोजन सामग्री खरीदकर अपने विद्रोही वीरों को पहुँचाने के लिए लपक पड़े।

उधर जहाजों पर से किश्तियाँ किनारे तक आ रही थीं और उनपर भोजन सामग्री और पीने का पानी लाद-लादकर उन्हें वापस किया जा रहा था। अंग्रेजी पायलटों ने जब यह नजारा देखा तो उन्होंने इस प्रबंध में बाधा डालने का प्रयत्न किया; लेकिन तटरक्षक विद्रोहियों ने अपनी बंदूकों के बल से उनको पीछे खदेड़ दिया। विद्रोहियों के पास खाने-पीने की इतनी सामग्री भेज दी गई, जो उन्हें कई दिनों तक के लिए पर्याप्त थी।

खाने-पीने की सामग्री से निश्चिंत होकर विद्रोहियों ने फिर मोरचा सँभाल लिया। अंग्रेज पल्टन ने कई बार कैसल बैरक में घुसने का प्रयत्न किया; लेकिन उनके सभी हमले विफल कर दिए गए। बहुत देर तक दोनों ओर से छुटपुट गोलाबारी होती रही। विद्रोहियों को बताया गया कि 'रॉयल इंडियन नेवी' का फ्लैग ऑफीसर कमांडिंग स्वयं हड़ताल समिति के सदस्यों से बातचीत करने के लिए पहुँचने वाला है। वह स्वयं तो नहीं पहुँचा, लेकिन उसने कुछ भारतीय अफ़सरों को विद्रोहियों के पास भेजा। इन अफसरों और विद्रोहियों के बीच कोई सार्थक वार्त्ता नहीं हो सकी और उन्हें लौट जाना पड़ा।

२२ फरवरी, १९४६

२२ फरवरी, १९४६ को ब्रिटिश सैनिकों ने अपनी घेरेबंदी सुदृढ़ कर ली। विद्रोही सैनिकों के सभी ठिकानों को अंग्रेज पल्टनें घेरे हुए थीं।

विद्रोही नौसैनिकों को यह समाचार मिला कि विपुल युद्ध-सामग्री से लैस होकर एक बहुत बड़ा जहाजी बेड़ा उनके विद्रोह को कुचलने के लिए इंग्लैंड से प्रस्थान कर चुका है और उसे इस बात की चिंता नहीं होगी, भले ही संपूर्ण रॉयल इंडियन नेवी पूरी तरह से नष्ट क्यों न हो जाए।

अपनी इन धमकियों और प्रचार के अतिरिक्त ब्रिटिश हुकूमत ने भारत के राष्ट्रीय नेताओं को भी विवश किया कि वे अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके विद्रोहियों को समर्पण करने का परामर्श दें।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने विद्रोहियों को समझाया कि वे बिना शर्त समर्पण कर दें। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि क्रांति में भाग लेनेवाले किसी भी सैनिक को दंडित नहीं किया जाएगा और उनकी सभी न्यायपूर्ण माँगें स्वीकार कर ली जाएँगी।

मुसलिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना ने भी इसी प्रकार का परामर्श विद्रोहियों को दिया। विद्रोही नौसैनिकों का जो मनोबल अंग्रेज पल्टनों की गोलियों की बौछारों और शासन की धमकियों से नहीं डगमगा सका था, वह अपने ही राष्ट्र के नेताओं के परामर्श से डगमगा गया। सरदार वल्लभभाई पटेल का परामर्श था—

''जो वर्तमान दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियाँ निर्मित हुई हैं, उनको देखते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस शाही भारतीय नौसेना के सभी लोगों को परामर्श देती है कि बरतानिया हुकूमत की इच्छानुसार उन्हें आत्मसमर्पण की औपचारिकता का निर्वाह करना चाहिए। कांग्रेस इस बात का भरसक प्रयत्न करेगी कि विद्रोहियों को कोई हानि न पहुँच सके और उनकी सभी उचित माँगें स्वीकार कर ली जाएँ।''

मुहम्मद अली जिन्ना का कथन था—

''मैं रॉयल इंडियन नेवी के सभी लोगों से अपील करता हूँ कि वे उन लोगों के हाथों में न खेलें, जो अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए उन्हें हड़ताल के लिए भड़का रहे हैं। सभी से मेरा अनुरोध है कि वे सामान्य स्थिति के निर्माण के लिए हमें सहयोग दें। मेरा विश्वास है कि इससे उनका भला ही होगा। खासतौर से मुसलमान सैनिकों से मेरा अनुरोध है कि हालात को काबू में लाने के लिए कोई और बखेड़ा पैदा न करें।''

२३ फरवरी, १९४६

२३ फरवरी, १९४६ का दिन विद्रोहियों की पराजय का दिन था। युद्ध तो लगभग उन्होंने जीत लिया था, लेकिन वे राजनीति में हार गए। राष्ट्रीय नेताओं के परामर्श ने उनका मनोबल तोड़ दिया। समर्पण के प्रश्न को लेकर वे दो दलों में विभाजित हो गए। हड़ताल समिति के अध्यक्ष श्री एम.एस. खान का विचार था कि अब हमें बिना शर्त समर्पण कर देना चाहिए। इसके विपरीत उपाध्यक्ष श्री मदन सिंह और उनके अनुयायियों का विचार था कि समर्पण नहीं करना चाहिए, चाहे कितना ही बुरा परिणाम क्यों न हो! उनका कहना था कि हमें राष्ट्रीय नेताओं के परामर्श की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए; क्योंकि उन लोगों ने हमारे

लिए कुछ भी नहीं किया। जनता हमारे लिए अभी भी खून बहा रही है, इसीलिए हमें जनता के लिए लड़ना चाहिए।

आखिर विद्रोही लोग जीतकर भी हार गए। उन्हें बोझिल मन से समर्पण के लिए विवश होना पड़ा। अपने हौसले की बुलंदी से तिरंगे, हरे एवं लाल झंडे जो उन्होंने फहराए थे, वे उतार लिये गए और उनके स्थान पर काला झंडा फहरा दिया गया। समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए उन्होंने वक्तव्य जारी किया—

'केंद्रीय नौसैनिक हड़ताल समिति भारतीय जनता और विशेष रूप से बंबई की जनता को यह बताना चाहती है कि हमने हड़ताल वापस लेने का निर्णय ले लिया है। हमने हड़ताल तोड़ने का यह निर्णय सरदार वल्लभभाई पटेल के इस आश्वासन से प्रेरित होकर लिया है कि यह कांग्रेस का कर्तव्य होगा कि किसी भी नौसैनिक से बदला न लिया जाए और उनकी सभी न्यायोचित माँगें पूर्ण हों। यह जानकर कि कांग्रेस हमारे साथ है और मि. जिन्ना ने भी हमारे प्रति सहानुभूतिपूर्ण वक्तव्य दिया है, हमारी समिति ने हड़ताल वापस लेने का निर्णय लिया है।

'फिर भी यह समिति नौसेना प्रशासन, भारत सरकार, भारतीय जनता, सभी राजनीतिक दलों और विशेष रूप से सरदार वल्लभभाई पटेल एवं मि. जिन्ना को यह बताना चाहती है कि यदि हम लोगों से बदला लेने का प्रयत्न किया गया तो दुबारा हड़ताल प्रारंभ करने में हमें तनिक भी संकोच नहीं होगा।

'केंद्रीय नौसैनिक हड़ताल समिति फिर एक बार बंबई की जनता और विशेष रूप से विद्यार्थियों एवं श्रमिकों को बधाई तथा धन्यवाद देना चाहती है कि हड़ताल के दिनों में उन्होंने हमारा साथ दिया है। उनके इस सहयोग ने हमें यह विश्वास करने की प्रेरणा दी है कि हमारा कदम उचित और न्यायपूर्ण था।

'इस संघर्ष में जिन सैकड़ों निर्दोष स्त्री-पुरुषों ने, ब्रिटिश फौज की गोलियों के शिकार होकर, अपने जीवन का बलिदान किया है, उनके प्रति शोक प्रदर्शित करने में हम लोग भी जनता के साथ हैं। इस शर्मनाक कृत्य और बंबई की जनता को रक्त-स्नात कराने के लिए यह समिति अपनी पूरी चेतना एवं शक्ति के साथ फौज और भारत सरकार की भर्त्सना करती है।

'अंत में, हम अपनी प्यारी-प्यारी जनता से कहना चाहेंगे—हम हर्षित हैं, गर्वित हैं और आप लोगों के प्रति कृतज्ञ हैं कि आप लोग संकट की इस घड़ी में हमारे साथ रहे। इस कांड में जो जीवनहानि हुई है, उसके लिए हमें दुःख है। यदि हज़ारों की संख्या में आकर आप लोगों ने हमारा साथ न दिया होता तो हमारे सारे प्रयत्न और हमारे सारे कार्य खून की गहराइयों में डूब जाते। हम जानते हैं कि अधिकारी लोग अब भी हमसे बदला लेने और हमें दंडित करने का प्रयत्न करेंगे। यदि ऐसा हुआ

तो हम फिर संघर्ष करेंगे और हम चाहेंगे कि आप भी संघर्ष के लिए तैयार रहें और यही बात हम सरदार वल्लभभाई पटेल तथा मि. जिन्ना से कहना चाहेंगे।

'हमारी हड़ताल हमारे राष्ट्र के जीवन में एक ऐतिहासिक घटना बनकर रह गई है। यह पहला अवसर था, जब एक उद्देश्य के लिए भारत की जनता और सैनिकों का खून सड़कों पर मिलकर बहा है। हम सैनिक लोग इस तथ्य को कभी नहीं भूलेंगे, और हमारे प्यारे भाइयो और बहनो! हमारा विश्वास है कि आप लोग भी इसे नहीं भूल सकेंगे।

'हमारी महान् भारतीय जनता चिरजीवी हो!

जयहिंद!

बंबई, २३ फरवरी, १९४६ केंद्रीय नौसैनिक हड़ताल समिति।'

□

★ अकबर शाह ★ भगतराम

विचाराधीन प्रश्न यह था कि अंग्रेजों के जासूसों और पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर जब सुभाषचंद्र बोस अपने कलकत्ता स्थित घर से निकलकर पेशावर पहुँच जाएँ, तो उन्हें पेशावर से काबुल तक कौन पहुँचाए? पेशावर से अफगानिस्तान तक पहुँचने के लिए सरहद को पार करना आवश्यक था और सीमांत प्रांत होने के कारण वहाँ अंग्रेजी साम्राज्य की चौकियाँ भी थीं तथा जासूस भी विशेष रूप से सक्रिय रहते थे। सरहद के विभिन्न कबीलों में आपस में ठनी रहती थी और उनमें गोलियों का आदान-प्रदान भी होता रहता था, अतः ऐसा सहायक आवश्यक था, जो—

१. सीमा प्रांत के रास्तों से परिचित हो।

२. सीमा प्रांत के रहन-सहन से भलीभाँति परिचित हो।

३. पश्तो भाषा बोलता हो।

४. सीमा प्रांत के कबीलों के सरदारों से मिला हुआ हो।

५. सब तरह से भरोसेमंद और सूझबूझवाला हो।

ये सब बातें केवल एक व्यक्ति में दिखाई दीं और वह व्यक्ति था कॉमरेड भगतराम।

कॉमरेड भगतराम उस समय सीमा प्रांत के अपने गाँव 'खेल्लाडेर' में रह रहे थे। पहले वे 'किरती-किसान पार्टी' के सदस्य थे और इस समय फॉरवर्ड

ब्लॉक के सक्रिय सदस्य थे, जिसकी स्थापना सुभाषचंद्र बोस ने की थी।

कॉमरेड भगतराम के परिवार में देशभक्ति और बलिदान की परंपराएँ थीं। उनके बड़े भाई हरिकिशन ने पंजाब के गवर्नर पर गोली चलाकर फाँसी का फंदा चूमा था। अतः उस समय सभी तरह से सुभाषचंद्र बोस के सहायक और पथदर्शक होने की योग्यताएँ भगतराम में थीं। स्वयं सुभाषचंद्र बोस ने उनके नाम को सहर्ष स्वीकृति दे दी।

मौलवी के रूप में सुभाषचंद्र बोस अपने घर से निकले और गोमोह से उन्होंने पेशावर जानेवाली गाड़ी पकड़ी। २० जनवरी, १९४१ को उनकी ट्रेन पेशावर के सिटी स्टेशन पर रुकी। फॉरवर्ड ब्लॉक के एक नेता अकबर शाह प्लेटफॉर्म पर दिखाई दिए। परिचित होने पर भी तथा श्री सुभाष को पहचान लेने पर भी, वे उनसे नहीं मिले। जब गाड़ी चलने लगी तो अकबर शाह एक अन्य डिब्बे में सवार हो गए। अगला स्टेशन पेशावर का छावनी स्टेशन था। वहीं सुभाषचंद्र बोस को उतरना था। वे गाड़ी से उतरे और फाटक की ओर चल दिए। उनसे पहले अकबर शाह उतरकर फाटक की ओर चल दिए थे। कुछ फासला रखकर सुभाषचंद्र बोस उनके पीछे-पीछे हो लिये। अकबर शाह फाटक के बाहर निकल गए। एक ताँगेवाले से बातचीत करके वे आगे बढ़ गए। सुभाष भी उस ताँगेवाले के पास पहुँचे, जिससे अकबर शाह ने बात की थी। उस ताँगेवाले के साथ सुभाष चल दिए और 'ताजमहल' होटल पहुँच गए। कुछ देर बाद 'ताजमहल' होटल में अकबर शाह भी पहुँच गए और उन्होंने सुभाषचंद्र बोस को सारी व्यवस्थाओं से परिचित करा दिया। उन्होंने उनकी मुलाकात भगतराम से भी करा दी, जो अफगानिस्तान तक उनके साथ जाने वाले थे।

'रहमत खाँ' के नाम से भगतराम सुभाषचंद्र बोस के साथ हो लिये। सुभाषचंद्र बोस पश्तो भाषा नहीं जानते थे, अतः उन्हें गूँगा होने का अभिनय करना पड़ा। मार्ग की अकथनीय कठिनाइयों का सामना करते हुए वे दोनों आखिर काबुल पहुँच गए। वहाँ वे एक धर्मशाला में ठहरे। धर्मशाला में वे दोनों एक जासूस के चक्कर में पड़ गए। रिश्वत दे-दिलाकर भगतराम ने उस जासूस से छुटकारा पाया और अपने ठहरने का स्थान बदल दिया। लगभग चालीस दिन तक भगतराम सुभाषचंद्र बोस के साथ काबुल ठहरे और उनके बर्लिन प्रवास के लिए भी उन्होंने बहुत जोड़-तोड़ किया। आखिर वह समय भी आ गया, जब संकट के दिनों के अपने साथी भगतराम से बिदा लेकर सुभाषचंद्र जर्मनी की राजधानी बर्लिन जा पहुँचे। इस जोखिम से पूर्ण यात्रा में अकबर शाह और भगतराम—दोनों क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस के बहुत काम आए।

□

★ लेफ्टिनेंट अजायबसिंह

आजाद हिंद फौज द्वारा पलेल हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के पश्चात् शत्रु सेना बहुत सक्रिय हो गई और आजाद हिंद फौज की चौकियों पर जब-तब आक्रमण करने लगी। उसे पता चल गया था कि आजाद हिंद फौज के सैनिकों की संख्या अधिक नहीं है और उसके पास पर्याप्त युद्ध-सामग्री भी नहीं है, इस कारण वह उसे दबोच लेना चाहती थी।

उस क्षेत्र में 'सी फोर्थ हाईलैंडर्स' नाम की एक स्कॉटिश सेना थी, जिसने अपनी कारगुजारी दिखाने के लिए एक बार माईथून खूनो में स्थित आजाद हिंद फौज की एक अग्रिम कंपनी पर भारी तोपखाने के साथ भयंकर आक्रमण कर दिया। आजाद हिंद फौज की इस कंपनी का नेतृत्व से. ले. अजायबसिंह नाम का एक नवयुवक कर रहा था, जो हाल ही में सिंगापुर स्थित 'ऑफीसर्स ट्रेनिंग स्कूल' से फौजी प्रशिक्षण प्राप्त करके युद्ध के मोरचे पर आया था। ले. अजायबसिंह के पास अनुभवी नियमित सैनिकों के स्थान पर दक्षिण भारत के तमिलभाषी सैनिकों का दल था। अंग्रेज लोग दक्षिण भारत के इन लोगों को कभी अपनी सेना में भरती नहीं करते थे; क्योंकि वे उन्हें 'युद्धप्रिय' लोग न समझकर 'शांतिप्रिय' लोगों की संज्ञा देते थे।

दोनों ओर के सैनिक हथेलियों पर जान रखकर लड़ते रहे। आक्रमण स्कॉटिश सेना ने किया था, इसलिए वह पराजित होकर नहीं लौटना चाहती थी। उसे यह भी पता था कि उसका मुकाबला आजाद हिंद फौज से है, इसलिए अपनी पूरी शक्ति के साथ वह युद्ध कर रही थी। इधर 'गांधी ब्रिगेड' के इस दल को गोरे सैनिकों के साथ युद्ध करने का यह पहला अवसर था, इसलिए उन्हें देखते ही उनका खून खौल उठा। गोरे सैनिक लड़ते-लड़ते गांधी ब्रिगेड के सैनिकों की खाइयो के बिलकुल निकट पहुँच गए; पर उन्हें मारकर भगा दिया गया। उन्होंने जितनी बार खाइयों के निकट पहुँचने का प्रयत्न किया, उतनी बार उन्हें मारकर भगा दिया गया। अंत में अपनी संख्या कम होते देखकर गोरे सैनिकों ने आक्रमण करने का इरादा छोड़ दिया और अपने शिविर की ओर लौट गए।

ले. अजायबसिंह की युद्ध की इच्छा अभी पूरी नहीं हुई थी। अभी तो उसका खून गरम ही हुआ था। वह गोरे सैनिकों के मिथ्या जातीय गर्व को चूर-चूर कर देना चाहता था। ज्यों ही स्कॉटिश सेना मार खाकर पीछे हटी, ले. अजायबसिंह ने अपने दल के साथ खाइयों से निकलकर स्कॉटिश सेना के शिविर पर धावा बोल

दिया। स्कॉटिश सेना के जो सैनिक धराशायी हुए थे और जो घायल अवस्था में पड़े थे, उन सबके हथियार छीनकर ले. अजायबसिंह के सैनिक टूट पड़े। अब स्कॉटिश सेना खाइयों में थी और आजाद हिंद फौज बाहर। ले. अजायब सिंह ने चुनौती के स्वर में स्कॉटिश सेना को ललकारा—

''मर्द के बच्चे हो तो कँटीले तारों का दड़बा छोड़कर बाहर आ जाओ और नेताजी के सैनिकों के साथ दो-दो हाथ करो, नहीं तो चूड़ियाँ पहन लो और दया की भीख माँगो।''

गोरे सैनिक इन व्यंग्य बाणों को सुनकर तिलमिला गए और बाहर निकल पड़े। दोनों सेनाओं में जमकर युद्ध हुआ। ले. अजायबसिंह के सैनिकों ने गोरे सैनिकों पर उन्हींसे छीने गए हथगोलों और राइफलों का प्रयोग किया। संध्या समय तक लड़ाई चलती रही। लगभग पचास गोरे सैनिक हताहत हुए; जबकि ले. अजायबसिंह के केवल दस सैनिक ही हताहत हुए। इस प्रकार ले. अजायबसिंह ने गोरे सैनिकों को बता दिया कि आजाद हिंद फौज से उलझने के पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए।

□

★ कर्नल अजीज अहमद ★ कर्नल अरशद ★ कर्नल ठाकुरसिंह ★ कर्नल एन.एस. भगत ★ कर्नल प्रेमकुमार सहगल ★ मेजर रावत ★ मेजर जनरल शहनवाज खाँ

आजाद हिंद फौज का नं. १ डिवीजन कई मोरचों पर अपनी बहादुरी दिखा चुका था। उसने कई महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर अधिकार करके अंग्रेजी सेनाओं को पीछे खदेड़ा था। इंफाल के अभियान और वापसी के क्रम में नं. १ डिवीजन की शक्ति काफी घट गई थी। इसलिए नए अभियान के लिए नए डिवीजन की आवश्यकता का अनुभव किया गया।

नं. २ डिवीजन का निर्माण दिसंबर १९४३ में सिंगापुर में किया गया था और कर्नल एन.एस. भगत को उसका कमांडर बनाया गया था; पर बाद में इस व्यवस्था में कुछ परिवर्तन कर दिया गया। इस नए डिवीजन में नं. १ रेजीमेंट, भारी तोपों के

कर्नल प्रेमकुमार सहगल

मेजर जनरल शहनवाज खाँ

बटालियन, बख्तरबंद गाड़ियों के बटालियन, सिगनल डिवीजन और इंजीनियरिंग डिवीजन सम्मिलित थे। इस डिवीजन को विशेष रूप से छापामार युद्ध के लिए सुसज्जित किया गया था। अप्रैल १९४४ में यह डिवीजन इपोह पहुँचा और नवंबर १९४४ में उसका मुख्यालय रंगून पहुँच गया। आंतरिक गड़बड़ के कारण नेताजी को इसमें कुछ परिवर्तन करने पड़े। कर्नल एन.एस. भगत के स्थान पर कर्नल अजीज अहमद को नं. २ डिवीजन का कमांडर नियुक्त किया गया। कर्नल अजीज अहमद पहले नं. १ डिवीजन के 'नेहरू ब्रिगेड' के कमांडर थे। नेहरू ब्रिगेड को नं. २ डिवीजन में मिला दिया गया। कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन को नेहरू ब्रिगेड का कमांडर नियुक्त किया गया और मेजर महमूद अहमद को नेताजी का सैन्य सचिव नियुक्त किया गया।

नेताजी युद्ध के अग्रिम मोरचे पर

जैसाकि कहा जा चुका है, सैनिक और सेनानायक तो एक-एक मोरचे पर लड़ रहे थे, जहाँ उन्हें तैनात किया गया था; पर नेताजी अनेक मोरचों पर अकेले लड़ रहे थे। कभी नागरिक मोरचे पर वे प्रबंध करते हुए दिखाई देते थे तो कभी सैनिक मोरचों पर उपस्थित होकर उनका निरीक्षण करते या युद्ध में उन्हें प्रवृत्त करते। अभी कुछ दिन पूर्व सिंगापुर में नेताजी का तुलादान हुआ था। तुलादान में उन्हें अपने वजन के बराबर सोना प्राप्त हुआ था; पर तुलादान के पश्चात् भी वह क्रम रुका नहीं और उन्हें अपने वजन से दुगुना सोना प्राप्त हो गया। इसके अतिरिक्त सिंगापुर निवासियों ने उन्हें दवाइयाँ और अन्य अनेक उपकरण भी भेंट में दिए। यह सारी तैयारी नेताजी ने अपनी फौज को दुबारा युद्धभूमि में भेजने के लिए की थी।

नं. १ डिवीजन के कुछ दल पहले से ही मोरचे पर थे। अब नं. २ डिवीजन भी मोरचे पर पहुँच गया। इन दोनों का निरीक्षण करने के लिए नेताजी स्वयं अग्रिम मोरचों पर जाकर उपस्थित हो गए।

१८ फरवरी, १९४५ को नेताजी पिनमना पहुँच गए, जहाँ उन्हें नं. १ डिवीजन का निरीक्षण करना था। नं. १ डिवीजन के सैनिक अभी भी बीमारी से उबरे नहीं थे और लग रहा था जैसे यह डिवीजन कुछ दिन और मोरचे पर नहीं जा सकेगा। नेताजी को क्यांक-पादंग और पोपा में नं. २ डिवीजन का निरीक्षण भी करना था।

अभी तक मेजर जनरल शहनवाज खाँ नं. १ डिवीजन के कमांडर थे और वे इंफाल के घेरे में भाग ले चुके थे। नेताजी ने अब उन्हें नं. २ डिवीजन की कमान सँभालने का आदेश दिया। अभी तक कर्नल अजीज अहमद नं. २ डिवीजन की कमान सँभाल रहे थे, पर मोरचे की ओर बढ़ने के क्रम में शत्रु की बमवर्षा के कारण वे घायल हो गए थे।

नेताजी ने पिनमना से मीकतिला और पोपा की ओर प्रस्थान किया। उनके साथ अपना निजी दल तथा मेजर जनरल शहनवाज खाँ भी थे। २० फरवरी को यह दल मीकतिला से बीस मील दूर 'इंदव' नामक स्थान पर पहुँचा और दिन का विश्राम वहाँ किया। उनके लिए दिन में यात्रा करना असंभव था, क्योंकि शत्रु पक्ष के वायुयान दिन-भर बमवर्षा करते थे। रात में भी अपनी गाड़ियों की बत्तियाँ बुझाकर उन्हें अपना रास्ता तय करना पड़ता था; क्योंकि जलती हुई बत्तियों को देखकर गाड़ियों पर बम गिराए जाने का खतरा रहता था।

जिस समय नेताजी का दल 'इंदव' गाँव में विश्राम कर रहा था, उन्हें समाचार मिला कि शत्रु सेनाओं ने पाकोकू के निकट न्यांगू और पागन क्षेत्र में आजाद हिंद फौज के घेरे को तोड़ दिया और वे तेजी से मीकतिला की ओर बढ़ रही हैं। यह समाचार भी मिला कि इस युद्ध में भारी संख्या में आजाद हिंद फौज के सैनिक हताहत हुए हैं।

जब नेताजी ने सुना कि अंग्रेजी सेना मीकतिला की ओर बढ़ रही है तो उन्होंने स्वयं मीकतिला पहुँचने का निश्चय किया। उस समय सामरिक दृष्टि से मीकतिला का महत्त्व बहुत अधिक था और संचार सुविधाओं पर नियंत्रण रखने की दृष्टि से वहाँ जापानी सेना तथा आजाद हिंद फौज का जमाव था। इस सामरिक महत्त्व के स्थान पर अंग्रेजी सेना अधिकार कर लेना चाहती थी और इसीलिए तेजी से वह उस ओर बढ़ रही थी। नेताजी भी अंग्रेजी सेना के मंतव्यों को विफल करना चाहते थे, इसलिए वे शत्रु सेना के पहुँचने के पहले ही वहाँ पहुँचना चाहते थे। वे अपने छोटे से दल के साथ २० फरवरी की शाम को मीकतिला पहुँच गए। नेताजी

के इस दल में मेजर जनरल शहनवाज खाँ, निजी सैन्य सचिव मेजर महमूद अहमद और एक जापानी दुभाषिए के अतिरिक्त बीस सशस्त्र सैनिक थे।

इस समय तक युद्ध की स्थिति लगभग पलट चुकी थी और सभी क्षेत्रों में अंग्रेजी सेना का दबाव बढ़ रहा था। ऐसी स्थिति में नेताजी का मीकतिला में रहना उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा की दृष्टि से बहुत खतरनाक था। अंग्रेजी सेनाओं का पलड़ा भारी हो गया था और जापानी सेनाओं को निरंतर पीछे हटना पड़ रहा था। १ जनवरी, १९४५ को अंग्रेजी सेना ने अकियाब पर अधिकार कर लिया। जापानी सेनाओं को मांडले के मैदानी क्षेत्रों में अंग्रेजी टैंक सेना ने घेर लिया था और क्षति उठाकर जापानी सेनाओं को मेम्यो की ओर पलायन करना पड़ रहा था। अंग्रेजी फौज इस बात का प्रयत्न कर रही थी कि यह मांडले-मीकतिला-रंगून रोड पर अधिकार कर ले और इस प्रकार सारे बर्मा से जापानियों को खदेड़कर उसपर पुनः अधिकार कर ले। मीकतिला के पश्चिम में कई स्थानों पर अंग्रेजी सेना ने इरावदी नदी पार कर ली थी और मिनस्याम, पाकोकू, न्यांगू तथा पागन स्थानों पर आजाद हिंद फौज के साथ उनकी घमासान लड़ाई हुई थी। अंग्रेजी सेना मीकतिला में घुसने का प्रयत्न कर रही थी; क्योंकि वह जानती थी कि यदि मीकतिला पर उसने अधिकार कर लिया तो रंगून पर अधिकार करना आसान हो जाएगा। इन स्थितियों को देखते हुए नेताजी का मीकतिला में रहना बहुत ही खतरनाक था। किंतु वे इस खतरे को मोल ले चुके थे और मीकतिला न छोड़ने की जिद पर अड़े हुए थे।

नेताजी के साथी दल ने उन्हें इस बात के लिए बहुत प्रेरित किया कि वे शीघ्रातिशीघ्र मीकतिला से अन्यत्र चले जाएँ और पोपा जाने का विचार तो बिलकुल ही त्याग दें, जहाँ भयंकर लड़ाई छिड़ी हुई थी। नेताजी टस-से-मस होने के लिए तैयार नहीं थे; पर उन्हें एक बात के लिए राजी कर लिया गया कि पहले मेजर जनरल शहनवाज खाँ जाकर पोपा की स्थिति देख आएँ, तब नेताजी को वहाँ ले जाया जाए। यह भी निश्चित हुआ कि इस बीच नेताजी कालेवा के सैनिक अस्पताल का निरीक्षण कर लें।

मेजर जनरल शहनवाज खाँ और नेताजी के सैन्य सचिव मेजर महमूद २१ फरवरी, १९४५ की रात को मीकतिला से पोपा की ओर चल दिए। क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी हैं और युद्ध का संचालन किस प्रकार करना है, ये बातें नेताजी ने उन्हें समझा दीं। उन दिनों युद्धों की स्थिति को देखते हुए लगभग स्पष्ट हो गया था कि जापान की जीत की संभावना नष्ट हो चुकी है; पर फिर भी नेताजी को निराशा ने नहीं घेरा था। उनका आशावाद अपनी पूर्व आभा के साथ चमक रहा था और उनका विश्वास था कि जापान के परास्त होने के बाद भी हम अपनी आजादी

की लड़ाई जारी रख सकते हैं। हमारी विजय निश्चित है। उनका कहना था कि हमारी जितनी भी फौज बचे, वह इस प्रकार युद्ध करे कि एक-एक सैनिक लड़ते-लड़ते शहीद हो जाए और आनेवाली शताब्दियाँ हमारी वीरता तथा हमारे बलिदानों को याद करें। नेताजी के साथियों ने भी नेताजी के आदर्शों और उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप आश्वासन दिया।

मेजर जनरल शहनवाज खाँ और मेजर महमूद अहमद २२ फरवरी को सुबह पाँच बजे क्यांक-पादंग पहुँचे और वहाँ वे कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन से मिले, जो नं. ४ रेजीमेंट के कमांडर थे। संभावित स्थितियों पर चर्चा करने के पश्चात् यह दल आगे बढ़ा और पोपा पहुँचकर कर्नल प्रेमकुमार सहगल से मिला। प्रेमकुमार सहगल नं. २ इन्फैंट्री रेजीमेंट के कमांडर थे। कर्नल सहगल से आवश्यक विचार-विमर्श करने के पश्चात् मेजर जनरल शहनवाज खाँ और मेजर महमूद अहमद २५ फरवरी को मीकतिला वापस पहुँच गए और उन्होंने पूरी स्थिति से नेताजी को परिचित कराया।

नेताजी मरने-मारने पर उतारू

मेजर जनरल शहनवाज खाँ पोपा इसलिए गए थे कि लौटकर वे नेताजी को बताएँ कि उनका पोपा जाना ठीक था या नहीं। उन्होंने नेताजी को सूचना दी कि पोपा में जापानी शक्ति क्षीण हो चुकी है और शीघ्र ही वह क्षेत्र जापानियों के हाथों से निकलने वाला है; क्योंकि वहाँ अंग्रेजों ने अपनी पूरी ताकत लगा रखी है।

नेताजी और उनके दल में यह विचार-विनिमय २५ फरवरी की रात को खुले मैदान में चल रहा था। आधी रात से ऊपर व्यतीत हो चुकी थी और चाँदनी रात में बैठे हुए ये लोग भावी योजना की रूपरेखा खींच रहे थे। वह स्थान भी निरापद नहीं था। केवल कुछ मील के फासले पर अंग्रेजी तोपें गोले दाग रही थीं और तोपों का गर्जन-तर्जन साफ़ सुनाई दे रहा था। तोपों से निकलनेवाली ज्वालाओं की कौंध बिजली चमकने जैसा दृश्य उपस्थित कर रही थी। सभी लोग इस खतरे का अनुभव कर रहे थे कि अंग्रेजी टैंक वहाँ किसी भी समय पहुँच सकते हैं, या तो उन्हें मौत के घाट उतार सकते हैं या जीवित गिरफ्तार कर सकते हैं। नेताजी का अस्तित्व समाप्त कर देना या उन्हें जीवित गिरफ्तार कर लेना उनके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होती।

समस्या यह थी कि नेताजी पोपा जाना चाहते थे और उनका दल उनसे न जाने का अनुरोध कर रहा था। मेजर जनरल शहनवाज खाँ, मेजर रावत और मेजर महमूद अहमद—सभी अपने-अपने ढंग से तर्क दे रहे थे; पर नेताजी पोपा जाने की

जिद पर अड़े हुए थे। इसी समय इन लोगों के पास भागा-भागा एक जापानी अधिकारी पहुँचा और उसने बताया कि अंग्रेजी टैंक एवं बख्तरबंद गाड़ियों के दस्ते ने जापानी घेरा तोड़ दिया है तथा पिनबिन पर अधिकार कर लेने के बाद वह दस्ता टोंगथा की ओर बढ़ रहा है, जो मीकतिला से लगभग चालीस मील उत्तर-पश्चिम में है। उस जापानी अफसर ने नेताजी को यह परामर्श भी दिया कि सुबह होने के पहले ही उन्हें मीकतिला छोड़कर पिनमना के दक्षिण मोरचे की ओर चले जाना चाहिए, जहाँ आजाद हिंद फौज के नं. १ डिवीजन के कुछ दस्ते तैनात थे और संकट के समय नेताजी की रक्षा के लिए वे अपनी जान भी झोंक सकते थे।

नेताजी ने आसन्न खतरे का अनुभव स्वयं किया। वे मीकतिला छोड़ने को तैयार थे; पर पिनमना जाकर आश्रय लेने के स्थान पर पोपा जाना चाहते थे, जहाँ लड़ाई चल रही थी। उनके साथी दल ने उन्हें समझाया कि अंग्रेजी बख्तरबंद गाड़ियों के लिए चालीस मील का फासला कोई फासला नहीं था और यह फासला अधिक-से-अधिक दो घंटे में तय किया जा सकता था। अंग्रेजी सेना का अवरोध करने के लिए टोंगथा और मीकतिला के बीच न तो जापानी सेना थी और न आजाद हिंद फौज। नेताजी के साथ उनका रक्षक दल था। उसमें केवल बीस सैनिक थे और उनके पास सामान्य राइफलें ही थीं, जो बख्तरबंद गाड़ियों में लदी हुई तोपों का सामना करने में सर्वथा असमर्थ थीं। इस सब खतरे का आभास कराते हुए नेताजी से अनुरोध किया गया कि वे पोपा जाने का विचार छोड़ दें; पर नेताजी ने किसी एक की भी नहीं सुनी। जब मेजर जनरल शहनवाज खाँ ने देखा कि नेताजी अपनी जिद नहीं छोड़ रहे हैं, तो उन्होंने दृढ़ता से काम लिया और साहस बटोरकर नेताजी से ऐसी बात कह दी, जो चुभनेवाली थी, पर अपनी जगह ठीक थी। उन्होंने कहा—

"नेताजी! इस समय आप बहुत स्वार्थी हो रहे हैं। केवल अपनी व्यक्तिगत वीरता प्रदर्शित करने के लिए आप अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं। लेकिन इस तरह अपनी जान जोखिम में डालने का आपको कोई अधिकार नहीं है। अब स्वयं अपने जीवन पर आपका अधिकार नहीं है। आपका जीवन राष्ट्र की अमूल्य निधि बन चुका है और इस समय वह हमारे संरक्षण में है। मैं ऐसी कोई बात नहीं होने दूँगा, जिससे भारत की यह अमूल्य निधि खतरे में पड़ जाए। नेताजी, जरा सोचिए कि यदि आपको कुछ हो गया तो आजाद हिंद फौज और आजाद हिंद आंदोलन का क्या होगा?"

नेताजी ने मेजर जनरल शहनवाज खाँ की यह बात सुनी और उन्होंने अनुभव किया कि जो कुछ कहा गया है, वह उनके एक शुभचिंतक द्वारा उनकी भलाई के लिए ही कहा गया है। नेताजी ने गंभीरतापूर्वक सोचा कि यदि स्थिति

सामान्य होती तो वे अपने एक सहयोगी की बात रखने के लिए बड़ा खतरा भी मोल ले सकते थे; पर इस समय वे बात को न मानकर खतरा मोल लेने पर तुले हुए थे। यदि हम यहाँ स्थिति का तनिक भी विश्लेषण करें कि पोपा पहुँचने के आग्रह में वीरता प्रदर्शन की भावना नहीं, पर यह भावना अवश्य थी कि उनके पोपा पहुँच जाने से आजाद हिंद फौज के जवानों में नई आशा और नए उत्साह का संचार हो जाएगा तथा उस निर्णायक मोरचे पर वे अपनी पूरी शक्ति लगाकर लड़ सकेंगे। नेताजी जानते थे कि यदि वे पोपा पहुँच जाएँगे तो आजाद हिंद फौज की स्थिति में फर्क अवश्य पड़ेगा और यदि उस मोरचे पर उन्हें विजय मिल जाती है, तो पासा पलटने की आशा की जा सकती है। इसलिए नेताजी पर इस चुभती हुई बात का भी कोई असर नहीं हुआ और वे केवल मुसकरा-भर दिए। वे बोले—

''शहनवाज! मुझसे बहस करने से कोई फायदा नहीं। मैंने पोपा जाने का निश्चय कर लिया है और मैं वहाँ जा रहा हूँ। तुम्हें मेरी सुरक्षा के लिए चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि इंग्लैंड अभी वह बम नहीं बना पाया है, जो सुभाषचंद्र बोस के प्राण ले सके।''

इसे हम नेताजी का आत्मबल कहें या उनपर ईश्वर की कृपा, उनके प्राण लेने के हर प्रयत्न में इंग्लैंड को असफलता मिल रही थी। नेताजी जब जर्मनी (बर्लिन) में एक भवन में रह रहे थे, तब एक अंग्रेज लड़की ने उनके मकान पर बम फेंका था। उस समय भी नेताजी बाल-बाल बच गए थे और बम प्रहार के परिणामस्वरूप मकान का एक हिस्सा गिर गया था। पूर्व एशिया के युद्ध-प्रांगण में तो आएदिन ही ब्रिटिश बमवर्षक उनके सिर पर मँडराया करते थे और उनपर बम फेंका करते थे; पर कभी उनको खरोंच भी नहीं आई थी। एक बार नेताजी रानी झाँसी रेजीमेंट की परेड का निरीक्षण कर रहे थे कि ब्रिटिश बमवर्षक आए और उनके सिर पर मँडराने लगे। उनके साथियों ने 'नेताजी भागिए! नेताजी भागिए!' की आवाजें भी लगाईं; पर नेताजी क्यों भागने लगे। हवाई जहाजों के समूह ने पहले चक्कर में कुछ बम नेताजी पर गिराए, पर सौभाग्यवश किसीको चोट नहीं पहुँची। हवाई जहाजों ने दूसरा चक्कर लगाया और फिर कुछ बम छोड़े। एक बम के प्रहार से रानी झाँसी रेजीमेंट की एक वीरांगना उसी स्थल पर शहीद हो गई। फिर भी नेताजी ने भागने का नाम नहीं लिया और यह देखकर उनके साथियों में से कोई भी नहीं भागा। शत्रु बमवर्षक पीछा किए जाने के भय से स्वयं ही भाग खड़े हुए। जब परेड पूरी हो गई तो नेताजी सिंह जैसी मस्तानी चाल से चलते हुए शहीद वीरांगना के शव के पास पहुँचे और उसके प्रति सम्मान तथा श्रद्धा व्यक्त करके उसके संस्कार के आयोजन में लग गए।

अपने जीवन-भर नेताजी ने अपने जीवन के प्रति इसी प्रकार की निश्चिंतता का प्रदर्शन किया।

जिस दिन नेताजी ने यह बात कही थी कि अंग्रेजी बम उनके प्राण नहीं ले सकते, उस दिन भी ब्रिटिश बमवर्षकों ने भारी बमवर्षा की थी और जिस झोंपड़ी में वे ठहरे हुए थे, वहाँ आसपास सभी ओर इतने बम गिरे थे कि खाइयाँ जैसी खुद गई थीं; पर नेताजी की झोंपड़ी का एक तिनका भी नहीं झुलसा था।

नेताजी ने पोपा पहुँचने का अपना निश्चय अंतिम रूप से प्रकट कर दिया था। अब तो उनके साथियों के पास उन्हें फुसलाने का कोई उपाय शेष नहीं था। जब सब लोग निराश हो गए तो अचानक नेताजी के एक साथी मेजर रावत को एक युक्ति सूझी। उस समय रात के दो बज चुके थे। मेजर रावत जानते थे कि बमवर्षा के कारण यात्रा दिन में नहीं की जा सकती थी, इसलिए उन्होंने रात्रि के दो-तीन घंटे निकालने के लिए दो उपाय किए—

१. मेजर रावत को एक बहुत जरूरी कागज टाइप करने के लिए नेताजी ने दिया था। मेजर रावत बहुत धीरे-धीरे उसे टाइप करके समय गुजारने लगे।
२. मेजर रावत ने नेताजी के कार ड्राइवर को भी इशारा कर दिया और कार में कुछ खराबी के बहाने वह उसकी जाँच-पड़ताल में लगकर समय निकालने लगा।

नेताजी झुँझला-झुँझला पड़ते थे; पर किया क्या जा सकता था! इस प्रकार सुबह के साढ़े पाँच बज गए और जाने का समय टल गया। आखिर नेताजी के साथियों ने उन्हें इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे कुछ घंटे नींद ले लें। पास ही की एक झोंपड़ी में नेताजी विश्राम करने के लिए चले गए और जापानी अफसर मेजर तकाशी स्थिति की ताजा खबर लाने के लिए चल दिए।

सुबह के आठ बज चुके थे। नेताजी अभी सो ही रहे थे कि जापानी अफसर मेजर तकाशी दौड़े-दौड़े आए और उन्होंने समाचार दिया कि शत्रु सेना की बख्तरबंद गाड़ियाँ मीकतिला के उत्तर में महालेंग तक पहुँच चुकी हैं। जहाँ नेताजी ठहरे हुए थे, उस स्थान से महालेंग केवल दस मील के फासले पर था और केवल कुछ ही मिनटों में यह फासला तय करके अंग्रेजी सेना मीकतिला पहुँच सकती थी; क्योंकि उसका रास्ता रोकने के लिए न तो जापानी फौज ही वहाँ थी और न आजाद हिंद फौज। यह भी समाचार मिला कि अंग्रेजी सेना ने मीकतिला से मांडले और मीकतिला से क्यांक-पादंग जानेवाली सड़कें काट डाली हैं। जापानी मेजर ने यह भी बताया कि अंग्रेजी सेना मीकतिला की ओर शीघ्र ही कूच करने की तैयारी में है

और यदि कुछ मिनटों के अंदर मीकतिला न छोड़ा गया तो वे सबके सब या तो मारे जाएँगे या पकड़ लिये जाएँगे।

खतरा बहुत बड़ा था। यदि शीघ्र ही वे मीकतिला नहीं छोड़ते तो कुछ ही मिनटों में अंग्रेजी सेना पहुँच जाती और फिर किसीका जीवन सुरक्षित नहीं था; क्योंकि केवल बीस राइफलधारी सैनिक बख्तरबंद गाड़ियोंवाली विशाल अंग्रेजी सेना का मुकाबला कैसे करते। यदि वे मीकतिला छोड़ने का निर्णय लेते तो उन्हें दिन में कार से सफर करना पड़ता। सड़कें काट डाली गई थीं और दिन में शत्रु पक्ष के बमवर्षक अपने शिकार की खोज में मँडराने लगते थे। उनके सामने केवल दो ही विकल्प थे—

१. वे मीकतिला में ही रहते और शत्रु सेना से युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त करते।

२. मीकतिला से किसी सुरक्षित स्थान की ओर तत्काल बढ़ जाते।

एक-एक मिनट भारी पड़ रहा था। नेताजी ने तत्काल निर्णय लिया कि हम लोग सड़क के रास्ते ही अंग्रेजी घेरे को तोड़कर आगे बढ़ें और यदि घेरा तोड़कर निकल जाने में हमें सफलता मिल जाती है तो अच्छा ही है, अन्यथा हम शत्रु सेना से संघर्ष करते हुए शहीद की मृत्यु का वरण करेंगे। निर्णय सभी को अच्छा लगा और केवल दस मिनट के अंदर ही तैयार होकर वे चलने को सन्नद्ध हो गए।

नेताजी के दल के सामने अब एक समस्या थी। उन लोगों के पास केवल एक ही कार थी और उस दल में कुल पचीस व्यक्ति थे। कार के अंदर केवल चार व्यक्तियों के लिए बैठने का स्थान था। कौन से चार व्यक्ति कार के अंदर बैठकर जाएँ, इसका त्वरित निर्णय नेताजी को ही देना था; क्योंकि विचार-विमर्श और बहस-मुबाहिसे के लिए समय नहीं था। नेताजी ने अपने साथ अपने निजी डॉक्टर कर्नल राजू को लिया। तीसरा स्थान उन्होंने जापानी संपर्क अधिकारी को दिया और चौथे स्थान के लिए उन्होंने मेजर जनरल शहनवाज खाँ को चुना। कार के अंदर हथगोले तथा अन्य युद्ध-सामग्री भर ली गई। शेष दल को मीकतिला में ही रुकने का आदेश दिया। नेताजी की कार चल पड़ी।

कार के अंदर बैठे हुए सभी व्यक्ति यद्यपि प्रसन्न मुद्रा में थे, पर स्थिति की गंभीरता के कारण सभी मौन थे। कोई किसीसे बोल नहीं रहा था। सभी के मन में एक जैसे ही विचार उठ रहे थे कि शायद आज जीवन का अंतिम दिन है। या तो बमवर्षा से या लड़ते-लड़ते हमें वीरगति प्राप्त करनी है। कार में ड्राइवर की सीट के पास कर्नल राजू बैठे थे और वे दोनों हाथों में एक-एक हथगोला लिये हुए थे। वे बहुत सतर्क होकर सामने देखते जा रहे थे कि कहीं सड़क कटी हुई तो नहीं है

या कार रोकने के लिए अवरोध उत्पन्न तो नहीं किया गया है। जापानी संपर्क अधिकारी आधा कार के अंदर और आधा कार के बाहर था। उसके हाथ में टॉमीगन थी। दूसरा पैर वह फुटबोर्ड पर रखे हुए बार-बार झाँक रहा था कि कहीं शत्रु के वायुयान टोह तो नहीं ले रहे। ऐसा करना इसलिए आवश्यक था, क्योंकि कार की आवाज के कारण अंदर बैठे हुए व्यक्ति को हवाई जहाज की आवाज सुनाई नहीं दे सकती थी। पिछली सीट पर एक ओर नेताजी बैठे हुए थे और उनकी गोद में भरी हुई टॉमीगन तैयार थी। नेताजी के पास ही मेजर जनरल शहनवाज खाँ बैठे हुए थे और उनके पास भी भरी हुई ब्रेनगन थी। ये दोनों भी अपनी-अपनी खिड़कियों से बाहर झाँकते जा रहे थे कि कहीं कोई घात लगाए तो नहीं बैठा है। कार आगे बढ़ रही थी और सभी के मन में कई प्रकार के विचार आ-जा रहे थे।

चलने के पहले वे यह निश्चित करके चले थे कि उन्हें सबसे पहले 'इंदव' ग्राम पहुँचना है, जो मीकतिला से बीस मील दक्षिण में था। इसे उनका सौभाग्य कहा जाए या कोई चमत्कार कि बीस मील का यह फासला उन्होंने चालीस मिनट में तय कर लिया और इस बीच उनकी गाड़ी को न तो कहीं रोका गया और न कहीं शत्रु के वायुयान ही दिखाई दिए। जैसे ही वे 'इंदव' पहुँचे कि पाँच मिनट पश्चात् ही शत्रु के बमवर्षक गाँव के ऊपर मँडराकर भयंकर बमवर्षा करने लगे। ऐसा लगता था जैसे उन्हें वहाँ नेताजी की उपस्थिति का पता चल गया था। तभी तो वे घात लगाकर उस गाँव पर मशीनगनों से गोलियों की बौछारों-पर-बौछारें छोड़ रहे थे। गाँव पर कई वायुयान मँडरा रहे थे। एक-एक वायुयान में बारह-बारह मशीनगनें लदी हुई थीं और वे दस इंच लंबे कारतूसों का प्रयोग कर रही थीं। इस प्रकार के कारतूसों का उपयोग टैंक, रेल के इंजन या बख्तरबंद गाड़ियाँ तोड़ने के लिए ही किया जाता है। आजाद हिंद फौज के सैनिकों पर इन कारतूसों का उपयोग करते हुए ब्रिटिश विमानों को तनिक भी संकोच नहीं होता था।

कुछ समय तक गोलियों की वर्षा करके ब्रिटिश विमानों का वह दस्ता बिदा हो गया। नेताजी के दल ने निश्चय किया कि शत्रु विमान फिर भी आ सकते हैं, इसलिए गाँव में रहना ठीक नहीं। सभी ने जंगल का रास्ता पकड़ा और कैक्टस के एक कुंज के निकट शरण ली। वे अभी वहाँ पहुँचे ही थे कि एक अपरिचित बर्मी वहाँ पहुँचा और उस स्थान को ध्यान से देखने के पश्चात् चला गया। बात यह थी कि आगे बढ़ती हुई अंग्रेजी सेनाएँ गाँव के लोगों से जासूसी का काम ले रही थीं और यह पहचानना कठिन था कि कौन व्यक्ति जासूस है, कौन नहीं। जब यह बर्मी व्यक्ति नेताजी के छिपने का ठिकाना देखकर चला गया, तो उन्होंने यह उचित समझा कि उस स्थान को छोड़ दिया जाय। वे शीघ्र ही वह स्थान छोड़कर एक मील

दूर घने जंगल में चले गए। थोड़ी देर बाद ही उन्होंने देखा कि दो ब्रिटिश वायुयान उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ नेताजी पहले छिपे थे और जहाँ वह बर्मी उन्हें देख गया था। वे दोनों वायुयान बहुत नीचे उड़कर झाड़ियों की खोज कर रहे थे।

दिन-भर नेताजी और उनके साथी जंगल में छिपे रहे और दिन-भर शत्रु के वायुयान वृक्षों की ऊँचाई के बराबर उड़कर उनकी खोज करते रहे; पर वे उनकी खोज नहीं कर सके। एक बार तो बहुत संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। जिस खाई में नेताजी और मेजर शहनवाज खाँ बैठे हुए थे, वहीं नेताजी की गरदन के बिलकुल निकट ही एक बहुत बड़ा और भयंकर काला बिच्छू धीरे-धीरे सरक रहा था। वे न तो भाग सकते थे और न बिच्छू को मार सकते थे, क्योंकि ठीक उसी समय उनके सिर के बिलकुल ऊपर शत्रु के विमान मँडरा रहे थे। जब विमान दूर चले गए, तब उस बिच्छू को मारा गया।

जैसे ही संध्या हुई, नेताजी ने यह विचार प्रकट किया कि वे मीकतिला वापस जाना चाहते हैं; क्योंकि उनके रक्षक दल के जो बीस सैनिक रह गए थे, उनकी सुरक्षा का प्रबंध आवश्यक था। नेताजी का यह प्रस्ताव खतरे से खाली नहीं था, क्योंकि यात्रा में भी खतरा था और मीकतिला पहुँच जाने पर और बड़ा खतरा था। यह अनुमान था कि वहाँ अंग्रेजी सेना पहुँच गई होगी और भयंकर लड़ाई चल रही होगी। अपने सैनिकों को बचाने के लिए नेताजी यह खतरा मोल लेने के लिए तैयार थे। अंत में यह तय हुआ कि मेजर जनरल शहनवाज खाँ मीकतिला जाएँ और नेताजी वह स्थान छोड़कर पिनमा पहुँच जाएँ। यही किया गया।

२६ फरवरी की रात्रि को दस बजे मेजर जनरल शहनवाज खाँ मीकतिला पहुँच गए। उस समय वहाँ अंग्रेजी सेना और जापानी सेना में लड़ाई चल रही थी। मेजर जनरल शहनवाज खाँ ने युक्ति से नेताजी के रक्षक दल को सुरक्षापूर्वक निकाल दिया। उन्हें पता चला कि जापानी सैनिकों को भी मीकतिला खाली करने के आदेश दे दिए गए हैं। वहाँ जापानियों का एक सैनिक अस्पताल भी था, जहाँ कई रोगी और घायल पड़े हुए उपचार करा रहे थे। लड़ाई चल रही थी। उन्हें लादकर ले जाने के लिए कोई साधन नहीं था। जापानी फौजी कमान ने अपने एक अफसर को निर्देशित किया कि जो जापानी सैनिक बीमार या घायल होने के कारण पैदल चलने में असमर्थ हों, उन्हें गोली मार दी जाए। सैनिक हाई कमान के इस आदेश का पालन किया गया और बीमारों एवं घायलों को मौत के घाट उतारकर जापानी सेना मीकतिला छोड़कर चली गई।

इस समय नेताजी पिनमा में थे। उन्हें इस बात की पूरी आशंका थी कि मीकतिला के पतन के पश्चात् शत्रु पिनमा और टौंगू पर आक्रमण करेगा, इसलिए

उस आक्रमण से निबटने के लिए नेताजी ने एक योजना बना रखी थी। उनकी योजना थी कि नं. १ डिवीजन के बचे हुए लोगों को लेकर 'एक्स' नाम का एक नया रेजीमेंट तैयार कर लिया जाए और वे स्वयं तथा यह नया रेजीमेंट कोई अच्छी स्थिति लेकर शत्रु सेना का मुकाबला करे और वे सबके सब लड़ते हुए वीरगति प्राप्त करें। घायलों और बीमारों के लिए उनका आदेश था कि यदि सुरक्षापूर्वक उन्हें निकलने में सफलता न मिले तो वे शत्रु के हाथों समर्पण कर दें; पर 'एक्स' रेजीमेंट का प्रत्येक सिपाही लड़ते-लड़ते मारा जाए। नेताजी ने स्वयं भी लड़ते-लड़ते जान देने की ठान ली थी और उन्होंने कहा था कि यह मेरी आखिरी लड़ाई होगी।

नेताजी की इस नई योजना के अनुसार नं. १ डिवीजन के शेष बचे हुए सैनिकों एवं अफसरों में से 'एक्स' रेजीमेंट तैयार किया गया और कर्नल ठाकुर सिंह को उसका कमांडर नियुक्त किया गया। कर्नल ठाकुरसिंह मणिपुर आक्रमण के समय मेजर जनरल शहनवाज खाँ के सहयोगी रह चुके थे और वे बहुत बहादुर अफसर माने जाते थे। नं. १ डिवीजन के जो शेष व्यक्ति बचे, उस दल का कमांडर कर्नल अरशद को बनाया गया। नेताजी की इच्छा की यहाँ तक तो पूर्ति की गई और उन्हें आश्वासन दिया गया कि नया रेजीमेंट भारत की वीरता की परंपराओं का पूरा-पूरा पालन करेगा; पर साथ ही सभी ने उनसे यह आग्रह किया कि वे रंगून पहुँच जाएँ और वहीं से सभी डिवीजनों का संचालन करते रहें। इधर रंगून स्थित जापानी फौजी कमान से भी नेताजी को संदेश मिल रहे थे, जिनके द्वारा आवश्यक परामर्श के लिए उनसे रंगून पहुँचने की प्रार्थना की जा रही थी। आवश्यक निर्देश देकर नेताजी कुछ चुने हुए साथियों के साथ रंगून पहुँच गए।

□

★ अता मोहम्मद

अता मोहम्मद आजाद हिंद फौज में मलाया में भरती हुए थे और जासूसी विभाग में रहकर उन्होंने अच्छा काम किया था। इसी कार्य से उन्हें भारत भेजा गया कि वे भारतीय क्रांतिकारियों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी गतिविधियाँ तेज करके आंतरिक अशांति उत्पन्न करने की प्रेरणा दें। उन्होंने अपना काम सफलतापूर्वक कर दिया; लेकिन लौटने के क्रम में वे गिरफ्तार हो गए। उन्हें भयानक यातनाएँ दी गईं और मुकदमा चलाकर फाँसी के फंदे पर झुला दिया गया।

□

★ अप्पाराव पाटिल

अप्पाराव पाटिल

अप्पाराव पाटिल ने हैदराबाद राज्य की पुलिस और रजाकारों के संयुक्त हमलों को कई बार विफल किया और शत्रु पक्ष को भारी हानि के साथ पीछे हटाया। अप्पाराव पाटिल दिलेर युवक था और उसकी मोरचाबंदी बड़ी सुदृढ़ हुआ करती थी। एक बार उसने आक्रमणकारियों पर ऐसा घेरा डाला कि उन्हें लेने के देने पड़ गए।

इसी प्रकार के एक युद्ध में अप्पाराव पाटिल गोलियों से घायल हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

अप्पाराव पाटिल का जन्म गुलबर्गा जिले के 'महागाँव' नाम के ग्राम में १४ जनवरी, १९२४ को हुआ था। उसके पिता का नाम श्री शरनप्पामाली पाटिल और माता का नाम श्रीमती अंबाबाई था।

□

★ कर्नल अमरबहादुर सिंह

वह क्षण कर्नल अमरबहादुर सिंह के जीवन में बहुत रोमांचक था, जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने उन्हें अपने सामने बुलाया। कर्नल अमरबहादुर सिंह सोच नहीं पा रहे थे कि आखिर नेताजी ने उन्हें क्यों बुलाया है। उनका मन शंकित भी था कि कहीं मुझसे कोई गलती तो नहीं हुई, अथवा किसीने मेरी शिकायत तो नहीं की। लेकिन उनको विश्वास था कि ऐसा कुछ भी मुझसे नहीं हुआ और भयभीत होने की कोई बात प्रतीत नहीं होती। एक सैनिक अफसर के पूरे सम्मान के साथ वे नेताजी के सम्मुख जा उपस्थित हुए। नेताजी का पहला वाक्य था—''कर्नल अमर बहादुर! मुझे तुम्हारे अच्छे काम की रिपोर्ट मिली है। मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूँ।''

''मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ, नेताजी! मैं तो अपने कर्तव्य का पालन

करता रहा हूँ।''

कर्नल अमरबहादुर सिंह

''इस समय मैंने तुम्हें इसलिए याद किया है, कर्नल, कि अपने अफसरों को अच्छे प्रशिक्षण के साथ-साथ, उनमें अपने देश के प्रति निष्ठा, त्याग और बलिदान की भावना भरने की आवश्यकता है। देश के प्रति बलिदान-भावना ही सैनिक का सबसे बड़ा हथियार है।''

''आपने जो कहा है, मैं उसे जानता हूँ, नेताजी, लेकिन अब इस दिशा में और भी अधिक प्रयत्न करूँगा। अवकाश के समय हम उन्हें भारतीय वीरों एवं बलिदानियों की कहानियाँ सुनाते रहते हैं और वीरभावों से ओत-प्रोत कविताएँ भी हम उन्हें सुनाते रहते हैं। प्रयाण गीत तो हमारे वीरों में जोश की लहर उत्पन्न करते रहते हैं।''

''हाँ-हाँ! तुम यह सब बहुत ठीक कर रहे हो। अपने गौरवशाली अतीत और उसकी परंपराओं का ज्ञान भी उन्हें कराना आवश्यक है। हमारे साथ कठिनाई यह है कि हम लोग युद्धरत हैं और इस समय हमारे पास इस प्रकार का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। फिर भी तुम अपने मौखिक ज्ञान से इस अभाव की पूर्ति कर सकते हो। मुझे तुमसे यही कहना था।''

और कर्नल अमरबहादुर सिंह इतने प्रसन्न थे मानो नेताजी ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें वीरता के तमगों से अलंकृत किया हो।

□

★ बाबा अमरसिंह

बाबा अमरसिंह का कथन था—

''अंग्रेज न तो हमारे मित्र हैं और न रिश्तेदार। वे हमारे देश के दुश्मन हैं। दुश्मन को दबोचने का कोई भी मौका हमें अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। प्रथम विश्वयुद्ध के रूप में अपने दुश्मन अंग्रेज को दबोचने का एक अच्छा अवसर हमें हाथ लगा है। इस अवसर का पूरा लाभ हमको उठा लेना चाहिए। इस युद्ध में

उनकी सहायता करने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।''

इस विचारधारा और उनके शासन विरोधी कार्यों के कारण ब्रिटिश सरकार ने बाबा अमरसिंह को बाईस वर्ष की जेल का उपहार देकर बर्मा की जेल में रखा।

बाबा अमरसिंह ने अपनी क्षमताओं का करिश्मा दिखाया और वे बर्मा की जेल तोड़कर भाग निकले। बर्मा से भागकर वे थाईलैंड पहुँचे और वहाँ उन्होंने अपना कारोबार स्थापित कर लिया।

थाईलैंड में रहते हुए बाबा अमरसिंह ने क्रांतिकारी गतिविधियों का जाल बिछा दिया। भारत की आजादी के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहे। उन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अपने सुयोग्य शिष्यों का एक दल खड़ा कर लिया। उनके शिष्यों में सरदार प्रीतमसिंह का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

□

★ सेकेंड लेफ्टिनेंट अमरसिंह
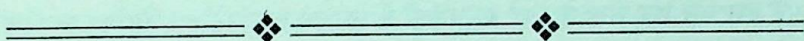
आजाद हिंद फौज के अधिकार में 'अब्बा' नामक स्थान पर एक फौजी चौकी थी, जिसकी रक्षा का भार से. ले. अमरसिंह के ऊपर था। इस चौकी पर अंग्रेजी सेना के दाँत थे और वह उसपर अधिकार कर लेना चाहती थी। उसने अपने गुप्तचर भेजकर यह पता लगा लिया कि अब्बा चौकी पर आजाद हिंद फौज के सैनिकों की संख्या बीस से अधिक नहीं है। उन्होंने सोचा कि तगड़ा हमला करके इतने कम सैनिकों को मार भगाना और उनसे चौकी छीन लेना कोई मुश्किल काम नहीं है।

एक दिन प्रात:काल आठ बजे अंग्रेजी सेना के एक सौ पचास सैनिकों के एक सुसज्जित दल ने आजाद हिंद फौज की चौकी पर तगड़ा हमला बोल दिया। एक तरफ केवल बीस सैनिक और दूसरी तरफ एक सौ पचास सैनिकों का सुसज्जित दल। अंग्रेजी सेना के पास स्वचालित हथियारों के अतिरिक्त भारी-भारी तोपें तथा किलेबंदी को तोड़नेवाले मॉरटार भी थे; जबकि आजाद हिंद फौज के सैनिकों के पास केवल साधारण राइफलें तथा कुछ मशीनगनें ही थीं और उनके पास युद्ध-सामग्री भी बहुत कम थी। यदि वे अधिक देर तक युद्ध करते तो उनकी युद्ध-सामग्री समाप्त हो सकती थी।

अंग्रेजी सेना ने जब चौकी पर आक्रमण किया तो आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने उसका कोई प्रतिरोध नहीं किया और उनको निकट आ जाने दिया। जब शत्रु सैनिक अत्यंत निकट आ गए तो आजाद हिंद फौज के जवान बाज की तरह

उनपर झपट पड़े और उनपर गोलियों की वर्षा प्रारंभ कर दी। अंग्रेजी सेना ने इस प्रकार के अप्रत्याशित अवरोध की कल्पना नहीं की थी और देखते-ही-देखते उसके कई सैनिक धराशायी हो गए। अंग्रेजी सेना पीठ दिखाकर भाग खड़ी हुई।

अपनी हार का बदला लेने के लिए अंग्रेजी सेना ने दोपहर के समय एक और जोरदार हमला किया। इस बार पहले उसने अपनी तोपों से गोलों की वर्षा की और उसने चौकी के चारों ओर धुएँ के बादल उठानेवाले गोले छोड़े, जिसके कारण चौकी के चारों ओर धुएँ की दीवार खड़ी हो गई और उसकी आड़ में अंग्रेजी सेना चौकी के बिलकुल निकट पहुँच गई। इस बार भी आजाद हिंद फौज के जवानों ने दूने जोश के साथ उनके हमले का सामना किया और चौकी के आसपास अंग्रेजी सेना के सैनिकों की लाशें बिछा दीं। शत्रु को दूसरी बार भी पीठ दिखानी पड़ी।

शत्रु सेना ने तो निश्चय-सा कर लिया था कि आज आजाद हिंद फौज के सैनिकों को कुचलना है और इसलिए दो बार मुँह की खाकर, तीसरी बार संध्या समय उन्होंने पहले से भी अधिक भयंकर हमला किया। सैनिकों के आक्रमण के पूर्व इस बार शत्रु सेना के छह बमवर्षकों ने लगभग एक घंटे तक भयंकर बमवर्षा की और पूरे क्षेत्र की धज्जियाँ उड़ा दीं। इसके पश्चात् उन विमानों ने मशीनगनों से आजाद हिंद फौज के सैनिकों की खाइयों को लक्ष्य करके गोलियों की धुआँधार वर्षा की। उसने मशीनगनों से आजाद हिंद फौज के सैनिकों पर बीस मिलीमीटर आकार की गोलियाँ छोड़ीं, जो टैंकों या भारी-भारी युद्ध वाहनों को नष्ट करने के लिए छोड़ी जाती हैं। उन्होंने सर्वनाश का बीड़ा उठाया था और सोचा था कि इस बमवर्षा और गोलीवषा के पश्चात् आजाद हिंद फौज का एक भी सैनिक जीवित नहीं बचेगा। लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। उस भयंकर अग्निवर्षा से आजाद हिंद फौज का केवल एक ही सैनिक मरा और शेष अपनी खाइयों में दुबके रहे और उनके आसपास ही गोले एवं गोलियाँ बरसते रहे। अंग्रेजी सेना ने समझ लिया कि आजाद हिंद फौज के सभी सैनिक मारे गए और बड़ी निर्भीकता के साथ उनकी सैनिक चौकी पर कब्ना कर लेने के लिए आगे बढ़े। ज्यों ही वे खाइयों के निकट पहुँचे, खाइयों में से उचककर आजाद हिंद फौज के जवानों ने उनपर अचूक गोलियों की वर्षा प्रारंभ कर दी। शत्रु सेना को लगा जैसे भूत उठ खड़े हुए हों। उसके सैनिक पटापट-पटापट धराशाही होने लगे। उनसे भागने के सिवाय और कुछ नहीं बना और बहुत बड़ी संख्या में वे अपने सैनिकों की लाशें छोड़कर भाग खड़े हुए।

अब्बा चौकी से कुछ मील दूर पर ही आजाद हिंद फौज का मुख्य शिविर था, जिसका नेतृत्व कैप्टेन सूरजमल्ल कर रहे थे। जब उन्होंने चौकी की दिशा में

शत्रु विमानों द्वारा बमवर्षा की आवाज और गोलियों की दनादन सुनी तो वे समझ गए कि चौकी पर शत्रु ने भयंकर आक्रमण कर दिया है। उन्हें ज्ञात था कि चौकी पर आजाद हिंद फौज के जवान अधिक नहीं हैं। तनिक भी समय बरबाद किए बिना वे पचास जवानों के साथ सहायता के लिए चौकी की ओर झपट पड़े। देखते-ही-देखते वे चौकी पर पहुँच गए; पर उनके पहुँचने के पूर्व ही शत्रु सेना पीठ दिखाकर भाग चुकी थी और भारी संख्या में उसके सैनिकों की लाशें वहाँ पड़ी हुई थीं; जबकि आजाद हिंद फौज का केवल एक ही सैनिक खेत रहा था। कैप्टेन सूरजमल्ल का वक्ष गर्व से फूल गया। उन्होंने देखा कि चौकी के रक्षक सैनिकों का हौसला बहुत बढ़ा हुआ था।

कैप्टेन सूरजमल्ल को इस बात से संतोष नहीं हुआ कि भारी संख्या में हताहत छोड़कर शत्रु पीठ दिखाकर भाग चुका है। वे तो उस उद्दंडता का मजा चखाकर उसकी कमर तोड़ना चाहते थे, जिससे वह आजाद हिंद फौज पर फिर से आक्रमण करने का साहस न करे। अपने साथ लाए हुए पचास सैनिकों को लेकर वे शत्रु के मुख्य शिविर की ओर बढ़ चले, जो कुछ मील के फासले पर ही था। अँधेरा हो चुका था। शत्रु शिविर के निकट पहुँचने कें पश्चात् धरती पर सरक-सरककर वे शत्रु शिविर की ओर बढ़ने लगे। बिलकुल निकट पहुँचकर 'जयहिंद' और 'नेताजी की जय' के गगनभेदी घोष के साथ उन्होंने शत्रु पर भयंकर आक्रमण कर दिया। शत्रु सेना हतप्रभ रह गई। वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि कोई उसपर आक्रमण करेगा। आक्रमण इतना आकस्मिक और भयंकर था कि शत्रु सेना को जिधर रास्ता मिला, उधर भाग खड़ी हुई। आजाद हिंद फौज ने शत्रु की खाद्य-सामग्री और युद्ध-सामग्री पर कब्जा कर लिया और उसे वह अपने साथ ले गई। शत्रु सेना पर कैप्टेन सूरजमल्ल का इतना आतंक छा गया कि बहुत दिन तक उसने आजाद हिंद फौज पर आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं किया। सचमुच कैप्टेन सूरजमल्ल ने शत्रु सेना की कमर तोड़ दी।

मेजर पी.एस. रतूरी आधार शिविर में रसद और युद्ध-सामग्री भिजवाने की व्यवस्था की देख-रेख कर रहे थे। उन्हें जब इस युद्ध के समाचार मिले तो उन्होंने कैप्टेन सूरजमल्ल और से. ले. अमरसिंह को बधाई संदेश भेजे। मेजर पी.एस. रतूरी अपने सैनिकों को जल मार्ग और पहाड़ी मार्ग द्वारा युद्ध-सामग्री वितरण का प्रशिक्षण दे रहे थे। जापानी व्यवस्था पर वे निर्भर नहीं रहना चाहते थे; क्योंकि आवश्यकता के समय जापानी लोग हाथ ऊँचे कर देते थे और आजाद हिंद फौज को रसद संबंधी भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

□

★ अमरसिंह ★ अर्जुनसिंह ★ अली अकबर
★ अली खाँ ★ अली खान ★ इस्मत उल्ला
★ उम्मेदसिंह ★ कालूराम ★ खान बख्श
★ गुरमुखसिंह ★ चंदासिंह ★ दरियावसिंह
★ दीदारसिंह ★ नमेरे पांडू ★ पी.पी. आनंदन
★ फतेह अली ★ बन्नेसिंह ★ मोहम्मद असलम
★ मोहम्मद यूसुफ ★ रब खान
★ लक्ष्मण आवंकर ★ लाल खान
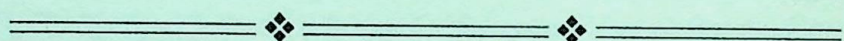
पाँच महीने तक हॉलैंड में तट रक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के पश्चात् आजाद हिंद फौज को फ्रांस के तट पर पहुँचने का आदेश मिला। यह परिवर्तन कई कारणों से आवश्यक था। एक ही स्थान पर रहते हुए सेना को उस प्रदेश से और वहाँ के लोगों से मोह उत्पन्न हो जाता है। प्रत्येक स्थान की अपनी-अपनी पृथक् विशेषताएँ भी होती हैं और इन विशेषताओं से परिचित होना भी एक प्रकार की शिक्षा है।

आजाद हिंद फौज को बेल्जियम होकर फ्रांस पहुँचना पड़ा। सैनिकों को सुरक्षापूर्वक अपने शस्त्रों को लादने-उतारने का काम स्वयं ही करना पड़ा और उन्होंने बड़ी तत्परता, कुशलता और फुरती के साथ यह काम किया। उनकी गति ऐसी तेज थी जैसे वे युद्धस्थल में काम कर रहे हों।

फ्रांस की भूमि पर आजाद हिंद फौज का पड़ाव लैकेनो क्षेत्र में डाला गया। इस क्षेत्र की जलवायु अच्छी थी।

समूचे लंबे तट पर आजाद हिंद फौज की कंपनियाँ स्थापित कर दी गईं और तेजी के साथ उनको तट रक्षा का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। तट रक्षण के लिए यह आवश्यक होता है कि सेना के तीनों दस्ते—स्थलसेना, जलसेना और नभसेना पारस्परिक सहयोग से काम करें। आजाद हिंद फौज को इन तीनों दस्तों के रूप में काम करने और सीखने का अवसर मिला।

जर्मन सेनाओं ने महत्त्वपूर्ण बंदरगाहों और सैनिक महत्त्व के तटवर्ती क्षेत्रों

में समुद्री तोपखाने लगा दिए थे। इन समुद्री तोपखानों पर भी भारतीय सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था। इसी प्रकार पैराशूट प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें सुरक्षित स्थानों पर उतारने और महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर अधिकार जमाने तथा शत्रु क्षेत्रों में विध्वंसक कार्य करने का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

अटलांटिक रक्षा पंक्ति को सुदृढ़ करने और नए ढंग से उसकी किलेबंदी करने का दायित्व जर्मनी के फील्ड मार्शल रोमेल को दिया गया था। अफ्रीका के युद्धक्षेत्र में फील्ड मार्शल रोमेल अंग्रेजी सेनाओं के छक्के छुड़ाकर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे।

फील्ड मार्शल रोमेल ने आजाद हिंद फौज के काम का भी बारीकी के साथ निरीक्षण किया और उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि जिन भारतीय सैनिकों को उन्होंने अफ्रीका के मोरचे पर अकुशल और अनुत्तरदायी पाया था, वे ही सैनिक सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व के जादू और उनकी प्रेरणा से बहुत ही कुशल तथा जुझारू सैनिक बन गए हैं।

इस प्रकार फील्ड मार्शल रोमेल के नेतृत्व में की जानेवाली अटलांटिक तट की किलेबंदी के निरीक्षण का अवसर आजाद हिंद फौज के सैनिकों को मिला। इस समस्त प्रशिक्षण में उनमें इतना आत्मविश्वास जाग्रत हो गया कि अंग्रेजी सेना से भिड़ जाने के लिए वे उतावले हो गए।

फ्रांस में रहते हुए आजाद हिंद फौज पर फ्रांसीसी गुरिल्लों के दलों ने कई बार जोरदार आक्रमण किए; लेकिन हर बार भारी जनहानि उठाकर उन्हें भागना पड़ा। इन आक्रमणों के समय आजाद हिंद फौज के वीरों ने यह सिद्ध कर दिया कि वे दुनिया की बड़ी-से-बड़ी ताकत से भिड़ने में सक्षम हैं। भारतीय पक्ष से भी कुछ जनहानि हुई, पर वह नगण्य थी। जिन बाईस वीरों के नाम लेख के प्रारंभ में दिए गए हैं, वे फ्रांसीसी गुरिल्लों के साथ युद्ध करते हुए शहीद हुए। उनमें से अधिकांश सिपाही और कुछ अफसर भी थे।

□

★ कैप्टेन अमरीकसिंह

अंग्रेजों की ओर से लड़नेवाली भारतीय सेना के सिख रेजीमेंट में अमरीक सिंह जमादार के पद पर कार्य कर रहे थे। जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया तो सन् १९४२ में अमरीकसिंह आजाद हिंद फौज में

कैप्टेन अमरीकसिंह

पहुँच गए। कई युद्धों में अमरीकसिंह ने अपनी वीरता का परिचय दिया। जो मोरचा सबसे खतरनाक समझा जाता था, वहाँ अमरीकसिंह की नियुक्ति होती थी। अपनी बहादुरी के कारण अमरीकसिंह कैप्टेन के पद पर नियुक्त किए गए।

बर्मा के त्रावंग मोरचे पर कैप्टेन अमरीकसिंह ने शहीद पद प्राप्त किया। उनकी वीरता का सम्मान करते हुए नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कैप्टेन अमरीकसिंह को मरणोपरांत 'शेरे-हिंद' का खिताब दिया। उनके साथ शहीद होनेवालों में अन्य वीर थे—

नायक अजीतसिंह, लांसनायक बच्चासिंह, नायक बहादुरसिंह, लांसनायक बच्चीसिंह, सिपाही भवानसिंह, नायक वीरसिंह, नायक चत्तरसिंह, सिपाही दरवानसिंह, सिपाही धरमसिंह और नायक धूमसिंह।

□

★ लेफ्टिनेंट अमरीकसिंह
★ लांसनायक अवतारसिंह ★ सिपाही दानीचंद
★ सिपाही दामोदरसिंह ★ सिपाही धामसिंह
★ सिपाही नटेसन ★ लेफ्टिनेंट प्राणसिंह
★ हवलदार फतह खाँ ★ मेजर मेहबूब अहमद
★ मेजर रायसिंह ★ सिपाही सरदारसिंह
★ सिपाही हाकमसिंह

फालम शिविर पर आजाद हिंद फौज ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली थी। अब नं. २ की बटालियन परवाना कंपनी को ले. अमरीकसिंह के नेतृत्व में हाका

क्षेत्र की रक्षा का भार सँभालने के लिए भेजा गया। इस कंपनी को भी भारी-भारी मशीनगनें और अन्य सामान अपनी पीठ पर लादकर ले जाना पड़ा।

फालम से हाका तक का फासला पैंतीस मील था और शत्रु सेना के गुरिल्ला दल उस रास्ते पर निरंतर उत्पात मचाते रहते थे। उन्होंने वहाँ अपनी एक चौकी भी स्थापित कर ली थी। जापानी सेना इस गुरिल्ला दल पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकी थी। आजाद हिंद फौज की इस कंपनी को सूचना मिली कि गुरिल्ला दल उसपर आक्रमण करने वाला है। इस कंपनी के साथ मेजर जनरल शहनवाज खाँ भी जा रहे थे। उन्होंने निश्चय किया कि इससे पहले कि शत्रु उनपर आक्रमण करे, उन्हें स्वयं ही शत्रु पर आक्रमण कर देना चाहिए।

परवाना कंपनी में एक सौ पचास जवान थे। आक्रमण का नेतृत्व ले. लहनासिंह ने किया। शत्रु पक्ष के गुरिल्ला दल को रात के समय घेर लिया गया और भीषण मार-काट के पश्चात् उसे पीछे खदेड़ दिया गया। परवाना कंपनी ३ अप्रैल को हाका पहुँच गई और उसने वहाँ की रक्षा व्यवस्था सँभाल ली। हाका क्षेत्र में जीवन की स्थितियाँ और भी कठिन थीं। प्रदाय शिविर से पचासी मील की दूरी पार करके वहाँ खाद्य सामग्री पहुँचाई जाती थी और इसके लिए जापानी सेना ने परिवहन सुविधाएँ बिलकुल नहीं दी थीं। शत्रु सेना के गुरिल्ले दल उस पूरे क्षेत्र में सक्रिय थे और उनकी संख्या सात हजार के ऊपर थी। उन गुरिल्ला दलों को अंग्रेजी वायुयानों द्वारा खाद्य सामग्री गिराई जाती थी। उनके मुकाबले में आजाद हिंद फौज की परवाना कंपनी में सैनिकों की संख्या केवल एक सौ पचास थी और पचासी मील दूर उन्हें खाद्य सामग्री पर्वतों की चोटियों पर ढोकर ले जानी पड़ती थी। जापानी सेना ने जानबूझकर यह भयंकर क्षेत्र आजाद हिंद फौज को दिया था, जिससे वह भाग खड़ी हो और उसे यह कहने का अवसर मिले कि आजाद हिंद फौज लड़ाई में ले जाने के योग्य नहीं है। आजाद हिंद फौज की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ भी इस चाल को समझती थीं और जान पर खेलकर वे सिद्ध करना चाहती थीं कि वीरता में वे जापानी सेना से अधिक ही हैं। मेजर मेहबूब अहमद, मेजर रायसिंह और कैप्टेन अमरीकसिंह के कुशल नेतृत्व के कारण उस क्षेत्र में शत्रु पक्ष की दाल नहीं गल सकी।

इस युद्ध में लांसनायक अवतारसिंह, सिपाही दामोदरसिंह, सिपाही दानीचंद, सिपाही धामसिंह, हवलदार फतह खाँ, सिपाही हाकमसिंह, सिपाही नटेसन, ले. प्राणसिंह और सिपाही सरदारसिंह शहीद हुए।

□

★ अमीरचंद गुप्ता ★ पन्नालाल यादव ★ बी. शर्मा ★ राजाभाऊ महाकाल ★ साधु काजी रामगिरि ★ साधु रामगिरि

गोवा की मुक्ति के लिए गठित एक दूसरे जत्थे ने यह योजना बनाई कि सत्याग्रहियों का एक जत्था पहले गोवा की सीमा में प्रवेश करे और जब पुर्तगाली रक्षक दल उस जत्थे को रोकने का प्रयास करे, तो अवसर पाकर दूसरा जत्था गोवा की सीमा में प्रवेश कर जाए। जब पहले जत्थे को पुर्तगाली सैनिकों ने रोकना चाहा, तो अवसर पाकर दूसरे जत्थे ने पुर्तगाल की सीमा को पार कर लिया। इस स्थिति से निबटने के लिए पुर्तगाली सैनिक दल भी दो भागों में विभक्त हो गया और दोनों जत्थों पर गोलियाँ चलने लगीं। दूसरे जत्थे में जो लोग शहीद हुए, उनमें से कुछ के विवरण प्रस्तुत हैं—

राजाभाऊ महाकाल

१. श्री अमीरचंद गुप्ता : उत्तर प्रदेश के मथुरा नगर के निवासी थे।

२. श्री राजाभाऊ महाकाल : उज्जैन नगर में २६ जनवरी, १९२३ को जन्म हुआ था। पिता का नाम श्री बालाभाऊ महाकाल था। देवास जिले के सोनकच्छ नगर में एक होटल चलाते थे।

३. श्री साधु काजी रामगिरि : बिहार के समस्तीपुर में सन् १९१९ में जन्म हुआ था। उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर में रहने लगे थे।

४. श्री साधु रामगिरि : उत्तर प्रदेश के निवासी थे।

५. श्री बी. शर्मा : उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के वृंदावन के निवासी थे।

६. श्री पन्नालाल यादव : राजस्थान के कोटा जिले के रामगंज मंडी के निवासी थे। पिता का नाम श्री हाथीराम यादव था।

□

★ अमृत चादनकर ★ अर्जुन परनेरकर ★ सावगी नाइक ★ सोमा मलिक
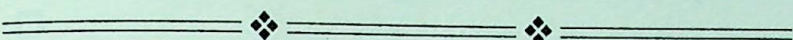
अमृत चादनकर

गोवा की मुक्ति का आंदोलन पूरे जोर पर था और पुर्तगाल का शासन भी उसे बेरहमी के साथ कुचल रहा था। पुर्तगाल का रक्षक दल हर रात को सड़कों पर गश्त लगाता था और जरा भी संदेह होने पर लोगों को गोली मार दी जाती थी।

सावगी नाइक और उसके साथियों ने यह तय किया कि सड़क के नीचे विस्फोटक सुरंग रखकर पुर्तगाल के रक्षक दल को समाप्त कर दिया जाए। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर वे लोग रात के समय उस बाहरी सड़क पर जा पहुँचे, जिधर से पुर्तगाली रक्षक दल बिना नागा गुजरा करता था। उन्होंने सड़क के एक किनारे गड्ढा किया और उसमें सुरंग रख ही रहे थे कि विस्फोट हो गया। सावगी नाइक और उसके सभी साथी २७ फरवरी, १९५७ को उस दुर्घटना के शिकार हो गए। उस दुर्घटना के शिकार होनेवालों में अमृत चादनकर, सोमा मलिक, रघुनाथ शिरोदकर और अर्जुन परनेरकर भी सम्मिलित थे।

□

★ अमृत व्यास
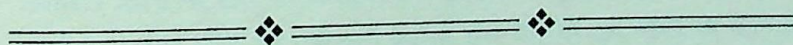
१६ अगस्त, १९५५ को अमृत व्यास इस संकल्प से ही अपने घर से बाहर निकला कि वह अपनी मातृभूमि को पुर्तगाल के शासन से मुक्ति दिलाने के लिए बलिपथ का वरण करेगा। उसे ज्ञात था कि एक दिन पहले ही सैकड़ों भारतीयों ने गोवा की सीमा पर अपने प्राणों का विसर्जन किया था।

अमृत व्यास 'दामन' में 'वापी' नामक स्थान पर पहुँच गया और उसने

भारत का तिरंगा झंडा हाथ में लेकर 'भारत माता की जय' बोलना प्रारंभ किया। एक पुर्तगाली सैनिक ने उसे गोली मार दी। भारत की आजादी के चिंतन में उसने शहादत प्राप्त कर ली।

अमृत व्यास का जन्म 'दामन' में हुआ था।

□

★ अर्जुन पिरानकर

अर्जुन पिरानकर ने अपने कई दिनों के निरीक्षण से यह जान लिया कि पुर्तगाल का रक्षक दल एक विशेष सड़क से नियत समय पर गुजरा करता है। उसने तय कर लिया कि वह किसी दिन बम प्रहार करके पुर्तगाली रक्षक दल को मौत के घाट उतार देगा। वह अपनी योजना में जुट गया।

१९ फरवरी, १९५७ को अर्जुन पिरानकर एक बम लेकर उस सड़क पर पहुँच गया। वह उस बम को सड़क के किनारे पत्थरों के नीचे दबा रहा था कि अचानक बम फट गया और घटनास्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई।

अर्जुन पिरानकर का जन्म सन् १९१७ में गोवा के 'खरपाल' गाँव में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री दाखू पिरानकर था। वे कृषक थे।

□

★ कर्नल इनायत जान कियानी
★ कर्नल गुलजारासिंह
★ मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी
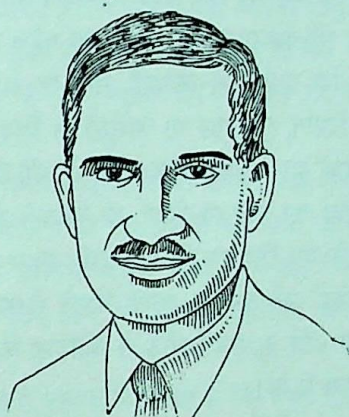
कर्नल इनायत जान कियानी मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी

कोहिमा-इंफाल मोरचे

द्वितीय विश्वयुद्ध के संपूर्ण क्षेत्र में जो भयंकरतम युद्ध हुए हैं, उनमें अराकान मोरचे पर लड़े गए कोहिमा और इंफाल के युद्ध भी ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। इंफाल मोरचे पर एक ओर अंग्रेजी सेना थी, जो उस मोरचे के पतन के दुष्परिणामों की कल्पना सहज ही कर सकती थी; इसलिए वह जी-जान से लड़ रही थी। उस मोरचे पर दूसरी ओर आजाद हिंद फौज थी, जो विजय की उपलब्धियों से अपरिचित नहीं थी; इसलिए वह भी अपनी पूरी शक्ति लगाकर उस मोरचे को फतह कर लेना चाहती थी। प्लासी के युद्ध के पश्चात् भारतभूमि पर लड़ा जानेवाला इंफाल का युद्ध ही था, जो अपने गंभीर परिणामों के लिए ऐतिहासिक महत्त्व रखता

है। द्वितीय विश्वयुद्ध में जितनी खूनी जंग 'ओकीनावा' और 'स्टालिनग्राड' में हुई, उतनी ही भयंकर जंग 'इंफाल' में भी हुई। इन तीनों स्थानों पर युद्ध के साथ इतिहास ने भी पलटा खाया और उसके परिणामस्वरूप हुए परिवर्तनों को संसार ने आश्चर्य के साथ देखा।

कोहिमा का मोरचा

कोहिमा और इंफाल के मोरचों पर मुख्य रूप में जापानी सेना ही लगी हुई थी। जापानी फौजी कमान के अफसर इन मोरचों पर आजाद हिंद फौज को आक्रामक फौज के रूप में नहीं लगाना चाहते थे; पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस के निरंतर दबाव के कारण वे आधे मन से आजाद हिंद फौज को आक्रमण के सहयोगी के रूप में स्वीकार करने के लिए सहमत हो गए थे। उन्हें भरोसा नहीं था कि आजाद हिंद फौज अपेक्षित वीरता से शत्रु के साथ युद्ध कर सकेगी। उन्हें यह भी खतरा था कि कहीं यह फौज दुश्मन के साथ न मिल जाए। यही कारण था कि प्रारंभ में जापानी सेना के साथ आजाद हिंद फौज की टुकड़ियों को मार्गदर्शन, पूछताछ या जासूसी के लिए रखा जाता था। बाद में, जब युद्ध के कई मोरचों पर आजाद हिंद फौज ने अंग्रेज़ी सेना को परास्त कर दियां और अप्रतिम वीरता का परिचय दिया, तो जापानी सेना ने उसे मुख्य आक्रमणों में सम्मिलित करने का निश्चय किया। इसी प्रकार की आवश्यकता से प्रेरित होकर 'सुभाष ब्रिगेड' को फालम-हाका मोरचे से हटाकर कोहिमा के मोरचे के लिए बुलाया गया और सुभाष ब्रिगेड ने कोहिमा के पर्वतों पर भारत का राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहरा दिया।

कोहिमा के मोरचे पर जापानी सेना का आक्रमण मार्च १९४४ के प्रथम सप्ताह में प्रारंभ हुआ और ८ अप्रैल को कोहिमा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया गया। इस मोरचे पर भी आजाद हिंद फौज की टुकड़ियाँ जापानी सेना के साथ थीं और वे उनके साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर लड़ी थीं। कोहिमा से जापानी सेना दीमापुर की ओर न बढ़कर इंफाल की ओर बढ़ी और उसने अपनी पूरी शक्ति इंफाल के मोरचे पर लगा दी। इंफाल के मोरचे पर आजाद हिंद फौज का भी बहुत खून बहा और इसलिए उसे दूसरी हल्दीघाटी पुकारना अनुचित न होगा।

इंफाल का मोरचा

मणिपुर राज्य की राजधानी इंफाल का सामरिक महत्त्व बहुत अधिक था। इसे पूर्व की ओर से भारतवर्ष का प्रवेश द्वार होने का गौरव प्राप्त था। इंफाल पर

अधिकार करने के पश्चात् आजाद हिंद फौज ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके बंगाल में प्रवेश कर सकती थी और तब युद्ध का नक्शा दूसरा ही हो जाता। यही कारण था कि अंग्रेजी सेना इंफाल की रक्षा करने और आजाद हिंद फौज उसपर अधिकार कर लेने के लिए कृतसंकल्प थी। यद्यपि जापानी सेना ने भी अपनी पूरी शक्ति वहाँ लगा रखी थी, पर इंफाल की विजय उसके लिए उतना महत्त्व नहीं रखती थी, जितना आजाद हिंद फौज के लिए।

जापानी सेना और आजाद हिंद फौज ने इंफाल को चारों ओर से घेर लिया। १४ मार्च, १९४४ को इंफाल-कोहिमा सड़क काट डाली गई और इस प्रकार अंग्रेजी सेना का स्थल मार्ग द्वारा इंफाल से संबंध-विच्छेद हो गया। स्थल मार्ग के अवरुद्ध हो जाने के पश्चात् अंग्रेजी सहायता सेना वायुयानों द्वारा इंफाल पहुँचाई जाने लगी। उस मोरचे पर जापान के पास वायुसेना न के बराबर थी। उसने अपनी वायुसेना प्रशांत क्षेत्र में अड़ा रखी थी, इसलिए इंफाल क्षेत्र में वह अंग्रेजी वायुसेना का प्रतिरोध नहीं कर सका। परिणाम यह हुआ कि इंफाल चारों ओर से घिर जाने के पश्चात् वायु मार्ग द्वारा अंग्रेजी सेना के लिए खुला रहा। इंफाल पर पाँच डिवीजन अंग्रेजी सेना लगी हुई थी।

इंफाल के घेरे की योजना बनाते समय जापानी फौजी कमान और नेताजी में कुछ मतभेद था। जापानी कमान की योजना थी कि इंफाल को चारों ओर से घेर लिया जाए और इंफाल पहुँचनेवाली कोहिमा सड़क काट दी जाए, जिससे इंफाल में सारी अंग्रेजी सेना घिरकर रह जाए और उसे बाहरी सहायता प्राप्त न हो सके।

मेजर जनरल शहनवाज खाँ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि स्वयं नेताजी इंफाल के संपूर्ण घेरे और सभी दिशाओं से उनके संबंध-विच्छेद के पक्ष में थे; क्योंकि वे चाहते थे कि इंफाल में घिरी हुई डेढ़ लाख भारतीय सेना उनके अधिकार में आ जाए और उसे आजाद हिंद फौज में मिलाने के लिए फुसलाया जा सके। कुछ अन्य लेखकों ने मेजर जनरल शहनवाज खाँ के इस विचार से असहमत होकर अपना मत व्यक्त किया कि नेताजी का विचार था कि अंग्रेजी सेना को भागने के लिए एक मार्ग छोड़ दिया जाए और इसीलिए वे कोहिमा-इंफाल सड़क काटने के पक्ष में नहीं थे।

यही मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है कि नेताजी सड़क काटने के पक्ष में नहीं थे और वे पराजित अंग्रेजी सेना को भागने के लिए रास्ता देने के पक्ष में थे। यदि यह मान भी लिया जाए कि अंग्रेजी सेना के डेढ़ लाख भारतीय सैनिकों पर जापानी फौजी कमान के माध्यम से आजाद हिंद सरकार का पूरा कब्जा हो जाता,

पर उनपर एकदम विश्वास न तो नेताजी ही कर सकते थे और न जापानी फौजी कमान किसी मोरचे पर उनके उपयोग की अनुमति देता; क्योंकि वह तो तपे हुए और परखे हुए आजाद हिंद फौज के सैनिक समूहों को भी मुश्किल से ही मोरचों पर लगाने की अनुमति दे रहा था।

यह निश्चित है कि इंफाल के घेरे के प्रश्न को लेकर जापानी फौजी कमान और नेताजी में मतभेद था। यह मत जापानी फौजी कमान का ही था कि सारे रास्ते बंद करके इंफाल को घेर लिया जाए और इस तरह एक बहुत बड़ी मछली उनके हाथ लग जाए। जापानी जनरल मूटागूची अंग्रेजी मछली का शिकार इंफाल की झील में करना चाहते थे; पर उनके दुर्भाग्य से वह मछली न होकर मगरमच्छ निकला, जिसने उनके जाल को भी छिन्न-भिन्न कर दिया।

आजाद हिंद फौज इंफाल की ओर

नेताजी के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत की आजादी के युद्ध में सक्रिय भाग लेने के लिए आजाद हिंद फौज के नं. १ डिवीजन को इंफाल के मोरचे पर जाने का आदेश मिला। इस डिवीजन का नेतृत्व मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी कर रहे थे। इस डिवीजन के 'गांधी ब्रिगेड' का नेतृत्व मोहम्मद जमान कियानी के चचेरे भाई कर्नल इनायत जान कियानी कर रहे थे। डिवीजन के दूसरे ब्रिगेड 'आजाद ब्रिगेड' के कमांडर कर्नल गुलजारासिंह थे।

आजाद हिंद फौज के इस डिवीजन को जापानी फौजी कमान द्वारा यह बताया गया था कि इंफाल के पतन में कुछ अधिक समय नहीं लगेगा और यह संभव है कि जब तक आजाद हिंद फौज वहाँ पहुँचे, तब तक इंफाल जापानी सेना द्वारा विजित कर लिया जाए। जापानी फौजी कमान ने आजाद हिंद फौज को यह परामर्श भी दिया कि यदि इंफाल विजय की साझीदार बनने के लिए शीघ्र ही वहाँ पहुँचना चाहती है तो उसे अपना भारी सामान, जैसे तोपें एवं मशीनगनें यहीं छोड़ंकर और अपने साथ हलके हथियार लेकर इंफाल की ओर झपट जाना चाहिए, जिससे वह इंफाल के पतन के पूर्व ही वहाँ पहुँच जाए। आजाद हिंद फौज इंफाल विजय में हिस्सेदारी से वंचित नहीं होनी चाहती थी। जापानी फौजी कमान के परामर्श के अनुसार उसने अपनी मशीनगनें और हथगोले कालेवा नामक स्थान पर छोड़े और सैनिक दल अपनी राइफलें तथा पचास-पचास कारतूस लेकर ही इंफाल की ओर दौड़ पड़े। अन्य सामान के स्थान पर वे अपने साथ एक-एक कंबल ही ले गए। इस प्रकार 'गांधी ब्रिगेड' वहाँ सबसे पहले पहुँचा।

यहाँ हमें तनिक रुककर यह समीक्षा करनी पड़ेगी कि क्या आजाद हिंद

फौज के लिए उचित था कि उसे केवल पचास-पचास कारतूस लेकर ही युद्धस्थल की ओर भाग चलना चाहिए था? किसी भी सैनिक अभियान के इतिहास में इस प्रकार के कृत्य को मूर्खता की श्रेणी में ही रखा जाएगा। यह ठीक है कि जापानी आजाद हिंद फौज को बुद्धू बनाना चाहते थे, पर आजाद हिंद फौज को तो सोचना चाहिए था कि वे अपने सबसे भयंकर शत्रु के साथ जीवन-मरण का युद्ध लड़ने जा रहे हैं और उन्हें इस प्रकार की युद्ध सामग्री लेकर नहीं चल देना चाहिए था; जैसे मिट्टी या कागज के सिपाहियों के साथ युद्ध करने जा रहे हों। निश्चित रूप से ही वह भूल आजाद हिंद फौज के नेतृत्व की थी और इसके लिए उसकी भर्त्सना करनी ही पड़ेगी। नेताजी को इस स्थिति का कुछ भी ज्ञान नहीं था।

जिस समय गांधी ब्रिगेड 'तामू' नामक स्थान पर पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि इंफाल का पतन नहीं हुआ है और वहाँ भयंकर युद्ध चल रहा है। इस क्षेत्र के जापानी फौजी कमांडर मेजर फूजीवारा ने आजाद हिंद फौज के नं. १ डिवीजन को दुश्मन से भिड़ने के लिए तामू-पलेल रोड का स्वतंत्र क्षेत्र दे दिया।

कोहिमा और इंफाल के मोरचों पर भयंकर रक्तपात हुआ। इस युद्ध में आजाद हिंद फौज के दस हज़ार सैनिक और अफसर मारे गए। अप्रतिम वीरता दिखाकर शहीद होनेवालों में कुछ नाम हैं—

१. नायक चंदगीराम
२. लांसनायक दर्शनसिंह
३. हवलदार हरचंद्रसिंह
४. लेफ्टिनेंट सुंदरम्
५. लेफ्टिनेंट अटलसिंह
६. लेफ्टिनेंट अय्यूब खान
७. सिपाही बचनसिंह नं. १
८. सिपाही बचनसिंह नं. २
९. हवलदार बंतासिंह
१०. सिपाही जयराम
११. सिपाही दलेलसिंह
१२. सिपाही दीन मोहम्मद
१३. सिपाही फजल करीम
१४. सिपाही गुलाम खाँ
१५. सिपाही गुरुबख्शसिंह
१६. सब-ऑफीसर हाकिमसिंह
१७. सिपाही हंसराजानी
१८. सिपाही हरजीतसिंह
१९. कैडेट ऑफीसर हजूरासिंह
२०. सिपाही सुखराम
२१. कैडेट हजारासिंह
२२. सिपाही जगतसिंह
२३. सिपाही जाटसिंह
२४. सिपाही झूठाराम
२५. सिपाही जोगिंदरसिंह
२६. सिपाही कन्हईराम
२७. सिपाही मोघम
२८. सिपाही पी.पी. मोहम्मद
२९. लांसनायक जयसिंह
३०. इंजीनियर बी.के. मुखर्जी
३१. नारायण दास (आजाद हिंद दल)
३२. सिपाही पवन कुमार

३३. सिपाही प्यारासिंह

३४. सिपाही प्रीतमसिंह

३५. हवलदार रामपाल

३६. सिपाही रामसिंह

३७. लेफ्टिनेंट रमाशंकर राय

३८. से. लेफ्टिनेंट सादुल्ला खाँ

३९. सिपाही सरदारसिंह

४०. लांसनायक शाह मोहम्मद

४१. नायक सुलेमान खाँ।

□

★ बाबा उसमान खाँ ★ मोहम्मद अब्दुल कादिर

मोहम्मद अब्दुल कादिर

बाबा उसमान खाँ का भी वही चिंतन था, जो दूरदर्शी भारतीय राजनीतिज्ञों का था, जो दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में रह रहे थे। उन सबका चिंतन यही था कि द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ चुका है और आजाद होने के लिए भारत को इस अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए। दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त होता है, यह सिद्धांत पराधीन देशों के लिए सदैव ही सहायक रहा है। उन दिनों भारत अंग्रेजों के अधीन था, इस नाते इंग्लैंड भारत का दुश्मन था। इंग्लैंड के दुश्मन देश उस समय जापान, जर्मनी और इटली थे।

बाबा उसमान खाँ प्रवासी भारतीय थे और वे शंघाई में रह रहे थे। शंघाई में प्रवासी भारतीय विद्यार्थियों ने एक संस्था बना रखी थी, जिसका नाम 'इंडियन नेशनल एसोसिएशन ऑफ चाइना' था। बाबा उसमान खाँ एक प्रकार से इस संस्था के संरक्षक थे।

जब शंघाई जापानियों के अधिकार में चला गया तो बाबा उसमान खाँ ने जापानी जलसेना की सहायता से कुछ लोगों को थाईलैंड के रास्ते से भारत भेजा। उन्होंने कुछ लोगों को मलाया भी भेजा। इन लोगों को इसलिए भेजा गया था कि वे उन स्थानों की ब्रिटिश-भारतीय सेनाओं में बगावत फैलाएँ।

जल मार्ग से ये लोग भारत के बिलकुल निकट पहुँच गए; लेकिन अंग्रेजों की सुरक्षा व्यवस्था के कारण वे उनके हाथों में पड़ गए और जासूसी के अपराध में

उन्हें फाँसी की सजा दी गई।

फाँसी पानेवालों में मोहम्मद अब्दुल कादिर भी एक था। उसका जन्म २५ मई, १९१७ में केरल राज्य के त्रिवेंद्रम जिले के 'वक्कोम' ग्राम में हुआ था। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने के पहले वह मलाया पहुँच चुका था। जो दल जल मार्ग से भारत भेजा गया था, उसमें मोहम्मद अब्दुल कादिर भी था। यह दल कालीघाट पर जाकर उतरा, लेकिन पकड़ लिया गया।

मोहम्मद अब्दुल कादिर को ब्रिटिश हुकूमत ने १० सितंबर, १९४३ को मद्रास जेल में फाँसी पर झुला दिया।

□

★ के. गोनसेम ★ के. शिरोदकर ★ दुलबा पवार ★ भीकाजी सहकारी

भीकाजी सहकारी   दुलबा पवार

भीकाजी सहकारी गोवा के उग्र क्रांतिकारियों में से एक था। गोवा को पुर्तगाल के चंगुल से मुक्त करने के लिए वह अपने दल का नेतृत्व किया करता था और पुलिस पर छापे मारकर उसे भारी हानि पहुँचाया करता था। एक बार पुलिस के एक मुखबिर ने बताया कि भीकाजी सहकारी कलेम जंगल में अपने साथियों के साथ छिपा हुआ है। २९ मई, १९५६ को पुलिस के एक बहुत बड़े दल ने कलेम जंगल में भीकाजी सहकारी को घेर लिया और उसे समर्पण के लिए ललकारा। भीकाजी सहकारी ने समर्पण के स्थान पर युद्ध किया और वीरगति प्राप्त की। उसके कई साथी गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने उसके साथियों को वृक्षों से बाँधकर गोलियों से भून डाला।

भीकाजी सहकारी का जन्म गोवा के 'सिमेलन' गाँव में २५ नवंबर, १९३७

को हुआ था। उसके पिता का नाम श्री रामकृष्ण सहकारी था।

इस अभियान में भीकाजी का साथी के. शिरोदकर भी शहीद हुआ। शहीद होनेवाले अन्य साथी थे—के. गोनसेम और दुलबा पवार।

□

★ के.वी.पी. पाठक ★ सी.एच. राव ★ जगमोहन राव चपराला ★ एन. गजेंद्रगढ़ ★ एम. गुहा ★ मधुकर चौधरी ★ शेख इब्राहीम रमजान ★ सीताराम सूरी ★ एच. तामगट्टी
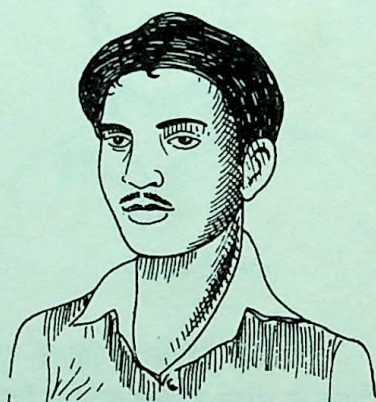
जगमोहन राव चपराला — सीताराम सूरी

सत्याग्रहियों का एक बड़ा दल गोवा की सीमा की तरफ बढ़ रहा था। उस जत्थे में भारत के कई प्रांतों के सत्याग्रही थे। वे लोग राष्ट्रीय एकता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। उन सबका एक ही चिंतन था कि भारत की धरती से पुर्तगाल की दासता का कलंक धुलना चाहिए। वे जानते थे कि उनके सत्याग्रह का अर्थ है मृत्यु का वरण। वे मृत्यु से भयभीत नहीं थे, वरन् उससे भेंट करने के लिए आतुर थे। जब वे पुर्तगाल की सीमा पर पहुँच गए तो पुर्तगाल के सीमा रक्षक दल ने उन्हें आगे बढ़ने से रोका। सत्याग्रहियों के कदम रुके नहीं। उनपर गोलियाँ

बरसने लगीं। जो लोग शहीद हुए, उनके विवरण हैं—

१. के.वी.पी. पाठक : आंध्र प्रदेश के हैदराबाद के निवासी थे।

२. सी.एच. राव : आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा के निवासी थे।

३. जगमोहन राव चपराला : इनका जन्म आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के 'दोंदापादू' ग्राम में २ अक्तूबर, १९३५ को हुआ था।

४. एन. गजेंद्रगढ़ : मैसूर के निवासी थे।

५. एम. गुहा : ये पश्चिम बंगाल के कलकत्ता के निवासी थे।

६. मधुकर चौधरी : ये महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के 'उमराखेड़ा' स्थान में २८ जनवरी, १९२९ को जनमे थे। पिता का नाम श्री दामोदर चौधरी था।

७. शेख इब्राहीम रमजान : ये महाराष्ट्र के नागपुर के निवासी थे।

८. सीताराम सूरी : आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के 'वुय्यूरू' नामक स्थान पर १० जुलाई, १९३७ को जन्म हुआ। इंटर तक शिक्षा पाई थी।

९. एच. तामगट्टी : ये मैसूर के निवासी थे।

□

★ के. शर्मा ★ जे. भरतरे ★ तुलसीराम हिरवे ★ नाथू कांबले ★ प्रभाकर नाइक ★ बी. होटलवाला ★ बापूलाल सेंदिया ★ शेषनाथ वाडकर ★ एस.एन. वाडेकर

गोवा को पुर्तगाल के शासन से मुक्त करने का एक बहुत बड़ा प्रयास १५ अगस्त, १९५५ को किया गया। योजना यह थी कि गोवा और भारत की सीमा से कई सत्याग्रही जत्थे गोवा की भूमि में कई स्थानों से प्रवेश करेंगे और गोवा निवासी उनके साथ सम्मिलित हो जाएँगे। इस प्रकार के एक जत्थे ने जब गोवा की सीमा रेखा पार करनी चाही तो पुर्तगाल की पुलिस ने उसपर गोलियाँ चल दीं। बहुत से लोग मारे गए। जो लोग इस अभियान में शहीद हुए, उनमें से कुछ के विवरण प्रस्तुत हैं—

१. के. शर्मा : ये महाराष्ट्र के राजघाट के निवासी थे।

तुलसीराम हिरवे   एस.एन. वाडेकर

२. जे. भरतरे : ये भी महाराष्ट्र के राजघाट के निवासी थे।

३. तुलसीराम हिरवे : इन्हें 'गुरुजी हिरवे' भी कहते हैं। ये महाराष्ट्र के कोलाबा जिले के 'गोरभात चिंचावली' के निवासी थे। श्री हिरवे स्कूल के अध्यापक थे।

४. नाथू कांबले : महाराष्ट्र के नागपुर के निवासी थे। इनका जन्म सन् १९३५ में हुआ था। पिता का नाम श्री बाजीराव कांबले था।

५. प्रभाकर नाइक : भारत से आनेवाले दल का स्वागत करने के लिए सीमा पर पहुँचे। ये गोवा के ही निवासी थे और गोमांतक दल के सदस्य थे। इन्हें गिरफ्तार करके इतना पीटा गया कि इनकी मृत्यु हो गई।

६. बी. होटलवाला : ये महाराष्ट्र के राजघाट के निवासी थे।

७. बापूलाल सेंदिया : गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। पंजिम जिले के रायबंदर अस्पताल में १० अक्तूबर, १९५५ को मृत्यु हो गई।

८. शेषनाथ वाडकर : महाराष्ट्र के बंबई के निवासी थे। पिता का नाम श्री नानाभाई वाडकर था। इनका जन्म सन् १९१५ में हुआ था। ये एक मोटर ट्रांसपोर्ट कंपनी में नौकरी करते थे।

९. एस.एन. वाडेकर : महाराष्ट्र के नासिक के निवासी थे।

☐

★ कल्यान शर्मा ★ गंगाविष्णु भरथरे ★ बाबूलाल सौंधिया
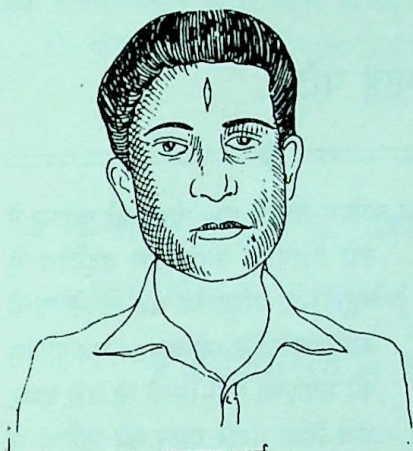
कल्यान शर्मा

मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के ब्यावरा नगर में बिदाई समारोह आयोजित था। अपनी मातृभूमि भारत से पुर्तगाल की दासता का कलंक पोंछने के लिए तीन सत्याग्रही वीर गोवा जा रहे थे। नगर के लोग उन्हें फूल-मालाओं से लाद रहे थे। कुछ लोग अपनी अंजलि में फूल लेकर उन लोगों पर दूर से ही फेंक रहे थे। बिदा लेनेवालों में से गंगाविष्णु भरथरे ने सम्मान का उत्तर देते हुए कहा—

''बिदा लेते समय आप लोगों ने जो हमारा सम्मान किया है, उससे हमारा हौसला बहुत बढ़ गया है। हम लोग आपको एक ही विश्वास दिला सकते हैं कि कोई भी भय हमें कर्तव्य मार्ग से विचलित नहीं कर सकेगा। फूलों के ये हार जो हम लोगों को पहनाए गए हैं, वे हमें फाँसी के फंदे चूमने का साहस प्रदान करेंगे और जिस प्रकार हमने फूलों की वर्षा को झेला है, उसी प्रकार हम गोलियाँ भी झेल सकेंगे।''

सत्याग्रही वीर अपने नगरवासियों और प्रियजनों से बिदा लेकर गोवा की सीमा पर पहुँच गए। उन्हें गोवा की सीमा में प्रवेश करके स्थानीय व्यक्तियों के साथ मिलकर सत्याग्रह करना था। सीमा में प्रवेश करते समय पुर्तगाल के रक्षक दल ने उन्हें चेतावनी दी। वे कदम पीछे हटाने के लिए वहाँ नहीं गए थे। इधर उनके कदम आगे बढ़े और उधर रक्षक दल ने उनपर गोलियाँ चला दीं। तीनों ही सत्याग्रही वीर गोवा की आजादी के लिए अपनी रक्तांजलियाँ दे गए। उनके विवरण हैं—

१. गंगाविष्णु भरथरे : राजगढ़ जिले के 'ब्यावरा नगर' में ५ नवंबर, १९१८ को जन्म हुआ। पिता का नाम श्री श्यामलाल भरथरे था। मैट्रिक परीक्षा तथा व्यायाम प्रशिक्षण की योग्यताएँ अर्जित कीं। स्थानीय स्कूल में अध्यापक थे।

२. बाबूलाल सौंधिया : ये भी राजगढ़ जिले के ब्यावरा नगर के निवासी थे। 'प्रजा मंडल' की गतिविधियों में भाग ले चुके थे।

३. कल्यान शर्मा : राजगढ़ जिले के ब्यावरा नगर के निवासी थे। राजगढ़ रियासत के विरुद्ध 'प्रजा मंडल' के अंतर्गत कार्य कर चुके थे।

□

★ कीकाभाई पटेल

कीकाभाई पटेल गोमांतक दल का सक्रिय सदस्य था। गोवा की पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके इस उद्‌देश्य से बहुत मारा-पीटा कि वह अपने साथी क्रांतिकारियों के पते बताए। जब पुलिस को सफलता नहीं मिली तो उसे दमन भेज दिया गया। दमन की पुलिस ने भी उसे बहुत यातनाएँ दीं। पणजी की अदालत में उसपर मुकदमा भी चलाया गया; लेकिन उसपर कोई आरोप सिद्ध नहीं हो सका और उसे छोड़ दिया गया। मुक्त होकर वह अपने घर भी नहीं पहुँच सका, क्योंकि पुलिस की यातनाओं के कारण उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

कीकाभाई पटेल

कीकाभाई पटेल का जन्म सन् १९०० में गोवा के 'दमन' प्रदेश में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री जीवन पटेल था।

□

★ कुंदनसिंह

कुंदनसिंह की गणना आजाद हिंद फौज के हौसलेमंद अफसरों में की जाती थी। वे लेफ्टिनेंट के पद पर कार्यरत थे। बर्मा के मोरचे पर एक महत्त्वपूर्ण पुल को उड़ाने की योजना बनी। इस पुल का उपयोग करके शत्रु सेना आजाद हिंद फौज पर

प्रलय ढा सकती थी। उस पुल को उड़ाने की जिम्मेदारी ले. कुंदनसिंह ने अपने ऊपर ले ली। जिस समय वे अपना दस्ता लेकर पुल पर पहुँचे, शत्रु सेना भी वहाँ ,हुँच चुकी थी। गोलियों की बौछारों के बीच कुंदनसिंह ने अपना काम किया और सफलतापूर्वक पुल उड़ा दिया; लेकिन वे स्वयं को नहीं बचा सके और शत्रु की गोलियों से घटनास्थल पर ही शहीद हो गए।

ले. कुंदनसिंह को मरणोपरांत 'शहीदे-भारत' पदक से सम्मानित किया गया।

□

★ कुमारन कुट्टी ★ गुरुमुखसिंह ★ चिन्नप्पा ★ ज्ञानसिंह ★ मोहम्मद जमान ★ रामदेव ★ लालहुसेन ★ समेद शिवन
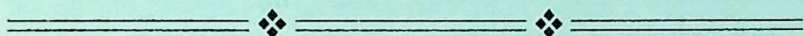
फ्रांस की सीमा से आजाद हिंद फौज को जर्मनी वापस जाने का आदेश मिला। उसे एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी यह दी गई थी कि जर्मन परिवारों की कुछ महिलाएँ और बच्चे भी उसके संरक्षण में जर्मनी भेजे गए।

फ्रांसीसी गुरिल्लों ने अब अपनी पूरी शक्ति के साथ आजाद हिंद फौज पर आक्रमण किए; पर आजाद हिंद फ़ौज ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया और हर बार भारी हानि उठाकर फ्रांसीसी गुरिल्लों को भागना पड़ा। गुरिल्लों ने जब इस प्रकार काम चलते न देखा तो अंग्रेजी और अमेरिकन सेनाओं को साथ लेकर आजाद हिंद फौज पर 'डिजौन' नामक स्थान पर भीषण आक्रमण किया और दोनों पक्षों में जमकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में आजाद हिंद फौज ने मित्र सेनाओं को भारी जनहानि के साथ पीछे खदेड़ दिया।

जर्मनी की सीमा के निकट पहुँचते-पहुँचते एक बार और आजाद हिंद फौज को आंग्ल-फ्रेंच एवं अमेरिकन सेना के भीषण आक्रमण के विरुद्ध मोरचा लेना पड़ा।

इस युद्ध में हाथापाई जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई और बहुत समय तक लड़ाई चलती रही; पर आजाद हिंद फौज ने संयुक्त सेना को मार भगाया। संयुक्त सेना के कई टैंक नष्ट हो गए और भारी संख्या में उसके सैनिक मारे गए। आजाद हिंद फौज के वीरों में सर्वश्री चिन्नप्पा, गुरुमुखसिंह, कुमारन कुट्टी, लालहुसेन,

मोहम्मद जमान, रामदेव और समेद शिवन खेत रहे।

आजाद हिंद फौज ने अपनी जान पर खेलकर जर्मन महिलाओं और बच्चों को सुरक्षापूर्वक जर्मनी पहुँचाया। फौज के जर्मनी पहुँच जाने पर आजाद हिंद संघ द्वारा वीरता के पदक वितरित कर आजाद हिंद फौज के वीरों का सम्मान किया गया। निम्नलिखित वीरों को 'वीर-ए-हिंद' पदक प्रदान किए गए—

ले. गुरुवचन सिंह, ले. इसाक, ले. गुरुमुखसिंह, ले. शेरदिल खाँ, ले. अल्लावद खाँ, ले. इंदरसिंह, ले. जयबलसिंह, ले. मोहम्मद जामिल, ले. डॉक्टर बोस।

डिजौन के भीषण संग्राम में जिन भारतीय वीरों ने असाधारण पराक्रम दिखाया था, उन्हें जर्मन सरकार की ओर से 'आयरन क्रॉस' नाम के पदक प्रदान किए गए। निम्नलिखित को ये पदक मिले—

सब-ऑफीसर पदमसिंह रावत, सब-ऑफीसर बंतासिंह, सब-ऑफीसर मुलतान अहमद, सब-ऑफीसर अब्दुल रशीद, सब-ऑफीसर जागीरसिंह, सब-ऑफीसर श्रीराम बक्षी, सब-ऑफीसर अमरसिंह, सब-ऑफीसर मोहम्मद खाँ, नायक गोपालसिंह, नायक प्रतापराव, सब-ऑफीसर कालूराम लोखंडे।

आजाद हिंद फौज के सब-ऑफीसर ज्ञानसिंह ने दो मोरचों पर अंग्रेज और अमेरिकन पैराशूट सेना के साथ लड़ाई में वीरता का प्रदर्शन किया था और एक अन्य मोरचे पर फ्रांस के 'फुप्फी' नामक गाँव में दुश्मन की टैंक सेना के साथ युद्ध करके उसने वीरता का परिचय दिया था। इस मोरचे पर घायल हो जाने पर भी ज्ञानसिंह ने टैंक सेना के छक्के छुड़ा दिए थे और अपनी पूरी बटालियन को बचा लिया था।

इस वीरता के उपलक्ष्य में सब-ऑफीसर ज्ञानसिंह को आजाद हिंद संघ की ओर से 'वीर-ए-हिंद' तथा जर्मन सरकार की ओर से 'आयरन क्रॉस' पदक प्रदान किया गया।

□

★ कुश्तोबा उसगाँवकर

कुश्तोबा उसगाँवकर ने बहुत पहले ही गोवा से पुर्तगाली शासन को नष्ट करने का प्रयत्न किया था। उसने क्रांतिकारियों की एक प्रशिक्षित सेना तैयार की और पुर्तगाली शासन के विरुद्ध सशस्त्र अभियान छेड़ दिया। उसका कार्यकाल सन्

१८७८ से १८८० तक रहा।

किसी मुखबिर ने कुश्तोबा उसगाँवकर के बारे में पुर्तगाली पुलिस को खबर दे दी और वह घेरकर मार डाला गया।

कुश्तोबा उसगाँवकर का जन्म गोवा के 'उसगाँव' नामक ग्राम में हुआ था।

□

★ कृष्ण पारब

गोवा के जंगल विभाग के डायरेक्टर मि. मैशियल केव्स की किसीने हत्या कर दी। गोवा की पुलिस का अनुमान था कि यह हत्या उन क्रांतिकारियों ने की थी, जो गोवा की मुक्ति के लिए भूमिगत होकर कार्य कर रहे थे। संदेह के अंतर्गत कृष्ण पारब नाम के एक व्यापारी को गिरफ्तार कर लिया गया। यद्यपि कृष्ण पारब का उस हत्या से कोई संबंध नहीं था, पर पुलिस ने उसकी निर्दयता से पिटाई की। पुलिस को विश्वास था कि हत्या से उसका संबंध है और पिटाई होने पर वह भेद उगल देगा। अंततोगत्वा यातनाओं के परिणामस्वरूप जेल के अंदर ही कृष्ण पारब की ९ जून, १९५७ को मृत्यु हो गई।

पारब का जन्म गोवा के 'मरसेला' गाँव में सन् १९०८ में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री वासुदेव पारब था। कृष्ण पारब अहिंसक उपायों से गोवा को मुक्त करने का पक्षधर था। वह गोवा राष्ट्रीय कांग्रेस का सदस्य भी था।

□

★ कृष्ण रायकर

कृष्ण रायकर गोवा के एक बहुत पुराने क्रांतिकारी थें। उनका जन्म गोवा के 'वेलिम' ग्राम में हुआ था। उनके पिता श्री विष्णु रायकर व्यवसाय से स्वर्णकार थे। श्री कृष्ण रायकर गोवा को मुक्त करने के सभी आंदोलनों में भाग ले चुके थे।

जब सन् १९५६ में पुर्तगाल की पुलिस ने श्री कृष्ण रायकर को गिरफ्तार किया तो उन्हें बहुत यातनाएँ दी गईं। श्री रायकर ने मरना स्वीकार किया, लेकिन अपने साथी क्रांतिकारियों के भेद देना स्वीकार नहीं किया।

□

★ कृष्ण शेत
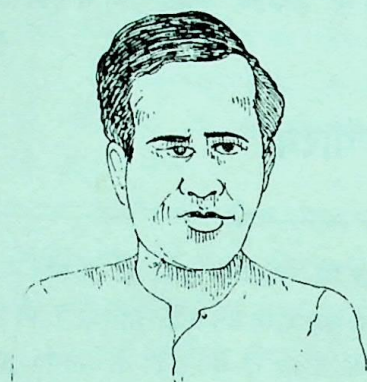
कृष्ण शेत

गोवा की पुलिस एक व्यक्ति को वृक्ष से बाँध रही थी। जिस स्थान पर उस व्यक्ति को वृक्ष से बाँधा जा रहा था, वह पोमबुखा नगर का एक चौराहा था। पुर्तगाल की पुलिस ने जानबूझकर वह स्थान चुना था। जब उसे वृक्ष से बाँध दिया गया तो पुर्तगाल की पुलिस ने उसपर गोलियाँ चला दीं। एक गोली उसके मस्तक में और एक वक्ष में लगी, जिससे कृष्ण शेत वहीं शहीद हो गया।

कृष्ण शेत का जन्म २१ अक्तूबर, १९२६ को गोवा के 'पोमबुरपा' स्थान पर हुआ था। उसके पिता का नाम श्री शंबा शेत था और वह एक मछुआरा था। कृष्ण शेत गोमांतक दल का सदस्य बन गया और उसने गोवा मुक्ति के आंदोलन में अपने गाँव के दल का नेतृत्व किया। उसे गिरफ्तार किया गया और उससे अन्य क्रांतिकारियों के पते-ठिकाने पूछे गए। कुछ भी न बताने पर, उसे वृक्ष से बाँधकर गोलियों से भून दिया गया।

□

★ केदार अन्वेकर

गोवा के क्रांतिकारी संगठन 'गोमांतक दल' का प्रभाव समस्त गोवावासियों पर था, चाहे वे नागरिक हों या शासकीय कर्मचारी। अपनी मातृभूमि को मुक्त करने की तड़प सभी के दिलों में थी।

केदार अन्वेकर गोवा शासन की सेवा में एक युवा इंजीनियर था। वह पंजिम जिले के 'बंबोलिन' नामक स्थान पर गोवा आकाशवाणी का इंजीनियर था। शासकीय सेवा में होते हुए भी वह गोमांतक दल का सदस्य बन चुका था। उसकी योजना थी कि 'बंबोलिन' के आकाशवाणी केंद्र को बम से उड़ा दिया जाए। इस कार्य के लिए

केदार अन्वेकर

उसने एक बम भी प्राप्त कर लिया। ५ जुलाई, १९५५ को जब वह आकाशवाणी केंद्र में बम रख रहा था तो बम उसके हाथों में ही फट गया और उसकी मृत्यु हो गई।

केदार अन्वेकर का जन्म सन् १९२० में गोवा के 'मरसीज' स्थान पर हुआ था। उसके पिता का नाम श्री विनायक अन्वेकर था।

□

★ केशव टेंगशे ★ केशव भट ★ परशुराम आचार्य

परशुराम आचार्य गोवा के क्रांतिकारियों के संगठन गोमांतक दल का सदस्य था। इस दल की पुर्तगाल की पुलिस के साथ हमेशा ही झड़पें हुआ करती थीं। पुलिस ने १९ सितंबर, १९५६ को परशुराम को गिरफ्तार कर लिया और बेरहमी के साथ डंडों तथा लोहे के सरियों से उसकी पिटाई की। उसे इतना अधिक मारा कि उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई।

परशुराम आचार्य का जन्म सन् १९१८ में गोवा के 'परतागले' ग्राम में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री श्रीनिवास आचार्य था।

इसी कांड में केशव भट की भी पुलिस की यातनाओं से मृत्यु हुई। केशव भट के पिता का नाम श्री सदाशिव भट था।

परशुराम आचार्य और केशव भट के साथ उनके साथी केशव टेंगशे को भी पुर्तगाली पुलिस ने उसी प्रकार यातनाएँ दी थीं, जिनके परिणामस्वरूप उसकी भी मृत्यु हो गई।

केशव टेंगशे का जन्म गोवा के 'पेंगुइनिम' में सन् १९२६ में हुआ था। उसके पिता श्री भट टेंगशे एक मंदिर के पुजारी थे।

□

★ केशव शेंडे ★ गनपति अमृते
★ महादेवन ★ संभा कावले

हैदराबाद राज्य के 'ऊमरी' गाँव के लोग इस बात पर विचार कर रहे थे कि १५ अगस्त, १९४७ को देश को आजादी तो प्राप्त हो गई, लेकिन हैदराबाद के निवासी हम लोग तो अभी निजाम के गुलाम ही हैं। इसी मुद्दे पर चर्चा करते हुए केशव शेंडे ने कहा—

"हम लोग कितने अभागे हैं, जो शेष भारत के साथ आजादी का जश्न नहीं मना सके! जब से भारत आजाद हुआ है, हमारे राज्य में गुलामी की जंजीरें और कड़ी हो गई हैं। हम कह नहीं सकते कि आजादी के दिन हम लोग कब देख सकेंगे!"

केशव शेंडे के इस विचार को आगे बढ़ाते हुए गनपति अमृते ने कहा—

"किसी भी बड़ी उपलब्धि के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। हमें लगता है कि अगणित प्राणों की आहुतियाँ जब हम देंगे, तब हमें आजादी के दिन देखने को मिल सकेंगे।"

गनपति अमृते की इस बात की पुष्टि करते हुए संभा कावले ने कहा—

"जहाँ तक कीमत चुकाने का प्रश्न है, हम लोग किसीसे पीछे नहीं रहेंगे। उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए पिछले समय आर्यसमाज ने जो आंदोलन चलाया था, उसमें हजारों लोगों ने अपनी जीवनाहुतियाँ दी थीं। निजाम की हुकूमत ने उस समय क्या-क्या नहीं किया! लोगों को सड़कों पर घसीटा जाता था; निर्वसन करके उनपर सरेआम कोड़े बरसाए जाते थे; देशभक्तों को जेलों में बंद करके उनके मुँह पर पाखाने के तोबड़े बाँध दिए जाते थे। ये सब अत्याचार हम लोग सह चुके हैं। यदि हमें आजादी लेनी है तो हमारे पास प्राणों का मूल्य हमेशा हाज़िर है।"

अभी तक महादेवन चुप थे। बात में बात मिलाते हुए उन्होंने कहा—

"भाई लोगो! यही समझ लीजिए कि आजादी अब हमसे अधिक दूर नहीं है। हाँ, यह अवश्य है कि इस बार प्राणों के कुछ पुष्प हमें चढ़ाने पड़ेंगे और आजादी के रास्ते को अपने खून से पवित्र करना पड़ेगा, तभी उस रास्ते से चलकर आजादी आएगी।"

चर्चा का समापन इस प्रकार हुआ कि राज्यव्यापी आंदोलन छेड़ने की एक

योजना बना ली गई और वे प्रतीक्षा करने लगे कि आह्वान होते ही अखाड़े में कूद पड़ा जाए। उन्हें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। राज्य की केंद्रीय संघर्ष समिति ने आंदोलन का शंखनाद कर दिया। सारे हैदराबाद राज्य में स्थान-स्थान पर एक साथ आंदोलन छिड़ गया।

'ऊमरी' गाँव के क्रांतिवीरों ने भी अपने गाँव में जोरदार प्रदर्शन किया और यह माँग की कि हैदराबाद रियासत का केंद्रीय शासन में विलय कर दिया जाए। अन्य स्थानों की भाँति उनके गाँव के आंदोलन को कुचलने के लिए निजाम की पुलिस ने गोलियाँ चलाईं। यह गोलीकांड सितंबर १९४७ में हुआ और 'ऊमरी' गाँव के वे चारों क्रांतिवीर इस गोलीकांड में शहीद हुए, जिन्होंने आंदोलन की योजना बनाई थी। ऐसा लगता है कि शायद निजाम की पुलिस को उनकी गतिविधियों की जानकारी थी और इसीलिए चुन-चुनकर उन्हींको मारा गया था। शहीद होनेवाले थे—गनपति अमृते, संभा कावले, महादेवन और केशव शेंडे।

□

★ कैमिलो परीरा

कैमिलो परीरा

कैमिलो परीरा ने भी उसी योजना को हाथ में लिया, जिसे पूरा करने में उसका एक साथी अपने प्राण गँवा चुका था। योजना यह थी कि मिलिट्री को पानी पहुँचानेवाली पाइप लाइन नष्ट कर दी जाए; क्योंकि उसके अतिरिक्त वहाँ पानी का कोई अन्य साधन नहीं था। कैमिलो परीरा बारूदी सुरंग लेकर चल पड़ा। वह पाइप लाइन के नीचे बारूदी सुरंग रखने के लिए गड्ढा खोद रहा था कि उसकी आवाज रक्षक दल के कानों में पहुँच गई। आवाज के सहारे उसे खोज लिया गया और १७ फरवरी, १९५७ को उसे गोली मार दी गई।

कैमिलो परीरा का जन्म गोवा के 'बंदोरा' ग्राम में हुआ था। उसके पिता श्री जोंस परीरा पोंडा की माचिस फैक्टरी में काम करते थे। कैमिलो अपने साथियों में

हमेशा देशभक्ति के विचारों का प्रसार करता रहता था। उसने अपने विचारों के अनुरूप कुछ साथी भी बना लिये थे और वे सब गोवा को पुर्तगाल सरकार की दासता से मुक्त करने के लिए कृतसंकल्प थे। इसी संकल्प की पूर्ति की दिशा में कैमिलो परीरा ने पानी की पाइप लाइन को नष्ट करने का कदम उठाया था।

□

★ कोट्टिया ★ नरसिंहा

नेताजी सुभाषचंद्र बोस जर्मनी छोड़कर जब दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए प्रस्थित हुए तो वे उस फौज को जर्मनी में ही छोड़ गए, जिसका निर्माण उन्होंने वहाँ के प्रवासी भारतीय नागरिकों और युद्धबंदियों से किया था। जर्मनी में आजाद हिंद फौज की संख्या तीन हजार पाँच सौ तक पहुँच गई थी। इससे अधिक के विस्तार की गुंजाइश नहीं थी और वहाँ उनका कोई उपयोग नहीं हो रहा था।

पनडुब्बी से जापान की यात्रा करने के पूर्व ही नेताजी जर्मनी स्थित अपनी फौज के लिए सारी व्यवस्थाएँ कर गए थे। वे जानते थे कि समुद्र तट की रक्षा में अकुशल होने के कारण ही भारत को पराधीनता के दिन देखने पड़े थे। जब भारत में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों और पुर्तगालियों ने प्रवेश किया था तो वे जल मार्ग से ही वहाँ पहुँचे थे और साम्राज्य स्थापना उन्होंने सागर तट से ही प्रारंभ की थी।

भारत में अपने राज्य को टिकाए रखने के लिए अंग्रेजों ने भारतीयों को कभी तट रक्षा का प्रशिक्षण नहीं दिया। उस काम के लिए वे अंग्रेज सैनिकों को ही रखते थे।

नेताजी चाहते थे आजाद हिंद फौज के लोग तट रक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त कर लें, जिससे भारत के स्वतंत्र होने पर वे अपने देश के सागर तट की रक्षा कर सकें। इसी विचार से जर्मनी छोड़ते समय नेताजी अपनी फौज के लिए यह व्यवस्था कर गए थे कि उसे हॉलैंड पहुँचा दिया जाए और वहाँ उसे तट रक्षा का गहन प्रशिक्षण दिया जाए।

हॉलैंड पहुँचने के लिए वेवरूल होकर जाना पड़ता था। वेवरूल में आजाद हिंद फौज दस दिन रही। इस बीच वहाँ जर्मनी की चौवालीसवीं फौज के कमांडर ने आजाद हिंद फौज का निरीक्षण किया और उसके उच्च स्तर की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हॉलैंड का तट जर्मनी के तट की अपेक्षा काफी विस्तृत था। जर्मन सेना और

आजाद हिंद फौज के वहाँ पहुँच जाने के कारण वहाँ की रक्षा पंक्ति और सुदृढ़ हो गई। कई स्थानों पर तट रक्षा का पूरा भार आजाद हिंद फौज को सौंप दिया गया।

तट रक्षा के कार्य में आजाद हिंद फौज तोपखाने का संचालन करती थी, विमानभेदी तोपों का प्रयोग सीखती थी, संचार तथा संदेश व्यवस्था का प्रशिक्षण प्राप्त करती थी और गोपनीय आक्रमण गृहों का निर्माण करती थी। तट रक्षक के कार्य में खोजकारी प्रकाशधाराओं तथा अन्वेषक ज्वालाओं का प्रयोग भी सम्मिलित था। संचार व्यवस्था के अंतर्गत उन्हें टेलीफोन, वायरलैस तथा रेडियो ट्रांसमीटर का प्रयोग सीखना पड़ता था।

हॉलैंड में तट रक्षक के गहन प्रशिक्षण के क्रम में आजाद हिंद फौज के दो वीर शहीद हो गए। वे दोनों सिपाही रैंक के थे। उनमें एक का नाम था कोट्टिया और दूसरे का नरसिंहा।

□

★ नायक खजानसिंह ★ सिपाही नाहरसिंह ★ मेजर प्रीतमसिंह ★ लेफ्टिनेंट लालसिंह

पलेल क्षेत्र में मेजर फूजीवारा के नेतृत्व में जापानी सेना का पड़ाव भी था और वहाँ गांधी ब्रिगेड को भी एक स्वतंत्र मोरचा दे दिया गया। एक दिन मेजर फूजीवारा ने आजाद हिंद फौज नं. १ डिवीजन के कमांडर मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी से कहा कि जापानी फौज अंग्रेजों के अधिकृत पलेल हवाई अड्डे पर आक्रमण करके उसपर अधिकार करना चाहती है और इसीलिए आजाद हिंद फौज को भी चाहिए कि इस आक्रमण में वह जापानी फौज के साथ रहे। मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी मेजर फूजीवारा के इस प्रस्ताव से सहमत हो गए और उन्होंने गांधी ब्रिगेड के कर्नल इनायत जान कियानी से आक्रमण की योजना बनाने के लिए कहा। कर्नल इनायत जान कियानी ने मेजर प्रीतमसिंह के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज के तीन सौ जवानों का एक दल पलेल हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया।

निश्चित यह हुआ कि पलेल हवाई अड्डे पर एक ओर से जापानी सेना आक्रमण करेगी और दूसरी ओर से आजाद हिंद फौज। जापानी कमांडर ने यह भी बताया था कि पलेल के हवाई अड्डे पर अंग्रेजी सेना द्वारा नाममात्र का ही अवरोध होगा और कुछ मिनटों में ही उसपर अधिकार कर लिया जाएगा।

गांधी ब्रिगेड के पास भारी हथियार तो थे ही नहीं; क्योंकि उन्हें तो वे कालेवा शिविर में ही छोड़ आए थे। मेजर प्रीतमसिंह के नेतृत्व में गांधी ब्रिगेड के तीन सौ जवान अपने साथ केवल राइफलें और पचास-पचास कारतूस तथा एक दिन की खाद्य सामग्री लेकर पलेल हवाई अड्डे की ओर चल पड़े। चालीस मील का पहाड़ी और चट्टानी मार्ग तय करके जब वह पलेल के निकट पहुँचा तो उसे ज्ञात हुआ कि हवाई अड्डे की रक्षार्थ उसके चारों ओर दूर-दूर तक अंग्रेजी फौजी

दस्ते नियुक्त हैं। निश्चय किया गया कि आक्रमण रात के समय किया जाए। स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक समझा गया कि आजाद हिंद फौज का एक दल निकटवर्ती अंग्रेजी दस्ते से भिड़कर उसपर विजय प्राप्त करे और दूसरा दल सीधे हवाई अड्डे पर पहुँचने का प्रयत्न करे।

दिन का शेष समय आजाद हिंद फौज ने झाड़ियों में छिपकर बिताया और रात होने पर एक दल ब्रिटिश दस्ते की ओर चुपके-चुपके बढ़ा। ब्रिटिश दस्ते के अग्रिम भाग में गोरखे सैनिक तैनात थे। उन्होंने आजाद हिंद फौज के सैनिकों को अपने पास आ जाने दिया और जब वे अत्यंत निकट आ गए तो उनपर भयंकर गोलीवर्षा प्रारंभ कर दी। आजाद हिंद फौज के सैनिक भी अपनी राइफलों की तनी हुई संगीनों से उनपर टूट पड़े। आमने-सामने का भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया। ले. लालसिंह के पास नागा लोगों का दिया हुआ एक भाला था। वे भाला लेकर दो अंग्रेज अफसरों की ओर झपटे। इसी बीच एक गोली आकर उनके शरीर में लगी; पर गिरने के पूर्व अपने भाले से उन्होंने दोनों अंग्रेज अफसरों को समाप्त कर दिया। ब्रिटिश फौजी दस्ता कँटीले तार के घेरे के अंदर था और आजाद हिंद सैनिक उसके बाहर। ब्रिटिश फौजी दस्ते के पास युद्ध सामग्री की कोई कमी नहीं थी, पर आजाद हिंद सैनिकों के पास केवल पचास-पचास कारतूस ही थे, जिनका उपयोग वे कर रहे थे। इस सबका परिणाम यह हुआ कि आजाद हिंद सैनिक बहुत बड़ी संख्या में हताहत हुए। इसी बीच सवेरा होने लगा। बचे-खुचे आजाद हिंद सैनिकों ने दूसरी पहाड़ी की ओट में अपनी स्थिति ली।

आजाद हिंद फौज का दूसरा दल, जो सीधे हवाई अड्डे की ओर बढ़ रहा था, उसे हवाई अड्डे तक पहुँचने में सफलता भी मिली; पर वहाँ जाकर उसने देखा कि जापानी सेना का वहाँ कहीं नामोनिशान भी नहीं है। उस दल को भी वहाँ पहुँचते हुए सवेरा हो गया था और अब शत्रु पक्ष के वायुयानों ने सक्रिय होकर भयंकर बमवर्षा प्रारंभ कर दी थी। आजाद हिंद फौज के दोनों दलों को भयंकर जनहानि उठानी पड़ी। तीन दिन तक वे बिना आहार के जंगलों में भटकते फिरे और शत्रु के बमों के शिकार होते रहे। आजाद हिंद फौज के छह सौ जवानों ने आक्रमण में भाग लिया था, जिनमें से दो सौ पचास जवानों ने वीरगति प्राप्त की। आजाद हिंद फौज को अपनी भूल बहुत महँगी पड़ी।

पलेल पर किए गए आक्रमण में नायक खजानसिंह और सिपाही नाहरसिंह शहीद हुए।

☐

★ कैप्टेन खान मोहम्मद

१६ मार्च, १९४५ को कैप्टेन खान मोहम्मद को आदेश दिया गया कि वे 'सादे' गाँव के निकट एक पहाड़ी पर आक्रमण करके उसपर अधिकार कर लें। सादे की पहाड़ी पर अंग्रेजी सेना का अच्छा जमाव था और वहाँ उसकी कम-से-कम एक बटालियन सेना थी। उस पहाड़ी पर स्थित होने के कारण शत्रु सेना उस क्षेत्र की आजाद हिंद फौज की गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न कर रही थी।

कैप्टेन खान मोहम्मद अपनी टुकड़ी लेकर पहाड़ी के उस भाग में गए, जहाँ नीचे एक नाला बह रहा था। पहाड़ी की ऊँचाई एकदम खड़ी और चट्टानी थी। उनके दल में ऐसे बहुत से सैनिक थे, जिनके पैरों में जूते तक न थे। कुछ बीमार और कमजोर सिपाही भी थे। उन लोगों को कैप्टेन खान मोहम्मद ने नीचे इसलिए छोड़ा कि एक तो वे अभियान में भाग नहीं ले सकते थे तथा दूसरे उस रास्ते को खुला और रक्षित रखना आवश्यक था; क्योंकि उधर से ही उन्हें लौटना था। अपने शेष साथियों को लेकर कैप्टेन खान मोहम्मद ने पहाड़ी पर चढ़ना प्रारंभ किया। काफी ऊँचाई तक वे चढ़ गए। उन्होंने अपना अभियान रात को प्रारंभ किया था, इसलिए शत्रु उन्हें देख तो नहीं सका, पर पत्थरों के लुढ़कने की आवाज सुनकर उनकी उपस्थिति का आभास हो गया। शत्रु पक्ष ने भयंकर गोलीवर्षा प्रारंभ कर दी। आजाद हिंद फौज ने भी गोलियों का जवाब गोलियों से दिया और उनकी चौकी के बिलकुल निकट पहुँच गए। जब शत्रु सेना ने देखा कि वे गंभीर खतरे में हैं, तो उन्होंने सहायता के लिए दूसरे शिविर को संकेत किया। सहायक सेना के पहुँचने के पूर्व ही खान मोहम्मद के दल ने अपनी किरिचें खींचकर आक्रमण कर दिया और आमने-सामने की लड़ाई होने लगी। इतने में ही अंग्रेजी सेना की सहायता के लिए कुमुक पहुँच गई और कैप्टेन खान मोहम्मद के दल को दोनों ओर से घेर लिया गया। अंग्रेजी सेना की अतिरिक्त कुमुक भी सादे पहाड़ी की ओर झपटी। कैप्टेन खान मोहम्मद के वे थोड़े से सैनिक, जो नंगे पैर या बीमार थे, इस समय तक नीचे ही थे। अब उनसे नहीं रहा गया और वे भी लड़ाई में कूद पड़े। वे यह भूल गए कि वे नंगे पाँव हैं और पहाड़ी पर पत्थरों की नुकीली कत्तलें हैं। भीषण युद्धघोष के साथ 'भारत माता की जय' तथा 'नेताजी की जय' के नारे लगाते हुए वे सहायता के लिए जाती हुई अंग्रेजी फौज पर टूट पड़े और मार-मारकर उन्हें बिछांने लगे। जब उनका गोला-बारूद समाप्त हो गया तो वे किरिचें खींचकर शत्रु सेना पर पिल पड़े और लाशों-पर-लाशें बिछा दीं। यह लड़ाई रात्रि के तीन बजे प्रारंभ हुई थी और

सुबह पाँच बजे तक चलती रही। आखिर शत्रु के पैर उखड़ गए और सादे पहाड़ी को आजाद हिंद फौज के हाथों में छोड़कर उसे पीठ दिखानी पड़ी। यह विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् कैप्टेन खान मोहम्मद अपने शिविर में वापस आ गए। इस युद्ध में शत्रु सेना के लगभग दो सौ जवान मारे गए; जबकि आजाद हिंद फौज के केवल सत्रह सैनिक ही खेत रहे।

□

★ खोड्डर ★ गुरुचरनसिंह ★ दरबारासिंह ★ नजरसिंह
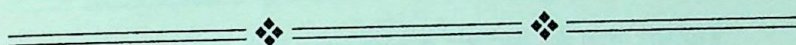
ये सभी पहले अंग्रेजों की ओर से लड़नेवाली भारतीय सेना में सेवारत थे, लेकिन आजाद हिंद फौज बन जाने के पश्चात् ये उसमें भरती हो गए और भारत की आजादी प्राप्त करने के लिए इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध लड़ा। पकड़े जाने पर इनपर सम्राट् के विरुद्ध युद्ध करने का अभियोग चलाया गया और सन् १९४५ में दिल्ली जेल में इन्हें फाँसी के फंदों पर झुला दिया गया।

□

★ गनपति असोले ★ गोविंद रावटे ★ जीवनजी सखारे ★ तुकाराम असोले

हैदराबाद राज्य के 'वकोड़ी' ग्राम पर रजाकारों ने अचानक आक्रमण कर दिया। गाँववालों ने ताबड़तोड़ मोरचा लिया और आक्रमणकारियों का मुकाबला करने लगे। उन लोगों के पास बंदूकें बहुत ही कम थीं और वे भी घटिया किस्म की। फिर भी जिस तरफ से आक्रमण हुआ था, ग्रामीण लोग गोलियों का उत्तर गोलियों से देने लगे। गाँववालों के इस प्रतिकार से रजाकार हतप्रभ रह गए; लेकिन इस उद्दंडता के लिए वे उन्हें दंड दिए बिना जाना नहीं चाहते थे। उन्होंने रजाकारों के एक अन्य दल को आमंत्रित करके संयुक्त रूप से मोरचा ले लिया। दोनों ओर से गोलियों का आदान-प्रदान हुआ। कुछ रजाकार भी मारे गए। गाँववालों की ओर से गनपति असोले, तुकाराम असोले, गोविंद रावटे और जीवनजी सखारे ने अपने बलिदान दिए। यह घटना १३ जनवरी, १९४८ की है।

□

★ गिरधारीसिंह ★ बालकृष्ण शर्मा ★ बालमुकुंद शर्मा ★ रामचंद्र सर्वटे ★ स्टीफन जोसेफ फर्नांडिस

यह बात सन् १९२८ की रही होगी। ग्वालियर की जे.सी. मिल्स के मैकेनिक विभाग में कुछ लोग काम कर रहे थे। वे लोग काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ कर रहे थे। उसी समय उनके विभाग का एक अफसर वहाँ पहुँचा और बिना कुछ देखे-सुने उसने डपटना प्रारंभ कर दिया—

"जब तक तुम लोगों के सिर पर सवार न रहा जाए, तुम लोग रत्ती-भर
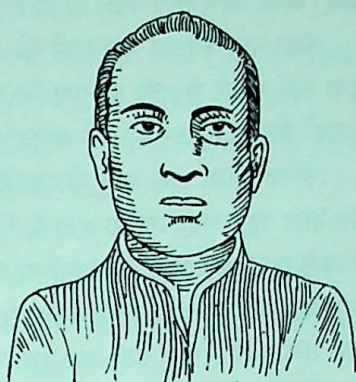
बालकृष्ण शर्मा　　　　　रामचंद्र सर्वटे

काम नहीं करते। अगर तुम्हारा यही तरीका रहा तो मैं एक-एक करके तुम सबको निकाल बाहर करूँगा!''

यह कहते हुए वह अफसर चला गया। किसीने भी उसका प्रतिवाद नहीं किया, किसीने सफाई पेश नहीं की। वे लोग जानते थे कि सफाई देने से वह और अधिक बड़बड़ाने लगता है। वे यह भी जानते थे कि ऐसा वह हमेशा ही कहा करता था, क्योंकि उसका विश्वास था कि ऐसा कहते रहने से लोग चौकन्ना रहते हैं और काम करते रहते हैं। जब वह चला गया तो रामचंद्र सर्वटे ने धीरे से कहा—

''ये अफसर लोग क्या समझें हम मेहनतकशों की कठिनाइयाँ! हम लोग तो अपनी जिम्मेदारी समझकर काम करते रहते हैं और अपना खून-पसीना एक करते रहते हैं और ये अफसर लोग हैं, जिनका काम हमारे खून की कीमत पर सिर्फ गुलछर्रे उड़ाना है। पता नहीं वह जमाना कब आएगा, जब काम करनेवालों की कद्र होगी और हराम का खानेवालों की नींद हराम होगी!''

रामचंद्र सर्वटे की यह बात सुनकर बालकृष्ण शर्मा ने भी कुछ उसी प्रकार की बात कही और गिरधारीसिंह ने उन दोनों की बातों की पुष्टि की। इन लोगों के अतिरिक्त वहाँ एक व्यक्ति और भी काम कर रहा था, जिसे वे सब 'दास बाबू' के नाम से पुकारते थे। दास बाबू काम करता रहा। उसने इन लोगों की चर्चा में भाग नहीं लिया। गिरधारीसिंह ने उसे छेड़ते हुए कहा—

''क्यों दास बाबू! क्या आप हम लोगों के साथी नहीं हैं? आपने कुछ कहकर भी हम लोगों की हिमायत नहीं की।''

अब दास बाबू ने अपना मुँह खोला—

''गिरधारी बाबू, मैं कहूँ क्या! मैं तो चाहता हूँ कि हम लोग कुछ करके

दिखाएँ। अगर आप लोग तैयार हों तो हम सोचें कि हम लोग क्या कर सकते हैं!''

दास बाबू की यह बात सभी को अच्छी लगी। उस समय तो वे अपना काम छोड़ना नहीं चाहते थे। तय हो गया कि शाम के समय कटोरा ताल पर मिला जाए और वहाँ बैठकर कुछ चर्चा की जाए।

संध्या समय दास बाबू, गिरधारीसिंह, रामचंद्र सर्वटे और बालकृष्ण शर्मा कटोरा ताल पहुँच गए। कटोरा ताल के निकट ही ग्वालियर का विक्टोरिया कॉलेज था, उसके कुछ छात्र और कुछ नागरिक जन भी सैर-सपाटे के लिए वहाँ पहुँचे थे। कटोरा ताल के सामने से सीधी सड़क राजमहल के लिए जाती थी। सड़क पर से ही वह राजमहल दिखाई देता था। उस सड़क पर संध्या समय हवाखोरी के लिए जानेवालों की काफी चहल-पहल रहती थी।

झाड़ियों के एक झुरमुट के पास जे.सी. मिल्स के चारों साथी बैठ गए। दिन में जो घटना घटी थी, उसपर चर्चा चल पड़ी। चर्चा प्रारंभ करते हुए दास बाबू ने कहा—

''वह अफसर का बच्चा, जो आज बड़बड़ा रहा था, सचमुच ही हम लोगों की जान लेना चाहता है। हम लोग अपनी तरफ से पूरी ईमानदारी और मेहनत से काम करते हैं; लेकिन इतने पर भी वह कहता है कि हम लोग कुछ नहीं करते।''

गिरधारीसिंह ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—

''और वह जितना काम हमसे चाहता है, यदि हम उतना करने लगें तो हम अधिक दिन नहीं जी सकेंगे और हमारे बाद हमारे बाल-बच्चों को भूखा मरना पड़ेगा।''

रामचंद्र सर्वटे ने अपनी बात इस तरह रखी—

''मानव द्वारा मानव का शोषण शायद हमारे देश में ही होता है और मेरा खयाल है कि यह शोषण इसलिए होता है कि हम लोग उसका प्रतिवाद नहीं करते।''

अपने साथी की इस बात की पुष्टि करते हुए बालकृष्ण शर्मा ने कहा—

''यदि मैं साथी की इस बात को अपने शब्दों में कहूँ तो इस प्रकार कहना चाहूँगा कि वे ही लोग शोषण का शिकार होते हैं, जिन्हें बगावत नहीं आती।''

बगावतवाली बात सुनकर दास बाबू को ऐसा लगा जैसे लोहा गरम हो चुका है और उसपर चोट करनी चाहिए। अपनी बात को स्पष्टता के साथ उन्होंने इस प्रकार कहा—

''भाई, बगावत तो सचमुच कभी-कभी आवश्यक हो जाती है; लेकिन यह वह हथियार है, जिसको यदि तरीके से नहीं चलाया गया तो हमको ही चोट पहुँचा सकता है। बगावत के तरीके सीखकर ही हमको बगावत की बात सोचनी चाहिए।''

रामचंद्र सर्वटे ने जिज्ञासा प्रकट की—

"दास बाबू! यदि आपको बगावत के तरीके आते हों तो हमें सिखाइए न? हम वादा करते हैं कि यह बात हम लोगों तक ही सीमित रहेगी।"

बालकृष्ण शर्मा और गिरधारीसिंह ने भी इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि हम लोग एक-दूसरे के साथ दगा नहीं कर सकते।

दास बाबू ने थोड़ा खुलते हुए कहा—

"बगावत के तरीके मुझको तों नहीं आते; लेकिन कलकत्ता में मेरे कुछ साथी लोग हैं, वे इस हुनर को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। यदि उन्होंने हमें भरोसे के योग्य समझा तो शायद वे हमारा मार्गदर्शन कर सकें।"

दास बाबू की यह बात सुनकर सभी ने आग्रह किया कि वे कलकत्ता के अपने साथियों को बुला लें। दास बाबू ने प्रस्ताव से सहमति प्रकट करते हुए कहा—

"मैं अपना निवेदन अपने साथियों तक पहुँचा दूँगा और मुझे पूरा विश्वास है कि उनमें से कुछ लोग यहाँ अवश्य आ सकेंगे। उसके बाद देखेंगे कि पानी किस तरफ बहता है।"

कटोरा ताल की इस मीटिंग के लगभग एक महीने पश्चात् दास बाबू के मित्रों में से दो व्यक्ति कलकत्ता से ग्वालियर पहुँचे। दास बाबू के द्वारा उन्होंने जान लिया कि उनके ग्वालियर के साथी बहुत भरोसेमंद और जान पर खेल जानेवाले व्यक्ति हैं। एक दिन ग्वालियर की माँडरे पहाड़ी पर वे सभी लोग मिले और ग्वालियर के साथियों को कलकत्ता से आए हुए साथियों ने बताया कि कलकत्ता में 'अनुशीलन समिति' नाम की क्रांतिकारियों की एक संस्था है, जिसकी शाखाएँ भारत में आजादी की दिशा में कार्य कर रही हैं। उन्होंने बताया कि वह संस्था सशस्त्र क्रांतिकारियों की संस्था है, जो बम और पिस्तौल के खेल खेलते हैं तथा इस खेल में अपने प्राण भी दाँव पर लगाने में वे संकोच नहीं करते।

ग्वालियर के साथियों ने अनुशीलन समिति के विषय में सुन अवश्य रखा था, पर उसकी विस्तृत जानकारी उन्हें नहीं थी। उस समिति के सदस्यों से मिलकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई और वे सभी अनुशीलन समिति के सदस्य बन गए। इस प्रकार ग्वालियर में अनुशीलन समिति की एक शाखा खुल गई। सच पूछा जाए तो अनुशीलन समिति ने दास बाबू को ग्वालियर इसी उद्देश्य से भेजा था। यह उस समिति का तरीका था कि भारत के विभिन्न उद्योग केंद्रों पर वे सदस्य भेजते थे, जो साधारण कार्यकर्ता की तरह कार्य करते हुए क्रांतिपथ के लिए योग्य व्यक्तियों की खोज करते थे और उन्हें अनुशीलन समिति का सदस्य बना लिया करते थे। दास

बाबू ने भी जे.सी. मिल्स में काम करते हुए वह काम पूरा कर दिया, जिसके लिए उन्हें भेजा गया था। इसके पश्चात् वे ग्वालियर छोड़कर चले गए।

ग्वालियर के मित्रों ने उत्साह के साथ क्रांति संगठन का कार्य प्रारंभ कर दिया। वे अस्त्र-शस्त्र संग्रह की दिशा में भी प्रयत्नशील रहने लगे। उन्हें यह मालूम हुआ कि गोवा में हथियार आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। गोवा पुर्तगाल शासन के अंतर्गत था और वहाँ हथियारों की बिक्री पर कोई पाबंदी नहीं थी। हाँ, गोवा से बंबई की सीमा में अवैध रूप से हथियार ले जाना या रखना दंडनीय अपराध था।

ग्वालियर के साथियों के एक मित्र स्टीफन जोसेफ फर्नांडिस थे, जो मूल रूप से गोवा के रहनेवाले थे; लेकिन वे ग्वालियर में आकर रहने लगे थे। मि. स्टीफन को विश्वास में लिया गया और वे हथियार खरीदने के लिए गोवा जाने के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

स्टीफन जोसेफ फर्नांडिस ने गोवा से कुछ हथियार खरीदकर ग्वालियर भेजे। वे हथियार साथियों को पसंद आ गए। उन्होंने और हथियार मँगाने के लिए बीमा से स्टीफन के पास कुछ और रुपए भेज दिए। उस क्षेत्र में रहे होने के कारण स्टीफन कस्टम अधिकारियों को चकमा देकर दो-तीन बार हथियार ग्वालियर लाने में सफल हो गए। एक बार हथियार लेने वे फिर गोवा पहुँचे। एक ही दुकान से बार-बार हथियार खरीदने के कारण एक जासूस उनके पीछे पड़ गया। जब वे अपने साथ पाँच पिस्तौलें और कुछ कारतूस लेकर बंबई पहुँचे तो उस जासूस ने उन्हें पकड़वा दिया। पुलिस ने तलाशी ली और सारे हथियार बरामद हो गए। उनकी जेब से कुछ पत्र भी मिले; जिनमें रामचंद्र सर्वटे, गिरधारीसिंह और बालकृष्ण शर्मा के नामों के उल्लेख थे। बंबई की पुलिस ने स्टीफन को तो जेल में बंद कर दिया और दिल्ली तथा ग्वालियर अन्य लोगों की गिरफ्तारी के लिए चल दी।

गिरधारीसिंह ने रामचंद्र सर्वटे को दिल्ली के एक मोटर चलाने का प्रशिक्षण देनेवाले स्कूल में भरती करा दिया था। गिरधारीसिंह की ससुराल दिल्ली में थी। उन्होंने अपनी ससुराल में ही एक कमरा रामचंद्र सर्वटे को रहने के लिए दिला दिया। सर्वटे का प्रशिक्षण पूरा हो गया था और वे ड्राइविंग लाइसेंस लेने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने गिरधारीसिंह को ग्वालियर से दिल्ली बुलवा लिया। जब बंबई की पुलिस ने दिल्ली में छापा मारा तो रामचंद्र सर्वटे एवं गिरधारीसिंह दिल्ली में गिरफ्तार कर लिये गए और बालकृष्ण शर्मा तथा उनके भाई बालमुकुंद शर्मा को ग्वालियर में गिरफ्तार कर लिया गया। ये गिरफ्तारियाँ २८ अक्तूबर, १९३० को हुईं। बालकृष्ण शर्मा को भी उनके साथियों के पास दिल्ली जेल भेज दिया गया।

बंबई की पुलिस की पहल पर गिरफ्तारियाँ दिल्ली पुलिस ने की थीं।

दिल्ली की पुलिस ने वाहवाही लूटने की दृष्टि से इन क्रांतिकारियों को दिल्ली में ही रखा। बंबई की पुलिस को खाली हाथ लौटना पड़ा।

बंबई की पुलिस ने स्टीफन जोसेफ फर्नांडिस को बंबई में ही गिरफ्तार किया और इसी कारण उन्हें बंबई की जेल में ही रखा गया। जब दिल्ली पुलिस ने गिरधारीसिंह, रामचंद्र सर्वटे एवं बालकृष्ण शर्मा को बंबई नहीं भेजा तो बंबई की पुलिस ने अपना सारा रोष स्टीफन पर उतारा और प्रयत्न किया कि वह उससे क्रांतिकारियों के सारे भेद उगलवा ले। स्टीफन को कई प्रकार की यातनाएँ दी गईं, पर उसने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। इसपर पुलिस ने उसे छत के कड़ों से हाथ बाँधकर निरंतर खड़े रहने की सजा दी। पुलिस को आशा थी कि इस सजा से तंग आकर आखिर वह अपने भेद दे देगा। स्टीफन को निरंतर सात दिन तक खड़ा रखा गया; पर फिर भी उसने कोई भेद नहीं खोला। सात दिन निरंतर खड़े रहने के कारण उसके शरीर का सारा खून पैरों में पहुँच गया और उसकी शक्ल विचित्र प्रकार की हो गई। इतनी यातनाएँ झेलकर भी उसने कोई कमजोरी नहीं दिखाई।

दिल्ली की पुलिस ने भी वहाँ रखे गए क्रांतिकारियों को कई प्रकार की यातनाएँ दीं। उन लोगों को बर्फ की सिल्लियों पर घंटों तक लिटाया जाता था; लेकिन उन लोगों ने कोई भेद नहीं दिए। जब दिल्ली की पुलिस ने समझ लिया कि इन तिलों में तेल नहीं है, तो उसने उन सभी को बंबई भेज दिया। तीन वर्षों तक उन लोगों को अंडरट्रायल कैदी के रूप में रखा गया। उसके पश्चात् उन लोगों पर भारतीय दंड विधान की धारा १२०-ए और आर्म्स एक्ट के अंतर्गत मुकदमा चलाया गया। वह मुकदमा 'दिल्ली-बंबई-गोवा-ग्वालियर केस' के नाम से चला। ढाई महीने तक मुकदमा चलाया गया और मुकदमे के परिणामस्वरूप बालमुकुंद शर्मा को तो मुक्त कर दिया गया, लेकिन गिरधारीसिंह, रामचंद्र सर्वटे, स्टीफन जोसेफ फर्नांडिस तथा बालकृष्ण शर्मा को तीन-तीन वर्ष के कठोर कारावास का दंड सुनाया गया।

स्टीफन पूरी सजा भुगतने के लिए जीवित नहीं रहा। पुलिस द्वारा दी गई यातनाओं के फलस्वरूप बड़ी दर्दनाक अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई।

गिरधारीसिंह को आर्थर रोड जेल में भेज दिया गया। वहाँ उन्हें रामवान की कुटाई का काम दिया जाता था, जिससे उनके शरीर में जोर की खुजली चलने लगती थी। उन दिनों उस जेल में कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता जमनालाल बजाज भी थे। उन्होंने प्रयत्न करके गिरधारीसिंह का स्थानांतरण अहमदाबाद जेल में करा दिया।

अहमदाबाद जेल में पहले दिन ही गिरधारीसिंह का झगड़ा सूबेदार से हो गया। जेल के बड़े फाटक में एक खिड़की थी, जिसमें से उन्हें अंदर प्रवेश करना

था। जब वे पहले पैर खिड़की के अंदर डालकर प्रवेश कर गए, तो सूबेदार ने उनसे कहा कि बाहर जाओ और खिड़की के अंदर पहले सिर डालकर प्रवेश करो। नए आनेवाले हर कैदी को वह इसी प्रकार आने के लिए कहता। जब कैदी खिड़की के अंदर सिर डालता तो सूबेदार अपने बूट की जोरदार ठोकर उसके सिर में लगाकर पहले दिन ही उसपर अपना रोब गालिब कर देता था। जब गिरधारीसिंह से उसने बाहर जाकर फिर खिड़की में सिर डालकर अंदर आने को कहा, तो वे अकड़ गए और सूबेदार को भली-बुरी सुना डाली। जेलर और अन्य लोगों के लिए यह नया ही अनुभव था। दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर बात रफा-दफा कर दी गई।

अहमदाबाद जेल में गिरधारीसिंह को भगवानदास माहौर मिल गए। भगवानदास माहौर भगतसिंह एवं चंद्रशेखर आजाद की पार्टी के आदमी थे और भुसावल बम केस के अंतर्गत उन्हें आजीवन कारावास का दंड मिला था।

अहमदाबाद जेल में गिरधारीसिंह को जो मशक्कत का काम दिया गया था, वह था चालीस पौंड ज्वार प्रतिदिन पीसना। यह सजा सुनकर गिरधारीसिंह को कोई मलाल नहीं हुआ। जवानी के दिन थे और कसरती शरीर। उन्होंने सोचा कि चालीस पौंड ज्वार यों ही रगड़कर फेंक दूँगा। चक्की खड़े-खड़े चलानी थी। जब पहले दिन चक्की चलाने खड़े हुए तो पसीना-पसीना हो गए। चालीस पौंड ज्वार पीस तो डाली, पर आटा कम था और दाने अधिक। खूब लानत-मलामत हुई। भगवानदास माहौर ने उन्हें चक्की पीसने की युक्ति सिखा दी। उसके बाद वे बिना थके अच्छी पिसाई करने लगे।

इतनी मेहनत के एवज में गिरधारीसिंह को जो रोटियाँ मिलती थीं, वे उन्हें अपर्याप्त होती थीं। भगवानदास माहौर ने उनका यह कष्ट भी दूर कर दिया। भगवानदास माहौर साबुन फैक्टरी के प्रभारी थे। वे रसोइए को साबुन दे दिया करते थे और रसोइया गिरधारीसिंह को अधिक रोटियाँ दे दिया करता था।

सन् १९३६ में इन क्रांतिकारियों को जेलों से मुक्ति मिली।

□

★ श्रीमती गुरुदयाल कौर

बर्मा के मोरचे पर जिस समय ब्रिटेन के बमवर्षक विमानों ने भारी गोलाबारी की, उस समय वहाँ आजाद हिंद फौज और रानी झाँसी रेजीमेंट—दोनों का ही पड़ाव था।

श्रीमती गुरुदयाल कौर सन् १९४२ में रानी झाँसी रेजीमेंट में भरती हुई थीं और फौज के कठोर जीवन में उन्हें विशेष आनंद आने लगा था। इंफाल मोरचे पर विजय के पश्चात् अंग्रेजी सेना बर्मा की तरफ बढ़ चली थी और उसके बमवर्षक नागरिक ठिकानों पर भी गोलियाँ बरसाते थे। रानी झाँसी रेजीमेंट की महिला सैनिक नागरिक महिलाओं को बम और गोलियों की वर्षा से बचाने के लिए सदैव तत्पर रहती थीं। ऐसे ही एक प्रयास में श्रीमती गुरुदयाल कौर स्वयं घायल हो गईं और अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

□

★ कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन

कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन

जनवरी १९४५ में कुछ अंग्रेजी डिवीजन इरावदी नदी की ओर बढ़ रहे थे और उनमें से एक इरावदी नदी को पार करके जापान अधिकृत कुछ चौकियाँ उनसे छीनना चाहता था। कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन के पास यह आदेश भेजा गया कि वे २० जनवरी तक इरावदी नदी के किनारे पहुँच जाएँ और अंग्रेजी डिवीजन को नदी पार न करने दें। दुर्भाग्यवश, यह आदेश १९ जनवरी को मिला; पर फिर भी उन्हें ज्यों ही आदेश मिला, वे अपनी रेजीमेंट को लेकर इरावदी नदी की ओर चल पड़े। उन्हें अस्सी मील का फासला तय करना था। यातायात के लिए मोटर गाड़ियाँ आदि नहीं थीं। युद्ध सामग्री बैलगाड़ियों में ले जानी पड़ी। जब वे रास्ते में ही थे तो उन्हें सुनने को मिला कि अंग्रेजी डिवीजन ने नदी पार कर ली है। फिर भी वे निराश नहीं हुए और तीव्र गति से झपटते हुए इरावदी नदी के किनारे जा पहुँचे। वहाँ उन्हें मालूम हुआ कि शत्रु ने इरावदी नदी पार नहीं की है; पर उसके कुछ गश्ती दस्ते वहाँ पहुँच चुके हैं। कर्नल ढिल्लन ने पूरे क्षेत्र का निरीक्षण किया और नं. ७ बटालियन को न्यांगू पर तैनात किया, जिसके कमांडर लेफ्टिनेंट हरिराम थे। पागन का क्षेत्र बटालियन नं. ९ को दिया गया, जिसका नेतृत्व कैप्टेन चंद्रभान कर रहे थे। नं. ८

बटालियन को एक गाँव में सुरक्षित सेना के रूप में रखा गया।

नेहरू ब्रिगेड के लड़ाकू दस्ते पाकोफू के क्षेत्र में शत्रु की गतिविधियों पर दृष्टि रखने लगे। इसी समय मेजर जागीरसिंह के नेतृत्व में ब्रिगेड की अन्य टुकड़ियाँ भी आ गईं और उन्होंने मोरचा सँभालने के लिए खाइयाँ खोदनी प्रारंभ कर दीं। उसी समय शत्रु पक्ष भी सक्रिय हो उठा और एक ब्रिटिश दस्ता ९ और १० फरवरी की रात को इरावदी नदी पार करके आजाद हिंद फौज के क्षेत्र में घुस आया। यह पूरा-का-पूरा दस्ता साफ कर दिया गया। इसी समय अंग्रेजी सेना का एक पूरा डिवीजन इरावदी नदी के दूसरे किनारे पर आकर जम गया और उसने इस पार स्थित आजाद हिंद फौज को निशाना बनाकर अपनी तोपें अड़ा दीं। आजाद हिंद फौज के सैनिकों के पास केवल राइफलें और हलकी स्वचालित बंदूकें थीं।

शत्रु ने १० फरवरी को दिन-भर गोलाबारी की और रात को उसने इरावदी नदी पार करने का प्रयत्न किया; पर उसे पिटकर पीछे हटना पड़ा।

□

★ गुरुबख्शसिंह ★ फजल दाद ★ रामशरण

इंग्लैंड, अमेरिका और फ्रांस की मित्र सेनाएँ सन् १९४४ के प्रारंभ में इटली की राजधानी रोम के दक्षिण तक पहुँच गई थीं। वैसे उस क्षेत्र में युद्ध नहीं हो रहा था, पर युद्ध की संभावनाएँ थीं। ऐसे क्षेत्र में जहाँ दोनों पक्षों की सेनाएँ आमने-सामने डटी हों, पर युद्ध नहीं हो रहा हो, 'सुप्त मोरचा' कहा जाता है। सुप्त मोरचे पर सेनाएँ कभी-कभी कुछ छुटपुट हमलों द्वारा पारस्परिक छेड़छाड़ करती हैं और कभी-कभी वहाँ प्रचारात्मक युद्ध लड़ा जाता है।

इटली के मोरचे पर अंग्रेजों की ओर से लड़नेवाली भारतीय सेनाओं और जर्मनी के नेतृत्ववाली आजाद हिंद फौज में प्रचारात्मक युद्ध भी हुआ और कभी-कभी झड़पें भी हुईं। अंग्रेजों ने जानबूझकर जर्मन तोपों की खुराक बनने के लिए भारतीय सेना को मोरचे पर सबसे आगे रखा था। आजाद हिंद फौज चाहती थी कि उनके भारतीय भाई मौत के शिकार न हों। इसीलिए उन्होंने परचेबाजी प्रारंभ की और अंग्रेजों के अधिकार की भारतीय सेनाओं को अपनी तोपों का निशाना न बनाकर अपने प्रचार के गोलों का निशाना बनाया। प्रचारात्मक परचे कभी-कभी हवाई जहाजों द्वारा बरसाए जाते थे और कभी तोपों में भरकर शत्रु क्षेत्र में दाग दिए

जाते थे। इन परचों में चित्र भी होते थे और तरह-तरह के प्रलोभन भी। कुछ परचे जो आजाद हिंद फौज द्वारा मित्र राष्ट्र अधिकृत भारतीय सेनाओं में गिराए गए थे, वे बड़े ही प्रभावशाली और मनोरंजक थे।

एक परचे में हाथी पर सवार चूहे का चित्र अंकित था। हाथी का एक पैर रस्से के माध्यम से एक खूँटे से बाँध दिया गया था और हाथी की पीठ पर एक चूहा सवार दिखाया गया था। हाथी भारत का प्रतीक था और चूहा अंग्रेजी राज्य का। चूहे की पूँछ से अंग्रेजी यूनियन जैक लटका हुआ दिखाया गया था। नीचे भूमि पर जर्मनी की प्रतीक एक बिल्ली दिखाई गई थी, जो अंग्रेजी चूहे को अपने पेट में पहुँचाने को लालायित दिखाई देती थी।

एक अन्य परचे में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री मि. चर्चिल एक गाड़ी खींचते हुए दिखाए गए थे। उस गाड़ी पर भारतवर्ष की संपत्ति थैलों में लदी दिखाई गई थी। मि. चर्चिल गाड़ी को खींचकर इंग्लैंड ले जाते हुए चित्रित किए गए थे। इस परचे के माध्यम से भारतीय फौजों को समझाया गया कि यदि हमने अंग्रेजों को भारत से नहीं भगाया तो हमारे देश की संपत्ति इंग्लैंड जाती रहेगी और हम लोग गुलाम तथा निर्धन ही बने रहेंगे।

ये प्रचारात्मक परचे ब्रिटिश फौज में गिराए गए, तो उनका बहुत प्रभाव हुआ और कई सैनिक अंग्रेजों का साथ छोड़कर आजाद हिंद फौज में आकर मिलने लगे।

कभी-कभी आजाद हिंद फौज की झड़पें भी अंग्रेजी सेना से हो जाया करती थीं। इसी प्रकार की झड़पों में आजाद हिंद फौज के वीर फजल दाद, गुरुबख्शसिंह और रामशरण मारे गए थे।

अंग्रेज इस प्रचारात्मक युद्ध से इतने घबरा गए कि उन्होंने सुप्त मोरचे पर भारतीयों को अग्रिम पंक्ति से हटाकर पिछली पंक्तियों में रखना प्रारंभ कर दिया।

□

★ गोपाल सेन

गोपाल सेन क्रांतिकारी दल का एक सक्रिय सदस्य था और जिन दिनों बर्मा में आजाद हिंद फौज सक्रिय थी, गोपाल सेन को उससे संपर्क स्थापित करने में सफलता मिल गई थी। वह किसी बड़े षड्यंत्र की संरचना कर रहा था; लेकिन पुलिस को उसकी गतिविधियों का पता चल गया और एक दिन कलकत्ता स्थित

उसके मकान पर छापा मारा गया। वह छत के ऊपर पहुँच गया। पुलिस भी छत पर पहुँच गई। पुलिस ने उसे जीवित गिरफ्तार करना चाहा; पर वह उन लोगों के लिए अकेला ही भारी पड़ रहा था। आखिर पुलिस के कुछ लोगों ने उसे पकड़कर तीन मंजिल मकान की छत से नीचे सड़क पर फेंक दिया। यह घटना २९ सितंबर, १९४४ की है। उसी दिन गोपाल सेन की मृत्यु हो गई।

□

★ कैप्टेन चंद्रभान

१३ और १४ फरवरी, १९४५ की रात को अंग्रेजी सेना ने इरावदी नदी पार करने का फिर प्रयत्न किया। इस बार पूरी तैयारी के बाद उसने भयानक आक्रमण किया और अपनी सभी तोपों के मुँह उसने आजाद हिंद फौज के सामने खोल दिए। दहकती हुई तोपों के सहारे शत्रु सेना ने मोटर बोटों द्वारा इरावदी नदी पार करने का प्रयत्न किया। आजाद हिंद फौज के जवान भी संकल्पित थे कि वे शत्रु को नदी पार नहीं करने देंगे। गोलों की चिंता किए बिना वे दुश्मन से भिड़े रहे और रात-भर शत्रु सेना चील-झपट्टा करती रही; पर हर बार मार खाकर उसे पीछे हटना पड़ा।

सबसे अधिक भयंकर लड़ाई पागन मोरचे पर हुई, जहाँ कैप्टेन चंद्रभान ने बहुत अच्छी स्थिति पर अपनी मशीनगनें जमा रखी थीं। इस मोरचे पर जो अंग्रेजी सेना नदी पार करने का प्रयत्न कर रही थी, वह लंकाशायर के टॉमी लोगों की थी। अंग्रेजों को देखते ही कैप्टेन चंद्रभान का खून खौल उठा। जब टॉमी लोगों की फौज मोटर बोटों में बैठकर इरावदी नदी पार करने लगी तो कैप्टेन चंद्रभान की मशीनगनें शांत रहीं और उन्होंने शत्रु की नावों को बीच नदी में आ जाने दिया। जब वे नावें इतनी निकट आ गईं कि उनपर अच्छी तरह से निशाना साधा जा सकता था तो अचानक मशीनगनों के मुँह खोल दिए गए और नावों में बैठे हुए टॉमी सैनिक होलों की तरह भुनने लगे। वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए और नावों में इतनी खलबली मची कि टॉमियों से भरी हुई बीस नावें इरावदी नदी में डूब गईं। कुछ नावों के सैनिकों ने भागकर प्राण बचाए; पर उनमें सवार कई अंग्रेज सैनिक मारे गए। एक अंग्रेज अफसर तो इतना घबरा गया कि जान बचाने के लिए उसने अपनी राइफल नदी में फेंक दी और अपना पैंट भी उतारकर नदी में फेंक दिया तथा तैरकर किनारे पर जा लगा।

१४ फरवरी की सुबह शत्रु सेना ने अपनी पिटाई का बदला लेने का संकल्प किया। सुबह होते ही ब्रिटिश वायुयानों का दल आजाद हिंद फौज पर टूट पड़ा और उसने भयंकर गोलाबारी प्रारंभ कर दी। दूसरे किनारे पर स्थित ब्रिटिश तोपखाना भी

सक्रिय हो उठा और उसके गोले आजाद हिंद फौज को निशाना बनाने लगे। आजाद हिंद फौज के सैनिक अपनी खाइयों में दुबके रहे और ज्यों ही कोई वायुयान निकट आता, वे अपनी राइफलों से ही उसपर गोलियाँ दागने लगते। इस तरह उन्होंने राइफ़लों की गोलियों से ही कुछ ब्रिटिश विमान मार गिराए। खिसियाई हुई शत्रु सेना ने आजाद हिंद फौज को छोड़कर, जापानी सेना पर हमला बोलकर उससे एक चौकी छीन ली और वहाँ अपना अड्डा बना लिया। उसके सहारे बहुत बड़ी संख्या में उसकी सेना इरावदी के इस पार अर्थात् पूर्वी किनारे पर आ गई।

एक स्थान पर अपना पैर जमा लेने के पश्चात् अंग्रेजी सेना सक्रिय हो गई। उसने आजाद हिंद फौज की सातवीं बटालियन को घेर लिया। इस बटालियन की दूसरी ओर भी उन्होंने अपने छतरीधारी सैनिक उतार दिए। इस प्रकार आजाद हिंद फौज की सातवीं बटालियन घेरों के बीच में फँस गई। उसे समर्पण करना पड़ा। पास ही में कैप्टेन चंद्रभान भी एक बटालियन का नेतृत्व कर रहे थे। उसपर भी अंग्रेजी सेना ने भयंकर हमला किया और उतनी ही भयंकरता के साथ कैप्टेन चंद्रभान ने भी जवाब दिया। उसकी मार से विचलित होकर और उनके नाम से आतंकित होकर अंग्रेजी सेना को उस ओर से हटना पड़ा।

अगले दिन कर्नल ढिल्लन ने अपने रहे-सहे सैनिकों को बटोरा और शत्रु को फिर इरावदी के पार खदेड़ने का प्रयत्न किया; पर शत्रु के बमवर्षक सक्रिय हो उठे और उन्हें अपना विचार स्थगित करना पड़ा।

कर्नल ढिल्लन को अपने सैनिक दस्तों से संपर्क स्थापित करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यातायात का कोई साधन था नहीं। न उनके पास वायरलैस सैट थे और न टेलीफोन। या तो वे अपने आदमियों को इधर-उधर दौड़ाते या स्वयं ही दौड़ते फिरते। फिर भी उन्होंने बड़े साहस का काम किया और दौड़-भाग करके अपनी बिखरी हुई सेना को संगठित कर लिया। इस बीच शत्रु सेना का पूरा डिवीजन इरावदी नदी पार कर चुका था। कर्नल ढिल्लन की सेना से अंग्रेजी सेना की कई बार मुठभेड़ें हुईं और शत्रु सेना को पीछे हटना पड़ा।

□

★ चत्तरसिंह

नेताजी की आजाद हिंद फौज में भरती होने के पहले चत्तरसिंह ब्रिटिश फौज की पंजाब रेजीमेंट में सैनिक था और वह मलाया में जापानी सेना के विरुद्ध

लड़ा था। युद्धबंदी के रूप में वह सिंगापुर रहा और जब वहाँ आजाद हिंद फौज का गठन हुआ तो वह उसमें भरती हो गया। नेताजी सुभाष का भाषण सुनने के पश्चात् उसमें नई चेतना का संचार हुआ और वह बर्मा के मोरचे पर बहुत बहादुरी के साथ लड़ा। एक युद्ध में वह अपने कुछ साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। फौजी अदालत में उसपर मुकदमा चला और सम्राट् के विरुद्ध युद्ध करने के अपराध में उसे २९ जुलाई, १९४४ को फाँसी दे दी गई।

□

★ लांसनायक चरनसिंह

चरनसिंह पंजाब के जालंधर जिले के 'सेरावन' गाँव का निवासी था। वह मलाया में अपना व्यापारिक कारोबार जमा चुका था और उसका काम अच्छा चल निकला था। उन्हीं दिनों मलाया में आजाद हिंद फौज का निर्माण हुआ और वह उसमें भरती हो गया। अपनी योग्यता के कारण शीघ्र ही वह लांसनायक के पद पर पहुँच गया।

चरनसिंह कभी-कभी भारत भी जाया-आया करता था। उसकी इस स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से उसे आजाद हिंद फौज की ओर से जासूसी काम के लिए भारत भेजा गया। परंतु वह पकड़ लिया गया और उसे फाँसी का दंड सुना दिया गया।

लांसनायक चरनसिंह को मुलतान जेल में फाँसी दे दी गई।

□

★ हवलदार चाननसिंह

हवलदार चाननसिंह अपने गिने-चुने साथियों को लेकर उस स्थल पर जा पहुँचा, जहाँ बर्मा के मोरचे पर अंग्रेजी सेना ने अपना पड़ाव डाल रखा था। हवलदार चाननसिंह ने अपने साथियों को झाड़ियों में छिप जाने के लिए कहा और स्वयं अंग्रेजी फौज के पड़ाव के पिछले हिस्से में पहुँच गया तथा यह देखने का प्रयत्न करने लगा कि वहाँ शत्रु सेना की कितनी संख्या है। वह बेफिक्री से खटाखट करता हुआ उधर घूम रहा था; क्योंकि वह हिंदुस्तानी था और शत्रु सेना में भी

हिंदुस्तानी थे। जितनी देर वह घूमता रहा, उसको किसीने नहीं टोका; लेकिन जब वह वापस जाने लगा तो एक अकड़ती हुई आवाज ने उसे टोका और उससे संकेत शब्द पूछा। हवलदार चाननसिंह को ब्रिटिश फौज के उस संकेत शब्द का पता नहीं था और वह हड़बड़ा गया। अब उसने भागने का प्रयत्न किया, लेकिन शत्रु सैनिकों द्वारा वह पकड़ लिया गया। उसे फौजी अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया गया और फाँसी की सजा सुना दी गई।

चाननसिंह आजाद हिंद फौज के 'प्रथम बहादुर ग्रुप' में हवलदार था। देश की आजादी के प्रयत्न में उसने फाँसी का फंदा चूम लिया।

□

★ जगन्नाथ चोपडेकर

गोमांतक दल के एक उग्र क्रांतिकारी जगन्नाथ चोपडेकर को पुर्तगाली पुलिस ने हिरासत में लेकर बेरहमी के साथ इसलिए मारा कि वह अपने साथी क्रांतिकारियों के पते-ठिकाने बता दे। मार के परिणामस्वरूप पुलिस की हिरासत में ही उसकी मृत्यु हो गई।

जगन्नाथ का जन्म १० अप्रैल, १९३१ को 'चोपेडेम गाँव' में हुआ था। उसके पिता श्री अर्जुन चोपडेकर मोटर मैकेनिक थे।

□

★ जनरल जगन्नाथराव भोंसले
★ लेफ्टिनेंट नजीर अहमद ★ कर्नल एस.ए. मलिक

जनरल जगन्नाथराव भोंसले

कर्नल एस.ए. मलिक

वह समय भी आया, जब हमारे इतिहास-पुरुष सुभाषचंद्र बोस को विफलताओं ने आ घेरा। युद्ध के प्रथम चक्र में आजाद हिंद फौज को इंफाल के मोरचे पर केवल असफलता ही नहीं मिली, उसे भारी तबाही के दौर से भी गुजरना पड़ा। समय के पूर्व मानसून फट पड़ा और मैदान में पड़े हुए आजाद हिंद फौज के सैनिक नदी-नालों में घास के तिनकों की भाँति बहने लगे। रसद के रास्ते कट जाने के कारण वे लोग भूखों रहकर पेड़ों की पत्तियाँ चबाने के लिए विवश हुए। उन्हें खूनी पेचिश की बीमारी होने लगी और हैजे की महामारी फैल गई। हजारों की संख्या में सैनिक दलदल में फँसकर मर गए।

परिस्थितियों का लाभ उठाकर अंग्रेजी सेनाएँ विजयी होकर बर्मा की तरफ बढ़ने लगीं और विवश होकर जापानी सेना तथा आजाद हिंद फौज को बर्मा के मोरचे से हटना पड़ा। जापानी सेना तो ताबड़तोड़ भागने लगी, लेकिन नेताजी ने वह घबराहट नहीं दिखाई। पहले तो उन्होंने रानी झाँसी रेजीमेंट की उन लड़कियों को अपने-अपने घरों पर भेजा, जो उस क्षेत्र की रहनेवाली थीं। उन लड़कियों के साथ उन्होंने काफी खर्चा भी रखा। वे अनिच्छापूर्वक रोते-रोते बिदा हुईं। इसके पश्चात् नेताजी ने अपनी कुछ सेना वहाँ छोड़ी, जिसको यह उत्तरदायित्व दिया गया कि संक्रांतिकाल का लाभ उठाकर डाकू और लुटेरे जनता को न लूटें। उन्होंने सहयोग देने के लिए बर्मा के लोगों को धन्यवाद भी दिया।

रानी झाँसी रेजीमेंट की शेष लड़कियों और चुने हुए जवानों को साथ लेकर नेताजी स्वयं अपना सामान पीठ पर लादे हुए, बैंकाक जाने के लिए चल पड़े। जापानियों ने अकेले नेताजी को ले जाने के लिए वायुयान की भी पेशकश की, लेकिन नेताजी को अपनी सेना की बेटियों और बेटों को छोड़कर अकेले भाग जाना स्वीकार नहीं हुआ।

इस विपद् यात्रा में फौज दो भागों में बाँट दी गई। एक का संचालन कर रहे थे जनरल भोंसले और दूसरे का मेजर जनरल मोहम्मद जमान कियानी। दोनों ही कुशल अफसर थे। बड़ी कुशलता के साथ वे फौज को आगे ले गए। कर्नल एस.ए. मलिक भी उनके साथ थे। उनका कद बहुत ऊँचा-पूरा था और जब कहीं नदियों की धारा में से चलकर निकलना होता था, तो कर्नल मलिक धारा में खड़े होकर सबको पार लगा देते थे। इस विपद् यात्रा में विपत्तियाँ-ही-विपत्तियाँ थीं। रात के घने अँधेरे में यात्रा करनी पड़ती थी; क्योंकि दिन निकलते ही अंग्रेजों के वायुयान बमवर्षा करने लगते थे। किसी दिन भोजन मिलता था और किसी दिन नहीं भी मिलता था। किसी दिन भोजन के लिए बैठते और शत्रु के विमान पहुँच जाते, तो भोजन छोड़कर उठ जाना पड़ता था।

अठारह दिन की वह विपद् यात्रा बड़े धैर्य के साथ नेताजी ने पूरी की। उनके पुण्य-प्रताप से कोई जनहानि नहीं हुई। केवल ले. नजीर अहमद को शत्रु की गोली लगी और उनकी मृत्यु भी मोलमीन अस्पताल में उस समय हुई, जब नेताजी का काफिला सकुशल थाईलैंड की राजधानी बैंकाक पहुँच गया। बैंकाक पहुँचकर नेताजी अपने सैनिकों के लिए सुख-सुविधाएँ जुटाने में व्यस्त हो गए।

□

★ जगमोहन राव

गोवा निवासियों को यह जानकर बहुत हर्ष हुआ था कि भारतवर्ष को १५ अगस्त, १९४७ को ब्रिटिश दासता से मुक्ति और पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो जाएगी। उन्हें दुःख था तो इस बात का कि उनका प्रदेश गोवा, भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी पुर्तगाल की दासता से मुक्ति नहीं पा सकेगा। उनका संकल्प था कि अपनी मुक्ति पाने के लिए वे भी हर कीमत अदा करने के लिए तैयार हैं।

गोवा निवासियों ने संकल्प कर लिया कि अपने प्राणों के मूल्य पर वे भी १५ अगस्त, १९४७ को गोवा को मुक्त करने का प्रयत्न करेंगे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत गोवा निवासियों का एक दल कैसल रॉक नामक स्थान पर उन भारतीयों का स्वागत करने के लिए तैयार था, जो भारत की सीमा से गोवा की सीमा में प्रवेश करने वाला था। अपने कार्यक्रम के अनुसार, भारतीय सत्याग्रहियों का एक दल गोवा की सीमा रेखा को पार करने के लिए उस ओर बढ़ चला। पुर्तगाल के सीमा रक्षक दल ने प्रवेश करनेवालों को चेतावनी दी और उन्हें रुकते हुए न देखकर उनपर गोली चला दी। जगमोहन राव नाम का सत्याग्रही घटनास्थल पर ही शहीद हो गया। भारत के स्वाधीनता दिवस (१५ अगस्त, १९४७) को उसने चिर मुक्ति वरण कर ली। जगमोहन का जन्म विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) में हुआ था।

□

★ जहूर अहमद

जहूर अहमद को २३ अगस्त, १९४३ को भारत में फाँसी के फंदे पर झुलाया गया। वह मलाया स्थित आजाद हिंद फौज के जासूसी विभाग में था। वह

जासूसी करने भारत पहुँचा था; लेकिन पकड़ लिया गया।

जहूर अहमद पंजाब का निवासी था और उसके पिता का नाम श्री गुलाम कादिर था।

□

★ कुमारी जानकी थीवर्स ★ श्रीमती एम.ए. चिदंबरम् ★ कर्नल लक्ष्मी

२ जुलाई, १९४३ को जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस सिंगापुर पहुँचे, तो वहाँ सैनिक और नागरिक क्षेत्रों में उत्साह की वह लहर दौड़ गई कि 'रात्रि-भर में परिवर्तन' वाला अंग्रेजी मुहावरा पिछड़ा हुआ लगने लगा तथा उसके स्थान पर 'क्षण-भर में परिवर्तन' का दृश्य दिखाई देने लगा।

सिंगापुर में आजाद हिंद संघ की महिला शाखा का गठन भी देखते-ही-देखते हो गया। इस महिला शाखा की अध्यक्षा थीं श्रीमती एम.ए. चिदंबरम् तथा महिलाओं के विकास विभाग की अध्यक्षा थीं डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथम्।

एक दिन नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने श्रीमती चिदंबरम् तथा डॉ. लक्ष्मी के सामने महिलाओं की एक सेना बनाने का विचार रखा। वह विचार उन दोनों को इतना पसंद आया कि वे एक दिन की देर किए बिना ही, उसे उसी समय कार्यरूप में परिणत करने का आग्रह करने लगीं। महिला क्लब में कुछ खेलकूद चल रहे थे। डॉ. लक्ष्मी दौड़ी-दौड़ी गईं और उन्होंने क्लब की सदस्याओं को नेताजी का विचार बताया। वे सभी सदस्याएँ खेल छोड़कर नेताजी के पास दौड़ी-दौड़ी पहुँचीं और उनसे आग्रह करने लगीं कि आप महिला सेना की स्थापना की घोषणा अभी कीजिए।

श्रीमती चिदंबरम् कागज और कलम ले आईं और उन महिलाओं के नाम लिखने लगीं, जो सेना में भरती होना चाहती थीं। इसपर डॉ. लक्ष्मी ने कहा—

''आजादी के दस्तावेज पर स्याही से नहीं, खून से हस्ताक्षर किए जाते हैं।''

यह कहकर डॉ. लक्ष्मी ने एक चाकू निकालकर, अपना अँगूठा चीरकर उस कागज पर अपने खून से हस्ताक्षर कर दिए। उनका अनुकरण करके उपस्थित सभी महिलाओं ने भी उस आजादी के दस्तावेज पर खून से ही हस्ताक्षर किए। यह दृश्य देखकर नेताजी गद्‌गद हो गए।

नेताजी ने शीघ्र ही महिला सेना की स्थापना कर दी और उसका नाम 'रानी झाँसी रेजीमेंट' रखा गया। इस रेजीमेंट की कमांडर डॉ. लक्ष्मी को बनाया गया और उन्हें कैप्टेन का रैंक दिया गया, बाद में उन्हें कर्नल के पद पर पदोन्नत किया गया।

जब कर्नल लक्ष्मी अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर ली गईं तो उनके स्थान पर कुमारी जानकी थीवर्स को रानी झाँसी रेजीमेंट का कमांडर नियुक्त किया गया। □

★ लेफ्टिनेंट ज्ञानसिंह बिश्त

अपनी पिछले दिन की करारी हार और जनहानि का भरपूर बदला लेने के लिए अंग्रेजी सेना ने अगले दिन ही अर्थात् १७ मार्च, १९४५ को आजाद हिंद फौज पर तगड़ा हमला बोल दिया। जिस समय आजाद हिंद फौज पर हमला किया गया, उस समय उस क्षेत्र में उसकी स्थिति इस प्रकार थी—

आजाद हिंद फौज की तीन कंपनियाँ उस क्षेत्र में तैनात थीं, जिनके नाम 'अ', 'ब' और 'स' थे। 'अ' कंपनी के कमांडर ले. कर्तारसिंह थे और यह कंपनी नलेंग ग्राम के निकट स्थित थी। 'ब' कंपनी का नेतृत्व ले. ज्ञानसिंह बिश्त कर रहे थे और यह कंपनी टाँगजिन के उत्तर-पूर्व में स्थित थी। 'स' कंपनी आपत्तिकाल के लिए सुरक्षित रखी गई थी।

ले. ज्ञानसिंह बिश्त की 'ब' कंपनी जिस क्षेत्र में रखी गई थी, वह सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान था। वह क्षेत्र चौड़ा और सपाट था, जहाँ न तो शत्रु की दृष्टि से बचा जा सकता था और न उसकी अग्निवर्षा से। उस क्षेत्र के निकट ही एक उथला और सूखा नाला था, जिसके निकट तीन सड़कों का संगम था। इस मार्ग-संगम से चार मील उत्तर-पश्चिम दिशा में एक हजार चार सौ तेईस फीट ऊँची एक पहाड़ी थी और उस पहाड़ी पर अंग्रेजों का अधिकार था, वहाँ उन्होंने अपना तोपखाना जमा रखा था। यहाँ से वह तोपखाना मार्ग-संगम की रक्षा कर सकता था।

ऐसी खतरनाक स्थिति पर 'ब' कंपनी नियुक्त की गई थी, जो पहाड़ी पर स्थित अंग्रेजी तोपखाने की सीधी मार में थी। 'ब' कंपनी की कमान ले. ज्ञानसिंह बिश्त के हाथों में थी। ले. ज्ञानसिंह बिश्त का प्रशिक्षण सिंगापुर के ऑफीसर ट्रेनिंग स्कूल में हुआ था। वे बहुत बहादुर आदमी थे और जिस कंपनी का नेतृत्व कर रहे थे, वे उसमें बहुत लोकप्रिय थे। अपने सैनिकों से वे कहा करते थे कि मैं तो आप लोगों के साथ युद्ध के मैदान में लड़ते-लड़ते मरूँगा। उस समय उनकी कंपनी में

केवल अट्ठानबे जवान थे। उनके पास भारी या हलकी, किसी भी प्रकार की मशीनगनें नहीं थीं। उन लोगों के पास केवल राइफलें और कुछ टैंक विध्वंसक बम ही थे। अपने साथियों के लिए ले. ज्ञानसिंह का आदेश था कि शत्रु किसी भी प्रकार हमारे क्षेत्र में प्रवेश न करने पाए।

ले. ज्ञानसिंह की कंपनी उस क्षेत्र में पिछले दो दिन से जमी हुई थी, पर शत्रु ने आक्रमण करने का साहस नहीं दिखाया था। १६ मार्च को जब सादे पहाड़ी पर कैप्टेन खान मोहम्मद के हाथों अंग्रेजी सेना की जमकर पिटाई हुई तो उसका बदला उन्होंने अल्पसंख्यक और सामान्य शस्त्रों से सज्जित 'ब' कंपनी से लेना चाहा, जो अंग्रेजी तोपों की मार के अंदर मैदान में पड़ी हुई थी।

१७ मार्च, १९४५ को प्रात:काल से ही अंग्रेजी बमवर्षकों ने इस कंपनी पर भारी बमवर्षा प्रारंभ कर दी और यह प्रयत्न किया कि खाइयों में दुबके हुए आजाद हिंद फौज के सारे-के-सारे सैनिक वहीं-के-वहीं मार दिए जाएँ। घनघोर बमवर्षा के पश्चात् अंग्रेजी तोपों ने अपने मुँह खोले और उन्होंने गोलों की वर्षा प्रारंभ कर दी। अपने तोपखाने का सहारा प्राप्त करके अंग्रेजी स्थलसेना बख्तरबंद गाड़ियों में भर-भरकर तीनों सड़कों से आजाद हिंद्र फौज की 'ब' कंपनी को घेरने के लिए बढ़ चली। प्रात:काल ग्यारह बजे तक अंग्रेजी तोपें आग बरसाती रहीं। साढ़े बारह बजे बढ़ती हुई अंग्रेजी सेना दो भागों में विभक्त हो गई। उसके एक भाग ने आजाद हिंद फौज की 'अ' कंपनी पर हमला किया और दूसरे भाग ने 'ब' कंपनी पर, जिसका नेतृत्व ले. ज्ञानसिंह बिश्त कर रहे थे।

ले. ज्ञानसिंह की कंपनी की तरफ बढ़नेवाले अंग्रेजी दस्ते की बख्तरबंद गाड़ियों ने अपनी तोपों से खाइयों पर गोलों की वर्षा प्रारंभ कर दी। उसके पश्चात् मशीनगनों से उन्होंने धुआँधार गोलीवर्षा की। उनका इरादा यही था कि खाइयों में से एक भी सैनिक जीवित बचकर न जा सके। आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने चूँ तक नहीं की। वे अपनी खाइयों में दुबके रहे। तोपों से गोलों और मशीनगनों से गोलियों की वर्षा कर देने के पश्चात्, शत्रु सेना के दैत्याकार टैंक खाइयों की तरफ इस इरादे से बढ़ चले कि यदि आजाद हिंद फौज के कुछ सैनिक बचे हों, तो टैंकों द्वारा उनको वहीं दफना दिया जाए। बख्तरबंद गाड़ियाँ और दैत्याकार टैंक खाइयों के बिलकुल निकट पहुँच गए तथा गोले बरसाने लगे। उन्हें बिलकुल निकट आया देख ले. ज्ञानसिंह के आदमियों ने दो टैंक विध्वंसक बम भी फेंके; पर वे फटे नहीं। ऐसा लगा कि टैंक अब उनकी छातियों पर चढ़ बैठेंगे और उन्हें जीवित ही खाइयों में दफना देंगे।

ले. ज्ञानसिंह की कंपनी घोर संकट में फँस गई। कंपनी के पास ऐसी

संचार व्यवस्था भी नहीं थी कि वे बटालियन के मुख्यालय पर संदेश भेज सकते। ले. ज्ञानसिंह ने अनुभव किया कि उनका और शत्रु का कोई मुकाबला नहीं है। उनके जवानों की संख्या कुल अट्ठानबे थी, जबकि शत्रु सेना की संख्या लगभग छह सौ थी और टैंक तथा बख्तरबंद गाड़ियाँ अलग। शत्रु सेना आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित थी, जबकि आजाद हिंद फौज के सैनिकों के पास केवल राइफलें ही थीं। ले. ज्ञानसिंह को यह समझते देर नहीं लगी कि यदि कुछ क्षण की भी देर की गई तो उनकी कंपनी का सर्वनाश निश्चित है। उन्होंने 'हमला करो' का आदेश दिया और भीम-गर्जना के साथ सबसे पहले वे स्वयं खाई के बाहर कूद पड़े और 'नेताजी की जय' का गगनभेदी घोष करते हुए शत्रु सेना पर आक्रमण प्रारंभ कर दिया। उनके बाहर कूदते ही उनकी कंपनी के सभी सैनिक खाइयों के बाहर कूद पड़े और 'नेताजी की जय', 'आजाद हिंदुस्तान जिंदाबाद' और 'इनकलाब जिंदाबाद' के नारे इतने जोर से लगाए कि शत्रु की तोपों का स्वर भी धीमा पड़ गया। टैंकों और बख्तरबंद गाड़ियों के पीछे छिपी-छिपी अंग्रेजी पैदल सेना आ रही थी। आजाद हिंद फौज के जवान उसपर टूट पड़े। कुछ लोगों ने बख्तरबंद गाड़ियों पर हमला किया और उन गाड़ियों से अंग्रेजी सेना के सैनिक भी कूद-कूदकर आजाद हिंद फौज के जवानों के साथ भिड़ गए। दो घंटे तक आमने-सामने की भयंकर लड़ाई चलती रही। ले. ज्ञानसिंह के फौजी हार मानने वाले नहीं थे। उनकी संख्या कम हो रही थी और वे मर-मरकर गिर रहे थे; पर जो जीवित थे, वे काल के समान भिड़े हुए थे और अंग्रेजी सेना को मार-मारकर बिछा रहे थे। आजाद हिंद फौज के चालीस जवान खेत रहे। अंग्रेजी फौज में मरनेवालों की संख्या इससे चौगुनी रही होगी। जब शत्रु सेना ने देखा कि ये लोग तो मरने-मारने पर ही उतारू हैं और हमारी फौज तेजी से घटती जा रही है, तो उसने मैदान छोड़ना ही ठीक समझा। शत्रु सेना के टैंक, बख्तरबंद गाड़ियाँ और पैदल सैनिक, सबके सब पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए।

ले. ज्ञानसिंह भागती हुई शत्रु सेना को खदेड़ने के लिए अपने बचे-खुचे जवानों को इकट्ठा कर ही रहे थे कि शत्रु पक्ष की ओर से एक सनसनाती हुई गोली उनके मस्तक में आकर लगी और 'जयहिंद' का नारा लगाते हुए वे शहीद हो गए। उनका कथन कितना सही निकला। वे अपने सैनिकों से कहा करते थे कि मैं आपके साथ मरूँगा। एक ओर जहाँ उनकी फौज के जवानों की लाशें पड़ी हुई थीं, वहीं उनके निकट उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। जीवन और मृत्यु में उन्होंने अपने सैनिकों का साथ दिया। एक अद्भुत लड़ाका वीर बिदा हो चुका था; पर युद्ध का मैदान उसकी सेना के हाथ रह गया था। उस वीर ने और उसके शहीद साथियों ने

अपने प्राणों के मूल्य पर नेताजी के इस आदर्श की लाज रख ली थी—

''यदि देश को जिंदा रखना है तो व्यक्ति को मरना पड़ेगा।''

ले. ज्ञानसिंह अपने देश पर कुर्बान हो गए। वे देश को जिंदा रखने के लिए अपना खून दे गए। मृत्यु को उनका पार्थिव शरीर ही हाथ लगा, उनकी आत्मा और उनके नाम ने अमरत्व प्राप्त कर लिया।

शत्रु सेना का जो दस्ता आजाद हिंद फौज की 'अ' कंपनी की ओर बढ़ा था, उसने भी टैंकों और बख्तरबंद गाड़ियों से हमला बोल दिया। कुछ देर बाद उनकी ओट लेकर अंग्रेजी फौज किरिचें तानकर 'अ' कंपनी की ओर बढ़ चली। आजाद हिंद फौज के जवानों ने टैंक का रास्ता रोकने के लिए गाँव में आग लगा दी, जो उस समय खाली पड़ा हुआ था। टैंकों का मार्ग अवरुद्ध हो जाने के कारण अंग्रेजी सैनिकों का साहस नहीं हुआ कि वे आगे बढ़ सकें। जैसे ही संध्या का अँधेरा घिर आया, अंग्रेजी सेना अपने सैनिकों की लाशें छोड़कर चली गई। उसे भय था कि शायद आजाद हिंद फौज की सहायता के लिए कुमुक पहुँचने वाली है। मोरचा आजाद हिंद फौज के हाथ रहा।

नं. ४ रेजीमेंट (नेहरू ब्रिगेड) को जो कार्य दिया गया था, वह उसने सफलतापूर्वक पूरा किया। उसके पश्चात् उसको आदेश दिया गया कि वह पोपा लौट जाए। ५ अप्रैल, १९४५ को यह रेजीमेंट पोपा पहुँच गई और जो नया कार्यभार उसे दिया गया था, वह यह था कि वह पोपा में रहकर मीकतिला-क्यांक-पादंग रोड की रक्षा करे।

□

★ कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली

शहीद रामेश्वर बनर्जी और उनके अन्य शहीद साथियों की सामूहिक शवयात्रा में सम्मिलित होने कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली अपनी कार में बैठकर कलकत्ता की सड़कों पर निकल पड़ी। शवयात्रा में महिलाओं का सम्मिलित होना वर्जित है; लेकिन सारी परंपराओं को तोड़कर ज्योतिर्मयी अपने छात्र साथियों की शवयात्रा में सम्मिलित होने जा रही थी।

कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली एक बहुत अच्छी वक्ता थी। उसके भाषण बहुत उत्तेजक और आग्नेय हुआ करते थे। पुलिसवाले उसके कारण परेशान रहते थे। वे उसकी गाड़ी और उसके विचित्र हॉर्न को अच्छी तरह पहचानते थे।

जब ज्योतिर्मयी की गाड़ी द्रुत गति से आगे बढ़ रही थी, तो सामने से पुलिस की लॉरी भी उसी गति से आ रही थी। एक पुलिस इंस्पेक्टर उस गाड़ी को चला रहा था। वह कई बार कुमारी ज्योतिर्मयी की झिड़कियाँ खा चुका था। गाड़ी का हॉर्न सुनते ही वह समझ गया कि वह कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली की गाड़ी है। उस दिन उसे बदला लेने का बहुत अच्छा अवसर मिल गया। अपनी गाड़ी की गति और तेज करके उसने कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली की कार को टक्कर मार दी। दुर्घटना इतनी भयंकर हुई कि कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली का कचूमर निकल गया। उसे अस्पताल में भरती किया गया, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका।

कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली की शवयात्रा २३ नवंबर, १९४५ को निकली। उसकी शवयात्रा में भी उतनी ही भीड़ थी, जितनी पिछले दिन छत्तीस शवों की यात्रा में थी। यह कुर्बानी भी आजाद हिंद आंदोलन के समर्थन में थी।

□

★ तुलसीदास कामत

पुर्तगाली शासन को उखाड़कर गोवा को मुक्त करने के लिए गोवा के निवासी निरंतर प्रयत्न कर रहे थे। इस कार्य के लिए एक तो 'गोवा राष्ट्रीय कांग्रेस' नाम से उनके पास एक खुला मंच था और दूसरा उनके पास 'गोमांतक दल' नाम का एक क्रांतिकारी संगठन भी था। तुलसीदास कामत इसी गोमांतक दल का सदस्य था। उसके पिता श्री काशीनाथ कामत पोस्टमैन थे। तुलसीदास कामत का जन्म गोवा के 'वोलवोई' स्थान पर सन् १९३४ में हुआ था।

गोमांतक दल की एक टुकड़ी ने जुलाई १९५५ में सुरले माइंस पर आक्रमण कर दिया। इस टुकड़ी का नेतृत्व तुलसीदास कामत ही कर रहा था। इस प्रयास में वह गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल में पुर्तगाल की पुलिस ने तुलसीदास को यातनाएँ देकर यह जानना चाहा कि गोमांतक दल का नेता मोहन रानाडे कहाँ है। तुलसीदास कामत ने अपने नेता के विषय में कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। यातनाओं के परिणामस्वरूप जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई।

□

★ दरोगासिंह ★ मानस गुप्ता ★ आर.बी. निगम ★ शिवशंकर भंसाली ★ एस.के. मुकर्जी

गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने के लिए वहाँ के क्रांतिकारियों ने सशस्त्र प्रयास भी किए। इसी प्रकार का एक प्रयास था कैसल रॉक टनल को बम से उड़ाना। १५ अगस्त, १९५५ को क्रांतिकारी अपनी पूरी तैयारी के साथ वहाँ पहुँच गए; लेकिन वे देख लिये गए। पुर्तगाली पुलिस ने उनपर गोलियाँ चलाईं और पाँच क्रांतिकारी शहीद हो गए। उनके विवरण प्रस्तुत हैं—

१. शिवशंकर भंसाली : गोवा के निवासी और गोमांतक दल के सदस्य थे।

२. दरोगासिंह : ये भी गोवा के निवासी और गोमांतक दल के सदस्य थे।

३. मानस गुप्ता : गोवा के क्रांतिकारी थे।

४. एस.के. मुकर्जी : गोवा के क्रांतिकारी थे।

५. आर.बी. निगम : गोवा के क्रांतिकारी थे।

□

★ दादा राने

भारत की भूमि पर से जिस प्रकार अंग्रेजी दासता के कलंक को मिटाने के लिए प्रारंभ से ही प्रयत्न किए जा रहे थे, उसी प्रकार पुर्तगाली दासता के जुए को गोवा के कंधे से उतारने के प्रयत्न भी बहुत पहले से ही किए जा रहे थे। इस प्रकार के प्रयत्न करनेवालों में दादा राने भी एक थे।

दादा राने ने क्रांतिकारी विचार रखनेवाले युवकों का एक संगठन बनाया और उन्हें फौजी प्रशिक्षण देकर शस्त्रास्त्रों से सज्जित किया। उसके पश्चात् उन्होंने पुर्तगाली फौज से मोरचा लेना प्रारंभ कर दिया। सन् १८९५ से १८९९ तक उन्होंने

दादा राने

भारत स्थित पुर्तगाली फौज को बहुत तंग किया। आखिर वे पकड़े गए और उनका कोर्ट मार्शल हुआ। उन्हें निष्कासन के साथ आजीवन कारावास का दंड दिया गया। अफ्रीका की मोजांबिक जेल में दादा राने को डाल दिया गया। वहीं उनकी मृत्यु हुई।

दादा राने का जन्म गोवा के 'केरी' ग्राम में हुआ था। वे जन्मजात विद्रोही थे।

□

★ सिपाही नंदराम ★ मेजर पी.एस. रतूरी ★ सिपाही प्यारसिंह ★ लांसनायक प्रतापचंद ★ सिपाही प्रतापसिंह ★ नायक बलवंतसिंह ★ सिपाही मुमताज अली ★ लांसनायक रघुवीर सिंह ★ सिपाही रफी मोहम्मद ★ सिपाही रामास्वामी ★ सिपाही विशनसिंह
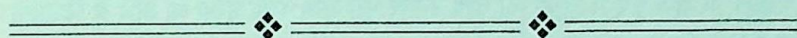
मेजर पी.एस. रतूरी

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दक्षिण-पूर्व एशिया में पहुँचकर आज़ाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया। वहाँ उनकी उपस्थिति से नागरिक और सैनिक खेमों में विद्युत् की भाँति उत्साह का संचार हो गया। नेताजी ने कई महीने श्रम करके आजाद हिंद फौज को युद्धभूमि में भेजने की तैयारी कर डाली। आखिर वह समय भी आ गया, जब मुक्तिवाहिनी ने अपने देश को ब्रिटिश दासता से मुक्त करने के लिए युद्धभूमि में प्रस्थान किया। आगे बढ़ने के उत्साह में आजाद हिंद फौज छलाँगें भरती हुई कलादान नदी की घाटी के निकट पहुँच गई। वहाँ पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि पश्चिमी अफ्रीका के हबशियों का एक पूरा डिवीजन क़लादान नदी के पूर्वी किनारे की ओर होता हुआ, दक्षिण की ओर बढ़ रहा है। आगे बढ़ने के क्रम
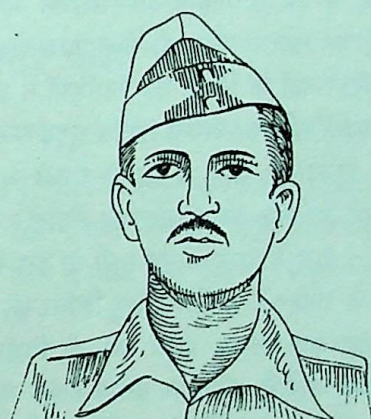
में हबशी सैनिकों का यह डिवीजन एक सड़क का निर्माण भी करता जा रहा था। कलादान नदी के पश्चिमी किनारे पर भी एक सड़क बनाई जा रही थी और योजना यह थी कि ये दोनों सड़कें मिला दी जाएँ, जिससे अंग्रेजी सेना का आवागमन सुगम हो सके। जहाँ ये सड़कें मिलने वाली थीं, उस स्थान का नाम 'टेटमा' था।

आजाद हिंद फौज के मेजर रतूरी को यह उत्तरदायित्व दिया गया कि वे हबशी सैनिकों के बढ़ते हुए डिवीजन के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करें और सड़क निर्माण में भी बाधा डालें। मेजर रतूरी अपने साथ तीन कंपनियाँ लेकर आगे बढ़े, जिनमें कुल तीन सौ जवान थे। वे टेटमा पहुँच भी नहीं पाए थे कि उन्हें मालूम हुआ कि शत्रु सेना कलादान नदी की घाटी में पहुँच चुकी है और उसने निकटवर्ती पहाड़ियों में अच्छी मोरचाबंदी कर ली है। यद्यपि मेजर रतूरी अंग्रेजी फौज का मार्ग अवरुद्ध न कर सके, पर उन्होंने निश्चय किया कि शत्रु को हर क्षण परेशान किया जाए।

मेजर रतूरी ने अपनी छोटी-सी टुकड़ी को साथ लेकर बाँसों के झुरमुटों में छिपते-छिपाते टेटमा पहुँचकर शत्रु सेना को तीन तरफ से घेर लिया और आकस्मिक रूप से ऐसा भयंकर आक्रमण किया कि शत्रु सेना को दुम दबाकर भागना पड़ा। उस स्थान पर आजाद हिंद फौज का अधिकार हो गया। मेजर रतूरी तो शत्रु को मजा चखाने पर तुले हुए थे। युद्ध का नशा उनपर पूरी तरह चढ़ा हुआ था और वे दिखाना चाहते थे कि साधनहीन अल्पसंख्यक आजाद हिंद फौज एक शक्तिशाली और सुसज्जित ब्रिटिश फौज को नीचा दिखा सकती है। उनके गुप्तचरों ने सूचना दी कि कलादान नदी के निकट की पहाड़ियों में शत्रु सेना के लगभग एक हजार सैनिकों ने खाइयाँ खोदकर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली है। मेजर रतूरी ने सोचा कि इतनी बड़ी सुसज्जित सेना से आमने-सामने के युद्ध में पार पाना मुश्किल है। अत: उन्होंने अचानक हमला बोलकर संगीनों की लड़ाई लड़ने का निश्चय किया।

रात के समय मेजर रतूरी के दल ने जमीन पर लेटकर रेंगना प्रारंभ किया और वे आहिस्ता-आहिस्ता शत्रु शिविर की ओर बढ़ते गए। जब वे शत्रु की खाइयों के बिलकुल निकट पहुँच गए, तो विशेष संकेत के मिलते ही उन्होंने संगीनें साधकर अंग्रेजी फौज पर तगड़ा हल्ला बोल दिया। वे लोग अपने कंठ की पूरी शक्ति के साथ 'जयहिंद' और 'नेताजी की जय' के नारे लगाते जा रहे थे और शत्रु के कलेजों में संगीनें भोंके जा रहे थे। दुश्मन पर यद्यपि अचानक हमला किया गया था, पर उनकी संख्या कम नहीं थी और उसके सैनिकों के पास आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्र थे। उन्होंने भी डटकर मुकाबला किया। आजाद हिंद फौज के वीर तो मरने-मारने की कसम खाकर चले थे। बहुसंख्यक ब्रिटिश सेना से भिड़कर वे उनके सैनिकों को भूमिसात करते जा रहे थे। शत्रु सेना तिल-तिल करके पीछे हटती

जा रही थी; लेकिन तगड़ा मुकाबला करती जा रही थी। आजाद हिंद फौज के वीर फासले को दूर नहीं होने दे रहे थे और वे अपनी संगीनों से भीषण मार किए जा रहे थे। आखिर शत्रु सेना के हौसले पस्त हो गए और वह तेजी से भाग खड़ी हुई। संगीनों की मार से प्राण बचाने के लिए अंग्रेजी सेना कलादान नदी की ओर भागी, जहाँ उसकी नावों का पड़ाव था। नावों में कूद-कूदकर अंग्रेजी फौज ने भागना प्रारंभ कर दिया। मेजर रतूरी ने तेजी के साथ भागनेवालों का पीछा किया। अब उन्होंने दुश्मन की नावों पर मशीनगनों से हमला बोल दिया और इस प्रकार शत्रु की सोलह नावों को जल समाधि दे दी। नदी के दूसरे किनारे पर शत्रु सेना ने अपनी तोपों से आजाद हिंद फौज पर भयंकर गोलाबारी प्रारंभ कर दी। आजाद हिंद फौज के पास तोपें नहीं थीं, फिर भी उसने अपनी राइफलों और मशीनगनों से शत्रु का तगड़ा मुकाबला किया और उसे पीछे हटने को मजबूर कर दिया।

लड़ाई समाप्त होने पर पाया गया कि आजाद हिंद फौज के केवल चौदह जवान खेत रहे, जबकि शत्रु सैनिकों में मरनेवालों की संख्या लगभग ढाई सौ थी।

मेजर रतूरी घायल हुए और उनके उन वीरों ने शहादत प्राप्त की, जिनके नाम लेख के प्रारंभ में दिए गए हैं।

□

★ नर्बदेश्वर पांडे
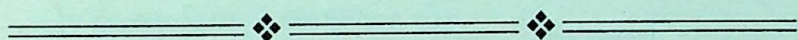
नर्बदेश्वर पांडे उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चस्पन बंसगाँव के रहनेवाले थे। आजाद हिंद फौज का जो जासूसी दल मलाया में गठित हुआ था, उसमें नर्बदेश्वर पांडे भरती हुए थे। उन्हें जासूसी काम से भारत भेजा गया था। सन् १९४२ में वे गिरफ्तार करके गोली से उड़ा दिए गए।

□

★ नागप्पा बालीजाबुदला ★ वैंकटय्या पागुंटा
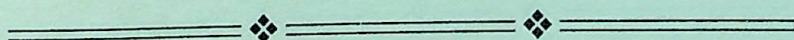
हैदराबाद राज्य को केंद्रीय शासन में मिलाने का जो आंदोलन पूरे राज्य में छिड़ा, उसमें जिला महबूबनगर के ईजा गाँव के लोगों ने भी हौसले के साथ भाग लिया। उन्होंने जुलूस निकाला और जोरदार प्रदर्शन किया। तहसीलदार ने कुछ लोगों

को गिरफ्तार करके बुलवाया और प्रदर्शन के उपलक्ष्य में उन लोगों पर जुर्माना किया। उन लोगों ने जुर्माना देने से इनकार कर दिया। इसपर तहसीलदार के आदेश से पुलिस ने चार व्यक्तियों को खंभे से बाँधकर गोलियों से उड़ा दिया। गोलियों से उड़ाए जानेवालों में नागप्पा बालीजाबुदला और वैंकटय्या पागुंटा भी थे।

□

★ नित्यानंद साहा

गोवा के साथ-साथ शेष भारत के लोगों के दिलों में भी यह तड़प थी कि गोवा को पुर्तगाल के शासन से मुक्त किया जाए। सभी प्रांतों से लोग गोवा में प्रवेश करके आंदोलन चलाने की योजना बना रहे थे।

नित्यानंद साहा

पश्चिम बंगाल से नित्यानंद साहा भी गोवा की सीमा पर पहुँच गया। गोवा की पुलिस ने उसपर गोली चला दी और वह गंभीर रूप से घायल हो गया। ३ अगस्त, १९५५ को वेंगुश्ला अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गई।

नित्यानंद साहा का जन्म पूर्वी बंगाल के मैमनसिंह जिले में हुआ था, जो अब बँगलादेश में है। उसने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की थी।

□

★ नीलकंठ अय्यर
★ ज्ञानी प्रीतमसिंह ★ कैप्टेन मोहम्मद अकरम

भारतीय क्रांतिकारियों ने अब अमेरिका में 'गदर पार्टी' नाम की क्रांतिकारी संस्था बना डाली और जब वे वहाँ संगठित और शक्तिशाली हो गए, तो अमेरिका की सरकार का माथा ठनका। वह इन क्रांतिकारियों को अमेरिका से निकालने के

ज्ञानी प्रीतमसिंह

उपायों पर विचार करने लगी। उन्होंने इन क्रांतिकारियों को कड़े नियमों के शिकंजे में कस दिया और उनपर कई प्रकार की बंदिशें लगा दीं। ज्ञानी प्रीतमसिंह भी उन क्रांतिकारियों में से एक थे, जिन्हें अमेरिका की सरकार ने अपने देश से निकाल दिया था। उस समय वे सरदार प्रीतमसिंह के नाम से जाने जाते थे।

अमेरिका से निष्कासित होकर सरदार प्रीतमसिंह थाईलैंड में रहने लगे और वहाँ ज्ञानी प्रीतमसिंह के नाम से विख्यात हो गए। वे थाईलैंड के बाबा अमरसिंह के सहयोगी और प्रमुख शिष्य थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर जब थाईलैंड पर जापान का अधिकार हो गया, तो वहाँ के सभी प्रवासी भारतीय अपने देश को आजाद कराने के उपायों में लग गए। जापान में रहनेवाले भारतीय क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के नेतृत्व में 'आजाद हिंद संघ' की स्थापना की गई, जिसकी एक शाखा थाईलैंड में भी थी। इस संघ के कार्यों को आगे बढ़ाने में ज्ञानी प्रीतमसिंह बहुत सक्रिय रहे। जापान के मेजर फूजीवारा से मिलकर ज्ञानी प्रीतमसिंह ने आजाद हिंद फौज के निर्माण की दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

जापान में होनेवाले टोकियो सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि के रूप में ज्ञानी प्रीतमसिंह भी स्वामी सत्यानंद पुरी के साथ वायुयान द्वारा प्रस्थित हुए। दुर्भाग्यवश उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और वे भी स्वामी सत्यानंद पुरी के साथ शहीद हो गए। उनके साथ शहीद होनेवालों में कैप्टेन मोहम्मद अकरम तथा नीलकंठ अय्यर भी थे।

□

★ पांडुरंग केंकरे ★ लादू सावंत

पांडुरंग केंकरे

पांडुरंग केंकरे और लादू सावंत भीकाजी सहकारी के मित्र थे, जिसे पुर्तगाल की पुलिस ने २९ मई, १९५६ को कलेम जंगल में घेरकर मार डाला था। अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए पांडुरंग केंकरे उस आक्रमण में सम्मिलित हुआ, जो मार दूलो ने पुर्तगाल की पुलिस पर किया। इस युद्ध में पांडुरंग केंकरे और लादू सावंत लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

पांडुरंग केंकरे का जन्म सन् १९३१ में गोवा के 'कंकोलिम' गाँव में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री सखाराम केंकरे था। कम पढ़ा-लिखा होने के कारण पांडुरंग ने साइकिल की दुकान डाल ली थी। वह साइकिलें सुधारता था और किराए पर देता था। वह गोमांतक दल का क्रांतिकारी था। लादू सावंत का जन्म सन् १९२७ में गोवा के 'कलेम' स्थान में हुआ था।

□

★ पुरुषोत्तम केरकर

केवल बाईस वर्ष की अवस्था में पुरुषोत्तम केरकर ने दो बार जेल की सजा भुगत ली और पुलिस की गोलियाँ खाकर शहीद हो गया। वह गोवा की राष्ट्रीय

पुरुषोत्तम केरकर

कांग्रेस का सदस्य भी था और गोपनीय रूप से गोमांतक दल के क्रांतिकारियों के साथ भी उसका गठबंधन था तथा वह साहसिक योजनाओं में भी भाग लिया करता था। पुर्तगाल की पुलिस उससे भयभीत रहा करती थी।

एक बार पुरुषोत्तम जब गोवा की सीमा पार करके भारत की सीमा में प्रवेश कर रहा था तो पुलिस ने उसको गोली मार दी।

पुरुषोत्तम केरकर का जन्म गोवा के 'पणज़ी' स्थान पर सन् १९३४ में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री बाबू केरकर था।

□

★ प्रभाकर वारनेकर

प्रभाकर वारनेकर गोवा के निवासी थे और गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने के लिए उन्होंने गोमांतक दल से अपना संबंध स्थापित कर लिया।

श्री प्रभाकर वारनेकर ने एक पुलिस चौकी पर आक्रमण करके उसके हथियार लूटने का प्रयत्न किया और उसी प्रयत्न में वे गिरफ्तार कर लिये गए। पुर्तगाल की पुलिस श्री प्रभाकर वारनेकर को भयंकर क्रांतिकारी मानती थी। गिरफ्तार करके उन्हें जेल में ले जाया गया और वहाँ उनको गोली मार दी गई।

□

★ प्रभाकर वेरेनकर

गोवा के क्रांतिकारी संगठन 'गोमांतक दल' के सदस्यों में भी जो लोग अत्यधिक उग्रवादी थे, उनमें प्रभाकर वेरेनकर की गणना होती थी। उन्होंने अपना पृथक् से एक छोटा-सा दल बना लिया था, जो भूमिंगत रहकर तोड़-फोड़ का कार्य
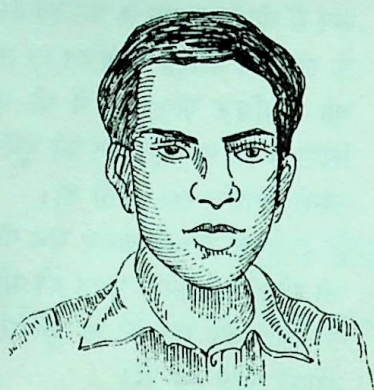
प्रभाकर वेरेनकर

करता रहता था। इसी दल का नेतृत्व प्रभाकर वेरेनकर कर रहे थे।

एक दिन सन् १९५५ में पुर्तगाल की पुलिस ने घेरा डालकर प्रभाकर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की हिरासत से भागने के प्रसास में प्रभाकर वेरेनकर को गोली मार दी गई।

प्रभाकर वेरेनकर का जन्म गोवा के 'सवोईवरेम' स्थान पर सन् २५ फरवरी, १९१६ को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दूलो वेरेनकर था।

☐

★ फजल मोहम्मद

फजल मोहम्मद आजाद हिंद फौज की ओर से बर्मा के एक मोरचे पर लड़ा और कई शत्रु सैनिकों को मारकर वह भी गोलियों से छलनी कर दिया गया।

बेहोशी की हालत में जब उसे अस्पताल भिजवाया गया और उसकी गोलियाँ निकालने का प्रयत्न किया गया, तो उसने डॉक्टरों से कहा—

''मुझे बचाओ मत। मेरे शरीर में जितना खून बह सकता है, बह जाने दो। मैं अपना खून इसलिए दे रहा हूँ, क्योंकि नेताजी ने कहा है कि 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'।''

यह कहते-कहते फजल मोहम्मद के प्राण-पखेरू उड़ गए।

□

★ फताबा नाइक

फताबा नाइक

गोवा के 'मयेम' ग्राम में जनमे फताबा नाइक के पिता का नाम श्री सदा नाइक था, जो एक कृषक थे। उनके पुत्र फताबा ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। एक ओर तो वह खुले रूप से गोवा राष्ट्रीय कांग्रेस का सदस्य था और दूसरी ओर क्रांतिकारियों की संस्था गोमांतक दल से जुड़ा हुआ था।

जब पुर्तगाली पुलिस ने फताबा

नाइक को सन् १९४६ में गिरफ्तार किया तो अदालत ने उसे उन्नीस वर्ष के कारावास का दंड दे दिया।

फताबा इतना लंबा कारावास भुगतने के लिए जीवित नहीं रहा। ड्यू-फोर्ट जेल में अक्तूबर, १९५६ में उसकी मृत्यु हो गई।

□

★ बबला पारब

बबला पारब के पिता का नाम श्री धोंधो पारब था। वह बचपन से ही साहसिक कामों में रुचि लेता था। जब गोवा मुक्ति आंदोलन छिड़ा तो बबला पारब उसमें कूद पड़ा। गिरफ्तार करके वह जेल में डाल दिया गया। पुर्तगालियों ने उसे 'मोमा' नामक स्थान पर अगस्त १९५३ में गोलियों से भून डाला।

□

★ बबली गावंस

बबली गावंस गोवा की क्रांतिकारी संस्था गोमांतक दल का सक्रिय सदस्य था। उसका विश्वास था कि गोवां से पुर्तगाली शासन का अंत करने के लिए सशस्त्र उपायों के बिना काम नहीं चलेगा।

एक बार बबली अपनी बैलगाड़ी हाँककर डोडामेअर से बीचोलिम जा रहा था। उसके पास एक बम था। गाड़ी के दचकों से बम का विस्फोट हो गया और घटनास्थल पर ही उसका प्राणांत हो गया। यह घटना सितंबर १९५७ की है। बबली का जन्म १९ जुलाई, १९१९ को गोवा के 'खोलबेम' नामक गाँव में हुआ था।

□

★ कैप्टेन बागरी

आजाद हिंद फौज की एक कंपनी कब्यू नामक स्थान पर स्थित थी और वह पिनबिन पर होनेवाले आक्रमण में सम्मिलित होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

इस कंपनी का नेतृत्व कैप्टेन बागरी कर रहे थे। ३० मार्च, १९४५ को इस कंपनी पर अंग्रेजी सेना ने भीषण आक्रमण कर दिया। अंग्रेजी फौज की संख्या एक हजार थी और इस फौज में केवल अंग्रेज ही थे। आजाद हिंद फौज के दक्षिण पार्श्व में एक जापानी कंपनी भी स्थित थी। अंग्रेजी सेना ने पहले जापानी कंपनी पर आक्रमण किया। अंग्रेजी सेना का टैंक दस्ता आगे बढ़ा। जापानी कंपनी के एक टैंक विध्वंसक बम ने एक अंग्रेजी टैंक को बेकार कर दिया। इस भय से कि उनके और टैंक बेकार न हो जाएँ, अंग्रेजी टैंक दस्ता आजाद हिंद फौज की कंपनी की ओर मुड़ गया।

आजाद हिंद फौज की स्थिति अच्छी नहीं थी। वह खुले मैदान में खाइयाँ खोदकर पड़ी थी और उसके पास टैंक विध्वंसक बम भी इने-गिने ही थे, जो उसने काम चलाने के लिए जापानी कंपनी से ले रखे थे। ये बम आजाद हिंद फौज ने उन दिशाओं में लगा रखे थे, जिधर से अंग्रेजी टैंकों के आने का खतरा था। अंग्रेजी टैंक दस्ता आजाद हिंद फौज की ओर बढ़ चला। शत्रु टैंकों को आते देखकर आजाद हिंद फौज ने एक बम का प्रहार किया और एक अंग्रेजी टैंक का कचूमर निकल गया। आजाद हिंद सैनिकों का उत्साह बढ़ गया। उन्होंने टैंकों के पीछे आती हुई अंग्रेजी पैदल सेना पर तगड़ा हमला बोल दिया।

भारतीय मार से विचलित होकर अंग्रेजी सेना फिर जापानी कंपनी की तरफ मुड़ गई। उस कंपनी में केवल एक सौ पचास जापानी सैनिक थे। उनमें से साठ सैनिकों को अंग्रेजी सेना ने मौत के घाट उतार दिया। कुछ घायल हुए। शेष को उन्होंने चारों ओर से घेर लिया। घिरे हुए जापानी सैनिक मृत और घायल सैनिकों को छोड़कर भाग खड़े हुए।

कैप्टेन बागरी से अपनी सहयोगी जापानी कंपनी की यह दुर्दशा नहीं देखी गई। उनकी कंपनी ने अंग्रेजी फौज पर भयंकर अग्निवर्षा प्रारंभ कर दी। 'जयहिंद' और 'नेताजी की जय' के गगनभेदी घोष के साथ उन्होंने नंगी किरिचों से अंग्रेज सैनिकों पर भयंकर हमला बोल दिया और उन्हें धराशायी करने लगे। अंग्रेजी सेना भारतीयों की इस मार के आगे टिक नहीं सकी और उसके पैर उखड़ गए। आजाद हिंद फौज की कंपनी ने जापानी मृतकों और घायलों को उठाकर जापानी मुख्य शिविर में पहुँचा दिया। इस उपकार के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए जापानी फौज का कमांडर आजाद हिंद फौज के कमांडर मेजर जनरल शहनवाज खाँ के पास पहुँचा और उसने आजाद हिंद फौज की वीरता की प्रशंसा करते हुए जापानियों की प्राणरक्षा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

आजाद हिंद फौज की अभियान योजना और नक्शे अंग्रेजी सेना के हाथ में

पड़ जाने के कारण पिनबिन पर आक्रमण स्थगित किया जा चुका था। कैप्टेन बागरी को आदेश दिया गया कि वे 'लैगी' नामक स्थान पर पहुँचकर बचाव की व्यूह रचना करें।

'लैगी' पर स्थित आजाद हिंद फौज पर अंग्रेजी बमवर्षकों ने कई बार भयंकर बमवर्षा की और कई सैनिक मारे गए। अंग्रेजी तोपखाने ने भी गोलों की वर्षा की। कुछ कमजोर दिल के सैनिक अफसर, जो इस संकट को सहन नहीं कर सके, शत्रु की ओर जा मिले। उन्होंने एक बार फिर आजाद हिंद फौज की नैतिकता पर आघात किया; पर शीघ्र ही स्थिति सँभाल ली गई।

कैप्टेन बागरी का फौजी दस्ता २० अप्रैल, १९४५ को टाँडबिंगी के बीस मील दक्षिण में था। अचानक ही शत्रु सेना के टैंकों द्वारा उसे घेर लिया गया। कैप्टेन बागरी अभी युद्ध के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि उनका दस्ता मैदान में था और वे खाइयाँ भी नहीं खोद पाए थे। ऐसी स्थिति में उनके सामने दो ही विकल्प थे। एक तो यह कि वे शत्रु के सामने समर्पण कर देते और दूसरा यह कि वे सब लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होते। कैप्टेन बागरी ने अपने साथियों से पूछा कि ऐसी स्थिति में उनका क्या विचार है। उन्होंने स्वयं अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि अंग्रेजों के आगे समर्पण करने के स्थान पर तो मैं लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त करना श्रेयस्कर समझूँगा। उनके सभी सैनिक आत्मबलिदान के लिए तैयार हो गए और वे सबके सब एक साथ उन दैत्याकार टैंकों पर टूट पड़े। उन्होंने एक टैंक तोड़ डाला और एक बख्तरबंद गाड़ी की धज्जियाँ उड़ा दीं। इसी समय एक मशीनगन से निकली हुई गोलियों की पूरी बौछार कैप्टेन बागरी के ऊपर आकर पड़ी और वे धराशायी हो गए। इस प्रकार कैप्टेन बागरी ने लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की। उनके सभी साथियों ने भी इसी प्रकार लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की।

शत्रु सेना और आजाद हिंद फौज कैप्टेन बागरी की इस वीरता से बहुत प्रभावित हुई।

□

★ बागू डेरा

वैसे तो बागू डेरा ने गोवा की पुलिस के साथ कई बार युद्ध किए थे और वह उनके लिए सिरदर्द बन गया था, लेकिन आखिर पुलिस ने अपने छल-बल से

उसे गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली। उसे गिरफ्तार करके पुलिस ने उसके साथ बदला लेना प्रारंभ कर दिया। उसे बहुत मारा-पीटा गया और भाँति-भाँति की यातनाएँ दी गईं। गिरफ्तार होने के दो दिन पश्चात् ही अर्थात् ८ मई, १९५६ को पुलिस की हिरासत में उसकी मृत्यु हो गई।

बागू डेरा का जन्म दमन में 'बदलीवाड़ी' नामक स्थान पर हुआ था। वह गोमांतक दल का सदस्य था।

□

★ बापू बोटो

२३ मई, १९५७ को गोवा की पुलिस ने अपनी हिरासत में रखे एक क्रांतिकारी बापू बोटो को गोली से उड़ा दिया। बापू बोटो को इसलिए गिरफ्तार किया गया था, क्योंकि कई तोड़-फोड़ के कार्यों में वह शामिल था। पुलिस ने उसपर मुकदमा चलाने के बजाय उसे समाप्त कर देना ही उचित समझा।

बापू बोटो गोवा का रहनेवाला था। उसके पिता का नाम श्री श्रीकृष्ण बोटो था।

□

★ बाबूराव थोरात

बाबूराव थोरात

३ अगस्त, १९५५ को सत्याग्रहियों का जो जत्था गोवा की सीमा में प्रवेश करने वाला था, उसका नेतृत्व बाबूराव थोरातं कर रहा था। सत्याग्रहियों का जत्था गोवा की सीमा में प्रवेश करने में तो सफल हो गया, लेकिन वह पुलिस की आँख से बचने में सफल नहीं हुआ। गोवा की पुलिस बहुत सख्त थी और वह गोली से कम तो बात ही नहीं करती थी। उसने सत्याग्रहियों पर गोली चला दी और

बाबूराव थोरात गोली खाकर शहीद हो गया।

बाबूराव थोरात का जन्म महाराष्ट्र के चाँदा जिले के 'चंद्रपुर' ग्राम में सन् १९२५ में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री केशव थोरात था। वे दरी-गलीचा के व्यापारी थे।

□

★ बाबूराव परांजपे

बाबूराव परांजपे

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के शब्द बाबूराव परांजपे के कानों में गूँज रहे थे—'यह याद रखो, युद्ध का मैदान ही सैनिक का वतन होता है। वह उसे छोड़ना नहीं चाहता और यह भी याद रखो कि युद्धभूमि ही किसी सैनिक की अरथी और आसमान ही उसके लिए कफन होता है।'

कुछ ऐसा ही वातावरण उस समय उपस्थित हो गया, जब ब्रिटिश बमवर्षकों ने आजाद हिंद फौज की बर्मा स्थित एक टुकड़ी पर अंधाधुंध गोलों की वर्षा प्रारंभ कर दी। नागरिक लोग अपने घरों से भाग-भागकर जंगलों की ओर दौड़ चले; क्योंकि उनका अनुभव था कि जब ब्रिटिश बमवर्षक गोलों की वर्षा करते हैं तो पूरा गाँव या नगर मलबे के ढेर में परिवर्तित हो जाता है। स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों की चीखों एवं कराहों से वातावरण भयानक हो रहा था। लोग दौड़ रहे थे और चीख रहे थे, चीख रहे थे और मर रहे थे। उस भयंकर बमवर्षा की चिंता न करके बाबूराव परांजपे ने अपनी खाई से निकलकर भागते हुए लोगों को खाइयों में छिप जाने के लिए कहा। उस सैनिक को यही कर्तव्य याद रह गया था कि वह नागरिकों की रक्षा के लिए खाइयाँ खुदवाकर तैयार रखे और यथासंभव उनकी सहायता करे।

बाबूराव परांजपे को यह संतोष था कि लोगों को छिपने के लिए खाइयों की कमी नहीं पड़ी और उसका श्रम सार्थक हुआ। सभी लोगों ने जब खाइयों में स्वयं को सुरक्षित कर लिया तो स्वयं छिपने के लिए बाबूराव परांजपे ने भी एक खाई में

छलाँग लगा दी। इस क्रम में उसका एक घुटना टूट गया। उसके आसपास कई बर्मी औरतों ने शरण ले रखी थी। गोलियाँ इधर-उधर गिर रही थीं। खाई में एक गर्भवती बर्मी महिला ने एक बच्चे को जन्म दे दिया। उसके पास छिपी एक अन्य बर्मी महिला को उसे सँभालने का संकेत करके बाबूराव परांजपे ने अपना ओवरकोट प्रसविनी महिला पर डाल दिया और बरसती हुई गोलियों में बाहर कूदकर वहाँ जा लेटा, जहाँ कुछ लाशें पड़ी हुई थीं। जब शत्रु के विमान गोलियाँ और गोले बरसाकर चले गए तो बाबूराव परांजपे ने उठकर स्थिति का निरीक्षण किया। उसे संतोष था कि उसके श्रम और सूझ-बूझ ने कई प्राणों की रक्षा की।

□

★ बालकृष्ण भोंसले
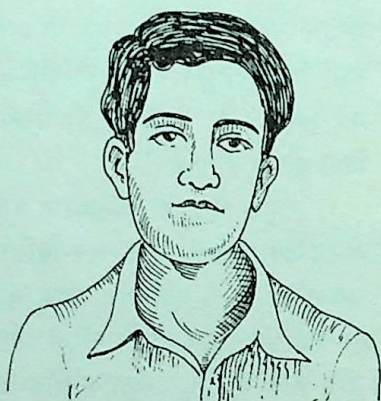
बालकृष्ण भोंसले

बालकृष्ण भोंसले ने पुर्तगाली प्रशासन को हमेशा ही चुनौती दी और उसने कुछ चौकियों पर आक्रमण करके पुलिस से हथियार भी छीन लिये। उसका दल बड़ा उद्दंड हो गया था।

अपने अभियान की सफलता से बालकृष्ण भोंसले का हौसला बढ़ गया और उसने पोमबुरपा की बड़ी पुलिस चौकी पर आक्रमण कर दिया। पुर्तगाली पुलिस ने क्रांतिकारियों के दल के साथ गोलियों का आदान-प्रदान किया। नेता होने के कारण बालकृष्ण भोंसले अपने साथियों को पीछे रखकर युद्ध कर रहा था। परिणाम यह हुआ कि वह गोली लगने के कारण घटनास्थल पर ही शहीद हो गया। यह युद्ध ५ फरवरी, १९५६ को हुआ था।

बालकृष्ण भोंसले का जन्म गोवा के 'पोमबुरपा' में १२ जुलाई, १९२६ को हुआ था। उसके पिता का नाम श्री महादेव भोंसले था। वह गोवा के क्रांतिकारी संगठन गोमांतक दल का सदस्य था। इसी दल में से उसने कुछ लड़ाकू क्रांतिकारियों का एक छोटा दल बना लिया था, जिसका नेतृत्व वह स्वयं किया करता था।

□

★ बाला देसाई

बाला देसाई

गोवा के तरुण क्रांतिकारी बाला देसाई का हौसला इतना बढ़ गया था कि वह पुर्तगाल की फौज एवं पुलिस के साथ जब-तब युद्ध करके उन्हें पीछे हटा दिया करता था। इसी प्रकार का एक आक्रमण उसने गोवा के पुलिस दल पर २ मई, १९५६ को कर दिया। दोनों पक्षों से गोलियों का आदान-प्रदान होने लगा। पुलिस दल की संख्या अधिक थी और वे अच्छी स्थिति लेकर मोरचा लिये हुए थे। परिणाम यह हुआ कि बाला देसाई का शरीर गोलियों से छलनी हो गया। उसने युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त की।

बाला देसाई का जन्म ८ फरवरी, १९२८ को गोवा के दरगालिम स्थान पर हुआ था। उसके पिता श्री गोपाल देसाई एक कृषक थे। बाला देसाई गोमांतक दल का सदस्य था।

□

★ बाला मापारी

गोवा को पुर्तगाल की दासता से मुक्त कराने के लिए गोवा के क्रांतिकारियों का जो गुप्त संगठन बना था, उसका नाम 'गोमांतक दल' था। बाला मापारी इस गोमांतक दल का सक्रिय सदस्य था। गोमांतक दल के क्रांतिकारियों ने अस्सोनोरा पुलिस चौकी पर आक्रमण करके उसपर अधिकार कर लिया और पुलिस के बहुत बड़े शस्त्रागार पर भी अपना अधिकार जमा लिया। पुर्तगाल की पुलिस ने इस कांड को अपना अपमान समझा और एक बहुत बड़े पुलिस दल ने क्रांतिकारियों पर हमला कर दिया। बाला मापारी गिरफ्तार कर लिया गया। उससे उसके अन्य क्रांतिकारी साथियों के पते-ठिकाने पूछे गए; पर उसने कुछ भी बताने से इनकार
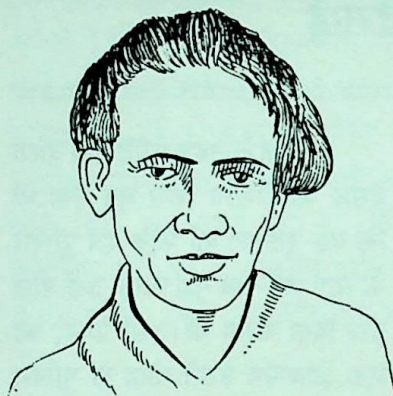
बाला मापारी

कर दिया। उसे बहुत यातनाएँ दी गईं, पर उसकी जबान नहीं खुली। यातनाओं के परिणामस्वरूप १८ फरवरी, १.९५५ को बाला मापारी की मृत्यु हो गई।

बाला मापारी का जन्म ८ जनवरी, १९२९ को गोवा के अस्सोनोरा गाँव में हुआ था। उसके पिता श्रीराम मापारी कृषक थे।

□

★ बालैया थोटा ★ बालैया पेड्डा थोटा ★ मुतैया माला ★ रामैया रामपल्ली ★ वैंकैया थोटा

खम्मम जिले के 'मीनाबोलू' गाँव के लोगों ने रजाकारों के आक्रमण से अपने गाँव की रक्षा करने के लिए रक्षा समिति का निर्माण कर रखा था। उन्होंने कुछ बंदूकें जुटा ली थीं और कुछ देशी हथियार—जैसे फरसे, बल्लम तथा भाले इत्यादि भी एकत्रित कर रखे थे।

१५ जनवरी, १९४८ को 'मीनाबोलू' गाँव पर रजाकारों का आक्रमण हो गया। गाँववालों ने आक्रमणकारियों का डटकर प्रतिरोध किया। तीन रजाकार और सात ग्रामीण मारे गए। अपनी जीवनाहुतियाँ देनेवाले ग्रामीणों में थे—मुतैया माला, रामैया रामपल्ली, वैंकैया थोटा, बालैया थोटा और बालैया पेड्डा थोटा।

□

★ बिहारीलाल व्यास

देशी रियासतों में उत्तरदायी शासन स्थापित कराने के लिए जो अखिल भारतीय संगठन तैयार हुआ, उसे 'प्रजामंडल' नाम दिया गया।

बिहारीलाल व्यास प्रजामंडल के ही कार्यकर्ता थे। उनका जन्म ग्वालियर राज्य के 'अमझेरा' नामक स्थान पर सन् १९१२ में हुआ था। उन दिनों रतलाम राज्य

का शासक बहुत निरंकुश हो गया था। बिहारीलाल व्यास ने 'प्रजामंडल' के माध्यम से रतलाम के राजा के विरुद्ध १९३९ में आंदोलन चलाया। ४ मार्च, १९४० को बिहारीलाल व्यास को गिरफ्तार किया गया और उनपर राजसत्ता को उखाड़ने का आरोप लगाया गया। लंबी अवधि का दंड देकर बिहारीलाल व्यास को जेल में डाल दिया गया। दुर्व्यवहार और यातनाओं के कारण जेल में ही बिहारीलाल व्यास का प्राणांत हो गया।

□

★ भीमसेनराव देसाई

भीमसेनराव देसाई को गुलबर्गा की सेंट्रल जेल में बंद करके यातनाएँ दी गईं। उसे यातनाएँ इसलिए दी जाती थीं कि वह जेल में भी सुबह-शाम ईश्वर की प्रार्थना करता और भजन गाता था। जेल के अधिकारियों को यह सब सहन नहीं होता था। उसे इतना मारा गया कि १६ अप्रैल, १९४८ को जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई। भीमसेनराव देसाई का जन्म हैदराबाद राज्य की कोपल जागीर में हुआ था। वह कुक्कानूर के गुरुकुल में अध्यापक था। हैदराबाद राज्य को स्वाधीन भारत के साथ मिलाने का जो आंदोलन हुआ, उसमें भीमसेनराव भी सम्मिलित हुआ। उसे गिरफ्तार करके गुलबर्गा की जेल में रखा गया और वहीं वह शहीद हो गया।

□

★ भुजंग देशपांडे

भुजंग देशपांडे ने हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाने के लिए चलाए जा रहे आंदोलन में तो भाग लिया ही था, पर उसकी जान इसलिए गई कि एक नारी का सम्मान बचाने के लिए उसने एक रजाकार से युद्ध किया और उस युद्ध में वह शहीद हो गया।

भुजंग देशपांडे का जन्म उसमानाबाद जिले के 'लटूर' ग्राम में

भुजंग देशपांडे

सन् १९०८ में हुआ था और उसके पिता का नाम श्री नागराव देशपांडे था। उसने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की थी।

□

★ भूमंडल अंकैया ★ वीरम्मा

वीरम्मा एक दिलेर महिला थी। भारत के साथ विलय के प्रश्न को लेकर हैदराबाद में चलनेवाले आंदोलन में उसने भाग लिया। उसपर जो जुर्माना हुआ, वह भी उसने देने से इनकार कर दिया।

फरवरी १९४८ में रजाकारों ने वीरम्मा के गाँव पर आक्रमण कर दिया। उन लोगों ने वीरम्मा तथा उसके पति भूमंडल अंकैया को एक साथ रस्सी में बाँधा और उन्हें जलती हुई आग में फेंक दिया। वारंगल जिले के 'कोलूकोंडा' ग्राम की वीरांगना वीरम्मा और उसके पति ने संयुक्त रूप से वीरगति प्राप्त कर ली।

□

★ भैराबोइना नरसिंहा

भैराबोइना नरसिंहा 'जागीरेदीगुदेम' ग्राम का रहनेवाला था। यह गाँव नलगोंडा जिले में था। गाँव के लोगों ने इस बात के लिए आंदोलन चलाया था कि हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाया जाए। गाँववालों ने लगान देने से भी इनकार कर दिया। रजाकारों ने गाँव पर हमला कर दिया और भैराबोइना नरसिंहा को पकड़कर कुल्हाड़ी से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। सिद्धांत और आजादी की बलिवेदी पर वह वीर शहीद हो गया।

□

★ मदनसिंह मतवाले

वह सचमुच ही मतवाला था। उसे अन्याय सहन करना नहीं आता था। हैदराबाद रियासत के साथ पहला संघर्ष तो उसने तब किया, जब आर्यसमाज ने हैदराबाद के विरुद्ध आंदोलन चलाया। आंदोलन सफल हुआ और निजाम हैदराबाद को झुकना पड़ा। इस सफलता के पश्चात् मदनसिंह मतवाले का हौसला बढ़ गया और वह उस आंदोलन में भी सम्मिलित हो गया, जो हैदराबाद राज्य को स्वाधीन भारत में मिलाने के लिए चलाया जा रहा था।

मदनसिंह मतवाले ने १४ अगस्त, १९४८ को अपने मकान पर भारत का तिरंगा झंडा लहरा दिया। हैदराबाद की पुलिस ने बलपूर्वक वह झंडा उतारना चाहा; लेकिन मदनसिंह मतवाले ने संघर्ष किया। पुलिस उसे पकड़कर ले गई और संभवत: उसे मार डाला गया; क्योंकि उसके पश्चात् लोगों को उसका कुछ भी पता नहीं चला।

मदनसिंह मतवाले का जन्म हैदराबाद में ११ मार्च, १९२५ को हुआ था।

□

★ कैप्टेन मनसुखलाल

अंग्रेजी सेना को गांधी ब्रिगेड के हाथों खाई हुई मात का काँटा चुभ रहा था। वास्तविक बात तो यह थी कि उस क्षेत्र में गांधी ब्रिगेड का अस्तित्व ही उसको खटक रहा था। खटकनेवाले इस काँटे को निकाल फेंकने के लिए एक दिन सुसज्जित अंग्रेजी सेना ने गांधी ब्रिगेड पर हमला बोल दिया। अंग्रेजी सेना के बचाव के लिए सुसज्जित तोपखाना हमेशा पीछे रहता था। आवश्यकता के अनुरूप उनके बमवर्षक भी साथ ही चलते थे। इस आक्रामक दल का नेतृत्व स्कॉटिश सी
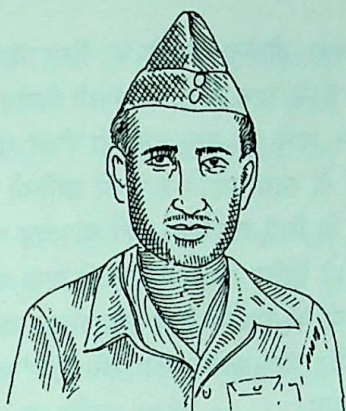
कैप्टेन मनसुखलाल

फोर्थ हाईलैंडर्स ही कर रहे थे। अंग्रेजी सेना की संख्या तीन हजार थी; जबकि उनके मुकाबले में आजाद हिंद फौज के जवानों की संख्या केवल छह सौ ही थी। अंग्रेजी फौज ने आजाद हिंद फौज को घेर लिया। घिरनेवालों में ब्रिगेड के कमांडर कर्नल इनायत जान कियानी भी थे।

कर्नल इनायत जान कियानी ने अनुभव किया कि जब तक ऊँची पहाड़ियों में से किसी पर अधिकार नहीं किया जाएगा, तब तक आजाद हिंद फौज की खैर नहीं। कैप्टेन राव की कंपनी तो पूरी तरह घिर गई थी और ऐसा लगता था कि अंग्रेजी सेना उसका सर्वनाश ही करके रहेगी।

कर्नल कियानी ने कैप्टेन मनसुखलाल को आदेश दिया कि अपने प्लाटून को लेकर जाएँ और पास की एक पहाड़ी को अंग्रेजी सेना से छीनकर उसपर कब्जा करें। कैप्टेन मनसुखलाल के प्लाटून में केवल तीस सैनिक ही थे। बचाव के लिए उनके पास तोपखाना भी नहीं था। फिर भी आदेश मिलते ही वे चल पड़े। शत्रु सेना पहाड़ी के ऊपर थी और कैप्टेन मनसुखलाल का प्लाटून नीचे। जब उनका प्लाटून पहाड़ी की चोटी के निकट पहुँचा तो शत्रु को उसकी उपस्थिति का भान हो गया और उसने गोलीवर्षा प्रारंभ कर दी। गांधी ब्रिगेड के सैनिक भी गोलियों का जवाब गोलियों से देते हुए पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ने लगे। उनमें से कुछ ने वीरगति भी प्राप्त की। स्वयं कैप्टेन मनसुखलाल के शरीर पर गोलियों के तेरह घाव लगे। काफी मात्रा में खून बह जाने के कारण उनके पैर लड़खड़ाने लगे और उनसे खड़े होते नहीं बना। वे गिर पड़े और उन्हें बेहोशी आने लगी। उन्हें गिरते देखकर उनके साथी सैनिक उन्हें सँभालने के लिए उनकी तरफ बढ़े। सैनिक को अपनी ओर आते देखकर कैप्टेन मनसुखलाल गरज पड़े—

''मेरी चिंता छोड़ो और लपककर पहाड़ी की चोटी पर कब्जा करो। फौजी अभियान में एक व्यक्ति के मरने या बचने से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। मुझे मेरे भाग्य पर छोड़कर तुम लोग पहाड़ी पर कब्जा करो। मैं न बच सका तो क्या! पहाड़ी पर कब्जा होने से पूरा ब्रिगेड बच जाएगा।''

ब्रिगेड के सैनिक अपने अफसर की ललकार सुनकर जोश खा गए। पहाड़ी

की चोटी बिलकुल निकट ही थी। उनका हौसला बढ़ाने के लिए कैप्टेन मनसुखलाल खून से लथपथ होने पर भी उनके साथ हो लिये। गांधी ब्रिगेड के सैनिक अपनी चमचमाती हुई नंगी संगीन साधे हुए शत्रु दल पर पिल पड़े। 'जयहिंद' और 'नेताजी की जय' के नारों के साथ उन्होंने शत्रु की छातियों को छेदना प्रारंभ कर दिया। इतनी भयंकर मार के लिए शत्रु तैयार नहीं था। वह पीठ दिखाकर भाग खड़ा हुआ। पहाड़ी पर गांधी ब्रिगेड का अधिकार हो गया और वहाँ स्थिति जमा लेने के कारण शेष साथियों की रक्षा के लिए एक अच्छा स्थान मिल गया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कैप्टेन मनसुखलाल को 'शेरे-हिंद' और 'सरदारे-जंग' की उपाधियों से विभूषित किया।

कर्नल इनायत जान कियानी का ध्यान अब कैप्टेन राव की घिरी हुई कंपनी की ओर गया। कैप्टेन राव स्वयं ही शत्रु सेना को चीरकर रास्ता बनाने के प्रयत्न में थे; पर उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। कर्नल कियानी ने उनकी कंपनी की रक्षा के लिए ले. अजायबसिंह को एक टुकड़ी के साथ भेजा। ले. अजायबसिंह स्कॉटिश सेना पर पहले ही धाक जमा चुके थे। उन्होंने बड़ी चालाकी से शत्रु दल को घेर लिया। एक ओर तो कैप्टेन राव का दल था ही, तीन ओर से ले. अजायबसिंह ने अंग्रेजी सेना को घेर लिया। इस चक्रव्यूह में फाँसकर अंग्रेजी सेना पर भयंकर मार की गई। सारे दिन आग और खून की वर्षा होती रही। संध्या होने पर बची-खुची शत्रु सेना को भागने का अवसर मिल गया। इस संघर्ष में लगभग दो सौ पचास अंग्रेज सैनिक मारे गए। आजाद हिंद फौज की क्षति अपेक्षाकृत बहुत कम थी।

इस अभियान में अद्‌भुत वीरता के लिए नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने स्वयं अपने हाथों से कैप्टेन मनसुखलाल को 'शेरे-हिंद' और 'सरदारे-जंग' के तमगों से विभूषित किया। पूरी आजाद हिंद फौज में यह दोहरा सम्मान पानेवालों में वे एकमात्र व्यक्ति रहे।

□

★ मनोहर पेडनेकर

मनोहर पेडनेकर का हौसला इतना बढ़ा हुआ था कि वह पुर्तगाली पुलिस एवं फौज से जब-तब भिड़ जाया करता था और भारी हानि के साथ उसे पीछे हटाता था। सन् १९६१ में 'केरी' नामक एक स्थान पर मिलिट्री की एक कंपनी के

साथ उसकी मुठभेड़ हो गई। स्वयं के ही हाथ में हथगोला फट जाने के कारण युद्धभूमि में उसने वीरगति प्राप्त कर ली।

मनोहर पेडनेकर का जन्म सन् १९३६ में गोवा के 'परनेम' गाँव में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री श्रीकृष्ण पेडनेकर था। वह गोमांतक दल का सक्रिय सदस्य था।

□

मनोहर पेडनेकर

★ माणिक अयाचित

माणिक अयाचित

वह नवयुवक ही था। शिक्षा-दीक्षा भी उसकी अच्छी तरह नहीं हुई थी। उसने आठवीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त की थी; लेकिन देशभक्ति की पढ़ाई में वह किसीसे पीछे नहीं था।

माणिक अयाचित ने बम बनाना सीख लिया था और वह निजाम हैदराबाद की पुलिस या फौज पर अपने बम का परीक्षण करना चाहता था। उसे अवसर भी शीघ्र ही मिल गया।

३१ जनवरी, १९४८ को निजाम की फौज ट्रेन से जा रही थी। माणिक अयाचित ने रेलवे लाइन के नीचे एक बम लगा दिया। उसका विस्फोट तो हुआ, पर ट्रेन को कोई नुकसान नहीं पहुँचा। माणिक अयाचित पकड़ लिया गया और पुलिस ने उससे भेद जानने के लिए उसे इतना मारा कि वह पिटते-पिटते ही मर गया।

माणिक अयाचित का जन्म उसमानाबाद जिले के 'लटूर' गाँव में हुआ। उसके पिता का नाम श्री हरिपंत अयाचित था।

□

★ मार दूलो

भीकाजी सहकारी का घनिष्ठ मित्र था मार दूलो। जब उसने सुना कि पुर्तगाल की पुलिस ने उसके मित्र और उनके साथियों को मार डाला है तो उसका मन बदला लेने के लिए मचल उठा। उसने धार बांदोरा के जंगल में पुलिस दल पर आक्रमण करने की योजना बना डाली। भयंकर युद्ध हुआ और दोनों पक्ष के लोग मारे गए। पुलिस को हानि अधिक हुई।

पुर्तगाल की पु।लस ने अपनी हानि का बदला लेने के लिए ४ जून, १९५६ को मार दूलो को घेर लिया और वह उसे मारने में सफल हो गई। इस युद्ध में भी पुलिस को बहुत जनहानि उठानी पड़ी।

मार दूलो गोमांतक दल का क्रांतिकारी था। पुर्तगाल की पुलिस उसका नाम सुनकर काँप उठती थी।

□

★ मुस्तफा अली

मेरठ जनपद के लोनी कस्बे के निवासी चौधरी मुस्तफा अली भी उन भूले-बिसरे स्वाधीनता सेनानियों में से हैं, जिन्होंने १९४१ में लीबिया के मोरचे पर ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ने से इनकार कर दिया था तथा नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद सेना में भरती हो गए थे। उनपर भी लाल किले में मुकदमा चलाया गया था। वे आज भी हमारे बीच मौजूद हैं।

□

★ मेजर मेहबूब अहमद

उन दिनों कभी आजाद हिंद फौज अंग्रेजी चौकियों पर आक्रमण करती थी, तो कभी अंग्रेजी सेना आजाद हिंद फौज की चौकियों पर। पूरे क्षेत्र में दोनों सेनाएँ बिखरी हुई थीं और इसीलिए उनमें मुठभेड़ें होना स्वाभाविक ही था। अपनी-अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक भी था। अंग्रेजी चौकी क्लंग-क्लंग

को हथियाने की ऐसी ही योजना मेजर जनरल शहनवाज खाँ ने बनाई। उन्होंने १० मई, १९४४ को विभिन्न दलनायकों को क्लंग-क्लंग चौकी पर आक्रमण करने के आदेश दिए। यह चौकी हाका से बीस मील पश्चिम में एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित थी और उसपर पहुँचने के लिए एक ही पहाड़ी पगडंडी थी। चौकी की स्थिति सामरिक महत्त्व रखती थी और वहाँ से शत्रु सेना पर दूर-दूर तक वार किया जा सकता था। इसी कारण आजाद हिंद फौज उसे अंग्रेजी सेना से छीनना चाहती थी। इस चौकी पर अपनी स्थिति जमाकर अंग्रेजी सेना पूरे क्षेत्र में अपनी गुरिल्ला गतिविधियों का संचालन कर रही थी और वहाँ उनकी खाद्य सामग्री का भी बहुत बड़ा भंडार था। जापानी सेना भी उस चौकी के महत्त्व को समझती थी, पर असंभव कार्य समझकर उसने कभी उसे हस्तगत करने का विचार नहीं किया था। उसपर आक्रमण करने के लिए आक्रामक सेना की सहायता के लिए पीछे तोपखाना और बमवर्षक वायुयानों की नितांत आवश्यकता थी। आजाद हिंद फौज के पास यह कुछ भी नहीं था, फिर भी उसने क्लंग-क्लंग चौकी पर आक्रमण करने की दुस्साहसपूर्ण योजना को अपना ही लिया। इसी बीच मेजर जनरल शहनवाज खाँ को जापानी कमान द्वारा नाचाँग पहुँचने के संदेश मिले। उन्होंने क्लंग-क्लंग चौकी पर आक्रमण करने का नेतृत्व मेजर मेहबूब अहमद को सौंप दिया।

मेजर मेहबूब अहमद

आजाद हिंद फौज का आक्रामक दल मेजर मेहबूब अहमद के नेतृत्व में १४ मई, १९४४ को हाका से प्रस्थित हुआ। सारे दिन चलने के पश्चात् संध्या के धुँधलके में उन्होंने क्लंग-क्लंग से पहले पड़नेवाली एक अंग्रेजी चौकी पर आक्रमण किया और सरलतापूर्वक उसपर कब्जा कर लिया। चौकी पर अधिकार कर लेने के पश्चात् कुछ जवान उसकी रक्षा के लिए छोड़ दिए गए और शेष दल ने क्लंग-क्लंग की ओर बढ़ना जारी रखा। उनकी यात्रा रात-भर जारी रही और प्रातः चार बजे के लगभग वे क्लंग-क्लंग चौकी पर पहुँच गए। उन्होंने देखा कि चौकी पर पहुँचने का एक ही तंग रास्ता है और उस रास्ते के दोनों ओर शत्रु सेना के बंदूकधारी सैनिक रक्षा के लिए मियुक्त हैं। किसी अन्य ओर से आक्रमण हो ही नहीं सकता था; क्योंकि खड़ी चढ़ाई थी और चट्टानों पर पैर जमाना बहुत मुश्किल

था। फिर भी यह कठिन रास्ता ही दल को अपनाना पड़ा।

मेजर मेहबूब अहमद ने अपने गिने-चुने आठ-दस साथियों तथा कैप्टेन अमरीक सिंह को साथ लेकर सीधी चढ़ाई चढ़ना प्रारंभ कर दिया। वे बड़ी मुश्किल से एक-एक इंच सरक रहे थे। उन्हें खतरा था कि किसीका तनिक भी पैर चूका तो सैकड़ों फीट नीचे नाले में गिरते दिखाई देंगे।

प्रात:काल का चाँद उन्हें रास्ता दिखाने के लिए क्षितिज के ऊपर आ रहा था और उसके मद्धिम प्रकाश में आजाद हिंद फौज के गिने-चुने जवान पेट के बल सरक-सरककर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। आखिरकार उनका भयंकर रास्ता पार हो गया और अब वे पहाड़ी के ऊपर शत्रु की खाइयों के बिलकुल निकट जा पहुँचे थे। दुर्भाग्यवश आजाद हिंद फौज का यह दल शत्रु के प्रहरियों द्वारा देख लिया गया और देखते ही शत्रु दल ने उनपर गोलियों की अंधाधुंध वर्षा प्रारंभ कर दी। आक्रामक दल ने भी गोलियों का जवाब गोलियों से दिया और उसके कुछ सैनिक जो पीछे मशीनगनें लेकर आ पहुँचे थे, उन्होंने भी अंग्रेजी सेना पर मशीनगनों से गोलियों की बौछार प्रारंभ कर दी। शत्रु दल की बंदूकें ठंडी कर दी गईं और कैप्टेन अमरीक सिंह कुछ और आगे बढ़ गए। इसी समय दूसरी ओर की खाइयों में से शत्रु सैनिकों ने राइफलों और मशीनगनों से आक्रामक दल पर गोलीवर्षा प्रारंभ कर दी। कैप्टेन अमरीक सिंह के दोनों हाथों में हथगोले थे। उनके दल ने फिर जमीन पर लेटकर आगे बढ़ना प्रारंभ किया और कैप्टेन अमरीक सिंह ने शत्रु के मुख्य शिविर पर अपने दोनों हथगोले फेंक दिए। कैप्टेन अमरीक सिंह का दल झपटकर मुख्य शिविर तक जा पहुँचा और वहाँ शत्रु के साथ संगीनों का खूनी युद्ध प्रारंभ हो गया। कैप्टेन अमरीक सिंह के दल ने 'नेताजी की जय' के गगनभेदी घोष के साथ शत्रु दल पर संगीनों से हमला बोल दिया। कुछ देर तक तो शत्रु दल ने टिके रहने का साहस दिखाया, पर अंततोगत्वा उसके पैर उखड़ गए और उसके सैनिक पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। भागते हुए शत्रु सैनिक क्लंग-क्लंग की चौकी के नीचे की चौकी पर पहुँचे, जिसपर आजाद हिंद फौज का पहले ही अधिकार हो गया था। आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने शत्रु सैनिकों का वहाँ पूरी तरह से सफाया कर दिया।

क्लंग-क्लंग चौकी पर आजाद हिंद फौज का अधिकार हो चुका था। जब प्रात:काल हुआ तो कोहरा इतना घना था कि कुछ सूझता ही नहीं था। जब कोहरा साफ हुआ और सूरज आसमान पर कुछ चढ़ा तो उसने देखा कि क्लंग-क्लंग की चौकी पर भारत का तिरंगा झंडा शान से फहरा रहा है। सूरज की किरणों ने सबसे पहले तिरंगे झंडे का अभिवादन किया और तत्पश्चात् उन्होंने आजाद हिंद फौज के मृत्युंजयी वीरों के श्रम का परिहार किया।

आजाद हिंद फौज के आक्रामक दल ने देखा कि शत्रु सैनिकों की लाशें जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी हैं। शत्रु द्वारा छोड़ी गई वस्तुओं का प्रचुर भंडार भी उनके हाथ लगा। बहुत भारी तादाद में गोला-बारूद के अतिरिक्त स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ भी उनके हाथ लगे। उन्होंने बैठकर मक्खन और डिब्बेबंद फलों की जेलियों पर अपने हाथ साफ किए। क्लंग-क्लंग चौकी पर अधिकार कर लेने का शुभ समाचार बेतार के तार द्वारा हाका के मुख्य शिविर तक पहुँचा दिया गया। हाका शिविर से बधाई के साथ उन्हें संदेश मिला कि चौकी को नष्ट-भ्रष्ट करके वापस आ जाओ; क्योंकि ब्रिगेड को अन्य मोरचों पर नियुक्त किया जा रहा है। आदेश का पालन किया गया। थोड़े से सैनिक क्लंग-क्लंग चौकी पर उस क्षेत्र की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए छोड़ दिए गए।

□

★ जनरल मोहनसिंह

जापानी सेना ने अंग्रेजी सेना पर भयंकर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजी सेना परास्त हुई और वह छिन्न-भिन्न हो गई। अंग्रेजी सेना का एक अफसर मोहनसिंह अपने साथी कैप्टेन मोहम्मद अकरम की सहायता से अपने कमांडिंग अफसर फिट्ज पैट्रिक को सहारा देकर मलाया के घने जंगलों में किसी सुरक्षित स्थान पर ले जा रहा था। फिट्ज पैट्रिक घायल हो गए थे। उस समय मोहनसिंह अंग्रेजी सेना की चौदहवीं पंजाब रेजीमेंट की प्रथम बटालियन के कैप्टेन पद पर थे।

मलाया के जंगलों में भटकते हुए कैप्टेन मोहनसिंह, कैप्टेन मोहम्मद अकरम और कमांडिंग अफसर फिट्ज पैट्रिक को तीन दिन हो चुके थे। उन्हें भोजन भी नहीं मिला था और वर्षा होते रहने के कारण उनके कपड़े भी भीगे हुए थे। भूख और थकान से चूर होकर वे एक गाँव की ओर बढ़ रहे थे। उन्हें यह आशा बँधने लगी थी कि वहाँ उन्हें भोजन और प्रश्रय मिल जाएगा। जिस स्थान पर वे पहुँचे, वह अलोर स्टार की मसजिद थी।

मसजिद में अपने साथियों को ठहराकर कैप्टेन मोहनसिंह भोजन की तलाश में गाँव की ओर अकेले ही बढ़ गए। लौटकर उन्होंने अपने साथियों को बताया कि जापानी दस्ते पूरे क्षेत्र में फैल गए हैं और उनको चकमा देकर बच-भागना मुश्किल है। उन लोगों ने निर्णय लिया कि भूख और प्यास से दम तोड़ने के बजाय जापानियों के सामने समर्पण कर दिया जाए। उन्होंने अपनी उपस्थिति की सूचना गाँव की

पुलिस चौकी को दे दी। उन्हें जापानियों का संदेश प्राप्त हुआ कि अगले दिन प्रात:काल उन्हें वहाँ से ले लिया जाएगा।

अगले दिन अर्थात् १५ दिसंबर, १९४१ की सुबह ये गिरफ्तार होने के लिए जापानी फौजी दस्ते की प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे कि भारतीय तिरंगा झंडा लगाए हुए एक कार उनके पास पहुँची और उसमें एक सिख नागरिक ने उतरकर उनसे बात की। ये सिख सज्जन श्री ज्ञानी प्रीतमसिंह थे, जो आजाद हिंद फौज के निर्माण के लिए बंदी भारतीयों को बटोरते घूम रहे थे। ज्ञानी प्रीतमसिंह के पश्चात् एक जापानी फौजी अफसर भी वहाँ उपस्थित हो गया। वे लोग अपने साथ कैप्टेन मोहनसिंह, कैप्टेन मोहम्मद अकरम और फिट्ज पैट्रिक को ले गए। वह जापानी अफसर था—मेजर फूजीवारा।

रात के समय कैप्टेन मोहनसिंह को मेजर फूजीवारा के पास ले जाया गया। मित्रता के वातावरण में उन दोनों की बातचीत हुई। मेजर फूजीवारा कैप्टेन मोहनसिंह के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। उन्होंने बताया कि जापान अंग्रेजों को एशिया से निकालना चाहता है और उसकी नीति है कि एशिया में एशियावालों का ही राज्य हो। जापान के सहयोग से भारत की आजादी की बात भी मेजर फूजीवारा ने कही और उन्होंने बताया कि भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी रासबिहारी बोस जापान में रहकर आजाद हिंद फौज के गठन के लिए प्रयत्नशील हैं।

रासबिहारी बोस का नाम सुनकर कैप्टेन मोहनसिंह को विश्वास हो गया, लेकिन उन्होंने जापानी प्रस्ताव को एकदम नहीं मान लिया। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं रासबिहारी बोस से मिलना चाहूँगा और अपने साथियों से परामर्श करके निर्णय की सूचना आपको दूँगा।

कैप्टेन मोहनसिंह ने भारतीय पक्ष के सभी लोगों से मिलकर यह निश्चय किया कि आजाद हिंद फौज का निर्माण करके भारत की आजादी के लिए प्रयत्न करना चाहिए। कैप्टेन मोहनसिंह और उनके चौवन फौजी साथियों ने यह प्रतिज्ञा की कि वे भारत की आजादी के लिए मर मिटेंगे। इस प्रकार मलाया के जित्रा नामक स्थान पर आजाद हिंद फौज के निर्माण की नींव पड़ गई और कैप्टेन मोहनसिंह को आजाद हिंद फौज का जी.ओ.सी. (जनरल ऑफिसर कमांडिंग) नियुक्त किया गया। वे उसके विस्तार के लिए प्रयत्नशील हो गए।

भारत की आजादी के प्रयत्नों पर विचार-विमर्श करने के लिए थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में १५ जून, १९४२ को एक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रवासी भारतीयों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन के निर्णय के अनुसार कैप्टेन मोहनसिंह को पदोन्नत करके जनरल

बनाया गया। इस सम्मेलन में बर्लिन से नेताजी सुभाषचंद्र बोस का संदेश भी पहुँचा, जो पढ़कर सुनाया गया।

जनरल मोहनसिंह आजाद हिंद फौज के माध्यम से भारत की आजादी के लिए पूरे जोश के साथ काम करने लगे। वे साहसी, वीर और बुद्धिमान भी थे। उन्हें यह स्थिति अच्छी नहीं लगी कि जापानी लोग आजाद हिंद फौज का उपयोग अपनी लड़ाई के लिए करना चाहते हैं। उन्होंने निर्भीकतापूर्वक कह दिया कि आजाद हिंद फौज केवल भारत की आजादी के लिए ही लड़ेगी, वह किराए की फौज के रूप में काम नहीं करेगी। जापानियों के साथ जनरल मोहनसिंह का मतभेद इस सीमा तक बढ़ गया कि जापानी फौजी कमान ने जनरल मोहनसिंह को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। जनरल मोहनसिंह ने आजाद हिंद फौज भंग कर दी।

जापान स्थित भारत के क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस ने जापान सरकार के साथ मिलकर जर्मनी से नेताजी सुभाषचंद्र बोस को आमंत्रित किया और उनके पहुँच पाने पर आजाद हिंद फौज की कमान उनको सौंप दी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने जेल में जनरल मोहनसिंह से भेंट की और उन्हें कई सुविधाएँ दिलाईं। उन्होंने यह भी वादा किया कि वे उन्हें जेल से मुक्त कराने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

□

★ सरदार मोहिंदरसिंह
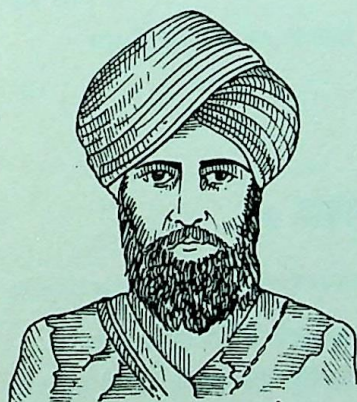
सरदार मोहिंदरसिंह

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के एक भाई के जामाता श्री हरिदास मित्रा कलकत्ता में रहते थे और उनके पास एक ट्रांसमीटर भी था, जिसके द्वारा वे बर्मा स्थित आजाद हिंद फौज के मुख्यालय को भारत की गतिविधियों से परिचित कराते रहते थे। एक बार उनके ट्रांसमीटर में कुछ खराबी हो गई और बहुत दिन से उनके द्वारा कोई समाचार नहीं भेजा गया। श्री हरिदास मित्रा से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने

के लिए जासूस विभाग के सरदार मोहिंदरसिंह को पनडुब्बी द्वारा भारत भेजा गया। मोहिंदरसिंह उड़ीसा के किनारे जाकर लगे और उन्होंने अपने ट्रांसमीटर से श्री हरिदास मित्रा से बात करने का प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में वे पकड़ लिये गए। उन्हें बहुत यातनाएँ दी गईं और यह पूछा गया कि वे भारत में किससे बात करना चाहते थे। भयंकर यातनाएँ सहकर भी मोहिंदरसिंह ने किसीका नाम नहीं बताया। उनपर मुकदमा चलाकर लाल किले में उन्हें फाँसी के फंदे पर झुला दिया गया। □

★ यशवंत अग्रवाडेकर

यशवंत अग्रवाडेकर

पुर्तगाली पुलिस की दृष्टि में यशवंत अग्रवाडेकर इतना खतरनाक क्रांतिकारी था कि उसकी गिरफ्तारी के लिए पुर्तगाल सरकार ने पाँच हजार रुपए का पुरस्कार घोषित किया था।

उसने कई मुठभेड़ों में पुलिस को भारी जनहानि पहुँचाई थी। वह गोमांतक दल का बहुत उग्र क्रांतिकारी था।

आखिर १७ दिसंबर, १९५८ को अनजुना जंगल में यशवंत की मुठभेड़ एक बहुत बड़े पुलिस दल से हो गई और उस युद्ध में उसने वीरगति प्राप्त कर ली।

यशवंत का जन्म १५ जनवरी, १९१८ को गोवा के 'सियोलिम' ग्राम में हुआ था।

□

★ यशवंत राव राने

यशवंत राव राने ने गोवा को पुर्तगाल के शासन से मुक्त करने के लिए एक सेना का निर्माण किया और पुर्तगाली सेना के साथ कई बार युद्ध किए। उसकी संगठन शक्ति बहुत अच्छी थी। उसके कथन का लोगों पर शीघ्र प्रभाव पड़ता था।

उसने अपनी वाणी और व्यक्तित्व के प्रभाव से पुर्तगाली सेना में विद्रोह भी करा दिया।

आखिर यशवंत राव राने सन् १९१२ में पकड़ा गया और आजीवन कारावास का दंड देकर अफ्रीका भेज दिया गया। अफ्रीका की जेल में ही उसकी मृत्यु हुई।

□

★ रंगनाथ सुधाकर

हैदराबाद रियासत को केंद्र में विलय करने के प्रश्न को लेकर परभनी जिले के 'औंधा नागनाथ' गाँव में भी प्रदर्शन किया गया। रजाकारों ने प्रदर्शनकारियों पर एक बम फेंक दिया। इस बम में तीन व्यक्ति मारे गए, जिनमें से रंगनाथ सुधाकर एक थे।

□

★ रघुनाथ शिरोदकर
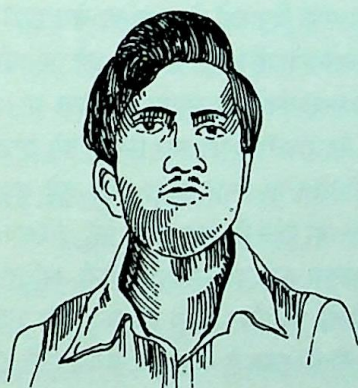
रघुनाथ शिरोदकर

रघुनाथ शिरोदकर गोमांतक दल का सक्रिय क्रांतिकारी था। पुर्तगाल की फौज को उड़ाने के लिए सड़क किनारे सुरंग बिछाने में सुरंग फट गई और रघुनाथ एवं उसके सभी साथी १३ नवंबर, १९५६ को शहीद हो गए।

रघुनाथ शिरोदकर का जन्म गोवा के बरदेज जिले के 'पोमबुरपा' स्थान पर १८ अगस्त, १९३० को हुआ था। उसके पिता का नाम श्री पुंडलिक शिरोदकर था।

□

★ लेफ्टिनेंट रनजोधासिंह

लिखा जा चुका है कि क्लंग-क्लंग चौकी पर अधिकार कर लेने के पश्चात् 'सुभाष ब्रिगेड' को कोहिमा क्षेत्र में जाने का आदेश दिया गया और हाका-फालम क्षेत्र की रक्षा के लिए आजाद हिंद फौज के कुछ सैनिक छोड़ दिए गए। मेजर जनरल शहनवाज खाँ शेष ब्रिगेड के साथ कोहिमा मोरचे की ओर चल दिए और वे हाका की रक्षा के लिए एक सौ पचास सैनिक तथा फालम की रक्षा के लिए तीन सौ सैनिक छोड़ गए।

मुख्य सुभाष ब्रिगेड के चले जाने के पश्चात् अंग्रेजी सेना के गुरिल्ला दलों ने हाका-फालम क्षेत्र में उत्पात मचाना प्रारंभ कर दिया। उन्हें पता चल गया था कि अधिकांश ब्रिगेड जा चुका है, इसलिए वे कभी आजाद हिंद फौज की इस चौकी पर आक्रमण करते तो कभी उसपर। शत्रु दल को क्लंग-क्लंग चौकी की पराजय खटक रही थी।

शत्रु पक्ष को ज्ञात हो गया था कि इंफाल का मोरचा जापानी सेनाओं और आजाद हिंद फौज के हाथ से निकल चुका है। उसके सैनिकों का मनोबल ऊँचा हो गया था। इसके विपरीत आजाद हिंद फौज के मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। इस मनोवैज्ञानिक स्थिति का लाभ उठाकर शत्रु पक्ष ने छह सौ सैनिकों के सुसज्जित दल को साथ लेकर सभी दिशाओं से हाका पर घेरा डाल दिया और उसके एक दल ने हाका और क्लंग-क्लंग के बीच की पहाड़ी पट्टी पर अधिकार कर लिया। शत्रु सेना को तोपखाने और बमवर्षकों का सहारा भी प्राप्त था।

हाका क्षेत्र की रक्षा का भार ले. रनजोधासिंह पर था। स्थिति को देखते हुए ले. रनजोधासिंह ने एक दल हाका की रक्षा के लिए छोड़ा और चुने हुए साठ सैनिकों को लेकर वे क्लंग-क्लंग चौकी की रक्षा के लिए चल पड़े, जिसको शत्रु सेना ने घेर रखा था। शत्रु सेना की संख्या इस दल से पाँच गुनी अधिक थी। ले. रनजोधासिंह ने अपने साथी सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि शत्रु सेना ने क्लंग-क्लंग चौकी पर हमारे जवानों को घेर रखा है और यदि समय रहते हुए हम उनकी सहायता के लिए नहीं पहुँच सके, तो उनमें से एक भी जीवित नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि ऐसे संकट के समय अपनी जान को जोखिम में डालकर भी हमें अपने साथियों को बचाना है। उनके प्रेरक उद्‌बोधन से उनके साथी सैनिकों में जोश उबाल खाने लगा और अपने साथियों को बचाने के लिए वे हथेलियों पर अपने प्राण लिये हुए निकल पड़े।

पहाड़ी पट्टी को शत्रु सेना के तीन सौ सैनिकों ने घेर रखा था। उनके पास अच्छी किस्म के अस्त्र-शस्त्र थे और उन्होंने अपनी स्थिति ऊँचाई पर जमा रखी थी। उनके मुकाबले में आजाद हिंद फौज के सैनिकों की संख्या केवल साठ ही थी और उनके पास अच्छे हथियार भी नहीं थे। पहाड़ी के नीचे स्थित होने के कारण भी वे संकट में थे। इतना होने पर भी सिवाय भिड़ने के और कुछ चारा ही नहीं था।

ले. रनजोधासिंह का दल 'जयहिंद' और 'नेताजी की जय' के गगनभेदी घोष के साथ शत्रु सेना पर टूट पड़ा। आमने-सामने का भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें दोनों ओर के सैनिक हताहत होकर गिरने लगे। काफी देर तक यह मार-धाड़ चलती रही और अंत में आजाद हिंद फौज के क्रुद्ध सैनिकों के सामने शत्रु सेना को घुटने टेकने पड़े। पराजय से मुँह छिपाने के लिए उसने वह पहाड़ी छोड़कर दूसरी पहाड़ी पट्टी पर अपनी स्थिति जमा ली।

ले. रनजोधासिंह चाहते तो दूसरी पहाड़ी पट्टी पर शत्रु का पीछा न करते हुए, क्लंग-क्लंग चौकी पर अपने घिरे हुए साथियों से जा मिलते, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। उनका तो खून खौल रहा था। उन्होंने अपनी आँखों के सामने साथियों को दम तोड़ते हुए देखा था। वे अपने एक साथी का बदला शत्रु सेना के दस सैनिकों को मौत के घाट उतारकर लेना चाहते थे। अपने बचे हुए साथियों को संगठित करके उन्होंने दूसरी पहाड़ी पट्टी पर भी शत्रु को खदेड़ा और वहाँ भी उतना ही घमासान युद्ध हुआ। भीषण मार-धाड़ के पश्चात् ले. रनजोधासिंह को वहाँ से भी शत्रु सेना को खदेड़ देने में सफलता मिली। वे अपने दल का खून ठंडा नहीं होने देना चाहते थे। अपने दल के हौसले की इसी ऊँचाई में उन्होंने शत्रु के मुख्य शिविर पर धावा बोल दिया और वहाँ से भी शत्रु का सफाया कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने शहीद साथियों का बदला चुका लिया। भारी मात्रा में गोला-बारूद और खाद्य सामग्री उनके हाथ लगी। क्लंग-क्लंग चौकी के अपने साथियों के प्राणों की रक्षा उन्होंने की तथा चौकी को शत्रु के हाथों में जाने से भी बचा लिया।

अगस्त १९४४ के मध्य ले. रनजोधासिंह को आदेश मिला कि वे हाका क्षेत्र को खाली करके कालेवा स्थान पर पहुँच जाएँ। मार्ग में उन्हें भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके पूरे दल ने बहुत हौसले का परिचय दिया। सैनिक लोग अपने घायल और बीमार साथियों को अपनी पीठ पर लादकर ले गए; जबकि ऐसी स्थिति में जापानी लोग अपने घायल सैनिकों को गोली मारकर आगे बढ़ जाते थे। नदियों-नालों को पार करता हुआ ले. रनजोधासिंह का दल कालेवा जा पहुँचा, जहाँ कोहिमा मोरचे से लौटते हुए अन्य साथियों से उनका मिलन हो गया।

इस समय तक जापानी सेना के साथ आजाद हिंद फौज के संबंध बहुत

बिगड़ गए थे, यहाँ तक कि कभी-कभी उनमें भिड़ंत भी हो जाया करती थी। इसका मुख्य कारण यह था कि जापानी सेना आजाद हिंद फौज को अधिक शक्तिशाली नहीं होने देना चाहती थी।

□

★ कुमारी राधा पाटनकर

कुमारी राधा पाटनकर ने उसमानाबाद जिले के अपने गाँव 'नीलंगा' को हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों से बचाने के लिए हथियार चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जो ग्रामसेना बनाई गई थी, उसमें भी कुमारी राधा पाटनकर सम्मिलित थी।

आखिर एक दिन हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों के एक संयुक्त दल ने नीलंगा गाँव पर सशस्त्र हमला कर दिया। ग्रामसेना ने आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया। कुमारी राधा पाटनकर की बंदूक से मौत की बौछारें निकल रही थीं। दोनों पक्षों के लोग हताहत हुए।

युद्ध करते-करते कुमारी राधा पाटनकर शहीद हो गई। आक्रमणकारियों ने बदला लेने की दृष्टि से सारे गाँव को जलाकर राख कर दिया।

□

★ रामचंद्र नेवगुई

रामचंद्र नेवगुई

१० मार्च, १९५७ को पुर्तगाल की पुलिस ने अस्सोनोरा पुल के पार जाती हुई एक कार पर गोलियाँ चला दीं। पुलिस को समाचार मिला था कि उस कार में कुछ क्रांतिकारी यात्रा कर रहे हैं और वे कहीं आक्रमण करने वाले हैं। पुलिस की गोली से उस कार में सवार रामचंद्र नेवगुई की मृत्यु हो गई।

रामचंद्र नेवगुई का जन्म गोवा

के 'बीचोलिम' ग्राम में सन् १९१० में हुआ था। उसके पिता श्री हरि नेवगुई एक व्यापारी थे। रामचंद्र नेवगुई गोवा की राष्टीय कांग्रेस का सदस्य था और गोवा मुक्ति के लिए वह सक्रिय रहा करता था।

□

★ श्रीमती रामम्मा गज्जा

वह एक वीरांगना थी। हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाए जाने के लिए जो संघर्ष चल रहा था, उसमें श्रीमती रामम्मा गज्जा ने भी हौसले के साथ भाग लिया और अपने गाँव की रक्षा के लिए जो ग्रामसेना बनाई गई थी, उसमें भी उसने भाग लिया था।

एक दिन रजाकारों ने उसके गाँव पर आक्रमण कर दिया। युद्ध करते हुए श्रीमती रामम्मा गज्जा बंदी बना ली गई। उससे अन्य लोगों के पते-ठिकाने पूछे गए, लेकिन उसने किसीका भी पता नहीं बताया।

कई रजाकारों ने मिलकर श्रीमती रामम्मा गज्जा का गला दबाकर मार डाला। देश की आजादी की बलिवेदी पर एक नारी ने वीरगति प्राप्त कर ली।

□

★ रामय्या वेलतुरू
★ वैंकय्या कोशाकोंडा ★ सोमय्या नल्ला

वारंगल जिले के 'गुरथुरू' गाँव के लोगों को इस बात का पता चल गया था कि उनके गाँव पर रजाकारों द्वारा आक्रमण किया जाएगा। आंदोलन की लहर ने हैदराबाद के निजाम को अत्याचार करने की खुली छूट दे दी थी। रियासत की फौज और पुलिस तो गाँवों और शहरों पर आक्रमण करके भारी संख्या में लोगों को मौत के घाट उतार देती थी, इसके अतिरिक्त रजाकारों का संगठन भी लोगों पर हमले करता था और उन्हें मौत के घाट उतार देता था। उन लोगों को रियासत की ओर से हथियार भी दिए जाते थे और पैसा भी दिया जाता था। वे लोग घरों को लूटते और महिलाओं को भी अपमानित करते थे।

'गुरथुरू' गाँव के लोगों ने भी प्रत्याशित हमले से अपने गाँव की रक्षा करने के लिए संघर्ष समिति बना ली थी। १३ दिसंबर, १९४७ को रजाकारों और निजाम की पुलिस ने सम्मिलित रूप से 'गुरथुरू' गाँव पर आक्रमण कर दिया। गाँववालों ने उनका डटकर मुकाबला किया। इस युद्ध में रामय्या वेलतुरू, वैंकय्या कोशाकोंडा, सोमय्या नल्ला तथा अन्य तीन व्यक्ति अपने गाँव की रक्षा करते हुए शहीद हो गए।

☐

★ रामसिंह

रामसिंह दिल्ली की 'स्वतंत्र भारत टैक्सटाइल मिल' का एक कर्मचारी था। जब गोवा को मुक्त करने के लिए आंदोलन छिड़ा तो रामसिंह चुप नहीं बैठ सका। एक जत्था बनाकर वह गोवा के लिए चल पड़ा। सन् १९५६ में अपने साथियों के साथ उसने गोवा की सीमा में प्रवेश करना चाहा, लेकिन वह पुर्तगाली पुलिस की गोलियों का शिकार हो गया।

रामसिंह का जन्म हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जिले में हुआ था।

☐

★ मेजर रामसिंह ★ लेफ्टिनेंट सिकंदर खान

हाका-फालम मोरचा

आजाद हिंद फौज की नं. २ और नं. ३ बटालियनों को हाका-फालम मोरचे पर नियुक्त करने की योजना जापानी फौजी कमान के विचाराधीन थी। ये दोनों बटालियन क्रमशः ४ और ५ फरवरी, १९४४ को रेल मार्ग द्वारा रंगून से रवाना हुईं। उन्हें अपनी यात्रा कभी रेल से, कभी मोटर से और कभी पैदल चलकर पूरी करनी पड़ी। ये दल रंगून से मांडले पहुँचे और मांडले से कालेवा क़ी ओर चल दिए। इन फौजी दलों का नेतृत्व मेजर जनरल शहनवाज खाँ कर रहे थे। मेजर महबूब और मेजर रामस्वरूप उनके सहायक थे।

मेजर जनरल शहनवाज खाँ को जापानी जनरल मूतागूची ने बताया कि हाका-फालम क्षेत्र में अंग्रेजी सेना के दो डिवीजन तैनात हैं और इसीलिए जापानी

सेना और आजाद हिंद फौज को शत्रु की गतिविधियों को रोकना आवश्यक था। जापानी जनरल का विचार था कि अंग्रेजों ने इंफाल में बहुत अधिक सेना एकत्र कर रखी है और तगड़ा आक्रमण करके बर्मा पर दुबारा अधिकार कर लेना चाहते हैं। वे आक्रमण करें, इसके पूर्व ही आक्रमण करके उनकी योजनाओं को विफल करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत हो रहा था। अंग्रेजी सेना बर्मा पहुँचने के लिए सड़कों का निर्माण भी कर रही थी। जापानी जनरल की योजना इन सड़कों को काटने की भी थी।

नं. २ बटालियन के कमांडर मेजर रामसिंह पाँच सौ सैनिकों के साथ नाचाँग शिविर में पहुँच गए और वहाँ से उन्होंने ले. सिकंदर खान के नेतृत्व में अव्वल कंपनी के सौ सैनिकों का एक दल फालम की रक्षार्थ भेज दिया। हाका-फालम क्षेत्र पहाड़ी प्रदेश है। फालम समुद्र तल से छह हजार फीट तथा हाका सात हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इन दोनों स्थानों पर खाद्य सामग्री तथा भारी सामान पहुँचाने के लिए जापानियों ने परिवहन की कोई व्यवस्था नहीं की और इतने ऊँचे पहाड़ी स्थानों पर आजाद हिंद फौज के जवानों को सारा सामान अपने सिरों पर लादकर ले जाना पड़ा। प्रत्येक सैनिक और अफसर को सिर पर लगभग नब्बे पौंड वजन उठाकर पर्वत पर चढ़ना पड़ता था।

अंग्रेजी ब्रिगेड को बंदी बनाया

ले. सिकंदर खान ने फालम क्षेत्र की रक्षा का भार जापानी सेना के हाथों से ले लिया। १७ मार्च, १९४४ को उन्हें सूचना मिली कि शत्रु सेना का एक दल उस क्षेत्र में आक्रमण की तैयारी कर रहा है। ले. सिकंदर खान ने अपनी अव्वल कंपनी के अस्सी जवान अपने साथ लिये और वे शत्रु दल की ताक में रास्ते के दोनों ओर की झाड़ियों में छिपकर बैठ गए। शत्रु दल ने कल्पना भी नहीं की थी कि उस क्षेत्र में उसे संकट का सामना करना पड़ेगा। वे लोग निडर होकर आगे बढ़ रहे थे। ज्यों ही शत्रु सेना का दलनायक आगे बढ़ा, ले. सिकंदर खान ने उसकी छाती पर अपना रिवॉल्वर रख दिया और पूरे दल को आत्मसमर्पण के लिए ललकारा। पूरे दल ने तत्काल आत्मसमर्पण कर दिया। वे लोग अंग्रेजी फौज के लूशाई ब्रिगेड के सैनिक थे।

अंग्रेजी फौज का एक दूसरा गुरिल्ला दस्ता भी उसी क्षेत्र में सक्रिय था और मेजर मैनिंग उस दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे। गुरिल्ला युद्ध में मेजर मैनिंग को विशेष दक्षता प्राप्त थी और उन्होंने चिन पहाड़ी के निवासी चिन लोगों का एक गुरिल्ला दल तैयार कर लिया था। जिससे जापानी लोग बहुत भयभीत थे। ले. सिकंदर खान चाहते थे कि किसी प्रकार गुरिल्ला दल के नायक मेजर मैनिंग को जीवित पकड़ा

जाए। उन्हें पता चला था कि शत्रु का गुरिल्ला दल नीचे की दिशा में एक नाले में छिपा हुआ है।

ले. सिकंदर खान ने मेजर मैनिंग के गुरिल्ला दल को गिरफ्तार करने का भी जाल बिछाया। उन्होंने उस नाले को चुपके से दो तरफ से घेर लिया। मेजर मैनिंग अपने एक अर्दली को आगे करके अपना रास्ता तय कर रहे थे। ज्यों ही अर्दली एक मोड़ पर पहुँचा, उसे एकदम पकड़ लिया गया और वह शोर न मचा सके, इसलिए उसका मुँह बंद कर दिया गया। अब मेजर मैनिंग आगे बढ़े। ले. सिकंदर खान स्वयं को जब्त न कर सके। मेजर मैनिंग के आगे अपना रिवॉल्वर लेकर कूद पड़े और समर्पण के लिए उन्हें ललकारा। मेजर मैनिंग के पास स्टैनगन थी। उन्होंने फायर किया और ले. सिकंदर खान ने भी अपनी रिवॉल्वर से फायर किया, पर उनका निशाना चूक गया। मेजर मैनिंग अपनी स्टैनगन फेंककर भागे और ले. सिकंदर खान ने अपनी ब्रैनगन से उनपर निशाना साधा, पर उनकी ब्रैनगन जाम हो गई। ले. सिकंदर खान ने उनका पीछा भी किया, पर मेजर मैनिंग को भाग निकलने में सफलता मिल गई। ले. सिकंदर खान ने भागते हुए गुरिल्ला दल को दूर तक खदेड़ा और उसके पश्चात् वे लूशाई ब्रिगेड के बंदी सैनिकों तथा लूट में प्राप्त प्रचुर सामग्री के साथ फालम शिविर में पहुँच गए।

□

★ रामास्वामी उंद्रियर

रामास्वामी उंद्रियर तमिलनाडु के तंजौर जिले के रहनेवाले थे। वे भी मलाया में बनी आजाद हिंद फौज के जासूस विभाग में भरती होकर जासूसी के काम से भारत पहुँचे। दुर्भाग्यवश वे गिरफ्तार कर लिये गए और फाँसी का फंदा चूमना पड़ा।

□

★ रामेश्वर बनर्जी

'नेताजी सुभाषचंद्र बोस जिंदाबाद!'

'आजाद हिंद फौज जिंदाबाद!'

'इनकलाब जिंदाबाद!'

ये नारे २१ नवंबर, १९४५ को कलकत्ता के हजारों छात्रों के कंठों से फूट रहे थे। छात्रों का वह समुदाय विराट् जुलूस की शक्ल में 'धर्मतल्ला स्ट्रीट' होता हुए 'एस्प्लेनेड रोड' की तरफ बढ़ रहा था। वे लोग 'वेलिंग्टन स्क्वायर' पहुँचकर आमसभा करने वाले थे।

इस प्रदर्शन के द्वारा छात्र जगत् देश की आजादी के लिए लड़नेवाले आजाद हिंद फौज के उन अफसरों और सैनिकों की रिहाई की माँग कर रहा था, जिन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश हुकूमत ने गिरफ्तार करके भारत की विभिन्न जेलों में डाल रखा था और दिल्ली के लाल किले में जिनके कोर्ट मार्शल की प्रक्रिया चल रही थी।

छात्रों का जुलूस 'एस्प्लेनेड रोड' पर थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि सामने से पुलिस का एक बहुत बड़ा दल वहाँ पहुँच गया और उसने छात्रों को आगे न बढ़ने की चेतावनी दी। पुलिस की चेतावनी की अवहेलना करके भी जुलूस ने आगे बढ़ना जारी रखा। जब पुलिस दल ने अपनी लाठियाँ सँभाली तो रामेश्वर बनर्जी नामक एक छात्र अपना सीना खोलकर पुलिस दल के सामने पहुँच गया और उसने ललकार कर कहा—

''चलाओ, मुझपर लाठियाँ और गोलियाँ, मैं पीछे हटने वाला नहीं हूँ।''

रामेश्वर को इस तरह गरजते देखकर अन्य छात्र भी उसके बिलकुल निकट पहुँच गए। रामेश्वर ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा—

''सुभाष बाबू ने देश की आजादी की लड़ाई लड़ी है और उनके आह्वान पर हजारों लोगों ने आजादी की उस लड़ाई में जान झोंकी है। यह कितने शर्म की बात है कि ब्रिटिश हुकूमत ने हमारी आजादी के योद्धाओं को जेल में बंद कर रखा है और वह उनके लिए फाँसी के फंदे तैयार कर रही है। हमारी माँग है कि आजाद हिंद फौज के लोगों को मुक्त कर दिया जाए और उनके ऊपर से मुकदमे उठा लिये जाएँ। मेरे साथियो! मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूँ कि आप लोग क्या चाहते हैं?''

इस प्रश्न के उत्तर में हजारों कंठों से स्वर निकला—

''आजाद हिंद फौज छोड़ दो!
लाल किला तोड़ दो!''

इस नारेबाजी से पुलिस दल का आक्रोश बढ़ गया। इस हंगामे की जड़ में उसने रामेश्वर बनर्जी को ही पाया। उसके सिर पर लाठियाँ पड़ने लगीं। उसकी

खोपड़ी फूट गई और खून का फव्वारा छूट गया। उसके हाथ का तिरंगा ध्वज खून से सन गया। रामेश्वर उस समय तक झंडा थामे रहा, जब तक उसको होश रहा। घटनास्थल पर ही उसका प्राणांत हो गया। अन्य छात्रों पर भी लाठियों के प्रहार हुए, पर उनमें से एक भी नहीं भागा। भागने के स्थान पर सारे छात्र पालथी मारकर बैठ गए। अँधेरा हो जाने पर पुलिस ने गोलियाँ चला दीं। गोलियों और लाठियों के आघात से छत्तीस छात्र घटनास्थल पर ही शहीद हो गए। उस सड़क पर यातायात अवरुद्ध हो गया। इस भीषण हत्याकांड के समाचार सारे नगर में फैल गए।

छात्रों को समझाने गवर्नर महोदय और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी घटनास्थल पर पहुँचे। अपने छत्तीस साथियों की अमूल्य जीवन निधियाँ खोकर भला वे लोग कैंसे झुक सकते थे। उनपर समझाने का कोई असर नहीं हुआ। नवंबर की उस ठंडी रात में वे लोग सड़क पर उसी भाँति बैठे रहे।

२२ नवंबर को जुलूस 'वेलिंग्टन स्क्वायर' पहुँचा और वहाँ आमसभा आयोजित करके अपने शहीद साथियों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। उसके बाद आमसभा शवयात्रा के जुलूस के रूप में परिवर्तित हो गई।

कलकत्ता के इतिहास में वह प्रदर्शन और वह सामूहिक शवयात्रा बेजोड़ थी।

□

★ रावजी राने

दादा राने के ही एक सहयोगी रावजी राने थे। जिस फौज का निर्माण दादा राने ने किया था, उसके जनरल थे रावजी राने। रावजी राने ने कई बार पुर्तगाली फौज से युद्ध करके उसे भारी नुकसान पहुँचाया।

एक बार रावजी राने जब अकेले 'मापसे' नगर की ओर जा रहे थे तो पुर्तगाली पुलिस के एक अफसर ने गोली चलाकर उनको मार डाला।

इस हत्या का बदला चुकाने के लिए रावजी राने के मित्रों और क्रांतिकारी सैनिकों ने उस पुर्तगाली पुलिस अफसर की हत्या कर दी और उसका घर जलाकर राख कर दिया।

रावजी राने का जन्म गोवा के 'जुवेम' ग्राम में हुआ था।

★ रोहिदास मापारी

रोहिदास मापारी गोवा के उन भयंकर क्रांतिकारियों में से एक था, जिसके नाम से पुर्तगाल की पुलिस काँपती थी। वह गोमांतक दल का अत्यंत उग्र क्रांतिकारी था। पुलिस के साथ युद्ध करने और उसे नीचा दिखाने में रोहिदास मापारी को बहुत आनंद आता था। एक बार उसने 'अस्सोनोरा' की बहुत बड़ी पुलिस चौकी पर हमला करके सारा गोला-बारूद और हथियार लूट लिये तथा पुलिस के कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया। बाद में पुलिस ने घात लगाकर उसे गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली। उसे अठारह महीने तक हिरासत में रखा गया। उसे प्रतिदिन ही यातनाएँ दी जाती थीं। इन्हीं यातनाओं के परिणामस्वरूप २८ सितंबर, १९५६ को उसकी मृत्यु हो गई।

रोहिदास मापारी का जन्म 'अस्सोनोरा' ग्राम में १२ दिसंबर, १९२४ को हुआ था। उसके पिता श्री पांडुरंग मापारी एक कृषक थे।

□

★ लक्ष्मण वेलिंगकर

पुर्तगाल की पुलिस ने गोवा के महान् क्रांतिकारी लक्ष्मण वेलिंगकर को गिरफ्तार करके यह जानने का प्रयत्न किया कि उसके साथी कौन-कौन हैं ? लक्ष्मण वेलिंगकर ने अपने किसी भी क्रांतिकारी साथी का नाम बताने से इनकार कर दिया। उसे मारा गया, जगह-जगह उसके शरीर को जलाया गया और चाकू से उसकी चमड़ी काटकर उसमें नमक-मिर्च भरा गया; लेकिन फिर भी अपने किसी साथी को फँसाने के लिए उसका मुँह नहीं खुला। इन यातनाओं का परिणाम यह हुआ कि जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई।

लक्ष्मण वेलिंगकर का जन्म सन् १९२५ में गोवा के 'वेलिंग' स्थान पर हुआ था। थोड़ी-बहुत शिक्षा प्राप्त करके उसने एक दवाई विक्रेता की दुकान पर नौकरी कर ली। वह 'गोवा राष्ट्रीय कांग्रेस' का सदस्य था। अपने प्रदेश को मुक्त कराके शेष भारत के साथ मिलाने के लिए उसने गोपनीय प्रयास भी किए और उसी प्रयास में वह शहीद हुआ।

□

★ लेफ्टिनेंट लहनासिंह

शत्रु सेना ने १६ अप्रैल, १९४४ को क्लंग-क्लंग रोड पर स्थित आजाद हिंद चौकी पर आक्रमण कर दिया। शत्रु सैनिकों की संख्या सौ थी और उनके मुकाबले में आजाद हिंद फौज के सैनिकों की संख्या केवल बीस ही थी। शत्रु सेना मशीनगनों और मॉर्टारों से सुसज्जित थी। उन्होंने आजाद हिंद चौकी को तीन तरफ से घेर लिया। वे चौकी के बिलकुल निकट पचास गज के फासले तक पहुँच गए। चौकी के रक्षक दल का नेतृत्व ले. लहनासिंह कर रहे थे। स्थिति की गंभीरता का अनुभव

करते हुए उन्होंने अपने दस साथियों को चौकी की रक्षा के लिए छोड़ा और केवल दस साथियों को लेकर शत्रु पक्ष के मशीनगन दस्ते की ओर झपट पड़े। उनकी बंदूकें विद्युत् गति से आग उगलने लगीं और शुत्र को सँभलने का भी अवसर नहीं मिला। शत्रु दल के सौ सैनिक आजाद हिंद फौज के दस सैनिकों का आक्रमण बरदाश्त नहीं कर सके और वे भाग खड़े हुए। ले. लहनासिंह ने दस मील तक उनका पीछा किया और युद्ध के लिए उन्हें ललकारते रहे; पर शत्रु दल ने उनकी चुनौती स्वीकार नहीं की।

□

★ लेफ्टिनेंट लालसिंह

लेफ्टिनेंट लालसिंह आजाद हिंद फौज की ओर से बर्मा के एक मोरचे पर युद्ध लड़ रहे थे। अंग्रेजों की ओर से जो भारतीय फौजी लड़ रहे थे, उनमें से कुछ से ले. लालसिंह परिचित थे। वे अवसर पाकर उन लोगों के बीच जा पहुँचे और उन्हें आजाद हिंद फौज से मिल जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कुछ लोगों को राजी भी कर लिया, लेकिन उसी समय ब्रिटिश फौज के एक अफसर ने उन्हें देख लिया और उन्हें गिरफ्तार करना चाहा। ले. लालसिंह ने उस अफसर के साथ गोलियों का आदान-प्रदान किया और उसे मार डाला। उन्होंने उस अफसर के और भी साथियों को मौत के घाट उतारा; लेकिन इस प्रयत्न में वे स्वयं भी लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

ले. लालसिंह को मरणोपरांत 'वीरे-हिंद' और 'शत्रु-नाथ' पदकों से सम्मानित किया गया।

□

★ वासवराज मलशेट्टी

वासवराज मलशेट्टी को गुलामी से चिढ़ थी। पहले तो उसने उस आंदोलन में भाग लिया, जो स्वाधीन भारत में हैदराबाद के विलय के लिए चलाया जा रहा था। हैदराबाद के प्रशासन ने उसे फाँसने के लिए उसपर यह अभियोग लगा दिया कि उसने निजाम हैदराबाद पर बम का प्रहार करने का प्रयत्न किया था। यह अभियोग सिद्ध नहीं हो सका।

इस आंदोलन के पश्चात् वासवराव मलशेट्टी ने गोवा को मुक्त करने के लिए चलाए जानेवाले आंदोलन में भाग लिया। पुर्तगाल की सेना ने उसपर गोली चला दी और मई १९४८ में वासवराज मलशेट्टी 'पंजिम' में गोली खाकर शहीद हो गया।

वासवराज मलशेट्टी का जन्म मैसूर राज्य के बीदर जिले के 'वगादल' नामक गाँव में सन् १९१८ में हुआ था।

□

★ विट्ठल विनायक कोरलिम

१९ फरवरी, १९५७ को 'सिरिगाओ' स्थान पर पुर्तगाल की पुलिस ने विट्ठल विनायक कोरलिम को इसलिए गोली मार दी, क्योंकि वह गोवा मुक्ति आंदोलन को उकसा रहा था और जनता में पुर्तगाली शासन के विरुद्ध विद्रोह तथा घृणा का प्रसार कर रहा था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके उसपर मुकदमा चलाने के बजाय उसे गोली से मार देना ही उचित समझा, क्योंकि वह खतरनाक क्रांतिकारी माना जाता था।

□

★ विनायक साप्ते

पुर्तगाली शासन की दासता से गोवा को मुक्त कराने के लिए जो खुला राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था, उसमें विनायक साप्ते ने भाग लिया और वह दो बार जेल भी गया। लेकिन उसको शीघ्र ही उस आंदोलन की निस्सारता समझ में आ गई और वह गोवा के क्रांतिकारियों की संस्था गोमांतक दल का सदस्य बन गया।

विनायक साप्ते के दल ने विस्फोटक सुरंगों के साथ 'सिरिगाओ' माइंस का ध्वंस करने का संकल्प किया। वे लोग आवश्यक सामग्री के साथ घटनास्थल पर पहुँच गए। उनका अभियान सफल रहा और वहाँ भारी विनाश हुआ। इस अभियान को संपन्न करके जब उसका दल लौट रहा था तो पुर्तगाल की पुलिस ने उसका पीछा किया। अपने सभी साथियों को तो उसने सुरक्षापूर्वक निकाल दिया, पर वह स्वयं पुलिस की गोली का शिकार होकर १९ फरवरी, १९५७ को शहीद हो गया।

विनायक साप्ते सन् १९३९ में गोवा के 'कोरलिम' गाँव में पैदा हुआ था। उसके पिता श्री धर्म साप्ते ताम्रकार थे।

□

★ शीलभद्र याजी

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के साथ अनेक क्रांतिकारियों ने कंधे से कंधा मिलाकर देश को स्वाधीन कराने के लिए सतत संघर्ष किया था। ऐसे ज्ञात-अज्ञात सेनानियों में श्री शीलभद्र याजी तथा चौधरी मुस्तफा अली के नाम उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं।

श्री शीलभद्र याजी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के साथ १९२८ से १९४३ तक सक्रिय कार्य किया। आजाद हिंद फौज को सक्रिय सहयोग देने के आरोप में गिरफ्तार कर दिल्ली के लाल किले में उनका कोर्ट मार्शल भी किया गया। जेलों में उन्होंने अनेक वर्षों तक भीषण यातनाएँ सहन कीं।

□

★ श्यामबहादुर थापा

सामान्य धारणा थी कि गोरखे अंग्रेजी सेना में ही भरती होते थे और उन्हींके प्रति वे स्वामीभक्त रहते थे। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि नेपाल के लोग भारत की आजादी के लिए सहयोग करने के लिए तैयार थे। नेताजी के आह्वान पर जर्मनी में नेपाल के कई गोरखा आजाद हिंद फौज में भरती हुए थे।

श्यामबहादुर थापा अंग्रेजी सेना का एक ऐसा ही सैनिक था, जो उत्तरी अफ्रीका के मोरचे पर जर्मन सेनाओं द्वारा बंदी बनाकर 'अन्नाबर्ग' के बंदी शिविर में भेज दिया गया था। जब उसने सुना कि नेताजी सुभाष ने आजाद हिंद फौज बनाई है तो वह उसमें भरती हो गया। अंग्रेज भक्त पुराने अफसरों ने उसे रोका भी, पर उसका उत्तर था—

"भारत और नेपाल अलग-अलग नहीं हैं। भारत को आजाद कराने की

जिम्मेदारी नेपालियों पर भी है। अभी तक अंग्रेजों ने हमें अँधेरे में रखा था। अब हमें वास्तविकता का ज्ञान हो गया है और अब जानबूझकर अँधेरे में रहना मूर्खता होगी।''

इन विचारों के साथ श्यामबहादुर थापा आजाद हिंद फौज में भरती हुआ और उसके कई अन्य गोरखे साथी भी आजाद हिंद फौज में भरती हो गए।

एक दिन 'कोइनिंग्सब्रुक' शिविर में श्यामबहादुर थापा को निमोनिया हो गया और उसकी बीमारी ने गंभीर रूप धारण कर लिया। उसने नेताजी के दर्शन की इच्छा व्यक्त की। समाचार पाकर नेताजी अस्पताल में थापा की रोग शय्या के पास पहुँच गए। नेताजी के दर्शन पाते ही थापा में चेतना का संचार हुआ और उसने खड़े होकर नेताजी को सैल्यूट करना चाहा। नेताजी ने स्वयं उसे खड़े होने से रोका और उसका मस्तक अपनी गोद में लेकर उसकी शय्या पर बैठ गए और सांत्वना देते हुए उससे बोले—

''श्यामबहादुर! तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे। यदि तुम्हें कुछ चाहिए तो बताओ?''

श्यामबहादुर ने डूबते हुए स्वर में उत्तर दिया—

''मैं बच नहीं सकूँगा। मैं तो अंतिम साँसें ले रहा हूँ। आपके दर्शन चाहिए थे, वे मुझे मिल गए। मुझ-सा भाग्यशाली और कौन होगा, जो आपकी गोद में प्राण त्यागने का सौभाग्य मुझे मिल रहा है।''

इतना कहते हुए उसके होंठों से 'जयहिंद!' का धीमा-सा स्वर निकला और उसने अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद कर लीं।

□

★ श्रीराम नेगी

श्रीराम नेगी बर्मा के एक मोरचे पर आजाद हिंद फौज की ओर से टैंक विध्वंसक दस्ते के साथ युद्ध कर रहा था। वह एक टीले के पीछे छिपा हुआ था और जो अंग्रेजी टैंक सड़क पर से गुजरता, वह ऊपर से टैंक तोड़नेवाले बम से प्रहार करता तथा उस टैंक को नष्ट कर देता था। इस प्रकार उसने अंग्रेजी सेना के पाँच टैंक नष्ट कर दिए। ब्रिटिश सेना ने टीले के पीछे तलाश की और श्रीराम नेगी को गोलियों से भून दिया गया। एक बहुत बड़ा काम करके वह शहीद हुआ।

□

★ सगुन मापारी

सगुन मापारी बड़े हौसले के साथ गोवा को मुक्त कराने के संकल्प से गोवा की सीमा में प्रवेश करने के लिए बढ़ चला। पुर्तगाल की पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और इतनी यातनाएँ दीं कि परिणामस्वरूप १२ फरवरी, १९५५ को 'बिचोलिम' में उसकी मृत्यु हो गई।

□

★ स्वामी सत्यानंद पुरी

कलकत्ता की पुलिस अनुशीलन समिति के एक क्रांतिकारी को गिरफ्तार करने के लिए दिन-रात एक कर रही थी; पर वह क्रांतिकारी था, जो पुलिस की आँखों में धूल झोंककर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहा था। पुलिस के लंबे और सघन प्रयत्न भी उस क्रांतिकारी को गिरफ्तार करने में विफल हुए। उस क्रांतिकारी का नाम था प्रफुल्ल कुमार सेन।

प्रफुल्ल कुमार सेन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से कला विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी और प्रावीण्य सूची में उसका नाम था। प्रफुल्ल कुमार सेन बंगाल की अनुशीलन समिति का सदस्य था। 'अनुशीलन समिति' बंगाल के क्रांतिकारियों की प्रमुख संस्था थी। समिति के सदस्य होने के नाते प्रफुल्ल कुमार सेन ने शासन विरोधी सभी गतिविधियों में भाग लिया। उसकी गिरफ्तारी का वारंट निकाला गया और गिरफ्तारी के लिए पुरस्कार घोषित किया गया।

शासन और पुलिस को चकमा देने के लिए प्रफुल्ल कुमार सेन ने संन्यासी के वेश में भारत भ्रमण करना प्रारंभ कर दिया। उसने हिमालय की गोद में अधिक समय बिताया और उस एकांतवास में दर्शनशास्त्र का गहन अध्ययन किया।

अपने हिमालय प्रवास के पश्चात् प्रफुल्ल कुमार सेन फिर बंगाल लौटा और कलकत्ता विश्वविद्यालय में 'सत्यानंद पुरी' के नाम से प्राच्य दर्शन में प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगा। प्राच्य दर्शन पर उसका असाधारण अधिकार था और वह कई जगह व्याख्यान के लिए बुलाया जाता था। लोग उसे 'स्वामी सत्यानंद पुरी' के नाम से जानते थे।

थाईलैंड की सरकार के शिक्षा विभाग ने स्वामी सत्यानंद पुरी को व्याख्यान के लिए अपने देश में आमंत्रित किया। थाईलैंड में स्वामीजी की वह धूम मची कि उन्हें वहाँ से आने ही नहीं दिया और वे वहीं बसकर रह गए।

सन् १९४० में स्वामी सत्यानंद पुरी ने थाईलैंड में एक संघ का निर्माण किया, जिसका नाम 'थाई-भारत सांस्कृतिक मंच' रखा गया। यह संघ दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों के विकास के लिए बहुत अच्छे काम करता रहा। स्वामीजी ने दर्शनशास्त्र पर अंग्रेजी में सोलह ग्रंथ लिखे। थाई भाषा सीखकर उन्होंने थाई भाषा में भी कुछ पुस्तकें लिखीं। उनकी पुस्तकें थाईलैंड में बहुत लोकप्रिय हुईं।

थाईलैंड में रहते हुए स्वामी सत्यानंद पुरी ने भारत की आजादी हेतु बहुत प्रयत्न किए। जब थाईलैंड पर जापान का अधिकार हो गया तो उन्होंने वहाँ 'आजाद हिंद संघ' की स्थापना की; जिसकी शाखाएँ चीन, फिलिपीन, डच ईस्ट-इंडीज, फ्रेंच-इंडो-चाइना, बर्मा, कोरिया और मंचूरिया में भी स्थापित हुईं। उन दिनों भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस जापान पहुँच चुके थे और वे ही 'आजाद हिंद संघ' के अध्यक्ष थे।

स्वामी सत्यानंद पुरी भारत की आजादी के लिए हमेशा ही प्रयत्नशील रहे; लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर वे विशेष रूप से सक्रिय हो उठे। जापान के टोकियो नगर में एक सम्मेलन का आयोजन प्रस्तावित हुआ, जिसमें सभी देशों के प्रवासी भारतीयों के प्रतिनिधि सम्मिलित होने वाले थे। थाईलैंड के प्रवासी भारतीयों के प्रतिनिधि के रूप में स्वामी सत्यानंद पुरी ने वायुयान द्वारा टोकियो के लिए प्रस्थान किया। दुर्भाग्यवश उनका वायुयान २३ मार्च, १९४२ को दुर्घटनाग्रस्त होकर जापान के निकट ईसवे खाड़ी में गिर पड़ा और अपने तीन साथियों के साथ स्वामीजी शहीद हो गए। इस प्रकार भारत का एक महान् क्रांतिकारी, एक प्रकांड विद्वान्, आजादी के आंदोलन का एक महान् योद्धा और थाई देश का एक महान् सांस्कृतिक नेता इस संसार से उठ गया। स्वामीजी की स्मृति में थाई सरकार ने एक ट्रस्ट स्थापित किया और वहाँ एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना भी की गई।

□

★ नेताजी सुभाषचंद्र बोस

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

यह घटना सन् १९०२ की है। कलकत्ता के प्रोटेस्टेंट यूरोपियन स्कूल के दो विद्यार्थियों के दलों में मार-पीट हो रही थी। वह एक प्राथमिक विद्यालय था। जिनमें मार-पीट हो रही थी, उनमें से एक दल अंग्रेज बच्चों का था और दूसरा दल भारतीय बच्चों का। अंग्रेज बच्चों का दल बड़ा था और उसमें बड़ी उम्र के लड़के भी सम्मिलित थे। भारतीय बच्चों का दल छोटा था और उसमें अपेक्षाकृत छोटे बच्चे थे। जब मार-पीट होने ही लगी तो भारतीय बच्चे अपनी पीठ पर लदे हुए बस्ते फेंककर मैदान में कूद पड़े तथा लातों और घूँसों से अपने प्रतिद्वंद्वियों पर टूट पड़े। लगभग पंद्रह मिनट तक दोनों दलों में भीषण संघर्ष हुआ। अंग्रेज बच्चों का दल पिट-कुटकर मैदान से भाग खड़ा हुआ।

लड़नेवाले भारतीय बच्चों के दल में सुभाषचंद्र बोस नाम का बालक भी था। उसके दो चाचा भी उसीकी उम्र के थे, जो उसी पी.ई. स्कूल में पढ़ते थे। कुछ अन्य भारतीय बच्चे भी इस झगड़े में उनके साथ थे। बालक सुभाष के सिर में कुछ चोट लगी थी। जब वह घर पहुँचा तो उसके पिता जानकीनाथ बोस और माता प्रभावती बोस ने उसकी चोट देखी तथा उसके बारे में पूछा। बालक सुभाष ने अपनी माँ से कहा—

"माँ! उस स्कूल में ये झगड़े तो आएदिन ही होते रहते हैं। अंग्रेज बच्चे स्वयं को हम लोगों से श्रेष्ठ समझते हैं और वे लोग हम लोगों को 'गुलाम' कहकर चिढ़ाने लगते हैं। इसी बात पर झगड़ा हो जाता है। झगड़े में पिटाई अकसर उन्हीं लोगों की होती है।"

पिता जानकीनाथ बोस ने कहा—

"बेटे! अगर झगड़े नित्य ही होते रहते हैं तो मैं तुम लोगों को उस स्कूल से निकालकर किसी भारतीय स्कूल में प्रविष्ट कराए देता हूँ। तुम लोगों में से किसी दिन अगर किसीको ज्यादा चोट लग जाए तो ठीक नहीं होगा।"

पिता का प्रस्ताव सुनकर बालक सुभाष ने उत्तर दिया—

''पिताजी! परिस्थिति की भयावहता को देखकर पलायन करना कायरता है। आप मेरे चाचा लोगों को भले ही उस स्कूल से निकाल लें, मैं तो उसी स्कूल में पढ़ूँगा तथा अंग्रेज बच्चों को सबक सिखाकर रहूँगा कि भारतीय बच्चे बुद्धि और बल में उनसे किसी भी प्रकार न्यून नहीं हैं।''

माता प्रभावती बोस ने समझाते हुए कहा—

''बेटे! इस समय भारत में अंग्रेज लोगों का राज है। उन लोगों से झगड़कर रहना ठीक नहीं है। उनसे निभकर चलना ही श्रेयस्कर है।''

बालक सुभाष ने प्रतिरोध करते हुए कहा—

''नहीं माँ! मुझसे यह नहीं हो सकता। अपने से छोटों को निभाने में तो हर्ष और संतोष की अनुभूति होती है। अपने से बड़े या बली से निभने की बात में पराजय और मजबूरी का आभास होता है। भारत में उन लोगों का राज है, यही तो सारे झगड़े की जड़ है। मुझे बड़ा हो जाने दो। किसी दिन उनके राज को उखाड़ने की बात भी सोचनी पड़ेगी।''

बालक के माता और पिता दोनों ही अपने पुत्र की विचारधारा से परिचित हो गए। उन्हें आशंका थी कि किसी समय यह कोई बड़ा झगड़ा कमाएगा।

बालक सुभाष को पी.ई. स्कूल में पढ़ने दिया गया। जब तक वह उस स्कूल में रहा, अंग्रेज बच्चे उसके दल से दोस्ती करके ही रहे।

श्रेयस्कर रूप से कक्षाएँ उत्तीर्ण करते-करते सुभाषचंद्र बोस कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रविष्ट हो गया। अपनी हाई स्कूल परीक्षा में उसने पूरे विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया था। प्रथम स्थान पानेवाले विद्यार्थी से उसके केवल दो अंक ही कम थे।

किशोरावस्था में वैसे सभी के मन में विद्रोह की भावना जाग्रत होती है; पर सुभाष के मन में यह भावना अधिक ही जाग्रत हुई। उसे रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद—दोनों से ही विद्रोह की प्रेरणा मिली। उसका जातीय अभिमान अब उच्च स्तर का हो गया। इसी कारण एक दिन अपने कॉलेज के एक अंग्रेज प्राध्यापक प्रो. ओटन से उसके साथियों का झगड़ा हो गया। सुभाष अपनी कक्षा का प्रतिनिधि था। उसके साथियों ने प्रो. ओटन की पिटाई कर दी। प्रो. ओटन ने भारतीयता को गालियाँ दी थीं। इस झगड़े का दुष्परिणाम सुभाष को भुगतना पड़ा। उसे कॉलेज से निकाल दिया गया। यदि वह चाहता तो अपने साथियों के नाम बताकर अपने दंड से मुक्ति पा सकता था; पर उसने अपने साथियों को फँसाना उचित नहीं समझा। उसने क्षमा भी नहीं माँगी और अपना निष्कासन स्वीकार कर

लिया। कुछ समय पश्चात् उसे दूसरे कॉलेज में प्रवेश मिल गया।

सुभाष में विद्रोह के साथ विनय और सेवा की भावनाएँ भी जुड़ी हुई थीं। उसने अपनी उम्र के लोगों का एक दल बनाया, जो गाँव-गाँव घूमकर हैजा और भयंकर चेचक से पीड़ित निराश्रितों की सेवा करता था। ये लोग अपने जीवन को संकट में डालकर भी दूसरों के जीवन की रक्षा करने के यज्ञ में जुट जाते थे। सुभाषचंद्र मौत को हमेशा ललकार कर ही चला।

जब सुभाषचंद्र ने प्रायोगिक मनोविज्ञान विषय लेकर एम.ए. की कक्षा में प्रवेश लिया तो उसके पिता जानकीनाथ बोस ने उसके सामने इंग्लैंड जाकर आई.सी.एस. करने का प्रस्ताव रख दिया। उसके पिता देख रहे थे कि सुभाष का झुकाव भारतीय क्रांतिकारियों की ओर हो रहा है। उन दिनों भारत में क्रांतिकारी लोग काफी सक्रिय थे और उन्हें फाँसी के फंदों पर झुलाया जा रहा था। जब पिता ने सुभाष को बहुत अधिक विवश किया तो वह इंग्लैंड जाने के लिए तैयार हो गया; पर उसका कथन था—

''ठीक है, मैं आपके कथन से आई.सी.एस. करने जाता हूँ; पर उसके पश्चात् मुझे क्या करना है, यह निर्णय भी मैं अपने मन में कर चुका हूँ।''

लंदन पहुँचकर सुभाषचंद्र बोस ने कैंब्रिज में प्रवेश प्राप्त कर लिया और केवल आठ महीने के अल्प समय में नौ विषयों का अध्ययन करके परीक्षा दी तथा प्रावीण्य सूची में चौथा स्थान प्राप्त कर सबको चकित कर दिया। चकित करनेवाली दूसरी बात यह थी कि उसने प्राप्त करके भी वैभव और दासता के प्रतीक आई.सी.एस. को ठुकरा दिया। आई.सी.एस. का त्याग करनेवाला वह पहला भारतीय था। उसके परिवार और भारत तथा इंग्लैंड के बड़े-बड़े लोगों का उसपर दबाव पड़ा; लेकिन वह अपने निर्णय से टस-से-मस नहीं हुआ। यही संकल्प तो उसने भारत से चलते समय लिया था। वह उसपर अडिग रहा। इंग्लैंड की सरकार ने उससे आई.सी.एस. करने का खर्च भी वसूल किया। सुभाष ने अपने पिता से एक भी पैसा लिये बिना अपने मित्रों के सहयोग से पूरा खर्च चुका दिया।

आई.सी.एस. को ठुकराकर सुभाष लंदन से सीधा बंबई पहुँचा और देश की आजादी के आंदोलन के संबंध में महात्मा गांधी से बातचीत की। महात्मा गांधी सुभाष को संतुष्ट नहीं कर सके। उन्होंने कह दिया कि तुम कलकत्ता पहुँचकर कांग्रेस के नेता देशबंधु चित्तरंजन दास से मिलो।

कलकत्ता पहुँचकर सुभाष ने देशबंधु चित्तरंजन दास से भेंट की। एक विद्रोही गुरु को एक विद्रोही शिष्य मिल गया। कलकत्ता में कांग्रेस का काम तेजी से चल निकला। चित्तरंजन दास ने सुभाष को बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियाँ दीं और वे

सब उसने आशातीत सफलता के साथ पूर्ण करके दिखा दीं।

कांग्रेस के मंच पर भी सुभाषचंद्र बोस ने अपनी क्षमताओं का परिचय देकर अपने लिए महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया। उसने कलकत्ता में शाही युवराज के आवागमन के समय नियोजित बहिष्कार द्वारा सरकार की आँखों में तीक्ष्ण किरकिरी का स्थान प्राप्त कर लिया। नागरिक अवज्ञा आंदोलन में जब पहली बार सुभाषचंद्र बोस को छह महीने के कारावास की सजा सुनाई गई, तो उसने न्यायाधीश से कहा—

"बस, केवल छह महीने की सजा! क्या मैंने किसीकी मुरगी चुराई है, जो मुझे केवल छह महीने की सजा दी गई है?"

सुभाषचंद्र बोस को तब क्या पता था कि उसे ग्यारह बार जेल में जाना पड़ेगा और निर्वासन भी भोगना पड़ेगा।

जेल से मुक्ति के पश्चात् सुभाष ने बंगाल के बाढ़-पीड़ितों के लिए जो राहत की व्यवस्था की, उसे देखकर उसके पिता जानकीनाथ बोस को कहना पड़ा—

"मुझे गर्व है कि मैं सुभाष का पिता हूँ।"

सुभाषचंद्र बोस ने अपनी क्षमताओं का आश्चर्यजनक परिचय उस समय दिया, जब सन् १९२८ में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के समय उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का एक सैन्य दल संगठित करके लोगों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस में काम करने के लिए नहीं, सेना का संचालन करने के लिए पैदा हुआ है।

सुभाषचंद्र बोस की क्षमताओं से आतंकित होकर ब्रिटिश शासन ने उन्हें बर्मा की मांडले जेल में ढाई वर्ष के लिए बंद कर दिया। जेल में रहते हुए भी सुभाषचंद्र बोस ने विधान परिषद् का चुनाव लड़ा और वह उसमें विजयी हुए। शासन ने उन्हें फिर भी मुक्त नहीं किया।

मांडले की जेल में सुभाषचंद्र बोस गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। जब उनकी मरणासन्न जैसी स्थिति हो गई तो उन्हें भारत से निष्कासित करके ऑस्ट्रिया के वियना नगर में इलाज कराने के लिए भेज दिया। अपने यूरोप प्रवास में सुभाषचंद्र बोस ने बीमारी की हालत में भी दौरा किया और सभी देशों में भारत की आजादी के लिए वातावरण तैयार किया। वे जर्मनी भी गए।

निष्कासन की अवधि पूरी हो जाने पर सुभाषचंद्र बोस भारत लौटे और सन् १९३८ के हरिपुरा कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। हरिपुरा कांग्रेस में उन्होंने जो अध्यक्षीय भाषण दिया, वह 'समाजवाद की थीसिस' के नाम से पुकारा गया।

उन्होंने कई राजनीतिक भविष्यवाणियाँ कीं, जो सब सत्य निकलीं।

सन् १९३९ में त्रिपुरी सम्मेलन (जबलपुर, मध्य प्रदेश) की अध्यक्षता के लिए भी सुभाषचंद्र बोस का नाम प्रस्तावित किया गया। उनके मुकाबले में महात्मा गांधी ने अपने उम्मीदवार डॉ. पट्टाभि सीतारामैया को खड़ा कर दिया। डॉ. पट्टाभि सीतारामैया की पराजय हुई और गांधीजी को यह कहने के लिए विवश होना पड़ा—

''पट्टाभि सीतारामैया की हार मेरी हार है।''

सुभाषचंद्र बोस हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन के समय भयंकर रूप से बीमार पड़ गए। १०४° बुखार की स्थिति में भी वे अधिवेशन में सम्मिलित हुए। कांग्रेस के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें यहाँ तक तंग किया गया कि उन्हें कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया।

सुभाषचंद्र बोस को परामर्श देते हुए उनके मित्र दिलीपकुमार राय ने लिखा—

'सुभाष! पांडिचेरी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। तुम्हारी क्षमताओं को देखते हुए मैं कह सकता हूँ कि यदि तुमने अध्यात्म का क्षेत्र अपना लिया तो तुम अपने गुरु स्वामी विवेकानंद को भी पीछे छोड़ दोगे।'

सुभाषचंद्र बोस ने इस प्रस्ताव के उत्तर में दिलीपकुमार राय को लिखा—

'अध्यात्म से मुझे भी प्रेरणा मिलती है; लेकिन जीवन की परिस्थितियों से पराजित होकर मैं पलायन नहीं करूँगा। मैंने संघर्ष करना सीखा है। मैं स्थितियों से जूझूँगा, परिणाम चाहे कुछ भी हो।'

सुभाषचंद्र बोस ने 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना करके अपने अनुयायियों का नया दल गठित कर लिया। शासन के लिए फॉरवर्ड ब्लॉक नया सिरदर्द बन गया। इसी समय द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया और शासन विरोधी गतिविधियों के कारण सुभाषचंद्र बोस को जेल में बंद कर दिया गया।

जेल में बंद होकर सुभाषचंद्र बोस ने सोचा कि मुझे उस समय तक बंद रखा जाएगा, जब तक कि द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त नहीं हो जाता। उनका चिंतन था कि पराधीन देश के लिए महायुद्ध मुक्ति के अवसर बनकर आते हैं। वे द्वितीय विश्वयुद्ध की स्थितियों को भारत के पक्ष में भुना लेने के लिए आतुर थे। जेल से मुक्ति ही उनकी योजनाओं को दिशा दे सकती थी। उन्होंने बंगाल की सरकार को एक चुनौती-भरा पत्र लिख दिया कि या तो मुझे जेल से मुक्त करो, अन्यथा मैं अनशन द्वारा प्राण-त्याग कर दूँगा और मेरी मृत्यु से देश में जो तूफान उठेगा, वह ब्रिटिश शासन को ले डूबेगा।

सुभाषचंद्र बोस की चुनौती से सरकार घबरा गई। एक हफ्ते के अंदर ही उनको

मुक्त करके उन्हें उनके ही घर में कड़ा पहरा बैठाकर नजरबंद कर दिया गया।

सुभाषचंद्र बोस ने अपनी योजना के अनुसार अपनी दाढ़ी बढ़ा ली तथा १८ जनवरी को रात्रि के एक बजकर पच्चीस मिनट पर मौलवी के रूप में पिछले दरवाजे से बाहर निकले और प्रतीक्षारत कार में बैठकर गोमोह पहुँच गए। वहाँ से दिल्ली-कालका मेल पकड़कर वे पेशावर जा पहुँचे। अपने क्रांतिकारी साथी श्री भगतराम के साथ अनेक कष्ट झेलते हुए वे सरहद पार करके अफगानिस्तान की राजधानी काबुल जा पहुँचे। ब्रिटिश सरकार के जासूस हाथ मलते रह गए और सुभाषचंद्र बोस काबुल से जर्मनी की राजधानी बर्लिन जा पहुँचे। उन्होंने हिटलर से भेंट की। हिटलर ने उनका स्वागत करते हुए कहा—

''मैं फ्राइज इंडीशे फूहरर का जर्मनी में स्वागत करता हूँ और श्रीमान के बर्लिन सुरक्षित पहुँचने पर हार्दिक बधाई देता हूँ।''

हिटलर ने 'भारत का नेता' कहकर सुभाषचंद्र बोस का स्वागत किया। उसके पश्चात् से ही वे सभी के द्वारा 'नेताजी' कहकर पुकारे जाने लगे।

जर्मनी में नेताजी ने 'आजाद हिंद संघ' की स्थापना की और आजाद हिंद फौज का निर्माण किया। इस फौज में भरती होने के लिए प्रवासी भारतीयों में होड़ लग गई। जर्मनी की भयंकर सर्दी के दिनों में भी वे लोग सुबह चार बजे उठकर कठिन सैनिक अभ्यास करते थे। जर्मनी में आजाद हिंद फौज इतनी शक्तिशाली बन गई कि अभ्यास युद्धों में वह जर्मन सेना को भी हराने लगी। नेताजी ने जर्मनी में आजाद हिंद रेडियो सेवा भी प्रारंभ की। इसी सेवा द्वारा उन्होंने जर्मनी पहुँचने की खबर भारत पहुँचाई। वे अपने प्रसारणों से भारतीयों का मनोबल ऊँचा उठाते रहते थे। जर्मनी में उनकी उपस्थिति के कारण ब्रिटिश सरकार के हृदय पर साँप लोट रहा था।

नेताजी ने यह अनुभव किया कि यदि वे सिंगापुर या बर्मा पहुँच जाएँ तो भारत की आजादी के लिए ठोस प्रयत्न कर सकते हैं। श्री रासबिहारी बोस के प्रयत्नों से जापान सरकार ने नेताजी सुभाष को जापान आमंत्रित किया।

तीन महीने से ऊपर की पनडुब्बी की खतरनाक यात्रा द्वारा नेताजी जापान पहुँच गए। श्री रासबिहारी बोस के साथ नेताजी सुभाष सिंगापुर पहुँच गए और वहाँ पूर्व गठित आजाद हिंद फौज की कमान सँभाल ली। उन्होंने भारत की आजादी के लिए गठित सभी संगठनों को पुनर्गठित किया। नेताजी के वहाँ पहुँच जाने के कारण आजादी के प्रयत्नों में विद्युत् संचार हो गया। लोगों के हौसले आसमान को छूने लगे।

नेताजी सुभाष ने सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार की स्थापना भी की। उन्होंने महिलाओं की एक फौज का भी निर्माण किया, जिसका नाम 'रानी झाँसी

एस.ए. अय्यर (नेताजी मंत्रिमंडल के सदस्य)

आनंद मोहन सहाय (नेताजी मंत्रिमंडल के सदस्य)

अमर शहीद यलप्पा (नेताजी मंत्रिमंडल के सदस्य)

अमर शहीद सत्येन वर्धन
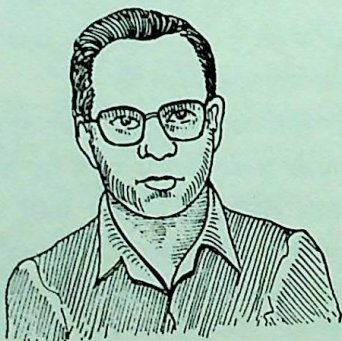
एम.आर. व्यास

अमर शहीद प्रबंधम रंगचार

मेजर जनरल अजीज अहमद खान

कर्नल के. राय

कर्नल एम.वी. मुकुंद

ले. एस.के. वर्धन

मेजर सिंधारा सिंह

मेजर अलवी

कैप्टेन जी. गिलानी

कैप्टेन एहसान कादिर

कैप्टेन रामसिंह

ले. कर्नल बुरहानुद्दीन
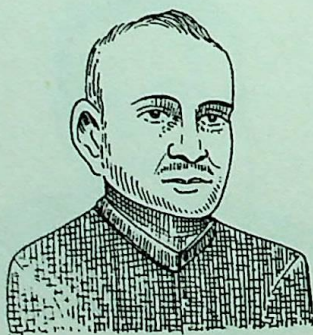
ले. विश्वंभरनाथ शुक्ल
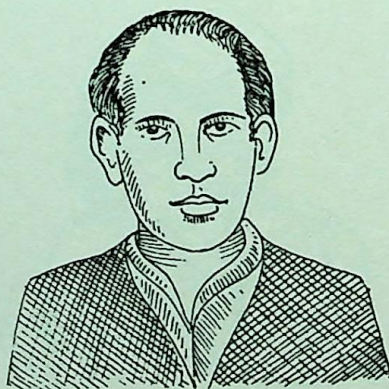
ले. बृजमोहन तिवारी

कैप्टेन एन.एस. नेगी

ले. ए.वी. वटाल

ले. आर.एम. मोयत्रा
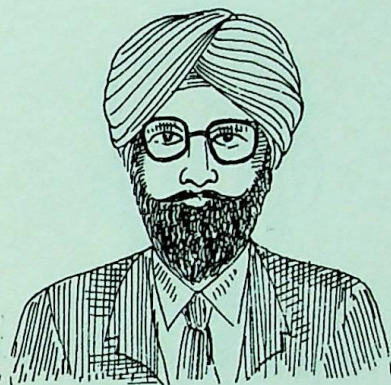
ले. बलवंतसिंह
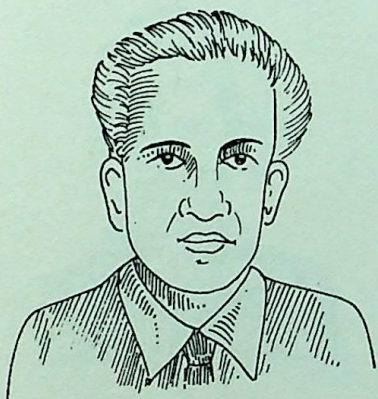
ले. नरेंद्रनाथ बख्शी
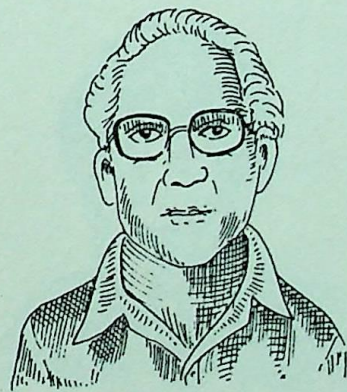
से. ले. वीरसिंह

ले. के.डी. कृपलानी

अंडर ऑफीसर राम सेवक पाठक
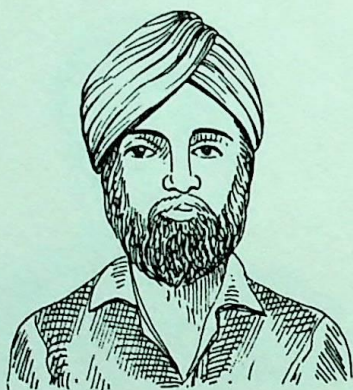
अंडर ऑफीसर मोहनसिंह
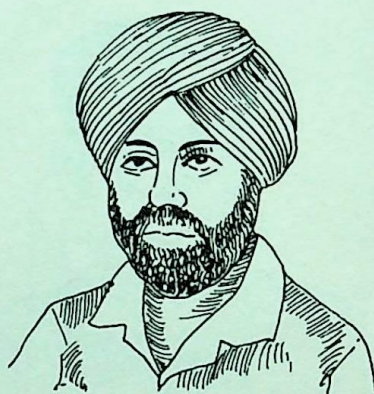
से. ले. सबरनसिंह
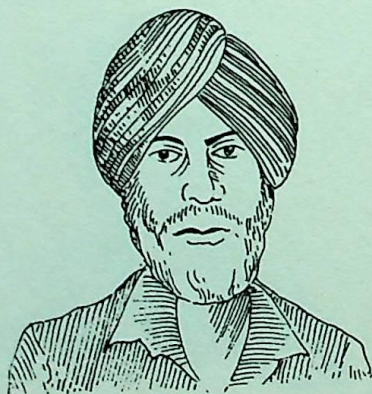
गरीबसिंह
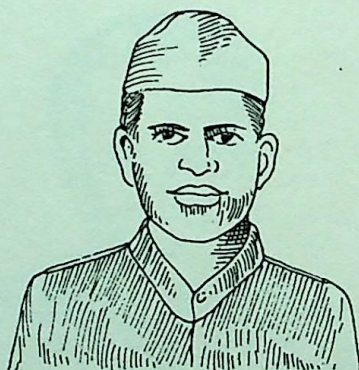
अंडर ऑफीसर श्यामसुंदर भट्ट
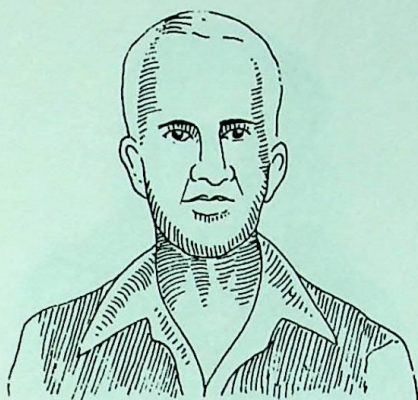
मुन्ने

अब्दुल वहीद

गणेश बहादुर थापा

अवतारसिंह
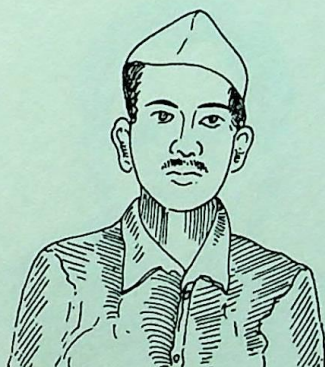
लालता प्रसाद

रामसिंह रावत
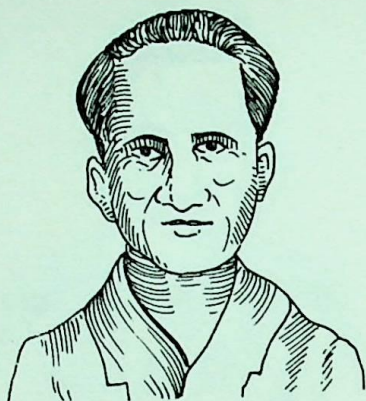
रामशरन गुरुंग

अब्दुल हकीम
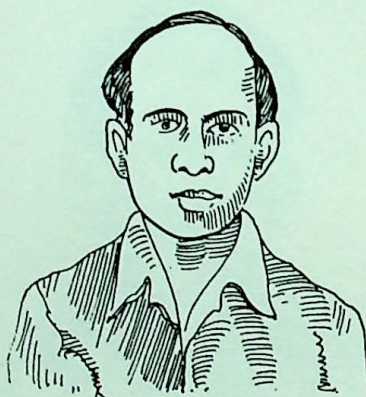
प्रेमसिंह

अयोध्या प्रसाद
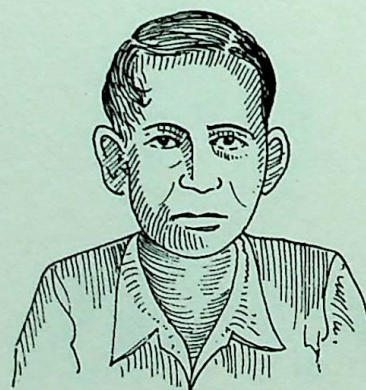
नरबहादुर थापा

डी. जॉन

चंद्रभाल त्रिपाठी

गुलाबसिंह
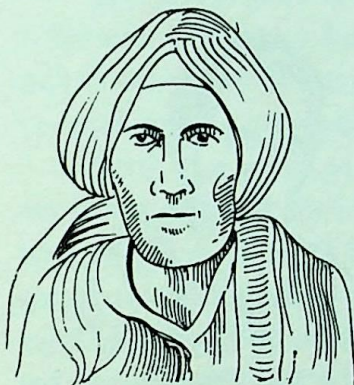
फेंकूसिंह

हरबंसलाल गुलाटी

प्रेमसिंह
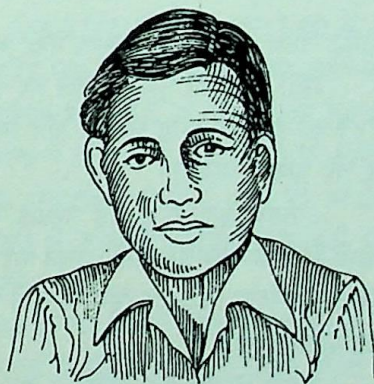
थापा

तुलासिंह नेकराम
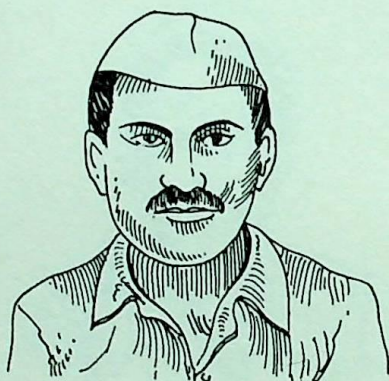
नानिक राम जगदीशसिंह भल्ला

रेजीमेंट' रखा गया। उन्होंने 'बाल सेना' का निर्माण भी किया।

सारी तैयारियाँ पूर्ण हो जाने पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने २४ अक्तूबर, १९४३ की रात्रि के बारह बजकर पाँच मिनट पर इंग्लैंड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

आजाद हिंद फौज बड़े उत्साह के साथ युद्धभूमि में पहुँचने लगी और अंग्रेजी सेना को पछाड़ने लगी। उसने कई मोरचों पर विजय प्राप्त करके संसार को चकित कर दिया। आजाद हिंद फौज ने कोहिमा और मणिपुर में भारतीय तिरंगा झंडा फहरा दिया।

सबसे भयंकर और निर्णायक युद्ध इंफाल के मोरचे पर हुआ। समय से पूर्व मानसून फट पड़ने के कारण भयंकर वर्षा हुई और उफनती हुई नदियों में आजाद

हिंद सैनिक तिनकों की तरह बहने लगे। रसद न पहुँचने के कारण सैनिकगण भूखों मरने लगे। पेड़ों की पत्तियाँ तक खाने को वे लोग मजबूर हुए और व्यापक रूप से हैजा एवं पेचिश की बीमारियाँ हो गईं। कई लोग दलदल में फँसकर मर गए। भयंकर तबाही हुई। इंफाल के मोरचे पर आजाद हिंद फौज के दस हजार सैनिक और अफसर मारे गए।

इंफाल के मोरचे से ही युद्ध का पासा पलट गया। अंग्रेजी फौज विजय की ओर अग्रसर होने लगी। वह स्थिति भी आई कि रूस जापान पर आक्रमण कर बैठा। अमेरिकन फौज ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर अणु बम गिराकर सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर दिया। जापान को पराजय स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा। इंग्लैंड, अमेरिका और रूस का पक्ष विजयी हुआ। जापानी सैनिकों और आजाद हिंद फौज के लोगों की गिरफ्तारियाँ होने लगीं।

अपने विश्वस्त साथियों के परामर्श और आग्रह के अनुसार नेताजी ने भारत के लिए नए आधार की खोज के लिए एक जापानी लड़ाकू विमान द्वारा किसी अज्ञात स्थान की यात्रा की। एक दिन संसार को यह दुःखद समाचार सुनने को मिला कि १८ अगस्त, १९४५ को विमान दुर्घटना में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु हो गई।

नेताजी सुभाष का जन्म २३ जनवरी, १८९७ को वर्तमान उड़ीसा के कटक नगर में हुआ था। उन्होंने जीवन-भर भारत की आजादी के लिए अथक और कठिन संघर्ष किया। यह ठीक है कि द्वितीय विश्वयुद्ध अंग्रेजों के पक्ष में समाप्त हुआ; पर नेताजी के प्रयत्नों ने अंग्रेजों को एक प्रकार से तोड़कर रख दिया। नेताजी द्वारा जाग्रत की गई राष्ट्रीय चेतना आजादी प्राप्ति की दिशा में बहुत काम आई। एक ओर उन्होंने भारतीयों के मनोबल को बढ़ाया और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार की नींव को हिलाकर रख दिया। उन्होंने अपने प्रबल प्रचार से ब्रिटिश सरकार का नकाब उलटकर रख दिया। आजाद हिंद फौज पर लाल किले में जो फौजी मुकदमा चलाया गया, उसने भारतीय सेना के तीनों अंगों में बगावत फैला दी। १९४६ का नौसैनिक विद्रोह तो आजाद हिंद वीरों पर चलाए गए मुकदमे की चेतना के कारण हुआ था। उस विद्रोह ने अंग्रेजों को यह सोचने पर विवश कर दिया कि अब भारत में शासन करना असंभव है। वे लोग भारत को आजादी देने पर मजबूर हो गए। इंग्लैंड की संसद् में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री मि. एटली ने धड़ल्ले के साथ स्वीकार किया—

'हम लोगों ने भारत को स्वाधीनता देने का निर्णय इस कारण लिया है कि भारतीय फौजें अब हमारे प्रति वफादार नहीं हैं और हम लोग भारतीय फौजों के बिना भारत पर शासन नहीं कर सकते।'

भारतीय फौज के तीनों अंगों को बागी बनाने का काम उस मुकदमे ने किया, जो आजाद हिंद वीरों पर चलाया गया था। इस तथ्य को एक अंग्रेज इतिहासकार मि. मुसले ने इस प्रकार स्वीकार किया है—

'जिन दिनों हम लोग भारत को आजादी देने का निर्णय ले रहे थे, सुभाषचंद्र बोस का भूत हमारे दिमागों पर छाया हुआ था।'

हम सब लोगों का कर्तव्य है कि हम लोग नेताजी द्वारा किए गए आजादी के प्रयत्नों का सही मूल्यांकन करें और उनके प्रति कृतज्ञ रहकर अपने देश की आजादी को अक्षुण्ण रखने का संकल्प करें।

□

★ सुरेश केरकर
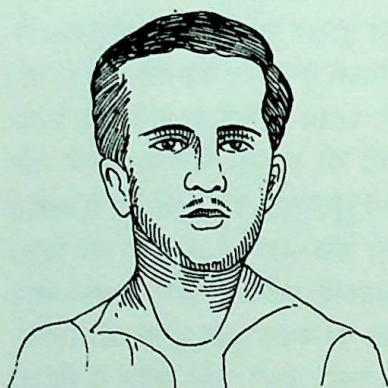
सुरेश केरकर

सुरेश केरकर क्रांतिकारियों की गुप्त संस्था गोमांतक दल का सक्रिय सदस्य तो था ही, साथ ही वह एक अच्छा संगठक और प्रभावशाली वक्ता भी था। वह अपनी बात कुछ इस ढंग से रखता था कि सामनेवाले को उसे स्वीकार करना ही पड़ता था। वह लोगों को देशभक्ति की गहरी प्रेरणा देता रहता था।

सुरेश केरकर और उसके साथियों ने यह योजना बना डाली कि पोंपा स्थित पुर्तगाली फौज को पानी देनेवाली पाइप लाइन को डायनामाइट से उड़ा दिया जाए। १७ फरवरी, १९५७ को इस कार्य के लिए शीघ्र ही वह अपने चुने हुए साथियों को लेकर चल पड़ा। पुर्तगाली रक्षक दल द्वारा वह देख लिया गया। रक्षक दल द्वारा की गई गोलीबारी के परिणामस्वरूप अपने कुछ साथियों के साथ वह मारा गया।

सुरेश केरकर का जन्म गोवा के 'केरी' ग्राम में सन् १९२९ में हुआ था। उसके पिता का नाम श्री अमृत भीमा था।

□

★ कैप्टेन सूरजमल्ल
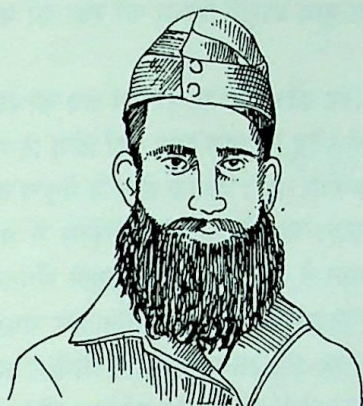
कैप्टेन सूरजमल्ल

आँधी और तूफान की गति से बढ़ती हुई आजाद हिंद फौज भारत की सीमा में पहुँच गई। सभी सैनिक पागलों की भाँति भारतभूमि में दौड़ पड़े। बच्चों की भाँति वे अपनी मातृभूमि की मिट्टी में लोटने लगे और मिट्टी उछाल-उछालकर वे उसे अपने मस्तकों पर झेलने लगे। अपनी मुट्ठियों में मातृभूमि की धूल भरकर एक-दूसरे के माथे पर वे उसे अबीर-गुलाल और चंदन की भाँति लगाने लगे।

एक सैनिक ने आगे बढ़कर जंगली घास में खिला हुआ एक फूल तोड़ लिया और चिल्ला उठा—"मेरे देश का फूल!" अन्य सैनिकों ने भी घास के फूल चुन लिये। उन्होंने एक ऊँचे टीले पर नेताजी का चित्र रखा और उसपर वे फूल चढ़ाने लगे। बेतार के तार द्वारा नेताजी को समाचार दे दिया गया कि आजाद हिंद फौज मातृभूमि पर पहुँच गई है।

भारत की सीमा में सबसे निकट की चौकी मोडक चौकी थी। आजाद हिंद फौज ने झपटकर उस चौकी पर आक्रमण किया और काफी खून-खराबे के बाद उसपर अधिकार कर लिया।

मोडक के आसपास कई चौकियाँ स्थापित करके आजाद हिंद फौज ने उस क्षेत्र की रक्षा का काम अपने हाथों में ले लिया। अंग्रेजी सेना ने भी अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे वापस लेने का प्रयत्न किया; लेकिन वे उसे वापस नहीं ले सके। अंग्रेजी सेना ने बार-बार जोरदार हमले प्रारंभ कर दिए। जापानी सेना उन हमलों से विचलित हो गई। उसने वह क्षेत्र छोड़ने का निश्चय कर लिया। अपने निश्चय की सूचना उसने आजाद हिंद फौज को भी दे दी और उसे परामर्श दिया कि वह भी उस क्षेत्र को खाली करके अन्यत्र चली जाए।

उस क्षेत्र में आजाद हिंद फौज के कमांडर मेजर पी.एस. रतूरी ने अपने सहयोगियों से परामर्श किया। सभी ने एक स्वर से कहा, नेताजी का आदेश है कि हम लोगों को पीछे नहीं हटना चाहिए और हर कीमत पर इस क्षेत्र की रक्षा

करनी चाहिए।

नई व्यवस्था के अनुसार, वहाँ फहराए गए राष्ट्रीय झंडे की रक्षा के लिए कैप्टेन सूरजमल्ल के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज की एक कंपनी मोडक क्षेत्र में छोड़ दी गई और मेजर रतूरी ने शेष सेना के साथ आपूर्ति शिविर की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया।

जब जापानियों ने देखा कि आजाद हिंद फौज वहीं रहकर उस क्षेत्र की रक्षा के लिए कृतसंकल्प है, तो उन्होंने भी अपनी फौज का कुछ भाग वहाँ छोड़ दिया। उन्होंने वहाँ केवल अपनी सेना ही छोड़ी, अफसर नहीं। जापानी सेना के नेतृत्व का दायित्व भी कैप्टेन सूरजमल्ल को दिया गया। जापानी सेना के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब किसी विदेशी अफसर ने उनकी सेना की कमान सँभाली हो। आजाद हिंद फौज की ओर से कैप्टेन सूरजमल्ल को जापानी सेना की कमान सँभालने का सौभाग्य मिला। कैप्टेन सूरजमल्ल और उनके बहादुर साथियों ने मई से सितंबर १९४४ तक अपनी जान पर खेलकर संपूर्ण मोडक क्षेत्र की रक्षा की। इस बीच अंग्रेजी सेना ने उनपर कई बार भयंकर आक्रमण किए; पर हर बार उसे मुँह की खानी पड़ी।

□

★ हजारासिंह

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् आजाद हिंद फौज के जो लोग बर्मा और अन्य मोरचों से गिरफ्तार करके भारत लाए गए थे, उनमें हवलदार हजारासिंह भी एक थे। वे बहुत हौसले के आदमी थे और कहा करते थे कि देश के लिए मरने में जो मजा है, वह अपने लिए जीने में नहीं है।

आजाद हिंद फौज के जिन अफसरों पर दिल्ली के लाल किले में मुकदमा चला, उनमें हजारासिंह एक थे। इस मुकदमे में उन्हें कोई रुचि नहीं थी और उनका कथन था कि यह सब नाटक है, परिणाम तो पहले ही तय किया जा चुका है। यही कारण है कि हजारासिंह ने अपने बचाव के लिए दिलचस्पी नहीं दिखाई और सम्राट् के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के अभियोग में २५ अक्तूबर, १९४४ को उन्हें फाँसी के फंदे पर झुला दिया गया।

□

★ हरिशंकर शर्मा

वह एक तेजवंत क्रांतिकारी था। उसका नाम था हरिशंकर शर्मा। उसकी उम्र पच्चीस वर्ष के लगभग रही होगी। उसका बदन छरहरा, रंग गोरा और चेहरा सुडौल था। उसके उन्नत ललाट, चौड़ी और लंबी नाक, बड़े-बड़े कान तथा चमकीली आँखों ने उसके व्यक्तित्व को भव्यता प्रदान की थी। वह आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी युवक था। अन्याय सहन करना उसके स्वभाव में कहीं नहीं था। यही कारण था कि उसने आगरा के हिंदुस्तानी डिप्टी कलेक्टर को प्राणदंड देने का निश्चय कर लिया और बोतल में बनाया हुआ अपना ही बम लेकर जालिम डिप्टी कलेक्टर को उसका शिकार बनाने के लिए चल दिया।

हरिशंकर शर्मा

हरिशंकर का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सासनी तहसील के ग्राम 'छोड़ा' में हुआ था। पिता का नाम पं. शालिग्राम और माता का नाम त्रिवेनी देवी था। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसकी माता श्रीमती त्रिवेनी देवी ने ही उसके पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। वे अपने एक रिश्तेदार पं. पूरनमल का सहारा पाकर फिरोजाबाद के निकट ग्राम 'हुमायूँ पुर' में पहुँच गई थीं। फिरोजाबाद के एस.आर.सी.बी. हाई स्कूल में बालक हरिशंकर की शिक्षा का प्रबंध किया गया।

घर की परिस्थितियों के कारण हरिशंकर उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका। फिरोजाबाद के डॉ. प्यारेलाल गहलोत के दवाखाने में वह कंपाउंडरी का काम करने लगा। उसकी शादी हो गई थी और अपनी माता एवं पत्नी का दायित्व भी उसी पर था। वह गृहस्थी की गाड़ी चला ही रहा था, पर उसका झुकाव राजनीति की ओर था और भारत के क्रांतिकारियों के प्रति उसकी गहरी दिलचस्पी थी। उन दिनों सन् १९३० में कांग्रेस का आंदोलन पूरे जोर पर था और उसी प्रकार उसका दमन भी किया जा रहा था।

हरिशंकर शर्मा की आँखों में आगरा जिले का हिंदुस्तानी डिप्टी कलेक्टर बहुत खटक रहा था, जो आंदोलनकारियों का दमन करने के लिए कुख्यात था। उसे मालूम पड़ गया कि वह डिप्टी कलेक्टर आगरा से फिरोजाबाद पहुँच रहा है।

हरिशंकर शर्मा ने बम बनाना सीख लिया था। उसने बोतल के अंदर एक बम तैयार किया और उसे अपने कपड़ों में छिपाकर एक ऐसे स्थान पर छिप गया, जिधर से वह डिप्टी कलेक्टर निकलने वाला था। दुर्भाग्य से वह बम पहले ही फट गया और स्वयं हरिशंकर शर्मा लहूलुहान होकर भूमि पर पड़ा रहा। उसकी पहचान के एक सज्जन श्री राधारमण ने उसे अस्पताल पहुँचाया; पर वह बचाया नहीं जा सका। एक सुकुमार क्रांतिकारी अपना मौन बलिदान दे गया।

□

★ अन्य क्रांतिकारी

★ अमीरचंद बंबाल

अमीरचंद बंबाल सरहद के क्रांतिकारी थे। वे ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में भी लिप्त रहते थे और जो भारतीय क्रांतिकारी सरहद पार जाना चाहते थे, उनकी सहायता भी करते थे। उन्हें आजीवन कारावास का दंड मिला था।

अमीरचंद बंबाल

★ गणेशीलाल खस्ता

अमर शहीद गणेशीलाल खस्ता बडे जीवट के क्रांतिकारी थे। उन्हें 'बनारस षड्यंत्र केस' के अंतर्गत कारावास का दंड मिला। जेल की यातनाओं के कारण जेल में ही उनकी मृत्यु हुई।

गणेशीलाल खस्ता
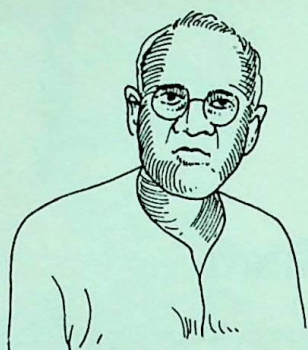
★ बाबा नरसिंह दास

बाबा नरसिंह दास

राजस्थान के महान् क्रांतिकारी बाबा नरसिंह दास एक विद्यालय खोलकर नौजवानों को क्रांति की प्रेरणा देते थे। वे अपने यहाँ क्रांतिकारियों को प्रश्रय भी देते थे।
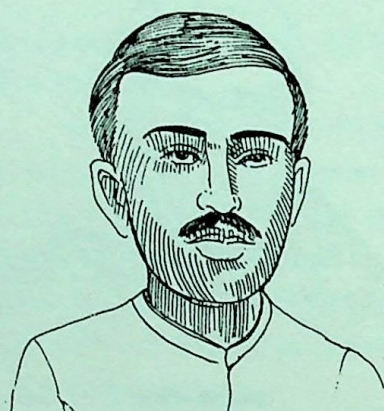
★ नैनूराम शर्मा

ननूराम शर्मा

अमर शहीद नैनूराम शर्मा का जन्म २४ फरवरी, १८९२ को वर्तमान मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के 'भैंसोदा' ग्राम में हुआ था। कोटा रियासत में पुलिस विभाग में सब-इंस्पेक्टर पद पर कार्य करके नौकरी छोड़ दी और राज्य के निरंकुश शासन के विरोध में आंदोलन छेड़ दिया। कोटा और बूँदी में अच्छा संगठन तैयार कर डाला। चार वर्ष कोटा की जेल में कठोर कारावास का दंड भी भोगा। मुक्त होने पर सन् १९२७ में राज्य के अधिकारियों की प्रेरणा से किसीने गोली मारकर नैनूराम शर्मा की जीवन लीला समाप्त कर दी।

★ ब्रह्मबांधव उपाध्याय

एक प्रकांड विद्वान् जिसका हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और फारसी भाषाओं पर असाधारण अधिकार था। पहले अध्यापक रहे। गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर को 'शांति निकेतन' की स्थापना में सहयोग दिया। भारतीय दर्शनशास्त्र पर इंग्लैंड में कई भाषण दिए।

बाद के दिनों में कई पत्रों का संपादन किया और अंग्रेजों के विरुद्ध उत्तेजक लेख लिखे। ३ सितंबर, १९०७ को गिरफ्तार हुए और अदालत में अपनी सारी
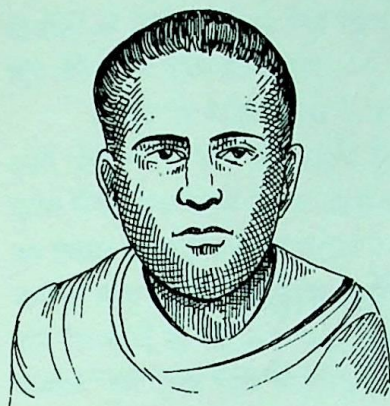
ब्रह्मबांधव उपाध्याय

जिम्मेदारी स्वीकार कर ली। मुकदमा चल ही रहा था कि बीमारी के कारण २७ अक्तूबर, १९०७ को देहावसान हो गया।

श्री उपाध्याय का जन्म ११ फरवरी, १८६१ को कलकत्ता के निकट 'खन्नन' में हुआ था।

★ महेंद्रनाथ डे

महेंद्रनाथ डे

सिलचर के जगतसी आश्रम में महेंद्रनाथ डे 'स्वामी योगानंद' के नाम से रहता था। वह एम.ए., बी.एस-सी. था। पुलिस अफसर गोरडन को यह शिकायत मिली कि आश्रम क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र है। पुलिस ने आक्रमण किया और गोलियाँ चलाईं। महेंद्रनाथ डे को गोलियाँ लगीं और कुछ दिन बाद १६ जुलाई, १९१२ को उसका देहावसान हो गया।

★ हेमचंद्र बसु

बंगाल का प्रसिद्ध क्रांतिकारी हेमचंद्र बसु, जिसकी कई मामलों में पुलिस को तलाश थी।

□

हेमचंद्र बसु

○ अग्नि समर्पित शहीद

वारंगल जिले के 'छोटापल्ली' ग्राम पर हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों ने इसलिए आक्रमण कर दिया, क्योंकि इस गाँव के लोग भी उस आंदोलन में सम्मिलित थे, जो यह माँग कर रहा था कि हैदराबाद रियासत को केंद्रीय संघ में सम्मिलित कर दिया जाए। गाँववालों ने आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया। यह घटना १५ मार्च, १९४८ की है। इस मुकाबले में दोनों पक्षों के लोग मारे गए। रजाकारों ने घरों में आग लगा दी और उस आग में जीवित लोगों को भी उठा-उठाकर फेंक दिया गया। इस कांड में ग्रामीणों की ओर से जो शहीद हुए, वे थे—

वीरैया बट्टूला, गौंपैया भीमामुनि, नरसैया गड्डम, कोंडैया कोसू, रंगैया, वीरैया कनकनापू, वीरैया महापल्ली, यकैया (प्र.), वीरैया चिल्ला, नरसैया डग्गू, मल्लैया गोल्ला, नरसैया, यकैया (द्वि.), कनटैया कसटाला, भूलोक राव पानूगोटी।

□

○ इंफाल मोरचे पर भारी सर्वनाश

जापानी सेना और आजाद हिंद फौज, दोनों ने ही इंफाल के घेरे पर अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। इस सबके बावजूद भी इन्हें इंफाल पर अधिकार करने में सफलता नहीं मिली। इंफाल का घेरा बहुत दिनों तक चला और इस मोरचे पर अत्यंत भयंकर युद्ध लड़ा गया, जिसमें दोनों पक्षों के लाखों सैनिक काम आए; पर विजयश्री अंग्रेजों के हाथ लगी।

एक समय तो ऐसा आ गया था, जब यह लगने लगा था कि कुछ घंटों के अंदर ही इंफाल अंग्रेजों के हाथों से चला जाएगा, पर वह जाते-जाते बच गया। आजाद हिंद फौज लड़ते-लड़ते उस स्थान पर पहुँच गई थी, जहाँ से इंफाल केवल

दो मील के फासले पर रह गया था; पर वहीं से भाग्य ने पलटा खाया और आजाद हिंद फौज को पीछे हटना पड़ा।

इंफाल पर अंग्रेजी सेना ने अपना चक्रव्यूह इस प्रकार रचा था कि सबसे आगे गोल घेरे में चारों ओर उसके टैंक तथा लड़ाकू गाड़ियाँ थीं और उनके पीछे पैदल सेना। एक समय तो वह आ गया था, जब अंग्रेजी फौज के कमांडरों ने फौज को इंफाल खाली करने के आदेश दे दिए थे, पर इंफाल-कोहिमा रोड काट दिए जाने के कारण अंग्रेजी फौज को भागने के लिए रास्ता नहीं मिला और विवश होकर उसे इंफाल में ही बंद रहना पड़ा। उनकी यह विवशता और सड़क काट देने की जापानी भूल उनके लिए वरदान बन गई। मई मास में ही मानसून फट पड़ा और भयंकर वर्षा प्रारंभ हो गई, जिससे चिंदविन नदी और अन्य नदी-नाले भी मर्यादा छोड़ बैठे। यहीं से जापानी सेना और आजाद हिंद फौज की बरबादी प्रारंभ हो गई। नदी-नालों में सैनिकों की लाशें तैरने लगीं। पूरे क्षेत्र में पानी-ही-पानी या दलदल-ही-दलदल दिखाई देता था। हजारों सैनिक पानी में बह गए; हजारों भूखों मर गए और हजारों खूनी पेचिश, मलेरिया तथा हैजा के शिकार होकर मर गए। इंफाल से बर्मा तक का सारा रास्ता जापानी सैनिकों तथा आजाद हिंद सैनिकों की लाशों से पट गया।

इंफाल युद्ध में आजाद हिंद पक्ष से दस हजार और जापान पक्ष से दो लाख जानें गईं।

आजाद हिंद फौज के जो लोग अप्रतिम वीरता दिखाकर शहीद हुए, उनमें से जितने नाम ज्ञात हो सके, वे हैं—

१. सिपाही अब्दुल रज्जाक,	२. लांसनायक अली मोहम्मद,
३. सिपाही अमीनलाल,	४. सिपाही बग्गाराम,
५. सिपाही बलदेव,	६. सिपाही वेगसिंह,
७. से.ले. भूपालसिंह,	८. सिपाही विजयसिंह,
९. सिपाही बूटासिंह,	१०. हवलदार चाननसिंह,
११. सिपाही चत्तरसिंह,	१२. ले. चेरियन,
१३. सिपाही छीबसिंह,	१४. सिपाही दलीपसिंह,
१५. हवलदार देवीसिंह,	१६. सिपाही गंगासिंह,
१७. ले. गुलाम मोहम्मद,	१८. सिपाही हाकिमसिंह,
१९. सिपाही हंसराम,	२०. सिपाही हरीराम,
२१. सिपाही हरीसिंह,	२२. नायक हरकराम,
२३. सिपाही हजूरासिंह,	२४. सिपाही जयचंद्र,

२५. सिपाही जीवनसिंह,
२६. सिपाही कालासिंह,
२७. सिपाही लालसिंह,
२८. सिपाही लेखराम,
२९. से.ले. अशर्फी,
३०. हवलदार माँगेराम,
३१. हवलदार मोहनसिंह,
३२. लांसनायक नारायणसिंह,
३३. लांसनायक नसीबसिंह,
३४. ले. नूरमोहम्मद,
३५. लांसनायक पूरनसिंह,
३६. सिपाही रामस्वरूप,
३७. सिपाही रामसुंदरसिंह,
३८. नायक रणवीरसिंह,
३९. सिपाही रणजीतसिंह,
४०. ले. रतीराम,
४१. सिपाही रिसालसिंह,
४२. ले. शमशेरसिंह मावी,
४३. लांसनायक सूबेसिंह,
४४. सिपाही सूरतसिंह।

□

○ कोलूकोंडा हत्याकांड

वारंगल जिले के 'कोलूकोंडा' गाँव के लोग हैदराबाद रियासत के उस आंदोलन में हौसले के साथ सम्मिलित थे, जो हैदराबाद रियासत को केंद्र में मिलाने के लिए चल रहा था। रजाकारों और निजाम की पुलिस के संयुक्त दल ने गाँव के लोगों द्वारा निकाले गए जुलूस पर फरवरी १९४८ में आक्रमण कर दिया और अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। पचास व्यक्ति घायल हुए और तेरह व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारे गए। मरनेवालों में थे—

ब्रह्मैया कम्मारी, पाद्दैया कम्मारी, लक्ष्मण कमशेट्टी, भीमराव कोली, वीरैया कोटी, यादगिरी कौंडुगम, आकैया मंगला, वीरमल्लू मंगाली, नरसैया पोगाकू, गोपाल यामागरी, नरसैया कोका, पथसाची बासमपल्ली और सतैया बनजारू।

□

○ धनोरे हत्याकांड

हैदराबाद पुलिस और रजाकारों ने मिलकर नांदेड़ जिले के 'धनोरे' गाँव पर आक्रमण कर दिया। ग्रामीणों का अपराध यही था कि वे इस बात के लिए आंदोलन चला रहे थे कि हैदराबाद रियासत को संघीय शासन में सम्मिलित किया जाए।

उनपर ११ अप्रैल, १९४८ को आक्रमण हुआ। पहले घरों को लूटा गया और फिर उनमें आग लगा दी गई। जो भी दिखा, उसे गोली मार दी गई। इस हत्याकांड में शहीद होनेवाले थे—

शंकर धनोरकर, माधवराव पांडे, भीमराव मितकारी, कोंडिबा पाटिल, देवीदास पांडे, भुजंग वानखेड़े, किशनराव पांडे, नामदेव वानखेड़े।

□

○ तम्मदपल्ली हत्याकांड

वारंगल जिले के 'तम्मदपल्ली' गाँव के लोग भी उस आंदोलन से अछूते कैसे रह सकते थे, जो हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाने के लिए चलाया जा रहा था। लोग निजाम के शासनकाल में इतने त्रस्त थे कि वे अपना उद्धार स्वाधीन भारत के साथ मिलने में ही देख रहे थे। निजाम भी इस आंदोलन को कुचलने के लिए कृतसंकल्प था। उसकी पुलिस और रजाकार लोगों को पूरी छूट थी कि वे आंदोलनकारियों पर आक्रमण करें और उन्हें मौत के घाट उतारें।

तम्मदपल्ली गाँव के लोगों पर भी रजाकारों ने १४ अप्रैल, १९४८ को आक्रमण किया और कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया। मरनेवालों में से कुछ थे—

अनंत रेड्डी, परमैया दिद्दी, मल्लैया देंतूरी।

□

○ नारायनगुडा हत्याकांड

नलगोंडा जिले के 'नारायनगुडा' गाँव के लोगों को १९ अप्रैल, १९४८ को हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों ने संयुक्त रूप से घेर लिया और उनपर गोलियाँ चलाईं। आंदोलन में सम्मिलित होने के लिए उन्हें यह दंड दिया था। जो लोग मारे गए, उनमें से कुछ थे—

वैंकैया गुर्राम, पापैया मंडादी, लक्ष्मैया राचा, रंगैया केसीदी, पुल्लैया मंडादी, वोकैया तिरूवाला।

□

○ निरंतर हत्याकांड

निजाम हैदराबाद का यह विश्वास था कि उसकी रियासत को स्वाधीन भारत के साथ विलय करने के लिए जो आंदोलन चलाया जा रहा है, वह लोगों पर जुर्माना करके, उनकी संपत्ति लूटकर और उनकी निर्मम हत्याएँ करके दबा दिया जाएगा। उधर निरंतर अत्याचार सहने के कारण लोगों के दिलों में स्वाधीनता की आकांक्षा बलवती हो गई थी और वे प्राण दे रहे थे; लेकिन आंदोलन से पीछे हटने का नाम नहीं ले रहे थे।

निजाम हैदराबाद के सैनिक और रजाकार गाँव-गाँव में पहुँचकर लोगों की निर्मम हत्याएँ कर रहे थे। जिन लोगों ने निरंतर होनेवाली इन हत्याओं में अपने प्राण दिए, उनमें से कुछ के नाम हैं—

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१. आबाराव गनपतराव	वदगाँदराकी,उसमानाबाद	१९४८
२. रामैया अंबोजू	निम्मीकल्लू,नलगोंडा	१६ अग., १९४८
३. अंतैया अदिराला	थाटीकल्लू,नलगोंडा	१९४८
४. हनुमंत अग्रे	तोंचीर, उसमानाबाद	१९४८
५. जिंदस अलंदकर	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
६. किस्तैया अंबाती	कोन्यागुडेम, नलगोंडा	१९४८
७. गोपैया अंबेदू	कोन्यागुडेम, नलगोंडा	१६ मार्च, १९४८
८. श्रीमती नागम्माबाई	उदगीर, उसमानाबाद	१९४८
९. गनपति अमृते	उमारी, नांदेड़	सितं., १९४७
१०. चिन्नारामैया अंदालापुरी	मामीदाला, नलगोंडा	७ फर., १९४८
११. लटचैया अंदालापुरी	मामीदाला, नलगोंडा	नवं., १९४८
१२. श्रीहरि अनुमूला	बल्लाला, नलगोंडा	१९४८
१३. अनंत आराध्ये	देशपांडेगुल्ली, उसमानाबाद	२२ मार्च, १९४८
१४. भूमैया आर्ये	कुट्टीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
१५. मिसैया आर्ये	कुट्टीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
१६. नागैया अरूगोंडा	बहरनपल्ली, वारंगल	२५ अग., १९४८
१७. कृष्णैया अरूती	कोन्यागुडेम, नलगोंडा	१६ मार्च, १९४८
१८. महंतैयाजी बलवीर आर्य	दोनगाँव, उसमानाबाद	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१९. चिन्नोरी किस्तैया वचूपल्ली	मंगलापल्ली, नलगोंडा	१९४८
२०. परसुरामैया वचूपल्ली	मंगलापल्ली, नलगोंडा	१९४८
२१. दगाड़ू बालंदे	फर्दपुर, औरंगाबाद	१२ सितं., १९४८
२२. संदु बालंदे	फर्दपुर, औरंगाबाद	१४ सितं., १९४८
२३. यादव बालंदे	फर्दपुर, औरंगाबाद	१९४८
२४. बालैया	पमूकुंता, नलगोंडा	१९ मार्च, १९४८
२५. नागप्पा बालीजाबुदला	ईजा, महबूबनगर	१२ दिसं., १९४७
२६. यादगिरि बंदा	वदलाकोंडा, वारंगल	१२ फर., १९४८
२७. चंद्रैया बाँदी	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
२८. रामभाऊ बाँगर	धनगरवाड़ी, भीर	१९ अप्रैल, १९४८
२९. सीताराम बापूजी	वरूद, औरंगाबाद	१९४८
३०. बसाली नागप्पा	मल्ली, गुलबर्गा	१९४८
३१. श्री रामूलू बठीनी	नलगोंडा, नलगोंडा	१९४८
३२. राजूलू बट्टीनी	तम्मदपल्ली, वारंगल	१४ अप्रैल, १९४८
३३. नरासा राजू बट्टू	गुरथुरू, वारंगल	१३ दिसं., १९४७
३४. पप्पी रेड्डी वीरावोलू	मरूर, नलगोंडा	१९४८
३५. भीमानप्पा बेलामजी	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
३६. आदप्पा बेलकीरी	कोटगल, बीदर	१९४८
३७. माधवूलू बेल्लेमकोंडा	कोलानुपाका, नलगोंडा	१५ सितं., १९४८
३८. महांकाली बेष्ठा	वारंगल, वारंगल	१९४८
३९. गनपत भगवान	बोरी, परभनी	१९४८
४०. चिन्नामल्लैया भैराबोइना	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
४१. श्रीमती भामिनी	मुद्दूनूर, खम्मम	१९४८
४२. काशीनाथ मंगाडे	देवलाली, भीर	१९४८
४३. श्रीमती लक्ष्मीबाई भायेकर	नांदेड़, नांदेड़	१९४१
४४. शेषैया भीमा	फुट्टाकोटा, महबूबनगर	१९४८
४५. भीमराव	बेंकल, रायचूर	१४ अप्रैल, १९४८
४६. रामा भुसाले	किल्लारी, उसमानाबाद	१९४८
४७. भूमी रेड्डी	करीमनगर, करीमनगर	१९४८
४८. मोतीलाल भूरावत	बर्शी, शोलापुर	२२ मई, १९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
४९. मन्मथ बिदवे	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
५०. लक्ष्मण बिंबालगे	कोटगल, बीदर	१९४८
५१. वैंकैया बिनगी	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
५२. डॉ. चिन्नप्पा बीरादर	तुगाँव, बीदर	१९४८
५३. गोपालराव बीरादर	कोटगल, बीदर	१९४८
५४. विश्वनाथ बिसे	मिदसिंगे, उसमानाबाद	१९४८
५५. संबैया बोदेपल्ली	अन्नारम, नलगोंडा	१९४८
५६. बलरामूलू बोइल्ला	पत्रलाफढ़, नलगोंडा	२८ अग., १९४८
५७. वींरैया बुज्जा	ममीदाला, नलगोंडा	७ फर., १९४८
५८. नारायण बुल्लेपल्ली	परकाकोंडम, नलगोंडा	१९४८
५९. विट्ठल बोंदर	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
६०. व्यंकारी बोंदर	धनोरे, उसमानाबाद	१९४८
६१. भोजन्ना बोंतलदार	किनी, नांदेड़	११ मई, १९४८
६२. बाबूराव बोरगाँवकर	बोरगाँव, उसमानाबाद	२२ फर., १९४८
६३. वींरैया बोर्रा	गुरथुरू, वारंगल	१३ दिसं., १९४८
६४. चंद्रैया बोया	पंथगनी, नलगोंडा	१९ जुलाई, १९४८
६५. रामा बोया	पंथगनी, नलगोंडा	१९४८
६६. रामास्वामी बोया	पंथगनी, नलगोंडा	१९४८
६७. वेंकट रेड्डी बोया	नंदीकोंडा, नलगोंडा	५ फर., १९४८
६८. नरसैया बोमानी	हसनाबाद, खम्मम	२६ नवं., १९४७
६९. रामन्ना बोये	पंथांगी, नलगोंडा	१९ जुलाई, १९४८
७०. वैंकैया बुद्दा	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
७१. दाजी बुधावत	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
७२. बलराम रेड्डी	करीमनगर, करीमनगर	जन., १९४८
७३. वैंकैया चाडा	मदगुलपल्ली, नलगोंडा	१९४८
७४. नरसैया चडालू	तम्मदपल्ली, वारंगल	१४ अप्रैल, १९४८
७५. कनकैया चकाला	गोदीहल, करीमनगर	१९४८
७६. बालैया चलागोनी	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
७७. तुकाराम चमावद	तिरूका, उसमानाबाद	१९४७
७८. येलैया चांडूपटला	बुल्लेपल्ली, नलगोंडा	१९४७

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
७९. सरप्पा चापा	लिंगलपल्ली, खम्मम	३ मार्च, १९४७
८०. नरसिंह चव्हाण	तिरूका, उसमानाबाद	१९४७
८१. मीनैया चेदीपल्ली	परादा, नलगोंडा	१९४८
८२. रामास्वामी चीकाटला	कोलूकोंडा, वारंगल	फर., १९४८
८३. बक्का रेड्डी चीलम	सोमाराम, नलगोंडा	५ जन., १९४८
८४. दशरथ रामूलू	नेमीकल्लू, नलगोंडा	अग., १९४८
८५. सोमैया चेट्टीपान्नी	कड़ापारथी, नलगोंडा	अग., १९४८
८६. नरसैया चिगुरपुताई	मारीपाडा, वारंगल	१६ दिसं., १९४७
८७. लटचैया चोमीराला	मारीपाडा, वारंगल	१६ दिसं., १९४७
८८. काशीराम चिंचावाले	माहौरा, औरंगाबाद	जून, १९४८
८९. किशन चिंचावाले	माहौरा, औरंगाबाद	जून, १९४८
९०. माला रेड्डी चिंताकुंतला	पामूकुंटा, नलगोंडा	१९ मार्च, १९४८
९१. श्रीरंगम चीतीप्रोलू	बेल्लाल, नलगोंडा	१९४८
९२. येलैया चिन्ना	नागीरेदीपल्ली, नलगोंडा	१९४८
९३. डी. कृष्णैया	प्रदा, नलगोंडा	१९४८
९४. चंद्रैया दइदा	एडूलूर, नलगोंडा	१९४८
९५. चिन्ना कोंडैया दइदा	सीतारामपुरम्, नलगोंडा	१९४८
९६. महारप्पा दलाल	किल्लारी, उसमानाबाद	१९४८
९७. सोमैया दनामू	अरवी, वर्धा	१९४६
९८. श्रीमती येलम्मा दाया	सीतारामपुरम्, नलगोंडा	१९४८
९९. मल्लैया देंतूरी	तम्मदपल्ली, वारंगल	१४ अप्रैल, १९४८
१००. कलाबा देवराव	कौलखेड़, उसमानाबाद	१९४८
१०१. चंद्रैया देवुलापल्ली	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
१०२. लटचैया देवुलापल्ली	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
१०३. नरसैया देवुलापल्ली	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
१०४. गुणवंत धागे	बलूर, बीदर	१९४८
१०५. ज्ञानाबा धागे	बलूर, बीदर	१९४८
१०६. सदाशिव धागे	बलूर, बीदर	१९४८
१०७. रामचंद धंदे	कंधार, नांदेड़	मई, १९४८
१०८. माधव धनगर	हलगारा, उसमानाबाद	१९४८

क्र.	शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१०९.	मल्लहरी धनगर	मालकराजा, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
११०.	मथना धनगर	बालूर, बीदर	१९४८
१११.	पांडुरंग धनगर	गौर, उसमानाबाद	नवं, १९४८
११२.	रामबाबू धनगर	गौर, उसमानाबाद	नवं, १९४८
११३.	श्रीमती श्यामाबाई धनगर	नंदगाँव, उसमानाबाद	२१ मई, १९४८
११४.	शंकर धनोरकर	धनोरे, नांदेड़	११ अप्रैल, १९४८
११५.	येलैया धीकोंडा	पतरलापहद, नलगोंडा	२८ अग., १९४८
११६.	वीरा रेड्डी दूदीपाला	कपारायपल्ली, नलगोंडा	१० मार्च, १९४८
११७.	चिन्ना वीरैया डोरेपल्ली	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
११८.	मिसैया दुब्बा	बल्लाल, नलगोंडा	१९४८
११९.	नरसिंहम् इरागोरला	सज्जापुरम्, नलगोंडा	१९४८
१२०.	सईदैया इरागोरला	सज्जापुरम्, नलगोंडा	१९४८
१२१.	चिन्नू इरालावद	किनी, नांदेड़	११ मई, १९४८
१२२.	नरसैया गद्दाम	छोटापल्ली, वारंगल	१५ मार्च, १९४८
१२३.	लटचैया गद्दापाटी	वल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१२४.	मल्लैया गद्दापाटी	एदूलूर, नलगोंडा	१९४८
१२५.	वैंकैया गद्दापाटी	वल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१२६.	लक्ष्मैया गादे	येरमपल्ली, नलगोंडा	मार्च, १९४८
१२७.	मधुसूदन रेड्डी गादे	ब्राह्मणपल्ली, नलगोंडा	२३ मार्च, १९४८
१२८.	नारायना रेड्डी गादे	ब्राह्मणपल्ली, खम्मम	१२ सितं., १९४८
१२९.	पिटची रेड्डी गादे	ब्राह्मणपल्ली, खम्मम	१२ सितं., १९४८
१३०.	राजू गादे	मरपादगा, नलगोंडा	१९४८
१३१.	मानिक गायकवाड़	कंधार, नांदेड़	सितं., १९४८
१३२.	येलैया गंधमाला	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
१३३.	राजू गंधी	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
१३४.	अनंत रेड्डी गरलपति	बालेमा, नलगोंडा	नवं, १९४६
१३५.	अंथैया गरलपति	बालेमा, नलगोंडा	२५ अक्तू., १९४६
१३६.	विट्ठलराव गौरकर	गौर, उसमानाबाद	१९४८
१३७.	उमाजी गवाली	मनूर, भीर	१९४८
१३८.	रामारेड्डी गव्वा	बालेमा, नलगोंडा	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१३९. पापीरेड्डी चांटा	कपरयापल्ली, नलगोंडा	१९४८
१४०. राघवरेड्डी चांटा	कपरयापल्ली, नलगोंडा	१९४८
१४१. जयसिंह घयावत	वरूद, औरंगाबाद	१८ सितं., १९४८
१४२. नागप्पा गिरिमा	मकथल, महबूबनगर	१९४८
१४३. रामचंद्रू गोल्ला	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
१४४. बालानरसैया गोगू	बोलेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
१४५. मुथैया गोगू	बोलेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
१४६. चिन्ना गोल्ला	रेमीदीचरला, खम्मम	३१ मार्च, १९४८
१४७. लटचैया गोल्ला	नोमुला, नलगोंडा	८ फर., १९४८
१४८. मल्लैया गोल्ला	छोटापल्ली, वारंगल	१५ मार्च, १९४८
१४९. राजामल्लू गोल्ला	मुथारम, करीमनगर	जुलाई, १९४८
१५०. गोपालैया गुल्लाला	कडापारथी, नलगोंडा	१९४८
१५१. गोपैया	गुंडूरामपल्ली, नलगोंडा	१९४८
१५२. येलैया गोरेंतला	पत्रलाफड, नलगोंडा	२८ अग., १९४८
१५३. किसानगीर गोसावी (१)	तोंदचीर, उसमानाबाद	१९४८
१५४. किसानगीर गोसावी (२)	भिरखालवाड़ी, बीदर	१९४८
१५५. मंगलापुरी गोसावी	शेल्लाल, उसमानाबाद	१९४८
१५६. श्रीमती सुभद्राबाई गोसावी	भिरखालवाड़ी, बीदर	१९४८
१५७. चंद्रैया गोंडला	देंदूकुमू, खम्मम	१९४८
१५८. लक्ष्मण सेट्टी गुद्देटी	कादिराबाद, मेढ़क	१९४८
१५९. सूरैया गुदीपति	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
१६०. पुल्लैया गुज्जा	गोदीशाल, करीमनगर	१९४८
१६१. इलैया गुंडलपल्ली	वेल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१६२. मल्लैया गुंडलपल्ली	वेल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१६३. रामैया गुंडलपल्ली	वेल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१६४. रामैया गुन्नाला	वेल्लाल, नलगोंडा	१९४८
१६५. लिंबा गौरव	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
१६६. किशन हाके	पारदी, परभनी	१९४८
१६७. हल्लप्पा	मल्ली, गुलबर्गा	१९४८
१६८. शिवप्पा हरिश्चंद्र	वलवल, उसमानाबाद	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१६९. नारायण हिंगे	भीर, भीर	१९४८
१७०. तायानाजी हिंगे	मनूर, भीर	अग., १९४८
१७१. वींरैया इरीगू	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
१७२. पेरूमैया इरीगू	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
१७३. दत्ता जाधव	शिवानी, परभनी	१९ मई, १९४८
१७४. देवराज जाधव	तोंदचीर, उसमानाबाद	१९४८
१७५. नाना जाधव	शिवानी बूका, परभनी	१९ मई, १९४८
१७६. शंकर जाधव	अचालेट, उसमानाबाद	१९४८
१७७. हीरालाल जायसवाल	फर्दपुर, औरंगाबाद	१४ सितं., १९४८
१७८. श्रीमती बीरी जमंदाला	कोलूकोंडा, वारंगल	१६ जन., १९४८
१७९. जंबैया	घनपुर, वारंगल	२५ अग., १९४८
१८०. मागैया जंगा	राजपैठ, खम्मम	२८ दिसं., १९४७
१८१. शंकरैया जंगम	कोनकापक, वारंगल	२५ मार्च, १९४८
१८२. जानोजी	गंल्ली, गुलबर्गा	१९४८
१८३. ज्ञानाबा जनोले	बलूर, बीदर	अग., १९४८
१८४. तुकाराम जनोले	बलूर, बीदर	अग., १९४८
१८५. वेंकैया जिल्लेल्ला	बोल्लेपाली, नलगोंडा	१९४८
१८६. येलैया जित्ता	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
१८७. शामराव जोथी	वरूद, औरंगाबाद	१९ सितं., १९४८
१८८. के. जकैया	अनंतारम, नलगोंडा	१९४७
१८९. के. नरसिंहमैया	मकथल, महबूबनगर	१९४८
१९०. सिंधोजी कचारू	कालमजूरी, परभनी	१९४८
१९१. सइन्ना कचूरामोइना	मुलकालपल्ली, नलगोंडा	१३ जन., १९४८
१९२. सोमैया कादरू	कड़ापारथी, नलगोंडा	१९४८
१९३. मोताबू केरी	कोलूकोंडा, वारंगल	फर., १९४८
१९४. जनैया काकी	पत्रलाफड, नलगोंडा	२८ अग., १९४८
१९५. बिठोबा ककनाले	बलूर, बीदर	अग., १९४८
१९६. सत्यहरि कम्मारी	पेदामुप्परम, वारंगल	अप्रैल, १९४८
१९७. बसंत क़नाडे	वदगाँव, उसमानाबाद	१८ सितं., १९४८
१९८. कोट्टैया कनागाला	पेडामांडव, खम्मम	३१ मार्च, १९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
१९९. माधवराव कनके	मंगरूल, उसमानाबाद	१९४८
२००. पैंटैया कंचनपल्ली	बोलेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
२०१. मलैया कंदूकूरी	वेलदेवी, नलगोंडा	१९४८
२०२. नागी रेड्डी कंदूकूरी	नागीरेगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२०३. व्यंकट रामैया कनकनाला	मदगुलपल्ली, नलगोंडा	१९४८
२०४. वीरैया कनकनापू	छोटापल्ली, वारंगल	१९४८
२०५. सयन्ना कन्नारापू	कुट्टीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
२०६. मनलैया कन्नेबोइना	बालेम, नलगोंडा	१९४८
२०७. सयन्ना कन्नेबोइना	वेलदेवी, नलगोंडा	१९४८
२०८. मल्लैया कंतुला	इराबेला, करीमनगर	१९४८
२०९. शिदू करद	तिरूका, उसमानाबाद	१९४७
२१०. शंभाजी करातखेले	बलूर, बीदर	१९४८
२११. व्यंकट करभारी	दोनाली, उसमानाबाद	१९४८
२१२. गाना करमूर	पारदी, परभनी	१९४८
२१३. सोमैया कारथी	गोरमपल्ली, नलगोंडा	१५ फर., १९४८
२१४. कृष्णरेड्डी कसराला	कड़ापारथी, नलगोंडा	१९४८
२१५. पितचैया कताकम	बलेमा, नलगोंडा	जन., १९४८
२१६. गोविंदा काटे	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
२१७. आनंदम् कथूला	मनीमीडे, नलगोंडा	१९४८
२१८. नरसिंहा कटला	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२१९. नारायण कट्टामूदी	मद्दूनूर, खम्मम	१९४८
२२०. शिवलिंगप्पा कट्टे	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
२२१. व्यंकटप्पा कट्टे	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
२२२. संभा कावले	उमरी, नांदेड़	१९४७
२२३. व्यंकटनारायण कीलूकानी	श्रीकोंडा, नलगोंडा	१९४७
२२४. वीरैया केसरापू	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२२५. रंगैया केसीदी	नारायनगुडा, नलगोंडा	१९ अप्रैल, १९४८
२२६. वीरप्पा खेने	कोटगल, बीदर	१९४८
२२७. गंगाराम खोमाने	नीलंगा, उसमानाबाद	१९४८
२२८. गोकरनपुरी खुशालपुरी	केदारनाथ, नांदेड़	१७ सितं., १९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
२२९. नाचूसिंग किसानसिंग	पलासखेड़ा, औरंगाबाद	१९४८
२३०. किस्ता रेड्डी (१)	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२३१. किस्ता रेड्डी (२)	चंदनपल्ली, नलगोंडा	८ मई, १९४८
२३२. व्यंकटैया कोदूरी	मूथाराम, करीमनगर	जुलाई, १९४८
२३३. नरसैया कोका	कोलूकोंडा, वारंगल	फर., १९४८
२३४. भीमराव कोली	नंदगाँव, उसमानाबाद	१९४७
२३५. मल्लैया कोलकोंडा	सीतारामपुरम्, नलगोंडा	१९४८
२३६. विट्ठल कोमाती	इदोलाकी, उसमानाबाद	१९४८
२३७. रामालिंगेश्वराराव	निम्मीकल्लू, नलगोंडा	१६ अग., १९४८
२३८. वसावैया कोंगाला	पत्रलाफड, नलगोंडा	२८ अग., १९४८
२३९. रोसैया कूना	मुलकानूर, करीमनगर	जुलाई, १९४८
२४०. नारैया कूरा	रेनुकुंटा, नलगोंडा	४ मार्च, १९४८
२४१. कोंडैया कूसू	छोटापल्ली, वारंगल	१५ मार्च, १९४८
२४२. गबरील कोपला	नंगलीगोंडा, खम्मम	१२ जुलाई, १९४८
२४३. मुतन्ना कोप्पलवाड़	किनी, नांदेड़	११ मई, १९४८
२४४. महादन्ना कोरदवाड़	किनी, नांदेड़	११ मई, १९४८
२४५. काशीनाथ कोष्टी	कोटग्याल, बीदर	अग., १९४८
२४६. कदगच्छे	उमरगा, उसमानाबाद	१९४८
२४७. बासप्पा कोटे	कोटग्याल, बीदर	१९४८
२४८. वैंकटपैया थोथापल्ली	मारीपाड़ा, वारंगल	१६ दिसं., १९४७
२४९. नरसैया कोटी	कोटाफड़, नलगोंडा	४ मार्च, १९४८
२५०. वीरैया कोटी	कोलूकोंडा, वारंगल	फरवरी, १९४८
२५१. राजी रेड्डी कोट्टम	चीताकुदुर, वारंगल	१२ अप्रैल, १९४८
२५२. कृष्णनत क्षीरसागर	गौर, उसमानाबाद	नवं, १९४८
२५३. विनायक कुलकर्णी	पिंपलगाँव, बीदर	१९४८
२५४. नरसिंह कुंभम	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२५५. जक्कैया कुम्मारी	औटापुर, वारंगल	१९४८
२५६. येल्लैया कुम्मारी	वनगापल्ली, वारंगल	२५ अग., १९४८
२५७. येल्लैया कंचन	कस्सानागोडे, नलगोंडा	१९४८
२५८. रामी रेड्डी कुर्राराम	कुर्राराम, नलगोंडा	१८ सितं., १९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
२५९. दशरथ लंगाड़े	गौर, उसमानाबाद	नवं, १९४८
२६०. पांडुरंग लंगाड़े	गौर, उसमानाबाद	१९४८
२६१. येल्लैया मधाम	अम्मानगरम्, करीमनगर	१९४८
२६२. दत्तागिरि महंत	कोलगाँव, नांदेड़	१७ सितं., १९४८
२६३. शेट्टीबा महार	कल्लाली, नांदेड़	जून, १९४८
२६४. अप्पाराव पाटिल	बोलेगाँव, बीदर	१९४८
२६५. मारुति माली	ईटा, उसमानाबाद	६ मई, १९४८
२६६. मल्ला रेड्डी	चंदनपल्ली, नलगोंडा	मई, १९४८
२६७. नरसैया मल्लेपल्ली	मदगुलापल्ली, नलगोंडा	१९४८
२६८. नरसिंह रेड्डी	शमसाबाद, हैदराबाद	२१ अग., १९४८
२६९. वैंकैया ममीदींगुल्ला	पामूकुंटा, नलगोंडा	१९ मार्च, १९४८
२७०. रामैया मंद्रा	पराडा, नलगोंडा	१९४८
२७१. चेन्ना कृष्ण रेड्डी	तुंगातुरती, नलगोंडा	१९४८
२७२. कृष्ण माने	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
२७३. चंदैया मंग	तिरूका, उसमानाबाद	१९४७
२७४. गणपति मंग	तिरूका, उसमानाबाद	१९४७
२७५. सदया मरहार	धनगरगाँव, परभनी	१९४८
२७६. तुकाराम मारवाड़ी	कलामूरी, परभनी	१९४८
२७७. वीरमल्ल मतचा	कदापारथी, नलगोंडा	१९४८
२७८. मल्लैया मट्टापल्ली	छोटापल्ली, वारंगल	१९४८
२७९. वीरैया मेदीपल्ली	परकाकोंडम, नलगोंडा	१९४८
२८०. चीना थिंपा	ईजा, महबूबनगर	१९४७
२८१. लिंगैया मेकाला	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
२८२. नागैया मिरियाला	मंगलापल्ली, नलगोंडा	१९४८
२८३. मोहन रेड्डी	अलाइर, नलगोंडा	१९४७
२८४. अरुवैया मूगा	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
२८५. श्रीनिवासराव कुलकर्णी	उमरगा, उसमानाबाद	३० मई, १९४८
२८६. गोपालराव मुगालीकर	उमरगा, उसमानाबाद	३० मई, १९४८
२८७. नरसैया मुक्कीदी	बोल्लेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
२८८. व्यंकटेश मुले	मिरखालवाड़ी, बीदर	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
२८९. कोमारैया मुप्पारामू	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
२९०. मुरलीधर राव	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
२९१. व्यंकट रेड्डी	नोमूला, नलगोंडा	१९४८
२९२. नामदेव मूथे	माहौरा, औरंगाबाद	जून, १९४८
२९३. मुत्तेम रेड्डी	सईदपुर, नलगोंडा	१९४७
२९४. पांडुरंग नादारगे	तिरूका, उसमानाबाद	१९४८
२९५. जनादन मामा नागपुरकर	नागपुर, नागपुर	१९४७
२९६. नागोजी	मल्ली, गुलबर्गा	१९४८
२९७. अप्पाराव नाइक	कल्लाली, नांदेड़	जून, १९४८
२९८. जोध्या नाइक	खम्मम, खम्मम	१९४८
२९९. मोत्याजी नाइक	पारदी, परभनी	१९४८
३००. ननक्या नाइक	कचारजगुदेम, खम्मम	१९४८
३०१. नरसिंह रेड्डी	निजामाबाद, निजामाबाद	१९४८
३०२. वीरैया नल्लापल्ली	चिंतलहरूबू, खम्मम	१९४८
३०३. रामचंद्र रेड्डी	कसारलाफड, नलगोंडा	१९४८
३०४. गुरावैया नन्ना	हसनाबाद, खम्मम	२६ नवं, १९४७
३०५. मल्लेश नरसिंगू	भोगूडू, नलगोंडा	१९४८
३०६. वेलप्पा नारडेल	जवाला पांचाल, परभनी	१९४८
३०७. वैंकैया नेलापटला	यर्रमपल्ली, नलगोंडा	मार्च, १९४८
३०८. नरसिंहा रेंड्डी	नचाराम, हैदराबाद	९ अप्रैल, १९४८
३०९. चंद्रमप्पा निमारगी	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
३१०. अंकैया निम्माला	जागीरेदीगुदेम, नलगोंडा	१९४८
३११. रंगैया नूनेमुंताला	एदनूथुला, वारंगल	१९४८
३१२. पी. श्रीराम रेड्डी	वारंगल, वारंगल	१९४८
३१३. मानिक्यम पकाला	कोनकपाका, वारंगल	१९४१
३१४. कोटैया पलाकयाला	रेमीदीचारला, खम्मम	३१ मार्च, १९४३
३१५. वैंकैया पल्ला	कोनाथपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३१६. मिसैया पल्लेपाका	कोट्टागुदेम, नलगोंडा	१९४७
३१७. रत्नमपल्ली	गंगावरम, खम्मम	५ मार्च, १९४८
३१८. भद्रैया पंडावाला	पत्रलाफड़, नलगोंडा	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
३१९. पापैया पंडावाला	पत्रलाफड़, नलगोंडा	१९४८
३२०. रामूलू पंडावाला	पत्रलाफड़, नलगोंडा	१९४८
३२१. नरायाण पांडे	शिवाला, परभनी	१९४८
३२२. बासावप्पा पांरगे	अलंद, गुलबर्गा	१९४८
३२३. वीरैया पसूला	कसानागोंडू, नलगोंडा	१९४८
३२४. लिंगारेड्डी पटेल	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
३२५. मनोहर पाठक	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४४
३२६. रामचंद्र पाठक	औंधानागनाथ, परभनी	१९४८
३२७. भगवंत पाटिल	बरूद, औरंगाबाद	१९ सितं., १९४८
३२८. हवरगाराव पाटिल	उदगीर, उसमानाबाद	१९४२
३२९. मल्लिकार्जुन पाटिल	लाली, उसमानाबाद	१९४७
३३०. त्र्यंबक पाटिल	पटोना, औरंगाबाद	१३ अक्तू., १९४८
३३१. वीरपक्षपैया पाटिल	कोलूर, गुलबर्गा	१९४८
३३२. कोटैया पिल्लई	मीनाबोलू, खम्मम	१९४८
३३३. जोगैया पिंडीपल्ली	कलाकोटा, खम्मम	१९४८
३३४. राघवराव पुल्ला	गरला, खम्मम	१९४८
३३५. के. राजीथम	नेकोंडा, वारंगल	४ फर., १९४८
३३६. रामसिंह राजपूत	कोनड, औरंगाबाद	१९४८
३३७. जी. रामैया	यर्रमपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३३८. रंगू सिद्दैया	बहरनपल्ली, वारंगल	१९४८
३३९. जानकीलाल राठी	वाप्ती, परभनी	१९४८
३४०. लक्ष्मण रेड्डी रवि	बोलेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३४१. राजालिंगम् रवि	गोदीथाल, करीमनगर	१९४८
३४२. गोविंद रावटे	वकोठी, परभनी	१९४८
३४३. गनपत रूशी	औंधानागनाथ, परभनी	१९४८
३४४. एस. मल्लैया	कोनकपाका, वारंगल	१९४८
३४५. एस. नटराजाचारी	हैदराबाद, हैदराबाद	१७ सितं., १९४८
३४६. गोविंदराव सबले	फर्दापुर, औरंगाबाद	१४ सितं., १९४८
३४७. दगाडूराम सनचेती	लिंबागणेश, भीर	१९४७
३४८. नरसैया संदेला	बोलेमपल्ली, नलगोंडा	१९४८

हैदराबाद आंदोलन के 'निरंतर हत्याकांड' के अमर शहीद

बाबूराव बोरगाँवकर
ग्राम : बोरगाँव, जिला : उसमानाबाद

शंकर जाधव
ग्राम : अचालेट, जिला : उसमानाबाद

विनायक कुलकर्णी
ग्राम : पिपलगाँव, जिला : बीदर

जनार्दन मामा नागपुरकर
स्थान : नागपुर, जिला : नागपुर
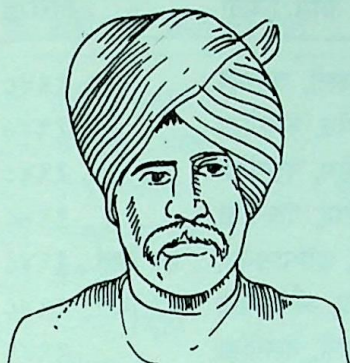
किशनराव टेके
ग्राम : ईटा, जिला : उसमानाबाद

श्रीमती गोदाबरी बाई टेके
ग्राम : ईटा, जिला : उसमानाबाद

विश्वनाथ तेली
ग्राम : ईटा, जिला : उसमानाबाद

महादेव टोडकारी
ग्राम : बदगाँव, जिला : उसमानाबाद
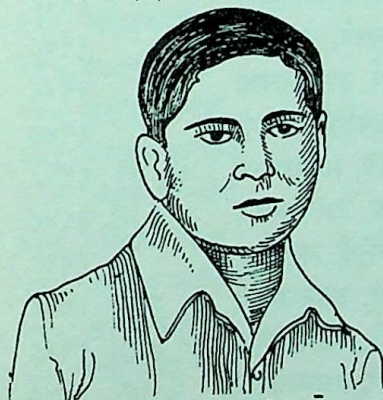
नीलैया स्वामी
(२२ फरवरी, १९४८ को रजाकारों द्वारा मारे गए।)

जयवंतराव वाइपनकर
ग्रामः वाइपन, जिला : नांदेड़

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
३४९. व्यंकट मल्लू सन्नाइला	तिरुमलपल्ली, वारंगल	१९४८
३५०. रामूलू सारे	मूर्यपेठ, नलगोंडा	१९४७
३५१. वैंकैया सरेद्दी	कोन्यागुडेम, नलगोंडा	१६ मार्च, १९४८
३५२. वींरैया सरेल्ली	बालेमा, नलगोंडा	१९४८
३५३. सीताराम सातव	धीवर, उसमानाबाद	१९ सितं., १९४८
३५४. तुकाराम सातव	बरूद, औरंगाबाद	१९ सितं., १९४८
३५५. शेशी रेड्डी	मरेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३५६. मल्लैया सेठसिंधी	नोमूला, नलगोंडा	फर., १९४८
३५७. शंकरैया गुप्ता	रंग्यापल्ली, मेढ़क	१८ दिसं., १९४७
३५८. शेशप्पा	मल्ली, गुलबर्गा	१९४८
३५९. विश्वर शिंदे	उमरी, नांदेड़	१९४७
३६०. हराबाजी शिवराम	बेलभर, परभनी	१९४८
३६१. काशीनाथ सिधराम	शिरूर, उसमानाबाद	१९४८
३६२. बी. सीतारामैया	पेंचीकलादिन्ना, नलगोंडा	१९४८
३६३. शिवराम सिंह	मकथल, महबूबनगर	१९४८
३६४. रामचंद्र सोलंके	हस्तारा, नांदेड़	१७ सितं., १९४८
३६५. सूरैया	सीताराम पैठ, नलगोंडा	१९४८
३६६. नीलैया स्वामी	नलदुर्ग, उसमानाबाद	२२ फर., १९४८
३६७. गोदावरीबाई टेके	ईटा, उसमानाबाद	६ मई, १९४८
३६८. किशनराव टेके	ईटा, उसमानाबाद	१९४८
३६९. मल्लैया तेलदुरी	नागीरेदीपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३७०. मारुती तेलगाने	तंदर, उसमानाबाद	१९४८
३७१. जीवाबा तेली	पाकोडी, परभनी	१९४८
३७२. सिद्दप्पा तेली	आपीरेदीपल्ली, महबूबनगर	१५ जन., १९४८
३७३. विश्वनाथ तेली	ईटा, उसमानाबाद	३ मई, १९४८
३७४. नरसैया थिरुमाला	बोल्लेपल्ली, नलगोंडा	१९४८
३७५. ऐसा थोरात	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
३७६. येदाबा थोरात	धनोरे, उसमानाबाद	१८ अप्रैल, १९४८
३७७. महादेव टोडकारी-	नंदगाँव, उसमानाबाद	५ सितं., १९४८
३७८. मानकराव उलगद्दे	उदगीर, उसमानाबाद	१९४८

क्र. शहीद होनेवाले का नाम	ग्राम/जिला	तारीख
३७९. कोटैया उंडला	नारायनगुडा, नलगोंडा	१९ अप्रैल, १९४८
३८०. नारायण उन्हाले	महारी, परभनी	१९४८
३८१. श्रीधर वरतक	हुमनाबाद, उसमानाबाद	१९४८
३८२. व्यंकटेश्वर राव	रावुलपेंटा, नलगोंडा	२७ फर., १९४८
३८३. वैंकैया	देंदूकूरू, खम्मम	१९४८
३८४. व्यंकट रेड्डी	रावुलपेंटा, नलगोंडा	२१ जन., १९४८
३८५. वैंकैया	कूटीगल, वारंगल	२५ अग., १९४८
३८६. लक्ष्मैया वेन्ना	येलम्मा, नलगोंडा	१९४८
३८७. इदैया वीरा	इदूलूर, नलगोंडा	१९४८
३८८. मूलस्वामी वेरा	कोनथपल्ली, नलगोंडा	२१ जन., १९४८
३८९. वीरपक्षप्पा	राजानोलूर, गुलबर्गा	१९४८
३९०. विश्वनाथ सिद्दप्पा	कौलखेड, उसमानाबाद	१९४८
३९१. तुकाराम वाघ	फर्दापुर, औरंगाबाद	१९४८
३९२. लाला वाघमारे	धामगाँव, शोलापुर	१३ मई, १९४८
३९३. लिंगूराम वाघमारे	कल्लाली, नांदेड़	जून, १९४८
३९४. मारुती वाघमारे	कल्लाली, नांदेड़	जून, १९४८
३९५. तुकाराम वाघमारे	कल्लाली, नांदेड़	जून, १९४८
३९६. जयवंतराव वाइपनकर	वाइपन, नांदेड़	१९४८
३९७. राजाभाऊ वकाड़े	वकोड़ी, परभनी	१३ जन., १९४८
३९८. मल्लिकार्जुनप्पावाले	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
३९९. शरनापा वाले	नंदगाँव, उसमानाबाद	२२ मई, १९४८
४००. भुजंग वानखेड़े	धनोरे, नांदेड़	११ अप्रैल, १९४८
४०१. नामदेव वानखेड़े	धनोरे, नांदेड़	११ अप्रैल, १९४८
४०२. नूमाजी वानखेड़े	शिवानी, परभनी	१९ मई, १९४८
४०३. विठोबा यादव	श्रीधर जवाले, परभनी	१९४८
४०४. राघवैया यादवल्ली	देंदूकूरू, खम्मम	१९४८
४०५. समादू यादरू	चल्लागरीगे, वारंगल	२२ अग., १९४८
४०६. रामाबशैया यादरू	हैदराबाद, हैदराबाद	१९४८
४०७. गोपैया येद्दू	वालेमा, नलगोंडा	जन., १९४८

□

'निरंतर हत्याकांड' की सूची के बाहर के शहीद
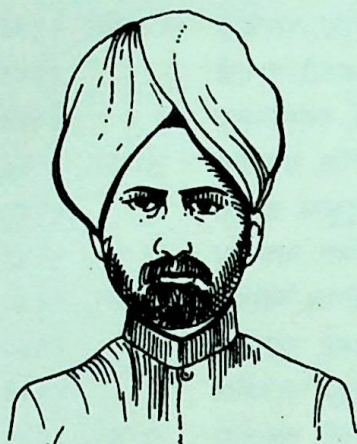
श्री निवासराव मुगालीकर

उसमानाबाद जिले के 'उमरगा' ग्राम के निवासी थे। पेशे से वकील थे। रजाकारों से युद्ध करते हुए वीरगति पाई।

वसंत कनाडे

जिला उसमानाबाद के कृषक थे। हैदराबाद अभियान में शहीद।
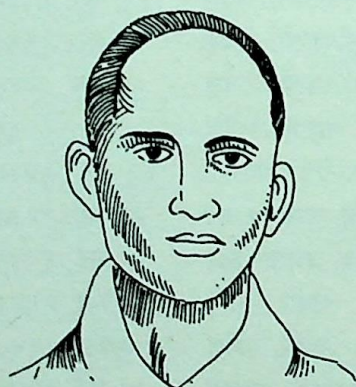
गोविंद पंसारे

वारंगल जिले के 'छोटापल्ली' ग्राम के निवासी थे। रजाकारों से युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की।

सदाशिव पाठक

शोलापुर जिले के 'कसबे' ग्राम के निवासी थे। हैदराबाद पुलिस ने लाठियों से घायल करके जेल में डाल दिया। वहीं शहीद हो गए।

श्योबुल्ला खाँ
हैदराबाद के लोकप्रिय और निर्भीक पत्रकार थे। रजाकारों का विरोध करते हुए मारे गए।

किसानसिंह राजपूत
नांदेड़ निवासी थे। इंटर कक्षा के छात्र थे। हैदराबाद अभियान में शहीद।

दत्तात्रय उत्तमवार
नांदेड़ जिले के 'उमरी' ग्राम के निवासी थे। रजाकारों द्वारा गोलियों के शिकार।

वसंत रक्षा भुवानकर
'भीर' नामक स्थान के निवासी थे। हैदराबाद अभियान में शहीद।

नामदेव वाघ
औरंगाबाद के 'फर्दापुर' ग्राम के निवासी थे। निजाम की पुलिस द्वारा मारे गए।

विश्वनाथ बीसे
उसमानाबाद जिले के 'मिदसिंगे' ग्राम के निवासी थे। रजाकारों द्वारा मारे गए।

तुकाराम वाघ
हैदराबाद अभियान में शहीद।

○ बंधनयुक्त अग्नि समर्पित

१५ मार्च, १९४८ को हैदराबाद पुलिस और रजाकारों के संयुक्त दल ने वारंगल जिले के फोनकापक ग्राम पर इसलिए आक्रमण कर दिया, क्योंकि उन लोगों ने जुर्माना देने से इनकार कर दिया था और हैदराबाद रियासत को केंद्रीय संघ में सम्मिलित कर देने की माँग की थी। मुकाबला संघर्षपूर्ण था। कुछ ग्रामीणों को रस्सियों से बाँध दिया गया और मकानों में आग लगाई गई। आग में वे बंधनयुक्त वीर जीवित जला दिए गए। शहीद होनेवालों में थे—

मल्लैया बालीजी, रंगैया चत्तारी, लक्ष्मैया रायबरापू, वेंकटरामैया बोइनापल्ली, तिरुपतैया चत्तारी, व्यंकटनरासू वदला, इलैया बोहनापल्ली, शंकरैया जंगम, रामूलू येरा, अलवरलू चत्तारी, नारायना कम्मारी।

□

○ बहरनपल्ली हत्याकांड

हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाने के आंदोलन ने इतना जोर पकड़ा कि वह आंदोलन छोटे-छोटे गाँवों तक पहुँच गया और भयंकर दमन तथा रक्तपात के बावजूद वह दबाया नहीं जा सका। किसानों ने निजाम को लगान देना भी बंद कर दिया। इसी प्रकार का एक गाँव था वारंगल जिले का 'बहरनपल्ली'। निजाम की सेना, पुलिस और रजाकारों ने सम्मिलित रूप से 'बहरनपल्ली' गाँव पर हमला कर दिया। हमलावरों की संख्या डेढ़ हजार थी। हमलावरों ने गाँव में कत्लेआम मचा दिया। जो जहाँ दिखा, वहाँ उसे गोली मार दी गई। स्त्रियों और बच्चों को भी नही बख्शा गया। २५ अगस्त, १९४८ को भयंकर रक्तपात के परिणामस्वरूप छिहत्तर ग्रामीण मारे गए, जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—

१. अरुगोंडा नागैया,
२. बल्ला बिठोबा,
३. बलराजैया,
४. राजामल्लू बर्मा,
५. नरसैया बेगर,
६. बोल्ले परशुरामैया,
७. बोईनी जग्गैया,
८. बुस्साना बोईना सयन्ना,
९. चल्ला नरसी रेड्डी,
१०. चल्ला पेदामल्ला रेड्डी,
११. दगाला कोमारैया,
१२. दंदयाला किस्तैया,

१३. दंदयाला रामैया,
१४. दसारी रामालिंगम,
१५. एन्नम चंद्ररेड्डी,
१६. ऐर्रा मल्लैया,
१७. गंदे रामैया,
१८. गांगी मल्लैया,
१९. गोरला कोमारैया,
२०. गोरला सयन्ना,
२१. गोरलागांगी मल्लैया,
२२. गोदाती पापीरेड्डी,
२३. गुद्दाम भूमैया,
२४. इस्मादी गोपालरेड्डी,
२५. कम्मारी लटचैया,
२६. संतम्मा कर्रा,
२७. व्यंकट रेड्डी कर्रा,
२८. चंद्र रेड्डी कर्रा,
२९. बाल रेड्डी कर्रा,
३०. बूचम्मा कर्रा,
३१. कीर्ती अंजैया,
३२. कीर्ती रामैया,
३३. कोमाती पैंटैया,
३४. लटचैया,
३५. मन्यम मल्ला रेड्डी,
३६. मारूमामूला येल्लापा,
३७. मयोसू नरसिंहाचारी,
३८. मेदीचेलीमी कनकैया,
३९. मोगूतामू रामैया,
४०. नंदनबोईना नरसैया,
४१. औरूगांती कोमारैया,
४२. पारूनंदी विश्वनादम,
४३. पुलीगल्ला राजैया,
४४. रामिनी राजालिंगम,
४५. रामिनी सिद्धीलिंगम,
४६. रांगू चंद्रैया,
४७. श्रीरामूला वैंकटैया,
४८. तिरुमंती भूमैया,
४९. तिरुमंती येलैया,
५०. तिरुमंती लिंगैया,
५१. तिरुमंती मल्लैया,
५२. तिरुमंती संबैया,
५३. तिरुमंती सिद्दैया,
५४. वंगाला नरसिंहा रेड्डी,
५५. वंगाला रामचंद्र रेड्डी,
५६. वगांपल्ली अइलैया।

□

○ बैलगाड़ी हत्याकांड

कुछ लोग अपनी बैलगाड़ियों पर गन्ना लादे हुए शक्कर के कारखाने की ओर जा रहे थे। वे लोग किसान थे। यह उनका हमेशा का काम था। कृषक होते हुए भी उनमें पर्याप्त राजनीतिक चेतना थी। वे भी उस आंदोलन में सम्मिलित थे, जो हैदराबाद रियासत को केंद्रीय संघ में सम्मिलित करने के लिए चलाया जा रहा था।

बैलगाड़ियों की कतार सड़क पर जा रही थी कि रजाकारों के एक बहुत बड़े दल ने उन्हें घेर लिया और वे उनपर गोलियाँ चलाने लगे। कृषकों ने देखा कि हम तो मारे ही जाएँगे, हमारे बैल क्यों मारे जाएँ? वे अपनी बैलगाड़ियाँ छोड़कर एक ओर खड़े हो गए और रजाकारों ने उन्हें गोलियों से भून डाला। इस बैलगाड़ी कांड में शहीद होनेवालों में कुछ नाम हैं—

गनपति दीक्षित, चंद्रकांत नैकल, राजाराम शोलापुरे, तुकाराम लुहार, शंकर सवालकर, शिवाजी अदसुल, जगन्नाथ कलमकार, अप्पाराव पदवाल, बनकर गह्वर, दगाड़ू पदवाल, प्रभु टोडकारी।

□

○ मस्तक यज्ञ

हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों ने उस आंदोलन को कुचलने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी, जो हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाने के लिए चलाया जा रहा था। २१ अप्रैल, १९४८ को इसी प्रकार एक दल ने कुछ लोगों को पकड़ा और उन्हें जंगल में ले गए। उन लोगों को वृक्षों से बाँध दिया गया और तलवारों से उनकी गरदनें काट दी गईं। स्वाधीनता की बलिवेदी पर जिन लोगों ने अपने मस्तक भेंट किए, उनमें से कुछ थे—

लक्ष्मैया मिरियाला, रामा रेड्डी पट्टाकोट्टू, हनूमा रेड्डी सीलम, राघवैया नूती, वसावी रेड्डी पट्टाकोट्टू।

□

○ माँदपुरम् हत्याकांड

करीमनगर जिले के लोगों ने हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के केंद्रीय संघ में विलय करने की माँग को लेकर जोरदार आंदोलन छेड़ दिया। सारे जिले में संगठन की शाखाएँ स्थापित करके यह निर्णय लिया गया कि जब तक रियासत का विलय केंद्र में नहीं होगा, हम लोग कोई मालगुजारी नहीं चुकाएँगे। निजाम के अधिकारी इस उद्दंडता को कैसे सहन कर सकते थे। आंदोलन को कुचलने के लिए रजाकारों का संगठन तैयार किया जा चुका था और निजाम की

पुलिस भी तैयार रहती थी।

जनवरी, १९४८ में रजाकारों और पुलिस के एक संयुक्त दल ने करीमनगर के कुछ प्रमुख लोगों को गिरफ्तार कर लिया और वे उन्हें माँदपुरम् पहाड़ियों के बीच ले गए। उन सभी को वृक्षों से बाँध दिया गया और रजाकारों व निजाम की पुलिस ने उन्हें गोलियों से भून दिया। उनकी लाशों को उसी प्रकार छोड़ दिया गया, जिससे देखनेवालों के दिलों में दहशत पैदा हो और वे बगावत का विचार छोड़ दें। इस हत्याकांड में आठ लोगों ने प्राणाहुतियाँ दीं, जिनमें से थे—

भूपति रेड्डी, सी. बालाराम रेड्डी, मल्ला रेड्डी, नारायण, पापैया, रामा रेड्डी और वी. प्रभाकर राव।

□

○ रेणुकुंटा युद्ध

नलगोंडा जिले के 'रेणुकुंटा' ग्राम के नेता रामी रेड्डी ने अपने ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा—

''हमें यह मालूम है कि हम लोग हैदराबाद निजाम के राज्य में नहीं, मौत के राज्य में रह रहे हैं, आएदिन हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों के आक्रमणों का शिकार हम लोगों को होना पड़ता है। वे लोग हमें मौत के घाट उतारते हैं, हमारी संपत्ति लूट ले जाते हैं और महिलाओं को अपमानित करते हैं। मैं आप लोगों से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हम लोग ये अत्याचार सिर झुकाकर सहते रहें या उनका प्रतिरोध करते हुए अपनी जीवनाहुति दें। ये अत्याचार हम लोगों पर इसलिए किए जा रहे हैं, क्योंकि हम लोगों की यह माँग है कि हैदराबाद राज्य को केंद्र में मिलाया जाए। हमको क्या करना चाहिए, मैं आप सबसे पूछना चाहता हूँ?''

रामी रेड्डी की यह बात सुनकर नरसैया अनुमंडल ने कहा—

''हम लोगों में से जो शत्रु के साथ संघर्ष करने में सक्षम हैं, उन्हें ग्रामसेना बनाकर युद्ध प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए और जब शत्रु आक्रमण करे तो उसका सशस्त्र प्रतिरोध करना चाहिए, चाहे परिणाम कुछ भी हो।''

नरसैया अनुमंडल के इस प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया और इस दिशा में तैयारियाँ होने लगीं।

४ मार्च, १९४७ को हैदराबाद पुलिस और रजाकारों के सम्मिलित दल ने 'रेणुकुंटा' पर भयंकर आक्रमण कर दिया। ग्रामसेना ने आक्रमण का मुँहतोड़ उत्तर

दिया। बारह घंटे तक युद्ध चला। बहुत बड़ी संख्या में आक्रमणकारी मारे गए और ग्रामसेना के छब्बीस सैनिक शहीद हुए। शहीद होनेवालों में से कुछ थे—

नरसैया अनुमंडल, राजैया वादीगे, बलराम, सतैया बांदुला, नारायण बांदुला, नरसैया भुट्टुकूरी, यादगिरी बोअल्ला, नरसैया चकाला, यादगिरी चकाला, पुल्ला रेड्डी चल्ला, रंगा रेड्डी चिंतालापुरी, पापैया गंदमल्ला, चंद्रैया इरूगू, नरसैया कल्यानापू, नरसैया लक्ष्मी, मल्ला रेड्डी, राजैया मंगला, नारैया मंगला, सतैया पगाडाला, नारैया रंगा, चंद्रैया रयाला, चंद्रैया चोकाला, रामी रेड्डी।

□

○ सज्जापुरम् हत्याकांड

जिला नलगोंडा के 'सज्जापुरम्' गाँव में रजाकारों से हुए सशस्त्र संघर्ष में कुछ ग्रामीण मार डाले गए। उनपर आक्रमण इसलिए किया गया था कि वे हैदराबाद रियासत को स्वाधीन भारत के साथ मिलाए जानेवाले आंदोलन में भाग ले रहे थे। मरनेवाले लोगों में से कुछ के नाम हैं—

नरसिंहम इलागोरला, नरसिंहम लिंगमपल्ली, सइदैया इलागोरला, कोटैया उसाला।

□

क्रांतिकारी कोश

संयुक्त सूची

पाठकों की सुविधा हेतु क्रांतिकारी कोश के (पाँचों खंडों के) सभी क्रांतिकारियों की संयुक्त सूची अकारादि क्रम से यहाँ प्रस्तुत है।

अ

आ

ख

ग

झ

ठ

क्रम	क्रांतिकारी	खंड	पृष्ठ संख्या

ड

३३९.	डबरी राय	चतुर्थ	१६७
३४०.	डुंडे खाँ	द्वितीय	२२

त

३४१.	तँवरसिंह	द्वितीय	१०
३४२.	तईगर	चतुर्थ	१६८
३४३.	तन्नरसिंह	द्वितीय	१०
३४४.	ताँतिया	प्रथम	१३१
३४५.	तात्यागौदा पाटिल	चतुर्थ	१६८
३४६.	तात्या टोपे	प्रथम	१३८
३४७.	तारकेश्वर दस्तीदार	चतुर्थ	७६
३४८.	तारकेश्वर सेन्	चतुर्थ	६३
३४९.	तारादास भट्टाचार्य	चतुर्थ	३८
३५०.	तारापद गुप्त	चतुर्थ	६३
३५१.	ताराप्रसन्न सर्वाधिकारी	चतुर्थ	३८
३५२.	तारासिंह	द्वितीय	१९
३५३.	तारिणीप्रसन्न मजूमदार	द्वितीय	१४९
३५४.	तिरकप्पा मदीवलार	चतुर्थ	१६९
३५५.	तिरुमल आचार्य	प्रथम	१४३
३५६.	तिलक डेकाह	चतुर्थ	१६९
३५७.	तिलका माँझी	प्रथम	१४५
३५८.	तुकाराम असोले	पंचम	१०२

थ

द

ध

न

क्रम	क्रांतिकारी	खंड	पृष्ठ संख्या
४२७.	सिपाही नंदराम	पंचम	१२९
४२८.	नंदसिंह	द्वितीय	१५९
४२९.	एन. गजेंद्रगढ़	पंचम	८४
४३०.	एन.सी. सेठ	पंचम	२८
४३१.	कर्नल एन.एस. भगत	पंचम	५१
४३२.	नगेंद्र सेन	द्वितीय	७४
४३३.	नजरसिंह	पंचम	१०१
४३४.	लेफ्टिनेंट नजीर अहमद	पंचम	११७
४३५.	नटवर कुंदू	चतुर्थ	८७
४३६.	सिपाही नटेसन	पंचम	७०
४३७.	ननिगोपाल बागची	चतुर्थ	३८
४३८.	नबीसाब बादासाब पिंजार	चतुर्थ	१९७
४३९.	नमेरे पांडू	पंचम	६८
४४०.	नरपतिसिंह	प्रथम	१६४
४४१.	बाबा नरसिंह दास	पंचम	२०४
४४२.	नरसिंहराव घवालकर	चतुर्थ	१९८
४४३.	नरसिंहा	पंचम	९६
४४४.	नरहरिभाई रावल	चतुर्थ	१९८
४४५.	नरहरि सेन	चतुर्थ	९१
४४६.	नरेंद्रनाथ भट्टाचार्य (मानवेंद्रनाथ राय)	प्रथम	१६५
४४७.	नरेंद्रनारायण चक्रवर्ती	प्रथम	१६८
४४८.	नरेश रे	चतुर्थ	१५६
४४९.	नरेश सोम	चतुर्थ	६३
४५०.	नर्बदेश्वर पांडे	पंचम	१३१
४५१.	नलिनीकांत बागची	द्वितीय	१४९
४५२.	नवजीवन घोष	चतुर्थ	१९८
४५३.	श्रीमती नवनीत कोमला सिन्हा	चतुर्थ	३७
४५४.	नवराती आदुरकर	चतुर्थ	१९९

भ

म

ल

क्रम	क्रांतिकारी	खंड	पृष्ठ संख्या
९४४.	वी. सर्मा	चतुर्थ	३०२
९४५.	वीणाचरण दास महापात्र	चतुर्थ	२५२
९४६.	वीणा दास	चतुर्थ	३०२
९४७.	वीरम्मा	पंचम	१४९
९४८.	वीरसिंह	द्वितीय	१०
९४९.	वीरसिंह	द्वितीय	४८
९५०.	वीरेंद्र	द्वितीय	२७१
९५१.	वीरेंद्र कुमार	चतुर्थ	१७९
९५२.	वीरेंद्र चटर्जी	द्वितीय	१६
९५३.	वीरेंद्र डे	चतुर्थ	३०५
९५४.	वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय	प्रथम	२७५
९५५.	वीरेंद्रनाथ दत्त	प्रथम	२७९
९५६.	वीरेंद्रनाथ पांडेय	तृतीय	२०६
९५७.	वेलू थंपी	प्रथम	२८२
९५८.	वैंकटय्या पागुंटा	पंचम	१३१
९५९.	वैंकय्या कोशाकोंडा	पंचम	१६७
९६०.	वैंकैया थोटा	पंचम	१४६
९६१.	वैद्यनाथ सेन	चतुर्थ	१८८, ३०६

श

क्रम	क्रांतिकारी	खंड	पृष्ठ संख्या
९६२.	शंकर नागपुरी	चतुर्थ	१५३
९६३.	शंकरभाई धोबी	चतुर्थ	३०७
९६४.	शंकरराव मलकापुरकर	तृतीय	२०८
९६५.	शंकरशाह	प्रथम	२३८
९६६.	शंभूनाथ आजाद	चतुर्थ	३०७
९६७.	शचींद्रनाथ घोष	चतुर्थ	६३

स

ह

संदर्भ ग्रंथ सूची

★ संदर्भ ग्रंथ सूची ★

प्रस्तुत ग्रंथ **क्रांतिकारी कोश** के लेखन में जिन संदर्भ ग्रंथों का उपयोग किया गया है, उनकी सूची नीचे दी जा रही है।

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
	❖ हिंदी संदर्भ ग्रंथ ❖		
१.	संस्मृतियाँ	शिव वर्मा	समाजवादी साहित्य सदन, लखनऊ
२.	भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास	मन्मथनाथ गुप्त	आत्माराम एंड संस, दिल्ली
३.	वे अमर क्रांतिकारी	मन्मथनाथ गुप्त	हिंद पॉकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली
४.	भगतसिंह और उनका युग	मन्मथनाथ गुप्त	लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली
५.	क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास	मन्मथनाथ गुप्त	निधि प्रकाशन, दिल्ली
६.	भारत के क्रांतिकारी	मन्मथनाथ गुप्त	हिंद पॉकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली
७.	सौ साल संघर्ष	राम मोहम्मद	क्रांति प्रकाशन, धार
८.	लक्ष्मीबाई रासौ	मदनेश	डॉ. भगवानदास माहौर, झाँसी
९.	१८५७ का भारतीय स्वातंत्र्य समर	विनायक दामोदर सावरकर	राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली
१०.	अमर शहीद सुखदेव	मथरादास थापर	निधि प्रकाशन, दिल्ली
११.	क्रांति के वे दिन	काशीराम	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर

१२.	आजादी के दीवाने	इ.व. मिलावोनोव/ का.न. चेनोव	प्रगति प्रकाशन, मास्को
१३.	आजादी के परवाने	आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री	—
१४.	जब ज्योति जगी	सुखदेव राज	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर
१५.	स्मृति के झरोखे से	डॉ. कमलसिंह	प्रदीप प्रकाशन, उज्जैन
१६.	शहीद भगतसिंह : कुछ अधखुले पृष्ठ	के.के. खुल्लर	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
१७.	अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद (३ भाग)	विश्वनाथ वैशंपायन	विश्वनाथ वैशंपायन, रायपुर
१८.	दीदी सुशीला मोहन	सत्यदेव विद्यालंकार	मारवाड़ी पब्लिकेशन, दिल्ली
१९.	अमर शहीद सरदार भगतसिंह	जितेंद्रनाथ सान्याल	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर
२०.	हमारे लाल दिन	आचार्य चतुरसेन	गौतम बुक डिपो, दिल्ली
२१.	शहीदों की छाया में	रामकृष्ण खत्री	विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर
२२.	क्रांतिवीर भगवानदास माहौर	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
२३.	नींव के पत्थर	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
२४.	यतींद्रनाथ दास	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
२५.	सरदार भगतसिंह	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
२६.	करतारसिंह सराबा	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
२७.	यश की धरोहर	डॉ. भगवानदास माहौर	आत्माराम एंड संस, दिल्ली
२८.	गदर पार्टी का इतिहास	प्रीतमसिंह पंछी	आत्माराम एंड संस, दिल्ली

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
२९.	धरती है बलिदान की	शांताकुमार	भारतीय साहित्य सदन, नई दिल्ली
३०.	बलिदान	प्रो. नंदकिशोर निगम	नंदकिशोर निगम, दिल्ली
३१.	सिंहावलोकन (३ भाग)	यशपाल	विप्लव कार्यालय, लखनऊ
३२.	रामप्रसाद बिस्मिल	रामसिंह बघेले	रामसिंह बघेले, ग्वालियर
३३.	स्वाधीनता संग्राम के पथिक	रामशरण विद्यार्थी	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर
३४.	क्रांति का देवता : सरदार भगतसिंह	विष्णुदत्त कविरत्न	प्रेम प्रकाशन, दिल्ली
३५.	बाबा गुरुदत्तसिंह	रामशरण विद्यार्थी	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर
३६.	गणेशशंकर विद्यार्थी	देवदत्त शास्त्री	आत्माराम एंड संस, दिल्ली
३७.	मेरे क्रांतिकारी साथी	सरदार भगतसिंह	राजपाल एंड संस, दिल्ली
३८.	भारत में सशस्त्र क्रांति की भूमिका	तारिणी शंकर चक्रवर्ती	क्रांति प्रकाशन, मिर्जापुर
३९.	वह तात्या टोपे ही था जिसे फाँसी लगी	नारायण श्यामराव चितांबरे	मानस प्रकाशन, गुना
४०.	क्रांतिकारी आंदोलन	बाबा सोहनसिंह भकना	युवक केंद्र, जालंधर
४१.	क्रांति-गाथा	शांतिकुमार जोशी	उर्मिला प्रकाशन, होशंगाबाद
४२.	वातायन	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
४३.	क्रांति क्यों? कैसे?	आजाद हिंद संघ	आजाद हिंद संघ, मेरठ
४४.	क्रांतिपथ के पथिक	सत्यभक्त	प्रकाशचंद्र, आगरा
४५.	एक कवि : एक सैनिक	डॉ. शिवशंकर मिश्र	नेताजी सुभाष मंच, खंडवा

४६. भाई परमानंद और उनका युग	प्रो. धर्मवीर	भाई परमानंद स्मारक समिति, नई दिल्ली
४७. युगद्रष्टा भगतसिंह	वीरेंद्र सिंधु	भारतीय ज्ञानपीठ, कलकत्ता
४८. अमर बलिदानी	शंभूदयाल आजाद/ शिवकुमार मिश्र	ऊटी–मद्रास बलिदान स्मारक समिति, कानपुर
४९. भारत में अंग्रेजी राज	सुंदरलाल	प्रकाशन विभाग, सूचना तथा प्रकाशन मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली
५०. क्रांतिरथी	यतींद्रनाथ राही	नेताजी विचार प्रकाशन, खंडवा
५१. क्रांतिपथ का पथिक	पृथ्वीसिंह आजाद	प्रज्ञा प्रकाशन, चंडीगढ़
५२. भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के अंतिम दिन	लियोनार्ड मोसले	आत्माराम एंड संस, दिल्ली
५३. सरदार भगतसिंह	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५४. अजेय सेनानी चंद्रशेखर आजाद	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५५. चंद्रशेखर आजाद	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५६. सुभाषचंद्र	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५७. जय सुभाष	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५८. अशफाक उल्ला खाँ	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
५९. जीवंत आहुति	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६०. मौत के आँसू	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६१. चटगाँव का सूर्य	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
६२.	जयहिंद	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६३.	राजगुरु	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६४.	यतींद्रनाथ दास	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६५.	रामप्रसाद बिस्मिल	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६६.	बाघा जतीन	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६७.	क्रांतिकारी शहीदों की कहानियाँ	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६८.	क्रांतिकारियों की कहानियाँ (४ भाग)	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
६९.	क्रांतिकारी शहीदों की संस्मृतियाँ	श्रीकृष्ण 'सरल'	विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर
७०.	नेताजी के सपनों का भारत	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
७१.	नेताजी सुभाष-दर्शन	श्रीकृष्ण 'सरल'	धर्मेंद्र सरल, उज्जैन
७२.	राष्ट्रपति सुभाषचंद्र बोस	श्रीकृष्ण 'सरल'	धर्मेंद्र सरल, उज्जैन
७३.	नेताजी सुभाष जर्मनी में	श्रीकृष्ण 'सरल'	धर्मेंद्र सरल, उज्जैन
७४.	सेनाध्यक्ष सुभाष और आजाद हिंद संगठन	श्रीकृष्ण 'सरल'	धर्मेंद्र सरल, उज्जैन
७५.	कालजयी सुभाष	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
७६.	क्रांतिकारी आंदोलन के मनोरंजक प्रसंग	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
७७.	आजीवन क्रांतिकारी	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन
७८.	वतन हमारा	श्रीकृष्ण 'सरल'	राष्ट्रीय प्रकाशन, उज्जैन

७९.	आत्मकथा	रामप्रसाद बिस्मिल	आत्माराम एंड संस, दिल्ली
८०.	सोनाखान के अमर शहीद वीर नारायणसिंह	रामप्रसाद बिस्मिल	सूचना तथा प्रकाशन, संचालनालय, भोपाल
८१.	नेताजी सुभाष	क्षेमचंद्र 'सुमन'	गोयल ब्रदर्स, दिल्ली
८२.	आजाद सेना	कृष्णबिहारी तिवारी	रीगल बुक डिपो, दिल्ली
८३.	नेताजी	श्रीराम	सरस्वती पुस्तक मंदिर, दिल्ली
८४.	आजाद हिंद फौज	रामशंकर त्रिपाठी	लोकमान्य कार्यालय, कलकत्ता
८५.	सुभाषचंद्र बोस	रामनाथ 'सुमन'	नवभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
८६.	यूरोप में आजाद हिंद	सत्यदेव विद्यालंकार सरदार रामसिंह रावल	मारवाड़ी पब्लिकेशन, दिल्ली
८७.	आजादी के अग्रदूत	—	प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
८८.	जयपथ	नटवरलाल स्नेही	पर्णकुटी प्रकाशन, उज्जैन
८९.	टोकियो से इंफाल	सरदार रामसिंह रावल	मारवाड़ी पब्लिकेशन, दिल्ली
९०.	एक भारतीय तीर्थयात्री	शंकर सहाय सक्सेना	नवयुग ग्रंथ कुटी, बीकानेर
९१.	स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारियों का योगदान	विनायक दामोदर सावरकर	स्वातंत्र्य लक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी
९२.	तरुणाई के सपने	गोपाल लाल सान्याल	भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
९३.	अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ	सं. बनारसीदास चतुर्वेदी	शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा
९४.	शचींद्रनाथ सान्याल और उनका युग	विश्वमित्र उपाध्याय	प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
९५.	आतंकवाद का इतिहास	आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री	एंडमन साहित्य मंदिर, दिल्ली
९६.	कांग्रेस का इतिहास	डॉ. पट्टाभि सीतारामैया	सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

❖ पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक ❖

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
९७.	राधामोहन गोकुलजी स्मारिका	शिवप्रकाश पचौरी	शैलबाला, आगरा
९८.	आजाद हिंद फौज स्मारिका	मोहन 'शशि'	'मिलन', जबलपुर
९९.	ज्ञान भारती, अगस्त १९६२	लल्लनप्रसाद व्यास	चौलक्खी, लखनऊ
१००.	सुभाष जयंती स्मारिका, १९८१	प्रो. एम.एच. मीर मोहन राठौर कल्याण अग्रवाल	आर.सी. सलवड़िया (अध्यक्ष) सुभाष जयंती समारोह समिति, इंदौर
१०१.	राष्ट्रहित, १९६७	देवीप्रसाद शाही	राष्ट्रहित प्रकाशन, नई दिल्ली
१०२.	देश की आजादी में सेना का योगदान स्मारिका	संपादक मंडल	सरदार भगतसिंह स्मारक समिति, आगरा
१०३.	शहीद-बलिदान अर्द्धशताब्दी समारोह स्मारिका	पं. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा संपादक मंडल	सरदार भगतसिंह स्मारक समिति, आगरा
१०४.	'कादंबिनी' क्रांति विशेषांक	राजेंद्र अवस्थी	हिंदुस्तान टाइम्स लि., नई दिल्ली
१०५.	'क्रांति युग' शहीद अंक	केशवप्रसाद शर्मा	रविप्रताप नारायण, कानपुर
१०६.	संजीवनी	वीरेंद्र सिंधु	भगतसिंह प्रकाशन, सहारनपुर

१०७. युग निर्माण योजना, फरवरी १९७४	भगवती देवी शर्मा	लीलापत शर्मा, मथुरा
१०८. माया, अक्तूबर १९७९	आलोक मित्र	मित्र प्रकाशन प्रा. लि., इलाहाबाद
१०९. नर्मदा, आजाद विशेषांक	श्री सक्सेना	नर्मदा कार्यालय, ग्वालियर
११०. शहीदों को श्रद्धांजलि	संपादक मंडल	शहीद अर्द्धशताब्दी समारोह समिति, दिल्ली
१११. पांचजन्य, क्रांति संस्मरण अंक	वचनेश त्रिपाठी/ भानुप्रताप शुक्ल	राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि., लखनऊ
११२. पांचजन्य, क्रांति कथा अंक, १९८१	वचनेश त्रिपाठी/ भानुप्रताप शुक्ल	राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि., लखनऊ
११३. पांचजन्य, नवंबर १९६६	संपादक मंडल	राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि., लखनऊ
११४. पांचजन्य, बंगाल विशेषांक, फरवरी १९६९	संपादक मंडल	राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि., लखनऊ
११५. अखिल भारतीय क्रांतिकारी सम्मेलन स्मारिका	प्रो. हनुमानप्रसाद शर्मा	कला संगम, सहरसा
११६. मनोरमा, क्रांति विशेषांक	आलोक मित्र	मित्र प्रकाशन प्रा. लि., इलाहाबाद
११७. समर्पण, वार्षिक पत्रिका, १९८२-८३	हुकूमतराम नरसिंगानी	वी.के. सिंहल, प्राचार्य, शासकीय मा. वि. अमझेरा, धार
११८. वीरवाणी, शौर्य कथा विशेषांक	सुधारक प्रभु	हिंदी हाई स्कूल, पुणे
११९. क्रांति शहीद स्मृति अंक	डॉ. सुशांत विश्वास	नेताजी सुभाष मंच, खंडवा
१२०. भारत छोड़ो आंदोलन स्मारिका	संपादक मंडल	हिंदुस्तान फ्रीडम फाइटर्स एसोसिएशन, दिल्ली

क्रम	ग्रंथ	लेखक (सर्वश्री)	प्रकाशक / संपादक
१२१.	क्रांति पथिक	रघुवीर शर्मा	नेताजी सुभाष मंच, खंडवा
१२२.	प्रयास	रमेश जाँचपुरे	आजाद साहित्य परिषद्, झाबुआ
१२३.	नगर में नेताजी	संपादक मंडल	नगर निगम, जबलपुर
१२४.	डॉ. भगवानदास माहौर अभिनंदन ग्रंथ	डॉ. विश्वंभर आरोही	माहौर अभिनंदन समिति, ग्वालियर
१२५.	चाँद, फाँसी अंक	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	चाँद कार्यालय, इलाहाबाद
१२६.	बलिदान	भगवानदेव आचार्य एवं साथी	विश्वंभर वैदिक पुस्तकालय, गुरुकुल-झज्जर, रोहतक
१२७.	अभ्युदय, भाग-३९	पं. पद्मकांत मालवीय	अभ्युदय कार्यालय, प्रयाग
१२८.	प्रताप, २० नवंबर, १९४५	युगलकिशोर शास्त्री	प्रताप प्रेस, कानपुर
१२९.	संसार, क्रांति अंक, १९४६	पं. कमलापति त्रिपाठी एवं साथी	संसार कार्यालय, काशी
१३०.	विश्वबंधु (दैनिक), आदर्श (साप्ताहिक) संयुक्त होली विशेषांक, १९४६	रघुनाथ पांडेय 'प्रदीप'	विश्वबंधु कार्यालय, कलकत्ता
१३१.	संसार, २७ जनवरी, १९४६	पं. कमलापति त्रिपाठी एवं साथी	संसार कार्यालय, काशी
१३२.	योगी, आजाद हिंद अंक, १९४५	संपादक मंडल	योगी प्रेस, काशी
१३३.	दैनिक वीर अर्जुन, आजाद हिंद अंक, १९४६	संपादक मंडल	वीर अर्जुन कार्यालय, दिल्ली

१३४. अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद बलिदान अर्द्धशताब्दी स्मारिका	संपादक मंडल	चंद्रशेखर आजाद समारोह समिति, इलाहाबाद
१३५. शक्ति पुत्र, दिसंबर-जनवरी १९७०	चिरंजीव शास्त्री	चिरंजीव शास्त्री, नई दिल्ली

❖ मराठी संदर्भ ग्रंथ ❖

१३६. नेताजी सुभाषचंद्र बोस	रामकृष्ण गोपाल मिड़े	चित्रशाला प्रेस प्रकाशन, पुणे
१३७. वासुदेव बलवंत	ना.सा. करंदीकर	ब्रोरा एंड कंपनी प्रा. लि., मुंबई
१३८. क्रांतीच्या ज्वाला	रा.प्र. कानिटकर	चित्रशाला प्रेस प्रकाशन, पुणे
१३९. हुतात्मा विष्णु गणेश पिंगले	बालशास्त्री	राष्ट्र प्रकाशन, नागपुर
१४०. भारतीय स्वातंत्र्याचे रण-झुंझार	शंकर रामचंद्र दाते	काल प्रकाशन, पुणे

❖ बँगला संदर्भ ग्रंथ ❖

१४१. आमि सुभाष बॅलचि (२ भाग)	शैलेश डे	रवींद्र लाइब्रेरी, कलकत्ता

S.No.	Title of the Book	Author	Publisher
	❖ ENGLISH REFERENCE BOOKS ❖		
142.	Two Great Indian Revolutionaries	Uma Mukherjee	Firma K.L. Mukhopadhyay, Calcutta
143.	Sholapur Under Martial Law	Dr. R.L. Paralkar	Viswa Bharti Prakashan, Nagpur
144.	The 80th Birthday Anniversary Biplabi Mahanayak Ras Behari Bose 1965	—	—
145.	Biplabi Mahanayak Ras Behari Bose Anniversary Number	Krishna Chandra Dass	Krishna Chandra Dass, Calcutta
146.	Indian Revolutionaries in Conference	J.C. Chatterjee	Firma K.L. Mukhopadhyay, Calcutta
147.	A Bunch of Old Letters	J.L. Nehru	Asia Publishing House, Mumbai
148.	Revolutionaries in India	Francis Gunther	Central Book Depot, Allahabad
149.	New India	Dr. Chandra Chakraberty	Vijoy Krishna & Brothers, Calcutta
150.	Kartar Singh Saraba	Sohan Singh Bhakna	Youth Centre, Jullunder
151.	Bhagat Singh	Iswar Chandra	Bharat Bharti Pustak Sampda, Bangalore
152.	Ashfaq Ulla Khan	N.P. Shankarnarayan Rao	Bharat Bharti Pustak Sampda, Bangalore
153.	Madan Lal Dhingra	Babu Krishna Murti	Bharat Bharti Pustak Sampda, Bangalore

No.	Title	Author	Publisher
154.	Madame Cama	N.S. Narsinha Murti	Bharat Bharti Pustak Sampda, Bangalore
155.	Tatya Tope	K. Suripaty	Bharat Bharti Pustak Sampda, Bangalore
156.	Who's Who of Indian Martyrs	Dr. P.N. Chopra	Ministry of Education, New Delhi
157.	Under the Shadow of Gallows	S. Gulab Singh	Roopchand
158.	Photo Album of Indian Revolutionaries	Chaman Lal Azad	All India Revolutionary Martyrs Committee, Delhi
159.	The Roll of Honour	K.C. Ghose	Vidya Bharti, Calcutta
160.	The Indian National Movement	Nimai Sadhna Bose	Firma K.L. Mukhopadhyay, Calcutta
161.	Lala Har Dayal	Dharmvir	Indian Book Company, New Delhi
162.	Lala Har Dayal : The Wealth of the Nation	The Modern Review	Modern Review, Calcutta
163.	Armed Struggle for Freedom	Bal Shastri Hardass	Kal Prakashan, Poona
164.	Indian Revolutionary Movement Abroad	Tilak Raj Sareen	Sterling Publishers Private Ltd. New Delhi
165.	Repentant Revolutionary	Nagendra Nath Sengupta	Parimal Prakashan, Aurangabad
166.	Source Material for a History of Freedom Movement, Volume I, Volume II	—	The Director Government Printing & Publication, Mumbai
167.	Kukas	M.M. Ahluwalia	Allied Publishers P. Ltd., Mumbai
168.	The Indian Struggle	Subhas Chandra Bose	Asia Publishing House, Mumbai
169.	An Indian Pilgrim	Subhas Chandra Bose	Netaji Research Bureau, Calcutta

S.No.	Title of the Book	Author	Publisher
170.	Cross Roads	Subhas Chandra Bose	Netaji Research Bureau, Calcutta
171.	Correspondence	Subhas Chandra Bose	Netaji Research Bureau, Calcutta
172.	I Warned My Countrymen	Sarat Chandra Bose	Netaji Research Bureau, Calcutta
173.	Evolution of Netaji	S.K. Majumdar	Netaji Research Bureau, Calcutta
174.	Fundamental Questions of Indian Revolution	Subhas Chandra Bose	Netaji Research Bureau, Calcutta
175.	Netaji in Germany	Alexander Werth	Netaji Research Bureau, Calcutta
176.	The Indian Independence Movement in East Asia	S.A. Iyer	Netaji Research Bureau, Calcutta
177.	The Azad Hind Movement In East Europe	M.R. Vyas	Netaji Research Bureau, Calcutta
178.	Netaji 1937-1940 Prelude to Final Struggle	H.V. Kamath	Netaji Research Bureau, Calcutta
179.	The Role of Women in Azad Hind Movement	Col. Laxmi Sahgal	Netaji Research Bureau, Calcutta
180.	Netaji : The Great Resistant Leader	G.K. Mukerjee	Netaji Research Bureau, Calcutta
181.	The Indian National Army	Col. P.K. Sahgal	Netaji Research Bureau, Calcutta
182.	Bulletin of Netaji Research Bureau, No. 9 & 10, 1968-69	—	Netaji Research Bureau, Calcutta
183.	Netaji Exhibition Andman Sovenir	—	Netaji Research Bureau, Calcutta

184.	The Man from Imphal	Abid Hasan Safrani	Netaji Research Bureau, Calcutta
185.	The Struggle in East Asia	John A. Thivy	Netaji Research Bureau, Calcutta
186.	Boycott of British Goods	Subhas Chandra Bose	Hirishikesh Chatterjee, Calcutta
187.	Through Congress Eyes	Subhas Chandra Bose	Kitabistan, Allahabad
188.	The Mission of life	Subhas Chandra Bose	Thacker Spink Co. Ltd., Calcutta
189.	Unto Him a Witness	S.A. Iyer	Thacker & Co., Mumbai
190.	Important Speeches and Writings of Subhas Bose	Ed. Jagat S. Bright	The Elma Co., Calcutta
191.	Netaji in Germany	N.G. Ganpuley	Bhartiya Vidya Bhawan, Mumbai
192.	I.N.A. and its Netaji	Maj. General Shah Nawaz khan	Rajkamal Publications, Delhi
193.	When Bose was Ziauddin	Uttam Chand Malhotra	Rajkamal Publications, Delhi
194.	Testament of Subhas Bose	Arun	Rajkamal Publications, Delhi
195.	Blood Bath	Ed. Narain Menon	Indian Independence League, Singapore
196.	Said Subhas Bose	Amar Lahiri	The Book House, Calcutta
197.	Netaji : The Man	Dilip Kumar Roy	Bhartiya Vidya Bhawan, Mumbai
198.	Subhas Chandra Bose : As I Knew Him	Kitti Kurti	Firma K.L. Mukhopadhyay, Culcutta
199.	Netaji Subhas Chandra Bose : His Life and Work	Sopan	Sanskar Mandir, Bhavnagar
200.	The Rebel President	Durlab Singh	Hero Publications, Lahore

S.No.	Title of the Book	Author	Publisher
201.	Netaji Subhas Chandra	J.N. Ghosh	Orient Book Co., Calcutta
202.	India's Man of Destiny	B.K. Sengupta	Orient Agency, Calcutta
203.	Personality and Political Ideals of Subhas Chandra Bose. Is he a fascist?	Hira Lal Seth	Hero Publications, Lahore
204.	Netaji : His Life and Work	Ed. Shri Ram Sharma	Shiva Lal Agrawal & Co., Agra
205.	Subhas Chandra	Hemendra Nath Dasgupta	Bharat Book Agency, Calcutta
206.	The Two Indians in Japan	J.G. Ohsawa	Kusa Publications, Calcutta
207.	Subhas Chandra Bose (The Springing Tiger)	Huge Toye	Jaico Publications House, Mumbai
208.	Selected Speeches of Subhas Chandra Bose	—	Publication Division, Govt. of India
209.	Netaji Enquiry to Committee Report	—	Govt. of India
210.	The Subhas : I Knew	Dilip Kumar Roy	Nalanda Publications, Mumbai
211.	Impressions in Life	Subhas Chandra Bose	Hero Publications, Lahore
212.	Subhas Bose and his Ideas	Jagat S. Bright	Elma & Co., Calcutta
213.	In Freedom's Quest	N.G. Jog	Orient Longmans, Mumbai
214.	Our Struggle and Ras Behari Bose	S. Sengupta	Books of The World, Calcutta
215.	'The Nation', Netaji	—	—
216.	The Contemporary, July 1969	D. Dasgupta	The Contemporary Publications, Delhi
217.	The Contemporary, August 1969	D. Dasgupta	The Contemporary Publications, Delhi

No.	Title	Author	Publisher
218.	The Contemporary, September 1969	D. Dasgupta	The Contemporary Publications, Delhi
219.	The Contemporary, October 1969	D. Dasgupta	The Contemporary Publications, Delhi
220.	The Contemporary, November 1969	D. Dasgupta	The Contemporary Publications, Delhi
221.	Netaji Subhas Chandra Bose	T. Hayashida	Allied Publications, Mumbai
222.	Story of the I.N.A.	S.A. Iyer	National Book Trust, India
223.	Indian National Army	K.K. Ghosh	Meenakshi Prakashan, Meerut
224.	A Beacon across Asia	S.K. Bose & Others	Orient Longman, Mumbai

□□□
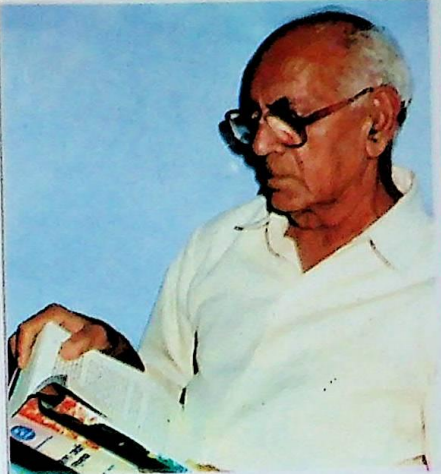
श्रीकृष्ण 'सरल'

जन्म : १ जनवरी, १९१९ को अशोक नगर, गुना (म.प्र.) में।

श्रीकृष्ण सरल उस समर्पित और संघर्षशील साहित्यकार का नाम है, जिसने लेखन में कई विश्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सर्वाधिक क्रांति-लेखन और सर्वाधिक महाकाव्य (बारह) लिखने का श्रेय सरलजी को ही जाता है।

श्री सरल ने एक सौ सत्रह ग्रंथों का प्रणयन किया। नेताजी सुभाष पर तथ्यों के संकलन के लिए वे स्वयं खर्च वहन कर उन बारह देशों का भ्रमण करने गए, जहाँ-जहाँ नेताजी और उनकी फौज ने आजादी की लड़ाइयाँ लड़ी थीं।

श्रीकृष्ण सरल स्वयं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे तथा प्राध्यापक के पद से निवृत्त होकर आजीवन साहित्य-साधना में रत रहे। उन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा 'भारत-गौरव', 'राष्ट्र-कवि', 'क्रांति-कवि', 'क्रांति-रत्न', 'अभिनव-भूषण', 'मानव-रत्न', 'श्रेष्ठ कला-आचार्य' आदि अलंकरणों से विभूषित किया गया।

निधन : १ सितंबर, २००० को।